ईश्वरीय बोध

अथवा

परमहंस श्रीरामकृष्ण के उपदेश

श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
प्रिंसिपल—अग्रवाल विद्यालय इण्टरमीडियेट कालेज, प्रयाग

प्रकाशक
छात्र-हितकारी पुस्तकमाला
दारागंज, प्रयाग

छठवाँ संस्करण १०००] जून १९४० [मूल्य ।।।)

प्रकाशक

बा० केदारनाथ गुप्त, एम० ए०,

प्रोप्राइटर—छात्र हितकारी पुस्तकमाला,

दारागंज, प्रयाग

मुद्रक

श्री रघुनाथप्रसाद शर्मा

नागरी प्रेस, दारागंज,

प्रयाग।

निवेदन

ईश्वरीय बोध का यह परिवर्द्धित संस्करण है। कई वर्ष हुये मैंने पाठकों से वादा किया था कि परमहंस श्रीस्वामी रामकृष्ण जी के सब वचन आगे चलकर हिन्दी में निकालूँगा। मुझे शोक है कि अन्य कार्यों की अधिकता के कारण मैं अपने वचनों का पालन इस समय के पहले नहीं कर सका। आशा है विज्ञ पाठक क्षमा करेंगे।

परमहंस जी के एक २ उपदेश अमूल्य हैं। देखने में तो अत्यन्त सरल किन्तु अर्थ में अत्यन्त गूढ़ हैं कि थोड़ी सी भी बुद्धि और विचार रखने वाला पुरुष ध्यान के साथ पढ़ने से उनको अच्छी तरह समझ सकता है और बिना अधिक परिश्रम के शास्त्रों के पढ़ने का आनन्द और लाभ उठा सकता है।

इन उपदेशों के मनन से कुछ सज्जनों की भी प्रवृत्ति यदि अध्यात्म विद्या की ओर झुकी तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगा।

दारागंज, प्रयाग।
६ ६ २७

केदारनाथ गुप्त

परमहंस श्रीरामकृष्ण देव की

संक्षिप्त जीवनी

परमहंस श्रीरामकृष्णजी का जन्म २० फरवरी सन् १८३३ ई० को हुगली प्रान्त के अन्तर्गत ग्राम कमारपुकुर में हुआ था। इनके पिता का नाम खुदीराम चटोपाध्याय और माता का नाम चन्द्रमनी देवी था। खुदीराम बड़े स्वतन्त्र वक्ता सदाचारी, निष्कपट और परमात्मा के अनन्य भक्त थे। लोगों का कहना है कि उनको वाक्सिद्धि थी। अच्छी और बुरी प्राय सभी उनकी बातें सच उतरती थीं। यही कारण था कि गाँव के रहने वाले उनका बडा आदर सत्कार करते थे। उनकी माता भी सरला और दयालु थीं।

रामकृष्ण जी को बाल्यावस्था ही से गाने-बजाने में बड़ी रुचि थी। जहाँ वे कहीं धार्मिक नाटक देख पाते तो घर लौट कर लड़कों को लेकर उसी प्रकार स्वयं भी वृक्षों के नीचे खेलते थे। इनको मूर्ति बनाने का भी बड़ा शौक था। जब कभी किसी मूर्ति में कोई खराबी देखते तो झट बता देते और वह मूर्ति फिर उनके कथनानुसार ठीक कर दी जाती थी। वे स्वयं परमात्मा की प्रतिमा बनाते और मित्रों के साथ उनकी आराधना करते थे। इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। ६ ही वर्ष की अवस्था में कथक्कड़ों से सुन सुनकर पुरान, रामायण, महाभारत और भागवत का इनको अच्छा ज्ञान हो गया।

ये तीन भाई और दो बहिन थे। सब से बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय जी संस्कृत साहित्य के बड़े पण्डित थे। उन्होंने कलकत्ते में अपनी पाठशाला खोल रक्खी थी और उसी के स्वयं अध्यापक थे। १६ वर्ष की आयु में रामकृष्णजी इसी मदरसे में भेजे गये और यहीं इनकी शिक्षा आरम्भ हुई। किन्तु यहाँ की शिक्षा प्रणाली से उन्हें सन्तोष न हुआ। उन्होंने देखा कि अध्यापक और विद्यार्थी आत्मा, परमात्मा और मुक्ति आदि विषयों पर बड़ी बड़ी लम्बी वक्तृता देते हैं और घटों वादाविवाद करते हैं, परन्तु उन बातों को कार्य्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न नहीं करते, उनकी इच्छा निरन्तर सोने चाँदी की ओर लगी रहती है। अतः उन्होंने स्पष्ट रूप से एक दिन अपने बड़े भाई से कह दिया कि मैं निरर्थक शिक्षा से कोई लाभ नहीं देखता, मेरा चित्त तो किसी दूसरी ही वस्तु में संलग्न है। उस दिन से उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया।

कलकत्ते से ५ मील की दूरी पर उत्तर की ओर दक्षिणेश्वर में कालीदेवी का मंदिर है। श्रीरामकृष्ण जी के ज्येष्ठ भ्राता इसी के पुजारी थे। इधर उधर महीनों भ्रमण करने के पश्चात् वे इसी मन्दिर में काली की आराधना करने लगे परन्तु इनका चित्त रमता हुआ न दिखलाई पड़ा। इसी समय संयोगवश इनके बड़े भाई रोगग्रसित हुए और अन्त में मन्दिर का सारा काम इन्हीं को अङ्गीकार करना पड़ा। उस दिन से ये काली के पक्के उपासक बन गये।

काली पर उनका अटल विश्वास था उनको अपनी और सब संसार की माता समझते थे। घंटों तालियाँ बजा बजा कर और भजन गा गा कर उनकी आराधना करते थे, यहाँ तक कि पूजा करते करते उनको अपने देह की भी सुध बुध जाती रहती

थी। अपने इच्छानुसार दर्शन न पाने के कारण कभी कभी वे घंटों अश्रुपात करते थे। नाना प्रकार की गप उडने लगीं। किसी ने कहा—रामकृष्ण परमात्मा का सच्चा भक्त है और दूसरों ने कहा वह पागल हो गया है। स्वामी जी की माता और भाइयों ने जब यह दृश्य देखा तो रामकृष्ण का पाणिग्रहण रामचन्द्र मुखोपाध्याय की ५ वर्ष वयस्क दुहिता के साथ कर दिया।

इस सम्बन्ध से स्वामी जी की कोई क्षति न हुई। उनकी भक्ति और उत्साह सहस्रों गुणा और अधिक प्रगाढ होता गया। हाथ जोड कर देवी के सन्मुख वे फिर खड़े हो गये और कई दिनों तक रोया किये। लोगों ने समझा इनको कोई शारीरिक पीडा है अत वे डाक्टर के पास ले गये, किन्तु किसी डाक्टर की चिकित्सा कारगर न हुई। ढाका के एक चिकित्सक महोदय ने तो साफ २ कह दिया कि ससार का कोई भी डाक्टर इनको नहीं अच्छा कर सकता। ये थोड़े दिनों मे स्वय अच्छे हो जायेंगे।

कई दिनो तक रोने गाने पर भी जब देवी के दर्शन न हुये तो एक दिन उन्होंने शरीर छोडने का सकल्प किया परन्तु उसी दिन स्वप्न में काली ने दर्शन दिया। इस प्रकार के दर्शन पर भी उनको विश्वास न हुआ, नाना प्रकार से उसकी परीक्षा करने लगे। एक दिन उन्होंने मन में विचार किया यदि रानी रासमनी की दो युवती कन्यायें जो मुझसे सब प्रकार अपरिचित हैं, इस मन्दिर में आ जाँय तो मैं समझूँगा कि काली के दर्शन हो गये। दूसरे दिन क्या देखते हैं कि दोनों कन्याएँ हस्तबद्ध हो कर उनके सामने आ खडी हुईं। इस दृश्य को देख कर रामकृष्ण को बडा आश्चर्य हुआ।

रामकृष्ण की पवित्र आत्मा इतने ही पर सीमाबद्ध नहीं रही किन्तु परमात्मा को साक्षात करने की इच्छा में शनै २

उन्नति के उच्च शिखर पर आरूढ़ होती चली गई। उन्होंने १२ वर्ष पर्य्यन्त एक स्थान में कठिन तपस्या की। इस बीच में उनका ध्यान परमात्मा में निमग्न था, आँखें खुली थीं। जटा बड़े बड़े हो गये थे और शरीर बिलकुल परिवर्तित हो गया था परन्तु उन्हें कुछ भी न मालूम हुआ। दूसरे चौथे उनका भतीजा हृदय दो चार कौर खिला जाता था। जब कभी उनका चित्त चाहता भंगियों और नीच जात वाले पुरुषों के मध्य काम करने लगते और अपनी माँ काली से प्रार्थना करते कि हे माँ मेरे हृदय से ब्राह्मणत्व का भाव निकाल दे, संसार के नरनारी तेरे ही अनेक रूप हैं।

कभी २ एक हाथ में मिट्टी और दूसरे में सोना चाँदी लेकर गंगा जी के किनारे बैठ जाते और अपनी आत्मा को सम्बोधित कर के कहते, "आत्मन्, सांसारिक पुरुष इसको रुपया कहते हैं, इससे घर बनवाये जा सकते हैं, अनाज घी और दूसरी वस्तुयें खरीदी जा सकती हैं, परन्तु इससे ब्रह्म ज्ञान नहीं मिल सकता। इसलिये इस रुपये को भी मिट्टी समझ।" चाँदी सोने और मिट्टी में कुछ अन्तर न समझते। सब को मिलाकर गंगा में फेंक देते। उनके शिष्य मथुरनाथ ने एक बार १५००) रु० मूल्य का एक साल उन्हें उढ़ा दिया। स्वामी जी ने तो पहिले स्वीकार कर लिया इसके अनन्तर पृथ्वी पर फेंक दिया, पैरों तले खूब कुचला, उसपर थूका और फिर उसी से कमरा बटोरा।

इस प्रकार १२ वर्ष में बहुत कुछ ज्ञानोपार्जन करके वे योगाभ्यास करने लगे। कई वर्ष पर्य्यन्त शास्त्रानुकूल योगाभ्यास किया किन्तु तब भी उत्तरोत्तर ज्ञान वृद्धि की लय लगी रही। इसी बीच में तोतापुरी नामक सन्यासी से उनकी भेंट हुई। तोतापुरी महाराज को वेदान्त का अच्छा ज्ञान था। वे

सदैव नग्न रहते और खुले मैदान में सोते थे। वर्षा और शिशिर ऋतु में भी वृक्षों के नीचे पड़े रहते और एक स्थान में तीन दिन से अधिक नहीं ठहरते थे। रामकृष्ण को गंगा के तीर बैठा देखकर वे उनके समीप गये और कहने लगे कि मैं तुम्हें वेदान्त की शिक्षा देना चाहता हूँ। रामकृष्ण जी ने कहा "महाराज आप ठहरिये। मैं काली जी की आज्ञा ले आऊँ, तब आप से अध्ययन करू।" वे मन्दिर गये और थोड़ी देर में लौटकर कहने लगे, अब मुझे वेदान्त की शिक्षा दीजिये। तीन दिन में उन्होंने सब सीख लिया। उनकी ऐसी विलक्षण बुद्धि को देखकर तोतापुरी ने कहा "मेरे पुत्र जो कुछ मैंने कठिन परिश्रम करने के उपरान्त ४० वर्ष में सीखा है उसको तुमने केवल तीन दिन में सीख लिया। आज से अब तुम्हें मित्र कहकर सबोधित करूँगा।" वे रामकृष्ण के पास ११ मास रहे और स्वयं उनसे बहुत सी बातें सीखकर चले गये।

तोतापुरी के चले जाने के अनन्तर रामकृष्ण सदैव ब्रह्म में लीन रहने का प्रयत्न करने लगे। ६ मास तक लगातार निर्वि-कल्प समाधि में निमग्न रहे। इस बीच में उन्हें खाना भी विस्मरण हो गया और उनका शरीर गलकर पंचतत्व में मिलना ही चाहता था कि एक सन्यासी उनके पास आ गये। वे उनके शरीर की रक्षा बराबर करते रहे। जब पुकारने पर भी होश में न आते तो डंडे से पीटते और जगाकर भोजन कराते। कभी कभी तो ऐसा होता था कि पीटने पर भी इनकी आँखें न खुलतीं। अततोगत्वा निराश होकर वह पश्चात्ताप करने लगते। इस घोर तपस्या से उनके घाव पड़ने लगी। यही कारण था कि वे होश में आये, अन्यथा और कुछ समय तक समाधि में बैठे रहते। अच्छे होने के पश्चात वे सब धर्मों

की परीक्षा करने लगे। पहिले वैष्णव धर्म की परीक्षा की। ब्रज की गोपियों की तरह जनाने कपड़े पहिन लेते और चारों ओर कृष्ण भगवान की खोज में इधर उधर घूमा करते। स्वप्न में कृष्ण भगवान के दर्शन हुए और उन्हें शांति मिली। तदनतर उन्होंने यवन और ख्रीष्ट धर्म की परीक्षा की। प्रत्येक धर्म में शान्त्वना मिली, अन्तत यह फल निकला कि संसार के सब धर्म सच्चिदानन्द तक पहुँचने के भिन्न भिन्न मार्ग हैं मुक्ति सभी धर्म द्वारा मनुष्य को मिल सकती है।

इन तमाम वर्षों में वे अपनी स्त्री को बिलकुल भूल गये। जिस पुरुष को अपनी देह तक की भी सुध बुध न रहे उसके लिये स्त्री का भूलना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। लक्ष्मी की अवस्था अब १७ वर्ष की थी। वह अपने प्राणपति के दर्शन के लिए माता से आज्ञा मिलने पर ३०, ४० मील पैदल चलकर दक्षिणेश्वर के मन्दिर में आ उपस्थित हुई। रामकृष्ण ने उसका अच्छा स्वागत किया और कहा 'माता, पुराना रामकृष्ण तो मर गया, नया रामकृष्ण सब स्त्रियों को मातृवत देखता है।' उन्होंने फिर चन्दन, फूल, अगर इत्यादि वस्तुओं से उसकी अर्चना की। स्त्री ने कहा स्वामिन मुझे कुछ न चाहिये, मैं केवल पास रह कर आप की सेवा सुश्रूषा और पारमार्थिक ज्ञानोपार्जन करना चाहती हूँ।" रामकृष्ण ने रहने की आज्ञा दे दी। वह भी सन्यासिनी होकर उसी मन्दिर में रहने और अपने पति से शिक्षा ग्रहण करने लगी। माँ तो कदाचित कुछ ही लड़कों की माँ हुई होती परन्तु अब सैकड़ों नर-नारियों की आध्यात्मिक माँ बन गई।

रामकृष्ण योग की परम सीमा तक पहुँच गये परन्तु उन्होंने किसी व्यक्ति के सामने दिखलाने का प्रयत्न कभी भी नहीं

किया। वे अपने चेलों से कहा करते थे, "लोगों की बातों पर ध्यान न दो, आत्मिक उन्नति करते चले जाओ, योग शक्ति आप-से आप आ जायगी।" स्वामी जी में सर्वश्रेष्ट गुण यह था कि वे मनुष्य के शरीर को छूकर उसके विचारों को बदल सकते थे। कभी कभी तो ऐसा देखने में आया है कि स्पर्श मात्र से लोग समाधिस्थ हो गये और सांसारिक बातों को भूल कर देवी और देवताओं को प्रत्यक्ष देखने लगे। हालत यहां तक पहुँच गई थी कि सांसारिक पुरुष संसार की बातों से और कंजूस सोने और चाँदी से घृणा करने लगे।

लोगों को कष्ट में देखकर उन्हें कष्ट होता था। एक बार वृन्दावन अपने शिष्य मथुरादास के साथ जाते समय एक गांव में ठहरे। वहाँ के रहने वाले दुख से चिल्ला रहे थे। बेचारों को पेट भर भोजन भी नहीं नसीब था। रामकृष्ण इस दृश्य को देखकर चीख मार मार कर रोने लगे और वहां से उस समय तक नहीं हटे जब तक मथुरादास ने कुछ कपडे और कुछ द्रव्य प्रत्येक निवासी को बुला बुलाकर नहीं दे दिया। धन से इनको बडी घृणा थी। मथुरादास की इच्छा थी कि दक्षिणेश्वर का मन्दिर २५००० रुपये वार्षिक आय के साथ रामकृष्ण को दे दिया जाय, परन्तु उन्होंने एक दम अस्वीकार कर दिया और कहा यदि आप ऐसा करने का प्रयत्न करेंगे तो मैं यहां से भाग जाऊँगा। एक अन्य धनी सज्जन ने भी २५००० रुपया देना चाहा, परन्तु उन्होंने उसे भी वही उत्तर दिया।

वे प्राय कहा करते थे कि कि गुलाब का फूल जब खिल जाता है और उसकी सुरभि चारों ओर फैलने लगती है तो भौंरे आप से आप आजाते हैं। यह कथन उन्हीं के जीवन में बिल कुल सत्य उतरा। जब वे भले प्रकार ज्ञानोपार्जन कर चुके तो

प्रत्येक धर्म के सभासद सैकड़ों और सहस्रों की संख्या उनके पास जाकर उपदेशामृत पान करने लगे। प्रात सायंकाल तक उनके इर्द गिर्द खचाखच भीड़ लगी रहत और व सब की आत्मिक क्षुधा निवारण करत। कभी कभी त खाने पीने का भी अवकाश न मिलता। उनकी सादगी, नि स्वार्थ भाव और भोला भाषा को देखकर बड़े बड़े योगी उनक पास आते और दीक्षा पाकर उन्हे आध्यात्मिक गुरू मान लगत थ।

१८८५ ई० क प्रारम्भ मे व गता की व्याधि स पीड़ित हुए डाक्टरों ने कहा—आप उपदेश करना छोड दीजिय तभा इस रो से छुटकारा मिल सकता है। परन्तु उन्होंने स्पष्टत डाक्टरों कह दिया "उपदेश करना बन्द नहीं कर सकता, एक आत्मा क भी संसार बन्धन से मुक्त कर सका तो शारीरिक व्यथा की कौ चलावे यदि मृत्यु भी हो जाय तो कोई परवाह नहीं।' अन्त मे रोग ने पूर्ण रूप से धर दबाया और १६ अगस्त १८८६ई० को १ बजे रात इनकी पवित्र आत्मा सदा सर्वदा क लिय ब्रह्म में लीन हो गई।

ईश्वरीय बोध

अथवा

परमहंस श्रीरामकृष्ण के उपदेश

१ आकाश में रात्रि के समय बहुत से तारे दिखलाई पड़ते हैं परन्तु सूर्योदय होने पर वे अदृश्य हो जाते हैं। इससे यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि दिन के समय आकाश में तारे हैं ही नहीं। उसी प्रकार ऐ मनुष्यो, माया जाल में फँसने के कारण यदि परमात्मा न दिखलाई पड़े तो मत कहो कि परमेश्वर नहीं है।

२ जल एक ही वस्तु है परन्तु लोगों ने उसको अनेक नाम दे रक्खा है। कोई पानी कहता है, कोई वारि कहता है और कोई अकुआ कहता है। उसी प्रकार सच्चिदानन्द है एक परन्तु उसके नाम अनेक हैं। कोइ अल्ला के नाम से पुकारता है, कोई हरि का नाम लेकर याद करता है और कोई ब्रह्म कह कर उसकी आराधना करता है।

३ एक समय दो मित्र वार्तालाप कर रहे थे। संयोगवश उनकी दृष्टि सामने एक गिरगिटान पर पड़ी। पहिले ने कहा, "इसका रंग लाल है।" दूसरे ने कहा, "नहीं, इसका रङ्ग नीला है," वे परस्पर इस मसले को निपटा न सके। निदान वे एक मनुष्य के पास गये जो सदैव उस वृक्ष के नीचे रहा करता था। पहिले ने आखें लाल लाल करके कहा कि क्या इसका रङ्ग लाल नहीं है ? उस भद्र पुरुष ने उत्तर दिया "हां, है।" तब दूसरे ने पूछा कि क्या उसका रङ्ग नीला नहीं है ?"

उसने नम्रता पूर्वक फिर कहा कि हा है। वह जानता था कि गिरगिटान बार बार रङ्ग बदला करता है। इसी कारण उसने दोनों का उत्तर ठीक बतलाया। उसी प्रकार जिसने परमात्मा का एक ही रूप देखा है वह केवल उसी रूप में जानता है। परन्तु जिसने उसके रूप देखे हैं वही यह कह सकता है कि ये सब परमात्मा के भिन्न भिन्न स्वरूप हैं। सच मुच वह साकार और निराकार दोनों है। उसके बहुत रूप तो ऐसे हैं जो किसी को मालूम तक नहीं।

४ बिजली की रोशनी से नगर के भिन्न २ स्थानों में प्रकाश न्यून अधिक (कम व बेश) सब जगह पहुंचता है किन्तु रोशनी का उद्गम एक ही स्थान से होता है, उसी प्रकार सब युगों और सब देशों के धर्मोपदेशक अनेकों बिजली के खम्भे हैं जिनके द्वारा सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्राप्त हुये आत्म ज्ञान का प्रसार जनसाधारण में बराबर होता रहता है।

५ हाइड और सीक (Hide and seek) के खेल में जब एक खिलाड़ी पाले को छू लेता है तो वह राजा हो जाता है, दूसरे खिलाड़ी उसे चोर नहीं बना सकते। उसी प्रकार एक बार ईश्वर के दर्शन हो जाने से संसार के बन्धन फिर हमको बांध नहीं सकते। जिस प्रकार पाले छू लेने पर खिलाड़ी जहां चाहे वहां निडर घूम सकता है, उसे कोई चोर नहीं बना सकता, उसी प्रकार जिसको ईश्वर के चरण स्पर्श का आनन्द एक बार मिल जाता है उसे फिर संसार में किसी का भय नहीं रह जाता। वह सांसारिक चिंताओं से मुक्त हो जाता है और किसी भी माया मोह में फिर नहीं फँसता।

६ पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा एक बार जब सोना बन जाता है तो उसे चाहे जमीन में गाड़ दो अथवा कतवार में फेंक दो वह सोना ही बना रहता है फिर लोहा नहीं हो जाता, उसी प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरण स्पर्श से जिसका हृदय एक बार पवित्र हो जाता है

तो उसका फिर कुछ नहीं बिगड़ सकता चाहे वह संसार के कोलाहल में रहे अथवा जङ्गल में एकान्त वास करे।

७ पारस पत्थर के स्पर्श से लोहे की तलवार सोने की हो जाती है और यद्यपि उसकी सूरत वैसी ही बनी रहती है किन्तु लोहे की तलवार की तरह उससे लोगों का हानि नहीं पहुँच सकती। उसी प्रकार ईश्वर के चरण स्पर्श से जिसका हृदय पवित्र हो जाता है उसकी सूरत शकल तो वैसी ही रहता है किन्तु उसमे दूसरे का हानि नहीं पहुच सकती।

८ समुद्र तल में स्थित चुम्बक की चट्टान समुद्र के ऊपर चलने वाले जहाज का अपनी ओर खींच लेता है, उसके कीले निकाल डालता है, सब तख्तों को अलग अलग कर देता है और जहाज को समुद्र में डुबो देता है उसी प्रकार जीवात्मा का जब आत्मज्ञान हो जाता है, जब वह अपने हो का समान रूप से विश्व भर म देखने लगता है तो मनुष्य का व्यक्तित्व और स्वार्थ एक क्षण म नष्ट हो जाते हैं और उसका जीवात्मा परमेश्वर के अगाध प्रेम सागर म डूब जाता है।

९ दूध पानी में जब मिलाया जाता है तो वह तुरन्त मिल जाता है किन्तु दूध का मक्खन निकाल कर डालने से वह पानी में नहीं मिलता बल्कि उसके ऊपर तैरने लगता है। उसी प्रकार जब जीवात्मा का ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है तो वह अनेक बद्ध प्राणियों के बीच में निरन्तर रहता हुआ भी उनके बुरे संस्कारों से प्रभावित नहीं हो सकता।

१० नवोढा तरुणी का जब तक बच्चा नहीं होता तब तक वह गृहकार्य्य म निमग्न रहती है किन्तु बच्चा हो जाने पर गृहकार्य्यों से वह धीरे २ बेपरवाह होती जाती है और बच्चे की ओर वह अधिक ध्यान देती है। दिन भर उसे बड़े प्रेम के साथ चूमता चाटती और प्यार करती है। इसी प्रकार मनुष्य अज्ञान की दशा में संसार के सब कार्य्यों में लगा रहता है किन्तु ईश्वर के भजन में आनन्द पाते ही व उसे नीरस मालूम होने लगते हैं और वह उनसे अपना हाथ खींच लेता है।

ईश्वर की सेवा करने और उसकी इच्छानुसार चलने ही में उसे अत्यन्त आनन्द मिलता है। दूसरे किसी भी काम में उसको सुख नहीं मिलता। ईश्वर दर्शन के सुख से फिर वह अपने को खींच भी नहीं सकता।

११ सिद्ध को कौन सी स्थिति प्राप्त होती है? (पहुँचा हुआ साधु और भली भांति पका हुआ भोजन दोनों सिद्ध कहलाते हैं। सिद्ध शब्द पर श्लेष है।) जिस प्रकार उबालने पर आलू मुलायम और गुदगुदा (pulpy) हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य जब कठिन तपस्या से सिद्ध हो जाता है तो वह दया और नम्रता से भर जाता है।

१२ संसार में पांच प्रकार के सिद्ध पाये जाते हैं — (१) स्वप्न सिद्ध—जिनको स्वप्न ही के साक्षात्कार से पूर्णता प्राप्त होती है। (२) मंत्रसिद्ध-जिन्हें दिव्य मंत्रों से पूर्णता प्राप्त होती है। (३) हाठात सिद्ध—वे कहलाते हैं जिन्हें एकाएक सिद्धि मिल जाती है और जो एकाएक पापों से मुक्त हो जाते हैं जिस प्रकार एक दरिद्र को एकाएक द्रव्य मिल जाय या एकाएक उसका विवाह एक धनवान स्त्री से हो जाय और वह धनी बन जाय। (४) कृपासिद्ध—ये कहलाते हैं जिन्हें ईश्वर की कृपा से पूर्णता प्राप्त होती है। जिस प्रकार वन को साफ करते हुये किसी मनुष्य को पुराना तालाब या घर मिल जाय और उनके बनवाने में उसे फिर कष्ट न उठाना पड़े उसी प्रकार कुछ लोग भाग्यवश किंचित् परिश्रम करने ही से सिद्ध हो जाते हैं। (५) नित्यसिद्ध—वे कहलाते हैं जो सदैव सिद्ध रहते हैं। गोर्ड (gourd) और लौकी की लतरों में फल लग जाने पर फूल आते हैं और उसी प्रकार नित्य सिद्ध गर्भ ही से सिद्ध पैदा होता है उसकी बाहरी तपस्या तो मनुष्य जाति को सद् मार्ग पर लाने के लिये एक नाम मात्र का साधन है।

१३ जब मनुष्य बाजार से दूर रहता है तो उसे "हाहो" की आवाज अस्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती है किन्तु जब वह बाजार में आ जाता है तो हो-हा की आवाज बन्द हो जाती है और वह अपनी आंखों

से साफ साफ देखता है कि कौन आदमी आलू खरीद रहा है और कौन बैगन खरीद रहा है और कौन दूसरी चीजें खरीद रहा है। उसी प्रकार जब तक मनुष्य ईश्वर से दूर रहता है तब तक वह तर्क वितर्क वादविवाद आदि बातों में पड़ा रहता है, किन्तु जब वह ईश्वर के समीप पहुँच जाता है तो तर्क कुतर्क और वाद विवाद सब बन्द हो जाते हैं और वह ईश्वरीय गुप्त बातों को उत्तम प्रकार स्पष्ट रूप से समझता है।

१४ ईसा मसीह को जब सूली दी गई उस समय उसको घोर वेदना हो रही थी तब भी उसने प्रार्थना किया कि उसके शत्रु यहूदी क्षमा किये जाय। इसका क्या कारण है? जब एक साधारण कच्चे नारियल में कीला ठोंका जाता है तो वह भीतर की गरी में भी घुस जाता है लेकिन जब वही कीला एक पुराने पके हुये नारियल में ठोंका जाता है तो गरी में नहीं घुसता क्योंकि पके हुये नारियल का गोला खोपड़ी से अलग हो जाता है। यीशूमसीह पके हुये नारियल की तरह थे। उनकी अन्तरात्मा शरीर से बिलग था, इसलिये शारीरिक वेदना उन्हें नहीं मालुम हुई। कीलें उसके शरीर में आर पार ठोंक दी गई थीं तब भी वह शान्ति के साथ अपने शत्रुओं की भलाई के लिये प्रार्थना कर रहा था।

१५ घर की छत पर मनुष्य सीढ़ी बांस, रस्सी आदि कई साधनों के योग से चढ़ सकता है। उसी प्रकार ईश्वर तक पहुँचने के लिये भी अनेकों मार्ग और साधन हैं। संसार का प्रत्येक धर्म इन मार्गों में से एक मार्ग को प्रदर्शित करता है।

१६ एक मां के कई लड़के होते हैं। एक को वह जेवर देती है, दूसरे को खिलौने देती है और तीसरे को मिठाई देती है। सब अपनी अपनी चीजों में लग जाते हैं और मां को भूल जाते हैं। मां भी अपने घर का धंधा करने लगती है, किन्तु इस बीच में जो लड़का अपनी चीज

को फेंक देता है अपनी मां को चिल्लाने लगता है और मां दौड़ कर उसको चुप करती है, उसी प्रकार से ऐ मनुष्यो, तुम लोग संसार के कारोबार और अभिमान में मस्त होकर अपनी जगतमाता को भूल गये हो। जब तुम उन्हें छोड़ कर उसको पुकारोगे तब वह शीघ्र ही आवेगी और तुमको अपने गोद में उठा लेगी।

१७ परमात्मा के अनेक नाम और अनेक स्वरूप हैं। जिस नाम और जिस स्वरूप से हमारा जी चाहे उसी नाम और उसी स्वरूप से हम उसे देख सकते हैं।

१८. यदि ईश्वर सर्वव्यापी है तो हम उसे देख क्यों नहीं सकते ?

जिस तालाब के बीच में बड़ी लम्बी २ घास उगी हुई हो उसका पानी हम नहीं देख सकते। पानी को देखना है तो घास को निकालना होगा। उसी प्रकार माया का परदा आंखों में पड़ने के कारण हम ईश्वर को नहीं देख सकते। यदि ईश्वर को देखना है तो आंखों से माया का परदा निकालना होगा।

१९ हम जन्मदाता को क्यों नहीं देख सकते ? वह उच्च कुलोत्पन्न स्त्री की तरह है जो परदे के भीतर से अपना काम करती हुई सब को देख सकती है किन्तु उसे कोई नहीं देख सकता। उसके भक्त ही केवल माया के परदे के पीछे जाकर उसे देख सकते हैं।

२० वाद विवाद न करो। जिस प्रकार तुम अपने धर्म और विश्वास पर दृढ़ रहते हो, उसी प्रकार दूसरों को भी अपने धर्म और विश्वास पर दृढ़ रहने की पूरी स्वतन्त्रता दो। केवल वाद विवाद से तुम दूसरों को उनकी गल्ती न समझा सकोगे। परमात्मा की कृपा होने पर ही प्रत्येक पुरुष अपनी गलती समझेगा।

२१ कमरे में दीपक के लाते ही सैकड़ों वर्षों का अन्धकार एकदम दूर हो जाता है। उसी प्रकार ईश्वर की केवल एक कृपा-कटाक्ष से असंख्य जन्मों के पाप नष्ट हो सकते हैं।

२२ मलय पर्वत की हवा जब चलती है तो जिन वृक्षों में 'सत्व' होता है वे सब चन्दन के वृक्ष हो जाते हैं। बबूल, बास और केले के वृक्ष जिनमें 'सत्व' नहीं होता जैसे के तैसे बने रहते हैं। उसी प्रकार परमेश्वर की कृपा की वायु जब बहती है तो जिनके हृदयों में भक्ति और पुण्य के बीज वर्तमान हैं वे एकदम पवित्र हो जाते हैं और उनमें इश्वरीय तेज भर जाता है, किन्तु जो निरुपयोगी और प्रपंची होते हैं वे जैसे के तैसे बने रहते हैं।

२३ एक लड़के ने अपनी माँ से कहा, "अम्मा, जगा दे, मुझे भूक लगेगी।" मां ने उत्तर दिया, "बच्चे घबड़ा नहीं तरी भूख तुझे स्वय जगा देगी।"

२४ जब मुझे प्रतिदिन अपने पेट की चिन्ता करनी पड़ती है तो मैं उपासना किस प्रकार कर सकता हूँ ? जिसकी उपासना तू करता है वह तेरी आवश्यकताओं का पूण करेगा। तुझे पैदा करने के पहिले ही ईश्वर ने तेरे पट का प्रबन्ध कर दिया है।

२५. ऐ भक्त, यदि इश्वर का गुह्य बातों को जानने की तेरी लालसा है ता वह स्वयं सद्गुरू भेजेगा। गुरू का ढूँढने में तुझे कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है।

२६ एक बार एक महात्मा नगर में हाकर जा रहे थे। सयोग से उनसे पैर से एक दुष्ट आदमी का अँगूठा कुचल गया। उसने क्रोधित होकर महात्मा जी का इतना मारा कि वे बेचारे मूर्छित हाकर ज़मीन पर गिर पड़े। बहुत दवा दारू करके उनके चेले बड़ी मुश्किल से उनको होश में लाये। तब तो एक चेले ने महात्मा से पूछा "यह कौन आपकी सेवा कर रहा है ?" महात्मा ने उत्तर दिया "जिसने मुझे पीटा था।" एक सच्चे साधू का मित्र और शत्रु में भेद नहीं मालूम होता।

२७ मनुष्य तकिये की खोली के समान है। किसी खोली का

रग लाल, किसी का नीला, और किसी का काला होता है पर सर्व सब में है। यही हाल मनुष्यों का भी है। उनमें से कोई तो सुन्दर है कोई काला है कोई सज्जन है तो कोई दुर्जन है, किन्तु परमात्मा सभी में मौजूद है।

२८ सब प्रकार के जल में नारायण व्याप्त है किन्तु सब प्रकार का जल पीने योग्य नहीं होता। उसी प्रकार यद्यपि यह सत्य है कि परमात्मा प्रत्येक स्थान में उपस्थित है किन्तु प्रत्येक स्थान में मनुष्य का जाना ठीक नहीं। जिस प्रकार कोई पानी पैर धोने के काम में आता है, कोई नहाने के काम आता है, कोई पीने के काम आता है और कोई हाथ से स्पर्श तक नहीं किया जाता, उसी प्रकार स्थान भी भिन्नता है। किसी स्थान के तो पास ही तक जाना चाहिये, और कुछ स्थानों को दूर ही से नमस्कार करना चाहिये।

२९ यह सच है कि परमात्मा का वास व्याघ्र में भी है परन्तु उसके पास जाना उचित नहीं। उसी प्रकार यह भी ठीक है कि परमात्मा दुष्ट से भी दुष्ट पुरुष में वर्तमान है परन्तु उसका सग करना उचित नहीं।

३० एक गुरूजी ने अपने चेले को उपदेश दिया कि जिस वस्तु का अस्तित्व है वह परमेश्वर ही है। भीतरी मतलब को न समझ कर चेले ने उसका अर्थ अक्षरश लगाया। एक समय जब वह मस्त सड़क पर जा रहा था तो सामने से एक हाथी आता हुआ दिखलाई पड़ा। महावत ने चिल्ला २ कर कहा, "हट जाओ, हट जाओ।" परन्तु उस लड़के ने एक न सुनी। उसने सोचा कि मैं ईश्वर हूँ, और हाथी भी ईश्वर है ईश्वर से ईश्वर को किस बात का डर। इतने में हाथी ने सूड़ से एक ऐसी चपेट मारी कि वह एक कोने में जा गिरा। थोड़ी देर बाद किसी प्रकार सभल कर उठा और गुरू के पास जाकर सब हाल बयान किया। गुरूजी ने हँसकर कहा, 'ठीक है, तुम ईश्वर

हो और हाथी भी इश्वर है, परन्तु परमात्मा महावत के रूप में हाथी पर बैठा तुम्हें आगाह कर रहा था। तुमने उसके कहने को क्यों नहीं सुना ?"

३१ एक किसान ऊख के खेत में दिन भर पानी भरता था किन्तु सायंकाल जब देखता तो उसमें पानी का एक बूँद भी नहीं दिखलाई पड़ता था। सब पानी अनेकों छेदों द्वारा जमीन में साप जाता था। उसी प्रकार जो भक्त अपने मन में कीर्ति, सुख सम्पति पदवी आदि विषयों की चिन्ता करता हुआ इश्वर की पूजा करता है वह परमार्थ के मार्ग में कुछ भी उन्नति नहीं कर सकता। उसकी सारी पूजा वासनारूपी बिलों द्वारा बह जाती है और जन्म भर पूजा करने के अनन्तर वह देखता क्या है कि जैसी हालत मेरी पहिले थी वैसी ही अब भी है, तरक्की कुछ भी नहीं हुइ।

३२ आराधना के समय उन लोगों से दूर रहो जो भक्त और धर्मनिष्ठ लोगों का उपहास करते हों।

३३ दूध और पानी मिलाने से मिल जाते हैं उसी प्रकार अपने सुधार की ओर लगा हुआ नवीन भक्त जब हर प्रकार के ससारिक लोगों में बिना किसी को चवचार के मिल जाता है तो वह अपने ध्येय को भूल जाता है और उसकी पहिले की श्रद्धा, और उसका प्रेम और उत्साह धारे २ लोप हो जाते हैं।

३४ दल (पंथ) का उत्पन्न करना क्या अच्छा है ? (यहा "दल" शब्द पर श्लेष है। दल का एक अर्थ है पंथ और दूसरा है काई (शैवाल)। बहते हुये पानी पर दल (काई) नहीं उत्पन्न हो सकता वह छोटे २ तालों के बधे हुये पानी में उत्पन्न होता है। उसी प्रकार जिसका हृदय सचाइ के साथ इश्वर की ओर लगा हुआ है उसके पास दूसरी बातों पर विचार करने का समय ही नहीं रहता। दल (पंथ) वे ही बनाते हैं जो यश और प्रतिष्ठा के भूखे रहते हैं।

३५ जिस प्रकार मुँह से उगला हुआ भोजन उच्छिष्ट हो जाता है उसी प्रकार वेद, तन्त्र, पुराण और दूसरे सब धर्मग्रन्थ उच्छिष्ट हो गये हैं क्योंकि उनकी रचना मनुष्यों ने की है और उसी बात को उन्होंने बारबार दोहराया है। किन्तु ब्रह्म अथवा परमात्मा कभी उच्छिष्ट नहीं होने का क्योंकि उसके वर्णन करने के लिये अभी तक किसी की वाणी समर्थ नहीं हुई।

३६ जिस प्रकार मेघ सूर्य्य को ढक लेता है उसी प्रकार माया परमेश्वर को ढके रहती है। मेघ के हट जाने से सूर्य्य दिखलाई पड़ता है, उसी प्रकार माया के दूर होने से परमेश्वर के दर्शन होते हैं।

३७ एक पुरोहित जी अपने एक शिष्य के घर जा रहे थे। उनके साथ कोई नौकर नहीं था। मार्ग में एक चमार मिला। उन्होंने उससे कहा, "क्यों जी भलमानुस क्या तुम मेरे नौकर बन कर मेरे साथ चलोगे? तुमको पेट भर उत्तम भोजन मिलेगा किसी बात की कमी न होगी।" चमार ने उत्तर दिया, "मैं तो शूद्र हूँ, मैं आपका नौकर कैसे बन सकता हूँ।" पुरोहित जी ने कहा "इसकी कोई परवाह नहीं। किसी से कहना नहीं कि मैं शूद्र हूँ और न किसी से बोलना या अधिक जानकारी करना।" चमार राजी हो गया। सन्ध्या समय जब कि पुरोहित जी सध्या कर रहे थे एक दूसरा ब्राह्मण आया और उसने नौकर से कहा, "क्योंरे? जाकर मेरा जूता तो उठाला।" नौकर ने कोई उत्तर नहीं दिया। ब्राह्मण ने जूता लाने के लिये फिर कहा किन्तु उसने फिर भी उत्तर नहीं दिया। ब्राह्मण बार बार कहता रहा और नौकर टस से मस नहीं हुआ। आखिरकार क्रोध में आकर ब्राह्मण ने कहा, "क्योंरे तुझे इतना घमण्ड हो गया कि अब तू ब्राह्मण की आज्ञा नहीं मानता। तेरा क्या नाम है? क्या तू चमार नहीं है?" चमार कांपने लगा। उसने पुरोहित जी की ओर देख कर कहा, महाराज, मुझे तो इन्होंने

पहिचान लिया, अब मैं नहीं ठहर सकता" यह कह कर वह लम्बा हुआ। इसी प्रकार माया जब पहिचान ली जाती है तो वह भाग जाती है।

३८ हरी जब सिंह का चेहरा अपने मुंह में लगा लेता है तो वह बड़ा भयकर दिखलाई पड़ता है। उसको लगाये हुये वह अपनी छोटी बहिन के पास जाता है और किलकारी मारकर उसे डरवाता है। वह घबड़ा कर एक दम जोर से चिल्लाने लगती है और सोचती है कि अरे अब तो मैं भाग भी नहीं सकती, यह दुष्ट तो मुझे खा जायगा। किन्तु हरी जब सिंह का चेहरा उतार डालता है तो बहिन अपने भाई को पहिचान लेती है और उसके पास जाकर प्रेम से कहती है, "अरे यह तो मेरा प्यारा भाई है।" यही दशा संसार के मनुष्यों की भी है। वे माया के झूठे जाल में पड़कर घबड़ाते और डरते हैं किन्तु माया के जाल को काटकर जब वे ब्रह्म का दर्शन कर लेते हैं तो उनकी घबराहट और उनका डर छूट जाता है। उनका चित्त शांत हो जाता है और परमात्मा को हउआ न समझ कर वे उसे अपनी प्यारी आत्मा समझने लगते हैं।

३९. जीवात्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है? पानी के प्रवाह में लकड़ी के तख्ते को तिरछा रखने से जिस प्रकार पानी के दो भाग दिखलाई पड़ते हैं, उसी प्रकार ब्रह्म अभेद्य होता हुआ भी माया के कारण दो दिखलाई पड़ता है। वास्तव में दोनों एक ही चीज हैं।

४० पानी और उसका बुलबुला एक ही चीज है। बुलबुला पानी से बनता है, पानी में तैरता है और अन्त में फूट कर पानी में मिल जाता है, उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा एक ही चीज है, भेद केवल इतना है कि एक छोटा होने से परमित है और दूसरा अनन्त है, एक परतन्त्र है और दूसरा स्वतन्त्र है।

४१. समुद्र का पानी दूर से गहरा नीला दिखलाई पड़ता है किन्तु पास जाकर देखने में वह साफ और निर्मल दिखलाई पड़ता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण दूर से नीले दिखलाई पड़ते हैं किन्तु वास्तव में ऐसे नहीं हैं। वे शुद्ध और निर्मल हैं।

४२ जिस प्रकार एक बड़ा और प्रचण्ड शक्ति का जहाज समुद्र पर छोटी २ नावों को खींचता हुआ बड़े वेग से चलता है, उसी प्रकार ईश्वर का जब अवतार होता है तो वह बड़ी सुगमता के साथ हजारों स्त्री पुरुषों को माया के समुद्र से पार करवाकर स्वर्ग पहुँचाता है।

४३ समुद्र में ज्वारभाटा आने से उसमें गिरने वाली नदियों, नालों और आस पास की जमीन पर पानी चढ़ जाता है। और चारों ओर जलही जल दिखलाई पड़ता है, किन्तु वर्षा का पानी सदा के मार्ग से बहकर निकल जाता है। उसी प्रकार जब परमात्मा का अवतार होता है तो उसकी कृपा से सब उद्धार होता है सिद्ध पुरुष तो बड़े परिश्रम के साथ अपना ही उद्धार मुश्किल से कर पाते हैं।

४४ प्रवाह में बहते हुये लकड़ी के कुन्दे के ऊपर सैकड़ों पक्षी बैठ जाते हैं तब भी वह नहीं डूबता, किन्तु बहते हुये बेंत पर केवल एक कव्वा यदि बैठ जाय तो वह तुरन्त डूब जाता है, उसी प्रकार जब ईश्वर का अवतार होता है तो उसका शरण लेकर सैकड़ों मनुष्य अपना उद्धार कर लेते हैं।

४५ रेलगाड़ी का इञ्जन वेग के साथ चलकर ठिकाने पर अकेला ही नहीं पहुँचता, बल्कि अपने साथ साथ बहुत से डब्बों को भी खींचकर पहुँचा देता है। यही हाल अवतारों का भी है। पाप के बोझ से दबे हुये सैकड़ों मनुष्यों को वे ईश्वर के पास पहुंचाते हैं।

४६ एक अवतार दूसरे अवतार का मान नहीं करता, इसका क्या कारण है? इसका उत्तर बड़ा सरल है। जादूगर दूसरे जादूगर का

तमाशा नहीं देखता, उसके खेल और हाथ की सफाई को देखने के लिये जनसाधारण इकट्ठा होते हैं।

४७ वज्र बातुल के बीज वृक्ष के नीचे नहीं गिरते, हवा उनको दूर उड़ा ले जाती है और वहां पर ये जड़ पकड़ते हैं। उसी प्रकार एक बड़े महात्मा की आत्मा अपनी जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेश में प्रगट होती है और वहीं पर उसका सराहना भी होती है।

४८ दीपक अपने चारों ओर के स्थानों पर प्रकाश फेंकता है लेकिन उसके नीचे सदा अंधेरा रहता है, उसी प्रकार महात्माओं के पास रहनेवाले मनुष्य उनके महत्व को नहीं समझ सकते। दूर रहने वाले उनकी अद्भुत शक्ति और आत्म तेज से मोहित हो सकते हैं।

४९ "जो कोई हम पदेश देता है वही हमारा गुरू है" ऐसा कहने की अपेक्षा एक खास आदमी को गुरू कह कर पुकारने का क्या आवश्यकता है? अपरिचित देश जाने पर केवल उसी पुरुष की सलाह से काम करना चाहिये जिसे वहाँ का पूर्ण ज्ञान है। हर प्रकार के बहुत से लोगों का सलाह पर चलने से गड़बड़ी पदा हो सकती है। उसी प्रकार ईश्वर तक पहुँचने के लिये आँख मूँदकर गुरू की आज्ञा माननी चाहिये। एक खास गुरू की आवश्यकता इसी से सिद्ध होती है।

५० उस पुरुष को गुरू की आवश्यकता नहीं है जो सचाई और लगन के साथ ईश्वर का ध्यान कर सकता है, परन्तु ऐसे पुरुष बहुत कम हैं इसीलिये गुरू की आवश्यकता है। गुरू एक ही होता है उप गुरू बहुत से हो सकते हैं। जिससे कुछ भी शिक्षा मिले वह उपगुरू है। श्रीमहाराज दत्तात्रिय जी ने २४ उपगुरु किये थे।

५१ एक अवधूत ने गाजे बाजे के साथ जाती हुई एक बारात को देखा, पास ही उसने अपने लक्ष पर ध्यान लगाये हुये एक चिड़ी मार को देखा। वह अपने शिकार के ध्यान में मस्त था, बाजे का

उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। एक बार घूमकर उसने देखा तक नहीं। अवधूत ने लपक कर चिडीमार का सलाम किया और उससे कहा, "जनाब आप हमारे गुरू हैं, मैं चाहता हूँ कि आराधना के समय मेरा भी ध्यान ईश्वर में उसी प्रकार लगे जिस प्रकार तुम्हारा ध्यान अपने शिकार पर लगा हुआ है।"

५२ कोई मछुआ तालाब में मछली फँसा रहा था। अवधूत ने उसके पास जाकर पूछा, भाइ अमुक स्थान तक कौन सा रास्ता जाता है। रस्सी के हिलने से मालूम होता था कि मछली फँसने के करीब थी, इसलिये वह कुछ न बोला, अपना ध्यान उसी ओर लगाये बैठा रहा। जब मछली फँस गई तो घूमकर उसने पूछा, "आप क्या कह रहे थे?" अवधूत ने उसे प्रणाम किया और कहा, "आप मेरे गुरु हैं, जब मैं परमात्मा में ध्यान लगाने बैठूँ तो मेरा ध्यान आपकी तरह किसी और वस्तु में न जाकर केवल उस परब्रह्म में लगे।"

५३ एक बगुला मछली पकड़ने के लिये धीरे धीरे चल रहा था। पीछे उस पर एक बहेलिया निशाना लगा रहा था, परन्तु बगुले को इस बात की कुछ भी खबर न थी। अवधूत ने जाकर बगुले को प्रणाम किया और कहा, "जब मैं ध्यान लगाने बैठूँ तो आपकी तरह पीछे न घूम कर मैं भी केवल उसी परमात्मा में लीन रहूँ।"

५४ एक चील्ह चोंच में एक मछली लिये उड़ी जा रही थी और बहुत से कौवे और दूसरी चील्हें मछली को छीनने के लिये उसका पीछा कर रही थीं। जिस ओर वह चील्ह जाती थी उसी ओर वे सब भी उसका पीछा करते थे। अन्त में थक कर उसने मछली छोड़ दी और दूसरी चील्ह ने उसे लपककर पकड़ लिया। अब कौवे और चील्हें दूसरी चील्ह का पीछा करने लगे। पहिली चील्ह वृक्ष की एक डाल पर निर्विघ्न शान्त बैठ गई। अवधूत ने पास जाकर उसे प्रणाम किया और कहा, 'हे चील्ह, तुम हमारे गुरु हो, तुमने

मुझे यह उपदेश दिया है कि मनुष्य जब तक संसार की वासनाओं को नहीं छोड़ता तब तक वह अशान्त और अस्वस्थ रहता है।"

५५. शिष्य को चाहिये कि वह अपने गुरु की टीका टिप्पणी न करे। जो वे कहें उस पर आँख मूँद कर विश्वास करे। बँगाली कविता में ऐसा कहा कहा गया है कि "मेरे गुरू शराब खाने में भी जाँय तो भी वे पवित्र हैं।

५६ मानवी गुरू कान में मन्त्र फूँकते हैं और दैवी गुरू आत्मा में तेज़।

५७ चार अन्धे एक हाथी को देखने चले। एक ने हाथी का पैर पकड़ पाया और बोला, "हाथी खम्भे के समान है।" दूसरे ने सूड़ पकड़ा और कहा—हाथी मोटे डन्डे के समान है। तीसरे का हाथ पेट पर पड़ा। उसने कहा, हाथी एक घड़े के समान है। चौथे के हाथ में कान आये। उसने कहा—हाथी सूप के सदश है। चारों हाथी की बनावट के विषय में झगड़ने लगे। एक यात्री उस मार्ग से जा रहा था। उसने उनको झगडते हुये देख कर पूछा, "तुम लोग क्यों लड़ रहे हो?" उन्होंने सारी कथा यथोपान्त कह सुनाई और हाथ जोड़ कर कहा कि आप इस मामले को निपटा दीजिये। उस यात्री ने कहा, "तुममें से किसी ने भी हाथी का नहीं देखा। हाथी खम्भे के के समान नहीं है, उसके पैर खम्भे के समान हैं। यह घड़े के समान नहीं है। इसका पेट घड़े के समान है। यह सूप के समान नहीं है। इसके कान सूप के समान हैं। यह मोटे डन्डे के समान नहीं है बल्कि इसकी सूँड़ डन्डे के समान है। हाथी इन सब से मिलकर बना है। उसी प्रकार (इस संसार में) वे ही झगड़ा बखेडा करते हैं जिन्होंने परमात्मा के केवल एक ही रूप को देखा है।

५८ मेंढक की दुम जब झड़ जाती है तो वह थल और जल दोनों में रह सकता है। उसी प्रकार मनुष्य का अज्ञान रूपी अँधेरा

जब नष्ट हो जाता है तो वह स्वतन्त्र होकर ईश्वर और संसार दोनों में एक समान विचर सकता है।

५९ आत्मज्ञान प्राप्त कर लेने पर, जनेऊ को पहिनना क्या उचित है ?

आत्मज्ञान ही प्राप्त कर लेने पर सब बन्धन आपसे आप टूट जाते हैं। उस समय ब्राह्मण और शूद्र, ऊँच और नीच में कोई भेद नहीं मालूम होता, और जाति चिन्ह जनेऊ का कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। परन्तु तब तक जनेऊ को जबरदस्ती तोड़ कर नहीं फेंक देना चाहिये।

६० राजहंस दूध पी लेता है और पानी छोड़ देता है। दूसरे पक्षी ऐसा नहीं कर सकते। उसी प्रकार साधारण पुरुष माया के जाल में फँसकर परमात्मा को नहीं देख सकते। केवल परमहँस ही माया को छोड़कर परमात्मा के दर्शन पाकर स्वर्गीय सुख का अनुभव करते हैं।

६१ यदि यह शरीर निकम्मा और क्षणभंगुर है, तो महात्मा लोग इसकी खबरदारी क्यों करते हैं ? खाली सन्दूक की परवाह कोई भी नहीं करता। सब लोग उसी सन्दूक की खबरदारी करते हैं जिसमें सोना और जवाहिरात आदि अमूल्य वस्तुयें भरी हों।

हमारा शरीर ईश्वर का भण्डारघर है। उसमें उसका निवास है। इसलिये महात्मा लोगों को शरीर की खबरदारी करनी पड़ती है।

६२ थैली के फट जाने से इधर उधर छितराये हुए सरसों का इकट्ठा करना जिस प्रकार बड़ा कठिन है उसी प्रकार सब दिशाओं में दौड़नेवाले और अनेक कामों में व्यग्र मन को शान्त और एकाग्र करना बड़ा कठिन है।

६३ भगवद्भक्त अपने परम प्रिय ईश्वर के लिये प्रत्येक वस्तु को छोड़ने के लिये क्यों तैयार रहता है ?

पवित्र प्रकाश को देखकर फिर अन्धेरे में जाने की इच्छा नहीं करता, चिउटी चीनी के ढेर में मर जाती है किन्तु पीछे नहीं लौटती। उसी प्रकार भगवद्भक्त भी किसी बात की परवाह नहीं करता, वह परमानन्द की प्राप्ति मे अपने प्राणों तक का बलिदान कर देता है।

६४ अपने इष्टदेवता को मा कहने मे भक्त को इतना आनन्द क्यों मालूम होता है? क्योंकि बालक अन्य प्राणियों की अपेक्षा अपनी मा से अधिक स्वतन्त्र रहता है इसलिये वह उसे अधिक प्यारा भी होता है।

६५ भक्त एकान्त में रहना क्यों नहीं पसन्द करता? जिस प्रकार गजेड़ी को बिना साथी साहबती के गाजा पीने में आनन्द नहीं आता उसी प्रकार साथी सोहबती को छोड कर एकान्त में ईश्वर का नाम लेने में भक्त का आनन्द नहीं मिलता।

६६ योगी और सयासी साप के सदृश होते हैं। साप अपने लिये बिल नहीं बनाता, वह चूहे के बनाये हुये बिल म रहता है। एक बिल रहने के योग्य जब नहीं रह जाता तो वह दूसरे बिल में चला जाता है। उसी प्रकार योगी और सयासी अपने लिये घर नहीं बनाते। वे दूसरों के घरों में कालक्षेप करते हैं—आज इस घर में हैं तो कल दूसरे घर में।

६७ गायों के झुण्ड में जब एक अपरिचित जानवर घुस जाता है तो वे सब मिलकर अपने सींगों से मार मार उसे बाहर निकाल देती हैं, किन्तु जब एक गाय उसी झुण्ड में घुस जाती है तो दूसरी गायें उससे मिल जाती हैं और उसे अपना मित्र बना लेती हैं। उसी प्रकार एक भक्त जब दूसरे भक्त से मिलता है तो दोनों को सुख होता है और फिर अलग होने में दुख होता है। किंतु उनकी मडली में जब कोई निंदक जाता है तो वे उससे बहिर्मुख हो जाते हैं।

६८ साधु साधु को पहिचान सकता है। सूत का व्यापारी ही

किसी सूत को एक दम देख कर बतला सकता है कि यह किस जाति और कितने नम्बर का सूत है।

६८. एक महात्मा जी समाधि लगाये सड़क के किनारे बैठे हुये थे। उस ओर से एक चोर निकला। उसने विचारा कि यह पुरुष चोर अवश्य है, कल रात भर इसने किसी के घर में चोरी की है, इस समय थककर सो रहा है, पुलीस शीघ्र ही इसे पकड़ेगी, चलो मैं भाग चलूँ। थोड़ी देर बाद एक शराबी आया। उसने कहा, "खूब, अरे भाई तुमने शराब अधिक पी ली है, इसलिये इस खाइ मे पड़े हो, मेरी ओर देखो, मुझमें तुमसे अधिक फुर्ती है और मैं काप भी नहीं रहा हूँ।" थोड़ी देर बाद एक दूसरे महात्मा आये। इस महान आत्मा को समाधि में लीन देखकर बैठ गये और धीरे धीरे उनके पवित्र चरण दबाने लगे।

७० दूसरों की हत्या करने के लिये तलवार और दूसरे शस्त्रों की आवश्यक्ता होती है किंतु अपनी हत्या करने के लिये एक आलपीन काफी है, उसी प्रकार दूसरों को उपदेश देने के लिये बहुत से धर्मग्रंथों और शास्त्रों को पढने की आवश्यक्ता है किंतु आत्मज्ञान के लिये एक ही महावाक्य पर दृढ विश्वास करना काफ़ी है।

७१ जिसको छिछले तालाब का स्वच्छ पानी पीना है उसे हलके हाथ से पानी पीना होगा। यदि पानी कुछ भी हिला तो नीचे का मैल ऊपर चला आवेगा और सब पानी गंदा हो जायगा। उसी प्रकार यदि तुम पवित्र रहना चाहते हो तो दृढ विश्वास के साथ भक्ति का अभ्यास क्रमश बढाते जावो, व्यर्थ के अध्यात्मिक विवाद में अपने समय को नष्ट न करो नहीं तो नाना प्रकार की शकाओं और प्रतिशंकाओं से तुम्हारा मस्तिष्क गंदा हो जायगा।

७२ दो पुरुष एक बार किसी बाग में गये। सासारिक पुरुष घुसते ही सोचने लगा कि इसमें कितने आम के वृक्ष हैं, हरेक वृक्ष

में कितने आम होंगे और इस बाग की कीमत क्या होगी ? दूसरे ने जाकर मालिक से परिचय किया और उसकी आज्ञा लेकर आम खाने लगा। आप स्वय विचार कर सकते हैं कि दोनों म से कौन अधिक बुद्धिमान था। आम खाओ जिससे तुम्हारी भूख बुझे। वृक्षों और फलों को गिनने से क्या लाभ होगा। मूर्ख आदमी सृष्टि की प्रत्येक बातों में खुचुड़ निकालता फिरता है, चतुर आदमी केवल परमात्मा पर विश्वासकर स्वर्गीय सुख का अनुभव करता है।

७३ घी में कच्ची पूड़ी डालने से वह पडपड़ और चुर चुर करने लगती है किंतु जैसे जैसे वह पकती जाती है तैसे-तैसे पड़ पड़ और चुर चुर की आवाज कम होती जाती है। और जब बिलकुल पक जाती है तो आवाज एकदम बद हो जाती है। उसी प्रकार जब मनुष्य को थोड़ा ज्ञान होता है तो वह व्याख्यान देता है, वादविवाद करता है और उपदेश करता है परन्तु उसे जब पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो उपरोक्त सब आडम्बर दूर हो जाते हैं।

७४ सच्चा शूरमा वह है जो प्रलोभनों के बीच रहता हुआ मन को वश में करके पूर्ण ज्ञान प्राप्त करता है।

७५ ससार और ईश्वर—इन दोनों का मेल किस प्रकार किया जा सकता है ? ढेंकीवाले की स्त्री को देखो। वह ढेंकी के चावल को फेरती जाती है और अपने बच्चे को दूध भी पिलाती जाती है, साथ ही खरीदारों से भी बातचीत करती जाती है। वह इतने काम एक ही साथ करती है किन्तु उसका ध्यान केवल एक ही ओर रहता है कि चावल चलाते समय ढेंकी से उसका हाथ न कुचल जाय। उसी प्रकार ससार में रहो, काम करते जाओ लेकिन अपना लक्ष्य सदा परमेश्वर की ओर रक्खो। उससे विमुख न जाओ।

७६ मगर पानी में तैरना बहुत पसन्द करता है लेकिन पानी के भीतर से जब वह ऊपर आता है तो शिकारी उस पर गोली

चलाते हैं। आखिरकार बेचारे को पानी के भीतर ही रहना पड़ता है, ऊपर आने का साहस नहीं होता। तथापि सुअवसर ताक कर सू सू करता हुआ वह पानी के ऊपर तैरता रहता है। उसी प्रकार जगज्जाल में बँधे हुये ऐ मनुष्यो, तुम भी ब्रह्मानन्द में गोता लगाना चाहते हो लेकिन घरेलू और सांसारिक आवश्यक कार्यों के कारण तुम ऐसा नहीं कर सकते। (ऐसा होते हुये भी) तुम लोग सदैव प्रसन्नचित्त रहो और जब तुमको सावकाश मिले तभी सच्चाई और धुन के साथ इश्वर की आराधना करो और उससे अपना सब दुःख कहो। उचित समय आने पर वह तुम्हारा उद्धार करेगा और तुम ब्रह्मानन्द में गोता लगाने के योग्य बन सकोगे।

७७ ऐसा कहते हैं कि जब कोई तान्त्रिक अपने देवता को जगाना (प्रसन्न करना) चाहता है तो वह एक ताजे मुरदे पर बैठकर मन्त्र जपता है और भोजन और शराब अपने पास रख लेता है। इस बीच में यदि किसी समय वह मुरदा सचेत होकर मुँह खोलता है तो वह तान्त्रिक उस मुरदे में आने वाले पिशाच को प्रसन्न करने के लिये शराब और भोजन डाल देता है। यदि वह ऐसा न करे तो पिशाच अप्रसन्न होकर विघ्न डालने लगता है और वह फिर देवता को जगा नहीं सकता। उसी प्रकार इस संसार रूपी मुरदे पर बैठ कर यदि तुम इश्वर से मिलना (ईश्वर को जगाना) चाहते हो तो तुमको ये सब चीजें इकट्ठी कर लेना होगा जिनसे तुम संसार के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर सको नहीं तो यदि ऐसा न कराग तो तुम्हारी उपासना में विघ्न पड़ेगा।

७८ जिस प्रकार (street ministrel) एक भिक्षुक एक हाथ से सितारा बजाता है और दूसरे हाथ से ढोलक बजाता है और साथ ही साथ मुँह से भजन भी गाता जाता है। उसी प्रकार ऐ संसारी

मनुष्यो, तुम अपना कर्त्तव्य कर्म करो किन्तु सच्चे हृदय से ईश्वर का नाम जपना न भूलो।

७९ जिस प्रकार एक कुलटा (व्यभिचारिणी स्त्री) घर के कामकाज में लगी होती हुई भी अपने प्रेमी का स्मरण करती है उसी प्रकार ससार के धन्धों में लगे रहते हुये भी मनुष्यों को ईश्वर का चिन्तन दृढता के साथ करते रहना चाहिये।

८० धनिकों के घरों की सेविकायें (नौकरानियाँ) उनके लड़कों का पोषण करती हैं और अपने खास पुत्रों की तरह उनका लाड़-प्यार करती हैं किन्तु वे नौकरानियों के पुत्र नहीं हो जाते। उसी प्रकार तुम लोग भी अपने को अपने पुत्रों के पोषण कर्ता समझो, उनका असली पिता तो वास्तव में ईश्वर है।

८१ विवेक और वैराग्य युक्त मन बिना धर्म ग्रन्थ और शास्त्रों का पाठ करना व्यर्थ है। आध्यात्मिक उन्नति बिना विवेक और वैराग्य के नहीं हो सकती।

८२ पहिले अपने आत्मा को पहिचानो और फिर अनात्मा और ईश्वर को जो दोनों का मालिक है। सोचो कि "मैं" कौन हूँ? हाथ, पाव, मास, रक्त, स्नायु ही क्या "मैं" हूँ? तब तुम्हारी समझ में आवेगा कि इनमें से कोई भी "मैं" नहीं है। जिस प्रकार प्याज के छिलके को लगातार उतारते रहने से वह पतला होता जाता है उसी प्रकार 'मैं पन' के पृथक्करण से यह बात सहज ही समझ में आ जायगी कि "मैं" कोई चीज नहीं है। इस विवेचन का फल एक ही है और वह ईश्वर है। जब "मैं पन" छूट जायगा तो ईश्वर का दर्शन होगा।

८३ कलियुग की सच्ची उपासना और उसका सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान प्रेम रूप ईश्वर का सदैव नाम जपना है।

८४ यदि तुम ईश्वर का दर्शन करना चाहते हो तो हरि-नाम जपने के सामर्थ्य पर दृढ विश्वास रक्खो। और असली (आत्मा) और नकली (अनात्मा) को पहिचानो।

८५ जब हाथी खुल जाता है तो वह वृक्षों और झाड़ियों को उखाड़ कर फेंक देता है, लेकिन महावत जब उसके मस्तक पर अंकुश की मार देता है तो वह तुरन्त ही शान्त हो जाता है: यही हाल अनियन्त्रित मन का है। जब आप उसे स्वच्छन्द छोड़ देते हैं तो वह आमोद प्रमोद के निस्सार विचारों में दौड़ने लगता है लेकिन जब विवेक-रूपी अंकुश की मार से आप उसे रोकते हैं तो वह शान्त हो जाता है।

८६ परमेश्वर का ध्यान निर्जन स्थान में करो, अथवा एकान्त जंगल में करो, अथवा अपने हृदय के मौन मन्दिर में करो।

८७ चित्त की एकाग्रता लाने के लिये तालियाँ बजा बजाकर हरी (ईश्वर) का नाम जोर ज़ोर से लो। जिस प्रकार वृक्ष के नीचे तालियाँ बजाने से उस पर बैठे हुये पक्षी इधर उधर उड़ जाते हैं, उसी प्रकार तालियाँ बजा बजा कर हरी का नाम लेने से कुत्सित विचार मन से भाग जाते हैं।

८८ जब तक हरी का नाम लेते ही आनन्दाश्रुधारा न बहने लगे तब तक उपासना की आवश्यकता है। ईश्वर का नाम लेते ही जिसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगती है उसे उपासना की आवश्यकता नहीं है।

८९ यदि एक बार डुब्बी लगाने से मोती न मिले तो यह न कहो कि समुद्र में मोती नहीं हैं। बार-बार डुबकी लगाओ, अन्त में तुम्हें मोती मिलेंगे। उसी प्रकार ईश्वर को साक्षात् करने में पहिले विफलता हो तो निराश मत होओ। बराबर प्रयत्न करते रहो, अन्त में ईश्वर का साक्षात्कार तुम्हें अवश्य होगा।

९० एक लकड़िहारा जंगल को लकड़ी बेंच बेचकर बड़े दुख के साथ जीवन निर्वाह करता था। अकस्मात् उस मार्ग से एक संन्यासी जा रहे थे। उन्होंने लकड़िहारे के दुख को देख कर उससे कहा "बेटा, जंगल में और आगे घुसो, तुमको लाभ होने वाला है।" लकड़िहारा आगे बढ़ा, यहाँ तक कि उसे एक चंदन का वृक्ष मिला। उसने बहुत सी लकड़ियाँ काट लीं और उसे ले जा कर बाजार में बेंचा। इससे उसको बहुत लाभ हुआ। उसने सोचा कि सन्यासी ने चन्दन के वृक्ष का नाम क्यों नहीं लिया? उसने इतना ही क्यों कहा कि आगे और घुसो? दूसरे दिन जङ्गल में और आगे घुसा और उसे तांबे की एक खान मिली। उसने उसमें से मनमाना तांबा निकाला और उसे बाज़ार में बेंच कर खूब रुपया प्राप्त किया। तीसरे दिन वह और आगे घुसा और उसे एक चांदी की खान मिली। उसने उसमें से मनमाना चाँदी लिया और उसे बाज़ार में बेच कर और भी अधिक रुपया प्राप्त किया। वह और आगे बढ़ा और उसे सोने और हीरे की खानें मिलीं। अन्त में वह बड़ा धनवान हो गया। ऐसा ही हाल उन लोगों का भी है जिन्हें ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा होती है। थोड़ी सी सिद्धि प्राप्त करने पर वे रुकते नहीं बराबर बढ़ते जाते हैं और अन्त में लकड़िहारे की तरह ज्ञान का कोष पाकर अध्यात्मिक क्षेत्र में वे भी धनवान हो जाते हैं।

√९१ साधुओं और ज्ञानियों की संगति अध्यात्मिक उन्नति का प्रमुख तत्व है।

९२ इस संसार को छोड़ने के पहिले जिस देह का विचार आत्मा करता है उसी में वह जन्म पाता है। ऐसा करने के लिये उपासना की अत्यंत आवश्यकता है। सरल उपासना से मन में जब कोई दूसरी एक भी कल्पना न आवे तो केवल परमात्मा की कल्पना से ही जीवात्मा भर जाता है और अन्तकाल तक उससे वह रिक्त नहीं होता। (अन्ते मति सा गति)

९३ क्या अहङ्कार का समूल नाश नहीं होता ? कमल के पत्त झड़ जाते हैं किन्तु दाग नहीं मिटता, उसी प्रकार मनुष्य का अहङ्कार सम्पूर्ण नष्ट हो जाता है किन्तु पूर्वजन्म के अस्तित्व का संस्कार (दाग) शेष रहता है, लेकिन उससे किसी को हानि नहीं पहुँचती।

९४ भक्त की शक्ति किसमें है ? वह परमात्मा का पुत्र है और प्रेमाश्रु उसके शक्तिशाली शस्त्र हैं।

९५ कोइ ईश्वर को किस प्रकार प्यार करे ? जिस प्रकार पति व्रता स्त्री अपने पति को और कंजूस संचित धन को।

९६ मानवी स्वभाव की दुर्वलता को हम किस प्रकार जीत सकते हैं ? फूल से जब फल तैयार हो जाता है तो पाखड़िया आपसे आप गिर जाता हैं। उसी प्रकार Divinity जब तुम में बढेगी तो तुम्हारे स्वभाव का दौर्बल्य आपसे आप नष्ट हो जायगा।

९७ धर्मग्रन्थों के पढने से क्या ईश्वरभक्ति प्राप्त की जा सकती है ? हिन्दू पंचागों में लिखा रहता है कि देश के किस किस भाग में कब कब और कितना पानी बरसेगा। लेकिन पंचागों को अगर हम निचोड़ना शुरू करें तो एक बूँद भी पानी नहीं मिलेगा। उसी प्रकार धर्मग्रन्थों में भी बहुत से उत्तम २ उपदेश मिलते हैं, लेकिन केवल उनको पढने से कोई ईश्वर-भक्त नहीं बन सकता। ईश्वर-भक्त बनने के लिये उन उपदेशों को कार्यरूप में परिणत करना होगा।

९८ गीता शब्द बराबर लगातार कहने से उसमें तागी (त्यागी) शब्द की धुन निकलती है जिसका अर्थ त्याग है। ऐ संसारी मनुष्यों, प्रत्येक वस्तु को त्याग दो और ईश्वर के चरणों में अपना दिल लगाओ।

९९ आप निश्चय जानो कि जो मनुष्य "अल्ला हो, अल्ला हो" "हे मेरे इष्ट, हे मेरे इष्ट देव" मुख से कहता रहता है उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। जिसको ईश्वर मिल जाता है वह बिल्कुल शान्त हो जाता है।

१०० जब तक भौंरा फूल के भीतर का मकरन्द नहीं चख लेता तब तक वह उससे बाहर बराबर चक्कर लगाया करता है लेकिन जब वह फूल के भीतर घुस जाता है तो चुपचाप अमृत रस (मकरन्द) को पीने लगता है। उसी प्रकार जब तक मनुष्य ब्रह्मानन्द रस रूपी मकरन्द नहीं चखते तब तक धार्मिक सिद्धांतों और मतमतान्तरों की गपोड़बाजी करते हैं, लेकिन एक बार जब उन्हें इस रस का आनन्द मिल जाता है तो वे शान्त हो जाते हैं।

१०१ कुतुबनुमे की सुई हमेशा उत्तर की ओर रहती है इस लिये जहाज समुद्र म नहीं भटकता। उसी प्रकार जब तक मनुष्य का हृदय ईश्वर की ओर रहता है तब तक वह समुद्र रूपी ससार म नहीं भटक सकता।

१०२ बन्दर का बच्चा अपनी मा की छाती में जोर से चिपटा रहता है। बिल्ली का बच्चा अपनी मां से नहीं चिपट सकता उसको बिल्ली जहा रख देती है वहां वह पड़े दुख के साथ म्यू म्यू करता रहता है। बन्दर का बच्चा यदि अपनी मां को छोड़ दे तो वह नीचे गिर जाय और उसको चोट लग जाय। इसका कारण यह है कि उसको अपनी शक्ति का भरासा रहता है। बिल्ली के बच्चे को इस प्रकार का कोई भय नहीं रहता क्योंकि उसकी मां स्वय उसको एक स्थान से दूसरे स्थान को ल जाती है। अपनी शक्ति पर विश्वास रखने और ईश्वर की इच्छा पर अपने को एक दम छोड़ देने वालों में भी यही अन्तर है।

१०३ भारतवर्ष के गांव की स्त्रिया अपने सर पर चार पांच पानी से भरे हुये घड़े रखकर चलती हैं, वे माग में एक दूसरे से सुख दुख की अनेक बातें भी करती जाती हैं, लकिन एक बूद भी पानी छलक कर नीचे नहीं गिरता। धर्म के मार्ग पर चलने वाले यात्री की भी यही दशा होनी चाहिये। वह चाहे किसी भी परिस्थिति में हो धर्म के मार्ग से उसे कभी भी विचलित नहीं होना चाहिये।

१०४ हथेलियों में तेल लगाकर कटहल छीलने से हाथों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता और न उनमें कटहल का चिपचिपा दूध चिपकता है। उसी प्रकार पहिले ईश्वरीय ज्ञान उपार्जन करके और फिर ससार के धन्धों में लगो तो तुमको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँच सकेगी।

१०५ तैरना सीखने के लिये अभ्यास की आवश्यकता है। एक दिन क अभ्यास से कोइ समुद्र में नहीं तैर सकता। उसी प्रकार यदि तुम्हें ब्रह्म के समुद्र में तैरना है ता सफलता पूर्वक तैरने के पहिले बहुत से निष्फल प्रयत्न करने पड़ेंगे।

१०६ कृष्ण जी के नाटक में तुमने देखा होगा कि जब लोग मृदग बजा और गा-गा कर "अरे कृष्ण आओ, अरे कृष्ण, जल्दी दौड़ा" ऐसा कह कर कृष्ण को पुकारते हैं तो कृष्ण बना हुआ पात्र उनकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं देता, वह रङ्ग भूमि के भीतर आड़ में बैठा हुआ गप्पें मारता है और सिगरेट पीता है। किन्तु बाजों के बन्द हा जाने पर प्रेममूर्ति नारद मुनि जब मधुर स्वर से गाते हुये रङ्गभूमि में आते हैं और कृष्ण को पुकारते हैं तो वे दौड़ कर रङ्गभूमि में आते हैं। उसी प्रकार भक्त जब तक केवल मुह से यह कह कर चिल्लाता है है कि "अरे भगवान दौड़ो, दर्शन दो" तब तक भगवान दौड़ कर दर्शन नहीं देते। किन्तु जब वह प्रेम भरे अन्त करण से भगवान को पुकारता है तो भगवान तुरन्त दौड़ कर आते हैं। प्रेम भर शुद्ध अन्तःकरण से भक्त जब भगवान का स्मरण करता है ता वे आने में विलम्ब नहीं करते।

१०७ अपने ध्येय का सिद्ध करने के लिये काफी साधनों को एकत्रित करना चाहिये। गला फाड़ फाड़ कर यह चिल्लाने से कि "दूध में मक्खन है" तुम्हें मक्खन नहीं मिलेगा। यदि मक्खन निकालना है तो पहिले दूध का दही बनाओ और फिर उसको मथानी से मथो। उसी प्रकार यदि तुम्हें ईश्वर का दर्शन करना है तो अभ्या-

त्मिक साधनाओं का अभ्यास करते चलो। 'हे ईश्वर, हे ईश्वर" अलापने से क्या प्रयोजन ?

१०८ "भंग" "भंग" कहने से नशा नहीं चढता। भंग को पीसकर और पानी में घोलकर पीने से नशा चढता है। "हे ईश्वर" "हे ईश्वर" इस प्रकार ज़ोर ज़ोर चिल्लाने से क्या लाभ ? उपासना बराबर करते चलो, तब अलवत्ते तुम्हें ईश्वर के दर्शन होंगे।

१०९ मनुष्य का मोक्ष कब मिलता है ? जब उसका अहङ्कार नष्ट हो जाता है।

११० जब एक तीक्ष्ण कांटा पैर में चुभ जाता है तो मनुष्य उसको निकालने के लिये दूसरे कांटे का उपयोग करता है और फिर दोनों को फेंक देता है। उसी प्रकार हमको अन्धा बनाने वाले सापेक्ष (relative) अज्ञान का नाश सापेक्ष ज्ञान से ही होना चाहिये। जब मनुष्य का सर्वोच्च ब्रह्म का ज्ञान हो जाता है तो अज्ञान और ज्ञान नष्ट हो जाते हैं और वह इन द्वन्दों से रहित हो जाता है।

१११ माया के पंजे से छुटकारा पाने के लिये हमें क्या करना चाहिये ? उसकी पकड़ से मुक्त होने की प्रबल उत्कंठा करने वाले को ईश्वर छुटकारे का मार्ग दिखलाता है। माया से छूटने के लिये उससे छूटने की प्रबल उत्कंठा भर की आवश्यकता है।

११२ यदि तुम माया के सच्चे स्वरूप को पहिचान लो तो वह तुम्हारे पास से इस तरह भाग जाय जिस प्रकार तुम्हें देखकर चोर भाग जाता है।

११३ सच्चिदानन्द सागर में गहरी डुब्बी लगाओ। काम, क्रोध आदि भयानक जलजन्तुओं से न डरो। विवेक और वैराग्य की हलदी का गहरा लेप अपने अंग में लगाओ तो ये जलचर जीव तुम्हारे पास न आवेंगे क्योंकि हल्दी की महक से उनको दुसह दुःख होता है।

११४ जिन स्थानों में मोह में पड़ जाने का भय हो उन स्थानों में यदि जाने की आवश्यकता ही पड़ जाय तो जगत्माता का चिन्तन करते हुये वहां जाओ। वह उन दुर्वृत्तियों से भी तुम्हारी रक्षा करेगी जो तुम्हारे हाथ में बैठी हुई हैं। जगत्माता को उपस्थित समझकर बुरे विचार मन में लाने या बुरे काम करने में तुम्हें लज्जा मालूम होगी।

११५ ईश्वर की प्रार्थना क्या हमें जोर से करनी चाहिये? जिस प्रकार तुम्हारा जी चाहे उस प्रकार तुम उसकी प्रार्थना करो, हर हालत में वह तुम्हारी प्रार्थना सुनेगा। वह तो चींटी के पैरों की आवाज तक को भी सुन सकता है।

११६ शरीर पर के प्रेम को हम किस प्रकार जीत सकते हैं। यह शरीर नश्वर वस्तुओं से बना है। और इसमें तो मज्जा, मांस, रुधिर आदि अनेक घृणित वस्तुयें भरी हुई हैं। इस प्रकार शरीर की बनावट पर जब पृथक् पृथक् हम विचार करेंगे तो उसके प्रति घृणा पैदा होगी और शरीर पर का हमारा प्रेम नष्ट हो जायगा।

११७ भक्त को क्या किसी विशेष प्रकार के वस्त्र पहिनने की आवश्यकता है? योग्य वस्त्रों का पहिनना सदैव उत्तम है। भगवे वस्त्र पहिनने अथवा झांझ और खभड़ी लेकर चलने से संभव है मनुष्य गाली न बके या गन्दे गाने न गाये। लेकिन चटकदार वस्त्र पहिनने से संभव है मुँह से गाली भी निकले और गन्दे गाने भी गाये जाय।

११८ मनुष्य के हृदय में ईश्वर के प्रगट होने के क्या चिन्ह हैं? जिस प्रकार सूर्योदय के पहिले अरुणोदय होता है उसी प्रकार ईश्वर के प्रगट होने के पहिले मनुष्य के हृदय में स्वार्थत्याग, पवित्रता, सत्यनिष्ठा आदि गुण आकर अपना अधिकार जमाते हैं।

११९ अपने सेवक के घर जाने के पहिले राजा आवश्यक कुर्सियां, आभूषण, भोजन के पदार्थ आदि भेज देता है ताकि वह भले

प्रकार उनका स्वागत कर सके, उसी प्रकार आने के पहिले परमात्मा भक्त के हृदय में प्रेम, भक्ति और श्रद्धा पहिले ही से उत्पन्न कर देते हैं।

१२० सांसारिक और ऐहिक सुखों की आसक्ति कब नष्ट होती है? सच्चिदानन्द परमात्मा सब सुख और आनन्द का भण्डार है। जो उसमें आनन्द का उपयोग करते हैं वे संसार के क्षणभंगुर सुख में आसक्त नहीं हो सकते।

१२१ मन की कौन सी स्थिति में ईश्वर के दर्शन होते हैं? ईश्वर के दर्शन उस समय होते हैं जब मन शान्त रहता है। जब तक मनरूपी समुद्र में वासनारूपी हवा चलती रहती है तब तक उसमें ईश्वर का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता।

१२२ हम अपने ईश्वर को किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं? मछुआहा चारा लगाकर और बंसी को पानी में फेंककर घण्टों चुपचाप धैर्य के साथ बैठा प्रतीक्षा करता है, तब वह मनचाही बड़ी और सुन्दर मछली फँसा सकता है, उसी प्रकार भक्त को भी यदि ईश्वर को प्राप्त करना है तो धैर्य के साथ चिरकाल तक ईश्वर की उपासना करनी होगी।

१२३ नवजात बछवा पहिले अनेकों बार फिसलता और गिरता है तब कहीं उसे खड़े होने में सफलता मिलती है, उसी प्रकार भक्ति के मार्ग में भी सफलता प्राप्त करने के लिये पहिले कई बार फिसलना और गिरना होगा।

१२४ कहते हैं एक बार दो पुरुष शव-साधन नाम की भयंकर विधि से काली माता की उपासना करने लगे। (यह तान्त्रिक विधि रात्रि के समय श्मशान भूमि में एक शव पर बैठ कर की जाती है) पहिला तांत्रिक तो पहिले ही पहर में रात्रि की भयंकरता से घबड़ा कर पागल हो गया और दूसरे को रात बीतने पर काली माता के दर्शन हुये। उसने माता से पूछा "मां, वह आदमी पागल क्यों हो गया?"

देवी ने उत्तर दिया, "बेटा, तू भी पूर्व जन्मों में अनेक बार पागल हो चुका है और अन्त में इस बार तुझे मेरा दर्शन हुआ है।"

१२५. हिन्दुओं में अनेकों पन्थ व मत हैं। हमें कौन से मत को स्वीकार करना चाहिये?

पार्वतीजी ने एक बार महादेव जी से पूछा "भगवन्, नित्य, सनातन सर्वव्यापी, सच्चिदानन्द की प्राप्ति का मूल क्या है।" महादेवजी ने उत्तर दिया, "श्रद्धा"। कौन किस धर्म का है और किसके धर्म में कौन कौन सी विशिष्ट बातें हैं, इससे कोई मतलब नहीं। मतलब केवल यही है कि अपने अपने पन्थ की उपासना और दूसरे कर्तव्यों का पालन प्रत्येक मनुष्य श्रद्धा के साथ करे।

१२६ एक छोटे पौधे की रक्षा बकरे, गाय और छोटे बच्चों से उसके चारों ओर तार बाँध कर करनी चाहिये। किन्तु जब वह एक बड़ा वृक्ष हो जाता है तो अनेकों बकरियाँ और गायें स्वच्छन्दता के साथ उसी के नीचे विश्राम करती हैं और उसकी पत्तियाँ खाती हैं। उसी प्रकार जब तक तुममें थोड़ी ही भक्ति है तब तक बुरी संगति और संसार के प्रपञ्च से उसकी रक्षा करनी चाहिये। लेकिन जब उसमें दृढ़ता आ गई तो फिर तुम्हारे समक्ष कुवासनाओं का आने की हिम्मत न होगी, और अनेकों दुर्जन तुम्हारे पवित्र सहवास से सज्जन बन जायँगे।

१२७ चकमक पत्थर पानी में सैकड़ों वर्ष पड़ा रहता है किन्तु उसके भीतर की अग्नि-उत्पादक शक्ति नष्ट नहीं होती। जब आपका जी चाहे उसे लोहे से रगड़िये, वह तुरन्त आग उगलने लगेगा। ऐसा ही हाल दृढ़ शक्ति रखने वाले भक्तों का भी है। वे संसार के बुरे से बुरे प्राणियों के बीच में भले ही रहें लेकिन उनकी भक्ति कभी नष्ट नहीं हो सकती। ज्योंही वे ईश्वर का नाम सुनते हैं त्योंही उनका हृदय प्रफुल्लित होने लगता है।

१२८ प्रवाह का पानी बराबर सीधा बहता है लेकिन कभी २ भँवर पड़ जाने से उसके बहाव का सीधापन रुक जाता है, उसी प्रकार भक्तों का हृदय भी सदैव प्रसन्न रहता है, हां, कभी कभी निराशा दुख और अश्रद्धा के भँवर के बीच में पड़ कर उनकी प्रसन्नता रुक जाती है।

१२९ एक मनुष्य ने कुआँ खोदना शुरू किया। २० हाथ खोदने पर उसे पानी का सोता नहीं मिला। उसने उसे छोड़ दिया और दूसरी जगह दूसरा कुआं खोदने लगा। यहां उसने कुछ अधिक गहराई तक खोदा किन्तु वहां भी पानी न निकला। उसने फिर तीसरी जगह तीसरा कुआ खोदना शुरू किया। इसको उसने और अधिक गहराई तक खोदा किन्तु यहां भी पानी न निकला। तीनों कुआं की खुदाई १०० हाथ से कुछ ही कम हुई होगी। यदि पहिले ही कुयें को वह केवल ५० हाथ धीरता के साथ खोदता तो उसे पानी अवश्य मिलता। यही हाल उन लोगों का है जो अपनी श्रद्धा बराबर बदलते रहते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिये सब ओर से चित्त हटा कर केवल एक ही ओर अपनी श्रद्धा लगानी चाहिये और उसकी सफलता पर विश्वास करना चाहिये।

१३० पानी में पत्थर सैकड़ों वर्ष पड़ा रहे लेकिन पानी उसके भीतर नहीं घुस सकता। चिकनी मिट्टी पानी के स्पर्श ही से घुलने लगती है। उसी प्रकार भक्तों का दृढ़ हृदय कठिन से कठिन दुःख पड़ने पर भी कभी निराश नहीं होता, लेकिन दुर्बल श्रद्धा रखने वाले पुरुषों का हृदय छोटी छोटी बातों से हताश होकर घबड़ाने लगता है।

१३१ रेलगाड़ी का इञ्जन माल से खचाखच भरे हुये डिब्बों को बड़ी आसानी से अपने साथ खींच ले जाता है। उसी प्रकार ईश्वर के प्यारे सच्चे भक्त भी अनेकों सांसारिक मनुष्यों को खींचकर

ईश्वर तक पहुँचा देते हैं, चिन्ताओं और कठिनाइयों की कोई परवाह नहीं करते।

१३० बच्चे का भोलापन कितना अच्छा मालूम होता है। वह संसार की संपत्ति और वैभव से खिलौनों को अधिक पसन्द करता है। यही हाल भक्तों का भी है। उनका भोलापन बड़ा मोहक होता है और ये संसार की संपत्ति और वैभव से ईश्वर का प्राप्त करना अधिक पसन्द करते हैं।

१३३ जिस प्रकार बालक खम्भे को पकड़कर चारों ओर घूमता है और उसे गिरने का भय नहीं रहता, उसी प्रकार मनुष्य भी ईश्वर में सच्चा श्रद्धा रखकर निर्भय होकर संसार के कामों में लग सकता है।

१३४ खुत खेत में भरे हुये एक छोटे नाले का पानी कोई इस्तेमाल भी न करे तब भी वह सूख जाता है उसी प्रकार पापात्मा भी कभी कभी ईश्वर की कृपा से त्यागी बनकर मुक्त हो जाते हैं।

१३५. "ब—कालमा" ऐसा सुरक्षित और सुगम कोई दूसरा मार्ग नहीं है। "ब—कालमा" का अर्थ है ईश्वर को सवस्व समझना और ममत्व की (यह चीज़ मेरी है इसकी) विस्मृति होना।

१३६ ईश्वर पर पूर्ण अवलम्ब रखने का स्वरूप क्या है? वह आनन्द की वह दशा है जिसका अनुभव एक पुरुष दिन भर परिश्रम के पश्चात् सायंकाल को तकिये के सहारे लेट कर सिगरेट पीता हुआ करता है। चिन्ताओं और दुखों का रुक जाना ही ईश्वर पर पूर्ण अवलम्ब रखने का सच्चा स्वरूप है।

१३७ जिस प्रकार हवा सूखी पत्तियों को इधर उधर उड़ा ले जाती है, उनको इधर उधर उड़ने के लिये न तो अपनी अक्ल खर्च करने की आवश्यकता पड़ती है और न परिश्रम करना पड़ता है, उसी प्रकार ईश्वर के भक्त ईश्वर की इच्छा से सब काम करते रहते हैं, वे अपनी अक्ल नहीं खर्च करते और न स्वयं परिश्रम करते हैं।

१३८ पका हुआ आम श्री ठाकुरजी के भोग लगाने या किसी दूसरे काम में लाया जा सकता है, लेकिन कौव्वा जब चोंच मार देता देता है तो उसका न तो भोग लगाया जाता है और न वह दान में दिया जा सकता है। साधू लोग उसे खाते भी नहीं। उसी प्रकार लड़कपन से ही लड़कों और लड़कियों को ईश्वर की भक्ति की ओर लगाना चाहिये। उस समय उनका हृदय वासनाओं के स्पर्श न होने के कारण निर्मल रहता है। एक बार जब वे वासनाओं और विषयों में व्यस्त हो जाते हैं तो उनको उधर से हटाकर हमेशा सन्मार्ग पर लाना बहुत कठिन हो जाता है।

१३९ गरुआ वस्त्र पहिनने से क्या लाभ? पोशाक में क्या रक्खा है?

फटे पुराने जूते और फटे पुराने वस्त्रों के पहिनने से नम्र विचार उठते हैं, कोट पैण्ट और बूट पहिनने से अभिमान पैदा होता है, काले किनारे की बढ़िया मलमल की धोती पहिनने से इश्क भरे गानों को गाने का जी चाहता है, उसी प्रकार गेरुआ वस्त्र पहिनने से स्वभावत पवित्र विचार उत्पन्न होते हैं। स्वयं वस्त्र का कोई अर्थ नहीं है। लेकिन भिन्न २ प्रकार के वस्त्रों के पहिनने से भिन्न २ प्रकार के विचार उत्पन्न होते है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

१४० एक पिता अपने एक लड़के को गोद में लिये और दूसरे की अँगुली पकड़े एक खेत में होकर जा रहे थे। उन दोनों लड़कों ने एक उड़ता हुई पतङ्ग को देखा। दूसरे लड़के ने पिता की अगुली छोड़ दी और खुशी से थपड़ी पीटने लगा। पिता का हाथ छोड़ते ही ठोकर खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा और उसके चोट लग गई। पहिले लड़के ने भी थपाडियाँ पीटीं लेकिन वह गिरा नहीं क्योंकि पिता उसे गोद में लिये हुये था। अपने ही प्रयत्न से आध्यात्मिक उन्नति करने

वाला मनुष्य पहिले लड़के की तरह है और सब प्रकार से ईश्वर की शरण जाने वाला मनुष्य दूसरे लड़के की तरह।

१४१ पुरानी कहावत है कि, "गुरू हजारों की संख्या में मिल सकते हैं किन्तु चेला एक भी मिलना दुर्लभ है।" इसका मतलब यह है कि शिक्षा देने वाले पुरुष अनेकों हैं किन्तु उनके अनुसार चलने वाले बहुत कम।

१४२ सूर्य्य का प्रकाश सब जगह एक समान पड़ता है किन्तु उसका प्रतिबिम्ब पानी, शीशा या पालिश किये हुये बरतन सदृश वस्तुओं ही में पड़ता है। यही हाल ईश्वरीय प्रकाश का भी है। वह बिना किसी पक्षपात के मनुष्यों के अन्त करणों में एक समान पड़ता है लेकिन उसका प्रतिबिम्ब केवल नेक और पवित्र भक्तों के ही हृदय में पड़ता है।

१४३ कचौड़ियों का बाहरी भाग आटे का होता है लेकिन उनके भीतर नाना प्रकार के मसाले भरे होते हैं। कचौड़ी की अच्छाई और बुराई भीतर के मसाले पर निर्भर है। उसी प्रकार सब मनुष्य का केवल शरीर तो एक ही चीज़ से बना है लेकिन अपने हृदय की पवित्रता के अनुसार वे भिन्न २ प्रकार के हैं।

१४४ धर्म क्यों बिगड़ते हैं? मेंह का पानी साफ होता है यह सच है लेकिन यदि गन्दी छतें, गन्दे नल और नालियों में हो होकर बहे तो वह भी गन्दा होगा, इसमें सन्देह ही क्या है।

१४५ नमक के, कपड़े और पत्थर के खिलौने पानी में डुबोने से नमक के खिलौने तो पानी में घुल जाते हैं, कपड़े के खिलौने खूब पानी सोखते हैं और अपना स्वरूप कायम रखते हैं लेकिन पत्थर के खिलौने में पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सर्वव्यापक विश्वात्मा में अपनी आत्मा को मिला देने वाला पुरुष नमक के खिलौने के सदृश है,

उसे मुक्त पुरुष समझो, ईश्वरीय आनन्द और ज्ञान से भरा हुआ पुरुष कपड़े के खिलौने के सदृश है, उसे भक्त समझो, जिसके हृदय में सच्चे ज्ञान का लेश मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता वह पत्थर के खिलौने के सदृश्य है, उसे ससारी मनुष्य समझो।

१४६ सत्य, रज और तम इनमें से प्रत्येक की अधिकता के अनुसार मनुष्य भिन्न २ प्रकार के होंगे।

१४७ Caterfillar अपने ही बनाये हुये Cocoon में बन्दी रहता है, उसी प्रकार ससारिक मनुष्य भी अपने ही द्वारा उत्पन्न की हुई वासनाओं के जाल में बन्दी रहता है। caterfillar जब बढकर एक तितली बन जाता है तो वह Cocoon को फाड़कर निकल जाता है और खुली हवा और प्रकाश में स्वच्छन्दता से विचरण करता है। उसी प्रकार जब सांसारिक मनुष्य भी विवेक और वैराग्य से माया को नष्ट कर देता है तो वह भी स्वच्छन्द होकर ईश्वर के चरणों का स्पर्श करके सच्चे सुख का अनुभव करता है।

१४८ प्रेम (भक्ति) तीन प्रकार का होता है, (१) स्वार्थ रहित (समर्थ) (२) अन्योन्यगामी (समन्जस) (३) स्वार्थपूर्ण (साधारण)। स्वार्थरहित प्रेम सर्वश्रेष्ठ है। इसमें प्रेमी केवल अपनी प्रेमिका के हित की चिन्ता करता है और उसको प्राप्त करने में जो २ कष्ट होते हैं उन्हें भोग लेता है। अन्योन्यगामी प्रेम में प्रेमी प्रेमिका को सुखी रखने का प्रयत्न करता है लेकिन साथ ही यह भी चाहता है कि प्रेमिका भी उसे सुखी रक्खे। स्वार्थपूर्ण प्रेम सब से नीचे दरजे का प्रेम है। इसमें प्रेमी केवल अपनी प्रसन्नता का ख्याल रखता है, प्रेमिका के सुख दुख की कुछ परवाह नहीं करता।

१४९ बहुतों ने बर्फ का केवल नाम सुना है लेकिन उसे देखा नहीं, उसी प्रकार बहुत से धर्मोपदेशकों ने ईश्वर के गुणों को धर्मग्रन्थों में पढा है लेकिन अपने जीवन में उनका अनुभव नहीं किया। बहुतों ने

बर्फ को देखा है लेकिन उसका स्वाद नहीं लिया। उसी प्रकार बहुत से धर्मोपदेशकों को ईश्वर के तेज का एक बूँद मिल गया है लेकिन उन्होंने उसके तत्व को नहीं समझा। जिन्होंने बर्फ को खाया है वे ही उसके स्वाद को बता सकते हैं उसी प्रकार जिन्होंने ईश्वर की संगति का लाभ भिन्न २ अवस्थाओं में उठाया है, कभी ईश्वर का सेवक बनकर, कभी मित्र बनकर, कभी भक्त बनकर और कभी एकदम उसी में लीन होकर, वे ही बतला सकते हैं कि परमेश्वर के गुण क्या हैं और उसकी संगति के प्रेमरस का आस्वादन करने से कैसा आनन्द मिलता है।

१५० सब आत्मायें एक हैं लेकिन परिस्थितियों के अनुसार उनकी चार किस्म हैं।

(१) बद्ध—बन्दी की हुई।
(२) मुमुक्षु—मोक्ष की इच्छा करने वाली
(३) मुक्त मोक्ष प्राप्त की हुई।
(४) नित्यमुक्त—सदैव मुक्त रहने वाली।

१५१ ईश्वर चीनी के पहाड़ की तरह है। एक छोटी चींटी चीनी का एक दाना लाती है, बड़ी चींटी कुछ अधिक दाने लाती है लेकिन पहाड़ ज्यों का त्यों बना रहता है। यही हाल भक्तों का है। वे ईश्वर के गुणों म से एक गुण का लेशमात्र भी पाकर प्रसन्न हो जाते हैं। उसके सम्पूर्ण गुणों का अनुभव कोई कर नहीं सकता।

१५२ कुछ लोगों को एक गिलास भर शराब पीने से नशा आता है और कुछ को नशा लाने के लिये दो या तीन बोतलों की आवश्यकता होती है लेकिन नशे का अनुभव दोनों करते हैं। उसी प्रकार कुछ भक्त ईश्वरीय-तेज के एक किरन को पाकर प्रसन्न हो जाते हैं और कुछ प्रत्यक्ष उसके दर्शन को पाकर प्रसन्न होते हैं लेकिन भाग्यशाली हैं दोनों। आनन्द दोनों को मिलता है।

१५३ साधुओं की संगति चावल के धोवन की तरह है। चावल के धोवन को पीने से नशा उतर जाता है, उसी प्रकार साधुओं की संगति से वासना-रूपी शराब का पीकर उन्मत्त सांसारिक लोगों का नशा उतर जाता है।

१५४ ज़मींन्दार का कारिन्दा जब गाँवों में वसूली तहसील करने के लिये जाता है तो रिआया को बहुत सताता है, लेकिन जब वह मालिक के पास जाता है तो उसका बर्ताव बदल जाता है। वहाँ पहुँची हुइ रिआया के दु खों को वह सुनता है और उन्हें दूर करने का भरसक प्रयत्न करता है। मालिक के डर और उसकी सोहबत से इतना परिवर्तन कारिन्दे में होता है। उसी प्रकार साधुओं की भी सोहबत दुष्टों को अच्छे मार्ग पर ला सकती है और उनके हृदय में डर और भक्ति पैदा कर सकती है।

१५५ गीली लकड़ी भी आग पर रखने से सूखी हो जाती है और आखिरकार शीघ्र जलने लगती है। उसी प्रकार महात्माओं का सत्संग भी सांसारिक पुरुषों और स्त्रियों के दिलों से लाभ और विषय की नमी का सुखाकर विवेक की अग्नि को प्रज्वलित कर सकता है।

१५६ मनुष्य अपनी आयु किस प्रकार व्यतीत करे। जिस प्रकार अगीठी की आग को बुझने न देकर प्रज्वलित रखने के लिये सदैव एक लोहे के छड़ से खोदते रहने की आवश्यकता है, उसी प्रकार मन को भी सचेत रखने के लिये और उसे निर्जीव होने से बचाने के लिये महात्माओं के सत्सङ्ग की आवश्यकता है।

१५७ धौंकनी धौंक कर जिस प्रकार लोहार अग्नि को सजीव रखता है उसी प्रकार मन को भी महात्माओं के सत्संग से सजीव रखना चाहिये।

१५८ समाधि में मन की क्या स्थिति होती है ? मछली का पानी से निकाल कर फिर उसे पानी में डालने से जो आनन्दमय

स्थिति उसके मन की होती है वही आनन्दमय स्थिति समाधि में महात्माओं के मन की होती है।

१५९ सच्चा मनुष्य वह है जो सत्य ज्ञान के प्रकाश से जलो बनता है। शेष तो नाममात्र के मनुष्य हैं।

१६० "अहङ्कार" (Ego) की दो किस्में हैं, (१) एक पक्का और (२) दूसरा कच्चा। पक्का अहङ्कार वह है जिसमें मनुष्य सोचता है कि इस ससार में मेरा अपनी कोई वस्तु नहीं है यहां तक कि यह शरीर मेरा नहीं है, मैं सनातन से हूँ, मुक्त हूँ, और सर्वज्ञ हूँ। कच्चा अहङ्कार वह है जिसमे मनुष्य सोचता है कि यह मेरा घर है, यह मेरी स्त्री है, ये मेरे लड़के हैं और यह मेरा शरीर है।

१६१ एक ज्ञानी (ईश्वरज्ञ) और एक प्रेमिक (ईश्वर भक्त) एक बार किसी जङ्गल के बीच से जा रहे थे। जाते जाते उनको एक चीता दिखलाई पड़ा। ज्ञानी ने कहा, "डर कर भागने की कोई बात नहीं है ईश्वर हमारी रक्षा करेगा।" प्रेमिक ने कहा, "भाई साहब, आइये हम लोग भाग चले, जो हम स्वयं कर सकते हैं उसमें ईश्वर को कष्ट देने की क्या आवश्यकता ?"

१६२ ज्ञान (ईश्वर का ज्ञान) मनुष्य की तरह है और भक्ति स्त्री की तरह। ज्ञान का प्रवेश ईश्वर के केवल बाहरी कमरों तक होता है और भक्ति तो उसके भीतरी कमरों में भी घुस जाती है।

१६३ गिद्ध ऊँचे हवा पर उड़ता है परन्तु उसका ध्यान नीचे मरघट के गले सड़े मुरदों की ओर रहता है। उसी प्रकार संसारी पंडित भी आध्यात्मिक तत्वों का प्रतिपादन करके और उदात्त विचार प्रगट करके भावुक लोगों के सामने अपनी विद्वता दिखलाते हैं लेकिन उनका मन गुप्त रूप से सदैव द्रव्य, आत्म प्रशंसा आदि सांसारिक चीज़ों पर लगा रहता है।

१६४ केवल धमग्रन्थों को पढ कर ईश्वर का स्वरूप वर्णन करना वैसा ही है जैसा काशी के चित्र को देख कर काशी का स्वरूप वर्णन करना।

१६५ सा, री, ग, म, मुँह से कहना सहल है, लेकिन बाजे में इन पर राग निकालना कठिन है, उसी प्रकार धर्म की बातें करना सहल है लेकिन उनके अनुसार जीवन व्यतीत करना कठिन है।

१६६ हाथी के दो जोड़े दाँत होते हैं, एक दिखलाने के और दूसरे खाने के। उसी प्रकार श्रीकृष्ण आदि अवतारी पुरुष और दूसरे महात्मा साधारण पुरुषों की तरह काम करते हुये दूसरों को दिखलाइ पडते हैं लेकिन उनकी आत्मायें वास्तव म कर्मों से मुक्त होकर विश्राम करती रहती हैं।

१६७ आप उस पुरुष को कैसा समझते हैं जो एक अच्छा वक्ता और उपदेशक है लेकिन जिसमें आध्यात्मिक जागृति नहा हुइ ? वह उस मनुष्य के सदृश है जो अपने सरक्षण म रक्खी हुइ दूसरे की सपत्ति नष्ट करता है। वह दूसरों को शिक्षा दे सकता है क्योंकि ये शिक्षायें उसकी खास तो हैं नहीं, बल्कि दूसरों की (शास्त्रों की) हैं और उनम उसका कुछ खर्च होता नहीं।

१६८ तोता "राधाकृष्ण, राधाकृष्ण" बार बार कहता है लेकिन उसे जब बिल्ली पकड़ लेती है तो राधाकृष्ण भूलकर वह अपनी प्राकृतिक भाषा में "क्याँ क्याँ" करने लगता है, उसी प्रकार मनुष्य भी सासारिक सुख की आशा से हरी (ईश्वर) का नाम लेते हैं और धम के काम करते हैं लेकिन जब विपत्ति, दुःख दारिद्र और मृत्यु आते हैं तो वह ईश्वर का और धम के कामों को भूल जाता है।

१६९ खपड़ी में जो चावल भूने जाते हैं उनम से छिटक कर जो बाहर चले जाते हैं वे उत्तम होते हैं, उनमें किसी प्रकार का दाग नहीं पड़ता, और जो खपडी में भूने जाते हैं उनम से हरेक म एक छोटा

सा जला हुआ दाग ज़रूर पड़ जाता है। उसी प्रकार ईश्वर के भक्तों में भी जो संसार को छोड़कर बाहर चले जाते हैं वे पूर्ण और कलंक रहित होते हैं और जो संसार में रह जाते हैं उनमें अपूर्णता का छोटा सा दाग जरूर लगा रहता है।

१७० दही से मक्खन को निकाल कर उसी बरतन में नहीं रखना चाहिये नहीं तो मक्खन की मिठास कम हो जायगी और वह पतला पड़ जायगा। उसे दूसरे बरतन में स्वच्छ पानी डालकर रखना चाहिये। उसी प्रकार संसार में रहकर यदि थोड़ी सी पूर्णता (सिद्धि) किसी मनुष्य को मिल जाय और वह मनुष्य संसार ही में आगे भी रहे तो उसके दूषित होने की संभावना है। लेकिन वह संसार से अलिप्त रहकर सिद्धि को काम में लाता हुआ अलिप्त रह सकता है।

१७१ काजल की कोठरी में रहकर आप चाहे कितने सावधान रहें, काजल कुछ न कुछ अवश्य लगेगा। उसी प्रकार दुष्टों की संगति में रहकर मनुष्य चाहे जितना संयम रक्खे और अपने चरित्र की देख भाल करे, लेकिन उसका मन विषय वासना की ओर कुछ न कुछ जरूर जायगा।

१७२ एक ब्राह्मण और एक सन्यासी सांसारिक और धार्मिक विषयों पर बातचीत करने लगे। सन्यासी ने ब्राह्मण से कहा, "बंधु, इस संसार में कोई किसी का नहीं है।" ब्राह्मण इसको कैसे मान सकता था। वह तो यही समझता था कि अरे मैं तो दिन रात अपने कुटुम्ब के लोगों के लिये मर रहा हूँ क्या वे मेरी सहायता समय पर न करेंगे? ऐसा कभी नहीं हो सकता। उसने सन्यासी से कहा, "महाराज, जब मेरे सिर में थोड़ी सी पीड़ा होती है तो मेरी मां को बड़ा दुःख होता है और दिन रात वह चिन्ता करती है क्योंकि वह मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करती है। प्रायः वह कहती है कि भइया के सिर की पीड़ा अच्छी करने के लिये मैं अपने प्राण तक

देने को तैयार हूँ। ऐसी मां समय पड़ने पर मेरी सहायता न करे, ऐसा कभी हो नहीं सकता।" सन्यासी ने जवाब दिया, "यदि ऐसी बात है तो तुम्हें वास्तव में अपनी मां का भरोसा करना चाहिये, लेकिन मैं तुमसे सचसच कहता हूँ कि तुम बड़ी भूल कर रहे हो। इस बात का कभी भी विश्वास न करो कि तुम्हारी मा, तुम्हारी स्त्री या तुम्हारे लड़के तुम्हारे लिये अपने प्राणों का बलिदान कर देंगे। यदि चाहो तो परीक्षा कर सकते हो। घर जाकर पेट की पीड़ा का बहाना करो और जोर २ चिल्लाओ। मैं आकर तुमको एक तमाशा दिखाऊँगा। ब्राह्मण के मन में बात आ गई और उसने दर्द का बहाना किया। डाक्टर, वैद्य, हकीम सब बुलाये गये लेकिन दर्द नहीं मिटा। बीमार मां, स्त्री और लड़के मारे रञ्ज के परेशान थे। इतने में सन्यासी महाराज भी पहुँच गये। उन्होंने कहा "बीमारी तो बड़ी गहरी है, जब तक बीमारी के लिये अपना कोई जान न दे दे तब तक वह अच्छा नहीं होने का।"

इस पर सब भौचक्के रह गये। सन्यासी ने मां से कहा, "बूढ़ी माता, तुम्हारे लिये जीवित रहना और मरना एक समान है, इसलिये यदि तुम अपने कमाऊ पूत के लिये अपनी जान दे दो तो मैं उसे अच्छा कर सकता हूँ। अगर तुम मा होकर अपनी जान नहीं दे सकती तो फिर अपनी जान और दूसरा कौन देगा?

बुढिया रो रोकर कहने लगी, "बाबा जी, आपका कहना तो सत्य है, मैं अपने प्यारे पुत्र के लिये प्राण देने को तैयार हूँ, लेकिन ख्याल यही है कि ये छोटे २ बच्चे मुझसे बहुत लगे (परचे) हैं, मेरे मरने से इनको बड़ा दुःख होगा। अरे, मैं बड़ी अभागिनी हूँ कि अपने बच्चे के लिये अपनी जान नहीं दे सकती।" इतने में स्त्री भी रोती रोती अपने सास ससुर की ओर देखकर बोल उठी, "मां, तुम लोगों की वृद्धावस्था देखकर मैं अभी अपने प्राण नहीं दे सकती।" सन्यासी ने

घूमकर स्त्री से कहा, "पुत्री, तुम्हारी मा तो पीछे हट गई, लेकिन तुम तो अपने प्यारे पति के लिये अपनी जान दे सकती हो।" उसने उत्तर दिया "महाराज, मैं बड़ी अभागिनी हूँ, मेरे मरने से मेरे मां बाप मर जायगे इसलिये म यह हत्या नहीं ले सकती।" इस प्रकार सब लोग जान देने के लिये बहाने करने लगे। सन्यासी ने तब रोगी से कहा, "क्यों जी देखते हो न, कोई तुम्हारे लिये जान देने को तैयार नहीं हैं। "कोइ किसी का नहीं है" मेरे इस कहने का मतलब अब तुम समझे कि नहीं।" ब्राह्मण ने जब यह हाल देखा तो कुटुम्ब को छोड़ कर वह भी सन्यासी के साथ बन को चला गया।

१७३ मन का दुष्ट वासनाओं में रहना इस प्रकार बुरा होता है जिस प्रकार उच्चकुलोत्पन्न ब्राह्मण का अछूतो के साथ रहना अथवा सज्जनों का नगर के गन्दे महल्ले में रहना।

१७४ जिस प्रकार पानी का प्रभाव पत्थर में नहीं पड़ सकता उसी प्रकार धार्मिक उपदेशों का प्रभाव बद्ध जीवों पर नहीं पड़ता।

१७५ जिस प्रकार कील पत्थर में नहीं गाड़ी जा सकती जमीन में आसानी से गाड़ी जा सकती है, उसी प्रकार साधुओं के उपदेशों का बद्ध जीवों पर कोई प्रभाव नहीं होता, भक्तों पर ही होता है।

१७६ जिस प्रकार मिट्टी पर निशान फौरन उठ आता है, पत्थर पर नहीं उठता, उसी प्रकार भक्तों के हृदयों में धार्मिक शिक्षाओं का प्रभाव पड़ता है, बद्ध जीवों के हृदयों पर नहीं।

१७७ जिस प्रकार छोटे लड़के और छोटी लड़की को वैवाहिक सुख या प्रेम का ज्ञान नहीं होता उसी प्रकार सांसारिक मनुष्य को ईश्वर के दर्शन व सुख की कल्पना नहीं होती।

१७८ जब तक शीशे में मिट्टी लगी रहती है तब तक सूर्य की किरणों का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता, उसी प्रकार जब तक हृदय में अपवित्रता भरी रहती है और आंखों के सामने माया का परदा लटकता

रहता है तब तक ईश्वर की ज्योति कभी दिखलाई नहीं पड़ सकती। जिस प्रकार मिट्टी पोंछ डालने से शीशे में किरणें दिखलाई देने लगती हैं उसी प्रकार अपवित्रता और माया को दूर कर देने से हृदय में ईश्वर दिखलाई देने लगता है।

१७९ कमानी की कुर्सी पर (अथवा कोंच पर) बैठने से वह नीचे दब जाती है लेकिन उठ जाने पर वह फिर पूर्ववत् उठ जाती है। सांसारिक लोगों की भी यही दशा है। जब तक ये उपदेशकों के उपदेशों को सुनते रहते हैं, तब तक उनके हृदय में धार्मिक भाव भरे रहते हैं। लेकिन जब वे अपने काम में लग जाते हैं तो ऊँचे और उत्तम विचार उनके हृदय से निकल जाते हैं और पहिले की तरह वे फिर अपवित्र बन जाते हैं।

१८० लोहा जब तक तपाया जाता है तब तक लाल रहता है। लेकिन जब बाहर निकाल लिया जाता है तो काला पड़ जाता है। यही दशा सांसारिक मनुष्यों की भी है। जब तक वे मन्दिरों में अथवा अच्छी संगति में बैठते हैं तब तक उनमें धार्मिक विचार भी रहते हैं, किन्तु जब वे उनसे अलग हो जाते हैं तो वे फिर धार्मिक विचारों को भूल जाते हैं।

१८१ सांसारिक मनुष्यों की सब से अच्छी पहिचान यह है कि जिन जिन बातों में धार्मिकता होती है, उन उन बातों से वे घृणा करते हैं। उनको भजन ईश्वर का संकीर्तन स्वयं अच्छा नहीं लगता और चाहते हैं कि दूसरे भी उन्हें नापसन्द करें। जो ईश्वर की प्रार्थना की हंसी उड़ाते हैं और सब धर्मों और भक्तों की निन्दा करते हैं वे सांसारिक पुरुष नहीं हैं और हैं क्या?

१८२ मगर का चमड़ा इतना मोटा और चिकना होता है कि उस पर कोई शस्त्र नहीं घुस सकता। उसी प्रकार सांसारिक मनुष्यों को उपदेश देने से उन पर कोई प्रभाव नहीं होता।

१८३ पापी मनुष्य का हृदय छल्लेदार बाल की तरह होता है। जिस प्रकार छल्लेदार बाल सीधा करने से सीधा नहीं होता, उसी प्रकार पापी मनुष्य का हृदय भी आसन से पवित्र नहीं बनाया जा सकता।

१८४ धीवरों की स्त्रियां का एक झुण्ड दूर के बाजार से घर लौट रहा था। रास्ते में रात हो गई और ज़ोर से पानी और पत्थर पड़ने लगा। वे भागकर पास रहनेवाले एक माली के घर चली गई। माली ने एक कमरे में खूब फूल इकट्ठे कर रक्खे थे। उसने वही कमरा उन स्त्रियों को रात भर सोने के लिये दिया। कमरा इस कदर से महक रहा था कि बड़ी देर तक उनको नींद न आई। अन्त में एक ने कहा, "आओ, इस मछली के पीपे को अपनी २ नाक में लगा लें तब फूल की महक न मालूम होगी और निद्रा भी खूब आवेगी।" यह बात सब को पसन्द आई और सब ने नाक में पीपे लगा लिये और तुरन्त सोने लगीं। सचमुच बुरी आदतों का प्रभाव लोगों पर ऐसा ही पड़ता है।

१८५ छोटे २ बच्चे बिना किसी भय या रुकावट के मकान के एक कमरे में खिलौनों के साथ खेलते रहते हैं लेकिन जब उनकी मां उस कमरे में आती है तो खिलौनों को फेंक कर वे "अम्मा, अम्मा" कहते हुये मां की ओर दौड़ते हैं, उसी प्रकार ऐ मनुष्यो तुम भी इस भौतिक संसार में छोटे २ बच्चों की तरह बिना भय या चिन्ता के धन, मान और कीर्ति रूपी खिलौनों के साथ खेल रहे हो, जब तुमको जगन्माता का एक बार दर्शन हो जायगा तो धन, मान और कीर्ति को छोड़कर तुम उसकी ओर दौड़ोगे।

१८६ किसी ने कहा, "जब मेरा बेटा हरीश बड़ा होगा तो मैं उसका विवाह करूँगा और फिर कुटुम्ब का भार उस पर सौंपकर मैं सन्यास ले लूँगा और फिर योगाभ्यास करूंगा।" इस पर भगवान

ने कहा, "बेटा तुमको सन्यासी होने का कभी भी अवसर न मिलेगा। तुम अभी कहते हो कि हरीश और गिरीश मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहते, वे मुझसे बहुत हिल गये हैं। कल तुम फिर यह कहने लगोगे कि जब हरीश के लड़का होगा और उसका विवाह हो जायगा तब सन्यास लूँगा। इस प्रकार न तुम्हारी इच्छाओं का अन्त होगा और न तुम सन्यासी हो सकोगे।

१८७ ज्ञान से समान भाव (Unity) का विचार पैदा होता है और अज्ञान से भेदभाव (diuresity) का।

१८८. जिस प्रकार पुल के नीचे पानी एक ओर से आता है और दूसरी ओर को बह जाता है, उसी प्रकार धार्मिक उपदेश सांसारिक मनुष्यों के दिमागों में एक कान से आते हैं और दूसरे कान से बिना कोई असर डाले निकल जाते हैं।

१८६ जिस प्रकार कबूतर के कोठे (पेट) में चुगे हुये दाने भरे रहते हैं, उसी प्रकार सांसारिक मनुष्यों से बातचीत करते समय तुमको यह प्रत्यक्ष मालूम होगा कि उनके हृदय में सांसारिक वासनायें भरी हुई हैं।

१९० जब फल आप से आप पक कर ज़मीन पर गिर पड़ता है तो वह बड़ा मीठा होता है, लेकिन जब एक कच्चा फल तोड़कर पकाया जाता है तो उसमें इतनी मिठास नहीं होती। जब मनुष्य संसार भर के प्राणियों में एक ही आत्मा को देखता है तभी उसमें जाति भेद का भाव नहीं रह जाता, लेकिन जब तक उसमें यह ज्ञान नहीं होता और प्राणियों में छोटे बड़े का भेदभाव रहता है तब तक पुरुषों को जातिभेद का विचार करना ही पड़ता है। इस दशा में भी यदि मनुष्य जातिभेद न माने और स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का बहाना करता है तो वह पकाया हुआ कच्चा फल नहीं है तो और क्या है?

१८३ पापी मनुष्य का हृदय छल्लेदार बाल की तरह होता है। जिस प्रकार छल्लेदार बाल सीधा करने से सीधा नहीं होता, उसी प्रकार पापी मनुष्य का हृदय भी आसन से पवित्र नहीं बनाया जा सकता।

१८४ धीवरों की स्त्रियों का एक झुण्ड दूर के बाजार से घर लौट रहा था। रास्ते में रात हो गई और जोर से पानी और पत्थर पड़ने लगा। वे भागकर पास रहनेवाले एक माली के घर चली गईं। माली ने एक कमरे में खूब फूल इकट्ठे कर रक्खे थे। उसने वही कमरा उन स्त्रियों को रात भर सोने के लिये दिया। कमरा इस कदर से महक रहा था कि बड़ी देर तक उनको नींद न आई। अन्त में एक ने कहा, "आओ, इस मछली के पीपे को अपनी २ नाक में लगा लें तब फूल की महक न मालूम होगी और निद्रा भी खूब आवेगी।" यह बात सब को पसन्द आई और सब ने नाक में पीपे लगा लिये और तुरन्त सोने लगीं। सचमुच बुरी आदतों का प्रभाव लोगों पर ऐसा ही पड़ता है।

१८५ छोटे २ बच्चे बिना किसी भय या रुकावट के मकान के एक कमरे में खिलौनों के साथ खेलते रहते हैं लेकिन जब उनकी मां उस कमरे में आती है तो खिलौनों को फेंक कर वे "अम्मा, अम्मा" कहते हुये मां की ओर दौड़ते हैं, उसी प्रकार ए मनुष्यो तुम भी इस भौतिक संसार में छोटे २ बच्चों की तरह बिना भय या चिन्ता के धन, मान और कीर्ति रूपी खिलौनों के साथ खेल रहे हो, जब तुमको जगन्माता का एक बार दर्शन हो जायगा तो धन, मान और कीर्ति को छोड़कर तुम उसकी ओर दौड़ोगे।

१८६ किसी ने कहा, "जब मेरा बेटा हरीश बड़ा होगा तो मैं उसका विवाह करूँगा और फिर कुटुम्ब का भार उस पर सौंपकर मैं सन्यास ले लूँगा और फिर योगाभ्यास करूंगा।" इस पर भगवान

ने कहा, 'बेटा तुमको सन्यासी होने का कभी भी अवसर न मिलेगा। तुम अभी कहते हो कि हरीश और गिरीश मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहते, वे मुझसे बहुत हिल गये हैं। कल तुम फिर यह कहने लगोगे कि जब हरीश के लड़का होगा और उसका विवाह हो जायगा तब सन्यास लूँगा। इस प्रकार न तुम्हारी इच्छाओं का अन्त होगा और न तुम सन्यासी हो सकोगे।

१८७ ज्ञान से समान भाव (Unity) का विचार पैदा होता है और अज्ञान से भेदभाव (diuresity) का।

१८८ जिस प्रकार पुल के नीचे पानी एक ओर से आता है और दूसरी ओर को बह जाता है, उसी प्रकार धार्मिक उपदेश सांसारिक मनुष्यों के दिमागों में एक कान मे आते हैं और दूसरे कान से बिना कोई असर डाले निकल जाते हैं।

१८९ जिस प्रकार कबूतर के कोठे (पेट) में चुगे हुये दाने भरे रहते हैं, उसी प्रकार सांसारिक मनुष्यों मे बातचीत करते समय तुमको यह स्पष्ट मालूम होगा कि उनके हृदय में सांसारिक वासनायें भरी हुई हैं।

१९० जब फल आप से आप पक कर जमीन पर गिर पड़ता है तो वह बड़ा मीठा होता है, लेकिन जब एक कच्चा फल तोड़कर पकाया जाता है तो उसमें इतनी मिठास नहीं होती। जब मनुष्य संसार भर के प्राणियों में एक ही आत्मा को देखता है तभी उसमें जाति भेद का भाव नहीं रह जाता, लेकिन जब तक उसमें यह ज्ञान नहीं होता और प्राणियों में छोटे बड़े का भेदभाव रहता है तब तक पुरुषों को जातिभेद का विचार करना ही पड़ता है। इस दशा में भी यदि मनुष्य जातिभेद न माने और स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का बहाना करता है तो वह पकाया हुआ कच्चा फल नहीं है तो और क्या है?

१९१ जब आंधी चलती है तो पीपल और वट के वृक्ष एक ही तरह दिखलाई देते हैं उसी प्रकार जब मनुष्य के अंतःकरण में सच्चे ज्ञान की आंधी चलने लगती है तो उसे जात पात का भेद नहीं मालूम होता।

१९२ कच्चा घड़ा जब फूटता है तो उसकी मिट्टी से कुम्हार फिर दूसरा घड़ा तैयार करता है, लेकिन जब पक्का घड़ा फूटता है तो उसके खपड़े से वह दूसरा घड़ा नहीं बनाता, उसी प्रकार जीवन भर अज्ञानी रहकर जब मनुष्य मरता है तो उसका पुनर्जन्म होता है, लेकिन जब वह पूर्ण ज्ञानी होकर मरता है तो उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

१९३ उबाला हुआ धान यदि खेत में बोया जाय तो वह नहीं जमता, लेकिन कच्चा धान जब बोया जाता है तो वह उगता है, इसी प्रकार जब मनुष्य सिद्ध होकर मरता है तो उसका पुनर्जन्म नहीं होता लेकिन जब वह असिद्ध (अज्ञानी) होकर मरता है तो जब तक वह सिद्ध नहीं हो जाता उसका पुनर्जन्म बार बार होता रहता है।

१९४ धान के भीतर के चावल का महत्व अधिक है क्योंकि उसी से पौदा उगता है, धान की भूसी का कोई महत्व नहीं है क्योंकि उससे पौदा नहीं उगता। तथापि यदि भूसी से अलग किया हुआ केवल चावल बोया जाय तो वह उग नहीं सकता। उगने के लिये भूसी मिला हुआ चावल (यानी धान) बोना ही पड़ेगा। अतएव चावल की उपज में (व्यर्थ होती हुई) भूसी से भी सहायता मिलती है। उसी प्रकार धर्म की वृद्धि के लिये धार्मिक कृत्यों का करने की आवश्यकता है। वे सत्य के तत्वों को धारण करने वाले पा[illegible] और मुख्य तत्व हाथ लगने तक [illegible] । (धार्मिक [illegible] पालन करना चाहिये।

१९५ बालक के हृदय का प्रेम पूर्ण और अखंड होता है। जब उसका विवाह हो जाता है तो आधा प्रेम उसका स्त्री की ओर लग जाता है। जब उसके बच्चे हो जाते हैं तो चौथाई प्रेम और उन बच्चों की ओर लग जाता है। बचा हुआ चौथाई प्रेम पिता, माता, मान, कीर्ति, वस्त्र और अभिमान में बँटा रहता है। ईश्वर की ओर लगाने के लिये उसके पास प्रेम बचता ही नहीं। अतएव बालकपन से ही मनुष्य का अखंड प्रेम ईश्वर की ओर लगाया जाय तो वह उस पर प्रेम लगा सकता है और उसे (ईश्वर को) प्राप्त भी कर सकता है। बड़े हो जाने पर ईश्वर की ओर प्रेम लगाना फिर कठिन हो जाता है।

१९६ जब तोता बुड्ढा हो जाता है और जब उसका गला मोटा पड़ जाता है तो उसे गाना नहीं सिखलाया जा सकता। वह गाना उसी समय सीख सकता है जब वह बच्चा हो और उसका कंठ न फूटा हो, उसी प्रकार बुढ़ापे में ईश्वर की ओर मन लगाना कठिन है। ईश्वर की ओर मन जवानी में ही लगाया जा सकता है।

१९७ बांस जब तक छोटा होता है तब तक वह हर ओर मोड़ा जा सकता है लेकिन जब वह बड़ा जाता है तो जब उसे मोड़ना होता है तो वह टूट जाता है। उसी प्रकार ईश्वर की ओर जवानों के दिलों का मोड़ना सहज है लेकिन बुड्ढों के दिलों का मोड़ना कठिन है। उनके दिल तो पकड़ में आते ही नहीं।

१९८ जब एक सेर दूध दो सेर पानी में मिलाया जाता है तो उसे औटा कर खीर बनाने में बड़ा समय और परिश्रम लगता है, उसी प्रकार सांसारिक मनुष्यों में गन्दे विचार इतने अधिक भरे रहते हैं कि उन्हें निर्मूल करने और उनकी जगह पर पवित्र विचार भरने में बड़ा समय और परिश्रम की आवश्यकता होती है।

१९९ सरसों के दाने जब बंधे हुये बंडल से नीचे छितरा जाते हैं तो उनका इकट्ठा करना कठिन है, उसी प्रकार जब मनुष्य का मन संसार की अनेक प्रकार की बातों में दौड़ता फिरता है, तो उसको रोक कर एक ओर लगाना कोई सरल बात नहीं है।

२०० क्या सब मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकेंगे? जिस प्रकार किसी मनुष्य को भोजन ९ बजे सवेरे मिलता है, किसी को दोपहर में, किसी को २ बजे और किसी को सूर्य डूबने पर; कोई भूखा नहीं जाता, उसी प्रकार किसी न किसी समय चाहे इस जीवन में हो अथवा अन्य कई जन्मों में, ईश्वर के दर्शन मनुष्य अवश्य कर सकेंगे।

२०१ प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म पर चलना चाहिये, इसाइयों को इसाई धर्म पर और मुसल्मानों को मुसलमानी धर्म पर चलना चाहिये। हिन्दुओं के लिये आर्य ऋषियों का बतलाया हुआ पुराना हिन्दू धर्म सर्वोत्तम है।

२०२ दुःख के आंसू और सुख के आंसू एक ही आंख के दो भिन्न २ कोनों से निकलते हैं। दुःख के आंसू आंख के नाक वाले कोने से निकलते हैं और सुख के आंसू आंख के बाहरी तरफ वाले कोने से।

२०३ आजकल के धर्मोपदेशक धर्म का प्रचार करने के लिये जिस प्रणाली का काम में लाते हैं उसके बारे में आपका क्या मत है?

यह प्रणाली उसी प्रकार (निरर्थक) है जिस प्रकार भोजन एक ही मनुष्य के पेट भरने को हो और उसी भरोसे पर सौ मनुष्य का निमंत्रण किया जाय। आजकल के धर्मोपदेशकों का आध्यात्मिक ज्ञान बहुत परिमित होता है। उन्हें सच्चे धर्मोपदेशक नहीं मानना चाहिये।

२०४ सच्चा उपदेश किस प्रकार का होता है?

दूसरों को उपदेश देने की अपेक्षा यदि मनुष्य उसी समय में स्वयं ईश्वर की आराधना करे तो मानो उसने काफी उपदेश दिया। सच्चा उपदेशक वही है जो स्वयं, का प्रयत्न करता है। न

मालुम कहा कहां से सैकड़ो मनुष्य उसके पास उपदेश लेने के लिये स्वय जमा हो जाते हैं। जब गुलाब फूलता है तो मधुमक्खियां बिना बुलाये आप से आप सैकड़ों की तादाद में उसके चारों ओर जमा हो जाती हैं।

२०५ स्मशान भूमि में मुरदा चुपचाप पड़ा रहता है लेकिन उसके चारों ओर सैकड़ों गिद्ध आप्से आप इकट्ठे हो जाते हैं। उनको कोई बुलाने नहीं जाता।

२०६ दीपक जलाया गया कि पतिङ्गे पहुंचे और गिर गिर करके उन्होंने अपने प्राण देना शुरू किये। दीपक उनको बुलाने नहीं जाता। सच्चे विद्वान उपदेशकों का उपदेश इसी प्रकार का होता है। वे लोगों से कहते नहीं फिरते कि तुम लोग हमारे उपदेश को आकर सुनो, बालक सैकड़ों न मालुम कहा से स्वय बिना बुलाये उनके पास आकर इकट्ठा होते हैं।

२०७ जहा मिठाई या चीनी रहती है वहा चीटियां स्वय पहुँचती हैं। चीनी बनाने की कोशिश करो, चीटिया स्वयं तुम्हारे पास पहुँचेगी।

२०८ जिस घर के लोग जागते रहते हैं उस घर में चोर नहीं घुस सकते, उसी प्रकार यदि तुम (ईश्वर पर भरोसा रखते हुये) हमेशा चौकन्ने रहो तो बुरे विचार तुम्हारे हृदय में न घुस सकेंगे।

२०९ चिड़िया जब उड जाती है तो पिंजड़े की कोई परवाह नहीं करता, उसी प्रकार जीवरूपी चिड़िया जब उड़ जाता है तो फिर शेष रहे हुये मुरदे की कोई परवाह नहीं करता।

२१० जिस प्रकार बिना तेल के दीपक नहीं जल सकता, उसी प्रकार बिना ईश्वर के मनुष्य अच्छी तरह नहीं जी सकता।

२११ जिस प्रकार शिकार किया गया बन्दर शिकारी के पास

और आपत्ति की कसौटी पर रगड़ने से सच्चे और ढोंगी साधुओं की परीक्षा होती है।

२३२ संसार में रहो लेकिन सांसारिक मत बनो। किसी कवि ने सच कहा है, "मेंढक को सांप के साथ नचाओ लेकिन ख्याल रक्खो कि सांप मेंढक को निगलने न पावे।"

२३३ एक साधू दिन रात झाड़ के शीशे में देखकर हमेशा हँसता था। हँसने का कारण यह था कि शीशे के द्वारा वह लाल, पीले अनेक प्रकार के रंग देखता था और वास्तव में रङ्ग नहीं थे, उसी प्रकार यह समझता था कि यह दुनिया भी रङ्ग बिरङ्गी है लेकिन वास्तव में है कुछ नहीं।

२३४ एक ने कहा, "मूल का स्वभाव कभी भी बदलने वाला नहीं है। दूसरे ने तड़ से उत्तर दिया, "जब आग कोयले में घुस जाती है तो वह उसके स्वाभाविक कालेपने को नष्ट कर देती है।" भगवान ने कहा है, ज्ञान की अग्नि से मन जब प्रज्वलित हो जाता है तो उसका मूल स्वभाव नष्ट हो जाता है और कोई प्रतिबन्धक शेष नहीं रह जाता।

२३५. जिस बतन में प्याज़ का रस रक्खा जाता है उसकी महक नहीं जाती चाहे वह सैकड़ों बार धोया जाय। उसी प्रकार अहं पना (अहङ्कार) भी एक ज़बरदस्त दुराग्रह है वह समूल नष्ट नहीं होता।

२३६ आइफाइ के स्रेब की तरह इस संसार में जो कोई गुरु और इष्टदेव में श्रद्धा रखकर भक्ति का अभ्यास करता है उसका जीवन सुखी रहता है और उसके मार्ग में विघ्न नहीं आते।

२३७ अहङ्कार (ego hood) की कल्पना किस प्रकार नष्ट की जा सकती है? ऐसा करने के लिये लगातार अभ्यास की आवश्यकता है। धान से चावल निकालते समय हमेशा इस बात के

देखने की ज़रूरत है कि चावल ठीक तौर पर भूसी से अलग हो रहा है या नहीं, धान ठीक तौर पर चलाया तो जा रहा है, मूसर के नीचे का भाग कांड़ी में ठीक तौर पर गिर तो रहा है। इस प्रकार सब बातों पर ध्यान देते हुये धान जब बड़ी देर तक कूटा जाता है तब कहीं चावल निकलता है। उसी प्रकार पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके अहङ्कार नष्ट करने के लिये आवश्यकता है कि मनुष्य कभी कभी जाच किया करे कि कुवासनाओं को तो मैंने जीत लिया है, मेरे हृदय से प्रेम का श्रोत तो अब बहने लगा है अरे यह शरीर क्या है? चमड़े और हड्डियों का बना हुआ एक पिंजड़ा है। शरीर के भीतर क्या भरा है? खून, पित्त, कफ़ और मल। इतनी बुरी वस्तु का मैं अभिमान क्यों करता हूँ? अरे आज से मैं अब इस शरीर का या इससे सम्बन्ध रखने वाली दूसरी चीज़ों का घमन्ड न करूँगा।

२३८. एकबार कोई पहुँचे हुये साधू रानी रासमणि के कालीजी के मन्दिर में आये जहा भगवान (परमहंस रामकृष्ण) रहते थे। एक दिन उनको कहीं से भोजन न मिला और गोकि उनको भूख लग रही थी लेकिन उन्होंने किसी से भोजन का सवाल भी नहीं किया। थोड़ी दूर पर एक कुत्ता जूठी रोटी के टुकड़े खा रहा था। वे चट दौड़कर उसके पास गये और उसको छाती से लगाकर बोले, "भइया मुझे बिना खिलाये तुम क्यों खा रहे हो?" और फिर उसी के साथ खाने लगे। भोजन के अनन्तर वे फिर काली जी के मन्दिर में चले आये और इतनी भक्ति के साथ वे कालीजी की प्रार्थना करने लगे कि मन्दिर में सन्नाटा छा गया। प्रार्थना समाप्त करके जब वे जाने लगे तो भगवान (परमहंस रामकृष्ण) ने अपने भतीजे हृदय मुकर्जी को बुलाकर कहा, 'बच्चा इस साधू के पीछे २ जाओ और जो वह कहे उसे मुझसे कहो।" हृदय उसके पीछे २ जाने लगा। साधु ने घूमकर उससे पूछा, कि तू मेरे पीछे २ क्यों आ रहा है? हृदय ने कहा,

"महात्मा जी मुझे कुछ शिक्षा दीजिये।" साधु ने उत्तर दिया "ज
ब तू इस गन्दे घड़े के पानी को और गङ्गाजल को समान समझेगा और
जब इस बांसुरी की आवाज और जन समूह की कर्कश आवाज तुम्हारे
कान को एक समान मधुर लगेगी, तब तुम सच्चे ज्ञानी बन सकोगे।"
हृदय ने लौटकर परमहंस जी से कहा। परमहंस जी बोले, "उस साधु
को वास्तव में ज्ञान और भक्ति की सच्ची कुन्जी मिल चुकी है।"
पहुँचे हुये साधु बालक, पिशाच, पागल और इसी तरह के और २ वेषों
में घूमा करते हैं।

२३९ संसार के झंझटों से बँधा हुआ मनुष्य और स्त्री धन
के मोह को आसानी से रोक कर ईश्वर की ओर अपना मन नहीं लगा
सकता चाहे इस मोह में उसे कितने ही दुःखों को क्यों न भोगना पड़े।

२४० मनुष्य को अच्छा गुरु भी मिल जाय और वह अच्छे
आदमियों की संगति में उठे बैठे भी किन्तु जब तक उसका मन चंचल
रहता है तब तक उसे कोई लाभ नहीं हो सकता।

२४१ भगवान (श्रीरामकृष्ण) सब धर्मों और पंथों के दुराग्रह
से चिढ़ते थे। वे कहा करते थे कि हरेक स्त्री पुरुष को अपने धर्म पर
अटल श्रद्धा रखनी चाहिये। लेकिन हठ और दुराग्रह से दूर रहना
चाहिये।

२४२ यदि मनुष्य को विश्वास है कि जिन मूर्तियों की पूजा वह
करता है उसमें सचमुच ईश्वर है तो उसे उसका फल मिलता है,
लेकिन यदि वह केवल यही समझता है कि मूर्तियाँ पत्थर और मिट्टी
की बनी हुई हैं, (उनमें ईश्वर नहीं है) तो ऐसी मूर्तियों की पूजा से
उसे कोई लाभ नहीं हो सकता।

२४३ एक बार एक नैय्यायिक ने भगवान रामकृष्ण से पूछा,
"ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय क्या है।" भगवान ने उत्तर दिया, "ऐ भले

मनुष्य, पांडित्य के ये सूक्ष्म भेद मुझे नहीं मालुम, मैं तो केवल आत्मा और जगन्माता को जानता हूँ।

२४४ ईश्वर उसके वचन और उसके भक्त सब एक ही हैं।

२४५ जरीब से नाप नाप कर और सीमा बना बना कर मनुष्य खेतों को बांट सकता है लेकिन सर के ऊपर आसमान को कोई बांट नहीं सकता। अभेद्य आकाश सर्वत्र व्याप्त है। उसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य मूर्खतावश कहता है कि मेरा धर्म सब धर्मों से अच्छा है, सच्चा धर्म केवल मेरा ही धर्म है। किन्तु जब उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश पड़ जाता है तब उसे मालूम होता है कि सब धर्म और पथों के टटे और बखेड़ों के ऊपर एक ही अखंड, सनातन, सच्चिदानन्द परमेश्वर अधिष्ठित है।

२४६ पिता की आज्ञा से देशनिर्वासित होकर राम सीता और लक्ष्मण वन को गये। राम आगे आगे चलते थे, सीताजी बीच में और लक्ष्मणजी सब से पीछे। लक्ष्मणजी हमेशा राम जी का दर्शन करना चाहते थे, लेकिन चूँकि सीताजी बीच में आजाती थीं इसलिये वे दर्शन नहीं कर सकते थे। तब उन्होंने सीताजी से हाथ जोड़ कर कहा, माँ जरा एक बगल से चलो।" जब सीताजी बगल से चलने लगीं तो लक्ष्मणजी रामजी का दर्शन कर सके और उनकी इच्छा पूरी हुई। उसी प्रकार ब्रह्म, माया और जीव की भी रचना है। जब तक माया नहीं हट जाती तब तक आत्मा का ईश्वर के दर्शन नहीं होते।

२४७ मिट्टी के एक घड़े में पानी भर कर अगर तुम उसे ताक में रख दो तो थोड़े दिनों में पानी सूख जायगा, लेकिन अगर उसे पानी के भीतर रख दो तो जब तक वह वहाँ रक्खा रहेगा उसका पानी नहीं सूखेगा। ईश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम का भी यही हाल है। यदि पहिले एक बार तुम अपने अंतःकरण को ईश्वर के प्रेम से भरलो और फिर अपने घरेलू धन्धों में लिप्त हो कर उसे भूल जाओ तो थोड़े समय में

तुम्हारा भरा हुआ अमूल्य प्रेम खाली हो जायगा। लेकिन यदि वही प्रेम से भरे हुये हृदय को ईश्वर के पवित्र प्रेम व दिव्य भक्ति में डुबाये रहो तो पूर्ण विश्वास रक्खो वह हमेशा ईश्वरीय प्रेम से लबालब भरा रहेगा।

२४८ तुम जब ध्यान करने बैठते हो तो तुम्हारा मन चंचल क्यों हो जाता है?

मक्खियां आज पक्व हलवाइयों की दूकान में रक्खी हुई खुली मिठाइयों पर बैठती हैं। एक भंगी मैले का टोकरा लेकर जब दूकान के सामने से होकर निकलता है तो वे भट मिठाइयों को छोड़ कर टोकरे में बैठ जाती हैं। शहद की मक्खियाँ निकृष्ट वस्तुओं पर कभी नहीं बैठतीं, वे सदैव फूलों ही का रस पान किया करती हैं। सांसारिक मनुष्य साधारण मक्खियों की तरह हैं। थोड़ी देर तक तो ये परमात्मा का ध्यान करते हैं किन्तु फिर वे विवश हो कर उच्छिष्ट पदार्थों पर आ गिरते हैं। परमहंस मधु मक्खियों की तरह हैं। वे परमात्मा के ध्यानरूपी रस का पान सदैव करते रहते हैं, कभी उच्छिष्ट पदार्थों पर नहीं गिरते।

पुरावद्ध प्राणी उस कीड़े की तरह है जो कूड़े में पैदा होता है और कूड़े ही में मरता है, उसे किसी अच्छी वस्तु की कल्पना नहीं होती। साधारण बद्ध प्राणी उस मक्खी की तरह है जो कभी कूड़े पर बैठती है और कभी मिठाई पर। मुक्त प्राणी शहद की मक्खी की तरह है जो सिवाय शहद के दूसरी चीज को नहीं पीती।

२४९ सांसारिक मनुष्यों का हृदय गोबरैले की तरह होता है। गोबरैला हमेशा गोबर में रहना पसन्द करता है। यदि संयोगवश कोई उसे उठाकर कमल के फूल में रख दे तो उसकी सुगन्ध से वह मर जाता है। सांसारिक मनुष्य भी उसी तरह विषयवासना से दूषित वायु-मण्डल को छोड़ कर दूसरी जगह एक क्षण भर भी नहीं रह सकते।

२५० जिस प्रकार समुद्र के बीच में किसी जहाज के मस्तूल की चोटी में रहता हुआ पक्षी एक ही स्थान में रहने से ऊब कर और घबड़ा कर दूसरे स्थान की खोज में उड़ता है लेकिन कोई स्थान न पाकर थक कर वह फिर उसी मस्तूल वाले स्थान को वापस आता है, उसी प्रकार एक साधारण मुमुक्ष अपने अनुभवी और शिष्य के हित चाहने वाले गुरु की दीक्षा के अभ्यास से घबड़ाकर निराश हो जाता है और अपने गुरु पर अविश्वास करके दूसरे गुरू की खोज में संसार भर चक्कर लगाता है लेकिन अन्त में वह अपने पहिले गुरू के पास व्याकुल होकर फिर लौटता है और इस बार गुरू के प्रति उसकी भक्ति बढ़ जाती है।

२५१ जो पुरुष संसार में रहता है लेकिन उसके मोह से अलग रहता है ऐसे पुरुष की स्थिति कैसी होती है? वह या तो पानी में कमल की तरह है या दल्दल में मछली की तरह। पानी न तो कमल को भिगा सकता है और न दलदल मछली के शरीर को गन्दा कर सकता है।

२५२ जिस प्रकार एक गहरे कुयें के मुंह के पास खड़े होने से आदमी का डर लगा रहता है कि ऐसा न हो मैं कुयें में गिर पड़ूं, उसी प्रकार संसार में रहने वाले पुरुषों को प्रलोभनों में फंस जाने का डर रहता है इसलिये उन्हें सदैव चौकन्ने रहना चाहिये। जो संसार के प्रलोभन रूपी गहरे कुयें में एक बार गिर जाते हैं वे फिर उसमें से सुरक्षित और अदूषित मुश्किल से निकल सकते हैं।

२५३ जीवात्मा और परमात्मा का मिलाप मिनट और घण्टे वाली सुइयों के हर घण्टों में होने वाले मिलाप की तरह है। वे एक दूसरे से बँधे हुये हैं। मुअवसर आते ही वे एक दूसरे से मिल जाते हैं।

२५४ मनुष्य को वैराग्य की शिक्षा किस प्रकार मिल सकती है? एक स्त्री ने एक बार अपने पति से कहा "प्राण प्यारे, मुझे अपने

भाई की बड़ी चिन्ता रहती है। कई सप्ताहों से वह सन्यासी होने का विचार कर रहा है और उसके लिये तैय्यारी भी कर रहा है। नाना प्रकार की वासनाओं को वह धीरे धीरे छोड़ रहा है।" पति ने उत्तर दिया, "प्राण प्रिये तुम अपने भाई की चिन्ता न करो, वह कभी सयासी नहीं हो सकता। जो सन्यासी होने के लिये चिरकाल तक सोचता है वह कभी सन्यासी हो नहीं सकता। स्त्री ने फिर पूछा कि मनुष्य सन्यासी हो कैसे सकता है? पति ने उत्तर दिया, 'देखो मैं तुम्हें दिखलाता हूँ कि मनुष्य किस प्रकार सयासी हो सकता है। उसने अपने सबे श्रृंगारके का फाड़ डाला और उस की लङ्गोटी लगाकर अपनी स्त्री से कहा, "आज से तुम और दूसरी स्त्रियां मेरे लिये माता के समान हो" और फिर जङ्गल का रास्ता पकड़ा और वहां से फिर नहीं लौटा।

२५५ वैराग्य कितने प्रकार का होता है? साधारणतया दो प्रकार का (१) उत्कट और (२) मध्यम। उत्कट वैराग्य एक ही रात में एक बड़े तालाब का खोद कर उसको उसी समय पानी से भर देने के सदृश है। मध्यम वैराग्य तालाब को धीरे २ खोदना है। कोई नहीं कह सकता वह पूरा खोदा जाकर कब पानी से भरा जायगा।

२५६ संसार में आसक्त हुये मनुष्य का क्या लक्षण है? वह एक पात्र में बँधे हुये नेवले की तरह रहता है। नेवले का मालिक ऊँचाई पर दीवाल में एक पात्र लगा देता है रस्सी का एक सिरा नेवले के गले में बांध देता है और दूसरे सिरे में एक भारी वजन बांध देता है। पात्र से बाहर निकल कर नेवला इधर उधर खेलता है लेकिन जब वह डरने लगता है तो दौड़ कर उसी पात्र में छिपता है लेकिन दूसरे सिरे में बंधा हुआ वज़न उस उस सुरक्षित स्थान से खींचता है। इसी प्रकार संसार के दुखों और सङ्कटों से खिन्न होकर मनुष्य संसार से उड़ कर ईश्वर के समक्ष जाने का प्रयत्न करता है लेकिन संसार के प्रलोभन उसको खींच कर सांसारिक दुखों और संकटों में फिर खड़ा कर देते हैं।

२५७ एक मछुवाहे ने मछलियों को पकड़ने के लिये नदी में जाल फेंका। कुछ मछलियां उसमें ऐसी फँसी जो उसी में शांत पड़ी हुई थीं, उससे निकलने की कोशिश भी नहीं कर रही थीं, कुछ ऐसी थीं जो उछलती कूदती थीं लेकिन बाहर निकल नहीं सकती थीं, कुछ मछलियां ऐसी थीं जो सड़ासड़ जाल से निकल कर भाग रही थीं। संसारी मनुष्य भी इसी प्रकार तीन प्रकार के होते हैं।

(१) मोक्ष के लिये प्रयत्न न करने वाले बद्ध।
(२) मोक्ष के लिये प्रयत्न करने वाले मुमुक्षु।
और (३) मुक्त

२५८ सवेरे का माया हुआ मक्खन दिन में माये गये मक्खन से उत्तम होता है। भगवान परमहंस अपने नवजवान शिष्यों से कहा करते थे, "तुम लोग सवेरे निकाले हुये मक्खन की तरह हो और गृहस्थ शिष्य दिन में निकाले हुये मक्खन की तरह।"

२५९ ईश्वर कहां है और वह किस तरह मिल सकता है?
मोती गहरे समुद्र में होते हैं। उनको पाने के लिये गहरी डुबकी लगानी पड़ेगी और बड़ा प्रयत्न करना होगा। इस संसार में ईश्वर के पा प्राप्त करने का यही हाल है।

२६० इस पञ्चभौतिक शरीर में ईश्वर किस प्रकार रहता है?
इस प्रकार रहता है जिस प्रकार पिचकारी का डंडा पिचकारी में रहता है। वह शरीर में रहता है लेकिन उससे बिलकुल अलग है।

२६१ परमेश्वर के केवल नाम ही से जिसके रोंगटे खड़े हो जांय और जिसकी आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगें उसका यह अंतिम जन्म समझना चाहिये।

२६२ हवा में उड़ने वाली अनेकों पतङ्गों में से दो ही एक डोरी तोड़ कर मुक्त होती हैं, उसी प्रकार सैकड़ों साधकों में से एक दो ही भव बन्धन से मुक्त होते हैं।

२६३ पराभक्ति (अत्युत्कट प्रेम) क्या है ? पराभक्ति (अत्युत्कट प्रेम) में उपासक ईश्वर को सब से अधिक नज़दीकी सम्बन्धी समझता है। ऐसी भक्ति गोपियों का श्रीकृष्ण पर थी। वे उसे जगन्नाथ नहीं कहती थी बल्कि गोपीनाथ कह कर पुकारती थीं।

२६४ संपत्ति और विषयभोग में लगा हुआ मन नरहड़ी में चिपटी हुई सुपारी की तरह है। जब तक सुपारी नहीं पकती तब तक अपने ही रस से वह खपड़ी में चिपटी रहती है। लेकिन जब रस सूख जाता है तो सुपारी नरहड़ी से अलग हो जाती है और खड़खड़ाने से उसकी आवाज़ सुनाई पड़ती है। उसी प्रकार संपत्ति और सुखोपभोग का रस जब सूख जाता है तब मनुष्य मुक्त हो जाता है।

२६५ सात्विक, राजसिक और तामसिक पूजाओं में क्या भेद है ?

जो पुरुष बिना अहङ्कार और दिखलावा के सच्चे हृदय से ईश्वर की पूजा का उत्सव मनाने के लिये भारी सजाता है, कीर्तन कराता है ब्राह्मणों और मित्रों का भोजन कराता है वह राजसिक पूजक है। और जो सैकड़ों निरपराध बकरों और भेड़ों का बलिदान करता है, मद्य मांस लोगों को खिलाता पिलाता है और पूजा के बहाने नाच देखने और गाना सुनने में मस्त रहता है वह तामसिक पूजक है।

२६६ मन मनुष्य को मूर्ख और बुद्धिमान बनाता है और मन ही मनुष्य को संसार से बाँधता और मुक्त करता है। मन ही से मनुष्य धर्मात्मा बनता है और मनही से वह पतित होता है। जिसका मन ईश्वर के चरणों में लगा हुआ है उसे किसी भी पूजा और आध्यात्मिक साधन की आवश्यकता नहीं है। (गीता में श्रीकृष्णजी ने कहा है—मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो)

२६७ उस सन्यासी की क्या दशा होती है जो विरवास से नहीं बल्कि संसार से क्षणभर के लिये ऊबकर सन्यासी हो जाता है ?

जो पुरुष पिता, माता अथवा स्त्री से न पटने के कारण सन्यासी हो जाता है उसे वैरागी (ascetic by disgust) सन्यासी कहते हैं। उसका वैराग्य क्षणिक होता है। धनी पुरुष के यहां जब उसे अच्छे वेतन की नौकरी मिल जाती है तो वह अपने वैराग्य को भूल जाता है।

२६८ कोई भी बात क्या एक बारगी नहीं हो सकती ?

साधारण नियम तो यह है कि पूर्णता प्राप्त करने के लिये मनुष्य का वर्षों पहिले से तैय्यारी करनी पड़ती है। बाबू द्वारिकानाथ मित्र एक दिन में हाइकोर्ट के जज नहीं बना दिये गये थे। हाईकोर्ट के जज होने के पहिले उन्हें कई वर्ष परिश्रम और अध्ययन करना पड़ा था। जो उनकी तरह परिश्रम करने के लिये और दुख झेलने के लिये तैयार नहीं हैं वे छोटे २ ऐसे वकील बने रहेंगे जिनको मुकदमे भी नहीं मिलते। तथापि परमेश्वर की कृपा से कालीदास की तरह कभी कभी एक दम उन्नति होती है। कालीदास एक अपढ़ गवार थे लेकिन मा सरस्वती की कृपा से हिन्दुस्तान ने सब से बड़े कवि हो गये।

२६९ भक्ति का प्रचण्ड स्वरूप क्या है ?

जोर जोर से हमेशा 'जय काली की" कहना और हाथ उठा कर पागल की तरह नाच नाच कर 'हरी नाचो, हरी नाचो" कहना प्रचण्ड भक्ति का लक्षण है। कलियुग में प्रचण्ड भक्ति की अधिक आवश्यकता है। सौम्य ध्यान की अपेक्षा इससे फल जल्दी मिलता है, स्वर्ग का राज्य (सुख) एकदम जोरों के साथ हमला करके ले लेना चाहिये।

२७० मनुष्य को अपने विचार और हेतु के अनुसार फल मिलता है। ईश्वर तो कल्पवृक्ष है जिससे उसके भक्त जो चाहें सो पा सकते हैं। एक दरिद्र का लड़का अपने परिश्रम से हाइकोर्ट का जज होकर सोचता है, 'अब मुझे बड़ा सुख है, मैं सीढी के सब से ऊपर याने डंडे तक पहुँच गया हूँ। वाह वाह ! अब तो सब कुछ ठीक है।"

२६३ परामक्ति (अत्युत्कट प्रेम) क्या है ? परामक्ति (अत्युत्कट प्रेम) में उपासक ईश्वर को सब से अधिक नज़दीकी सम्बन्धी समझता है। ऐसी भक्ति गोपियों को श्रीकृष्ण पर थी। वे उसे जगन्नाथ नहीं कहती थी बल्कि गोपीनाथ कह कर पुकारती थी।

२६४ संपत्ति और विषयभोग में लगा हुआ मन खपड़ी में चिपटी हुई सुपारी का तरह है। जब तक सुपारी नहीं पकती तब तक अपने ही रस से वह खपड़ी में चिपटी रहती है। लेकिन जब रस सूख जाता है तो सुपारी खपड़ी से अलग हो जाती है और खड़खड़ाने से उसकी आवाज़ सुनाई पड़ती है। उसी प्रकार सम्पत्ति और सुखोपभोग का रस जब सूख जाता है तब मनुष्य मुक्त हो जाता है।

२६५. सात्विक, राजसिक और तामसिक पूजाओं म क्या भेद है ?

जो पुरुष बिना अहङ्कार और दिखलावा के सच्चे हृदय से ईश्वर की पूजा का उत्सव मनाने के लिये झांकी सजाता है, कीर्तन कराता है ब्राह्मणों और मित्रों को भोजन कराता है वह राजसिक पूजक है। और जो सैकड़ों निरपराध बकरों और भड़ों का बलिदान करता है, मद्य मांस लोगों को खिलाता पिलाता है और पूजा के बहाने नाच देखने और गाना सुनने में मस्त रहता है वह तामसिक पूजक है।

२६६ मन मनुष्य का मूर्ख और बुद्धिमान बनाता है और मन ही मनुष्य को संसार से बांधता और मुक्त करता है। मन ही से मनुष्य धर्मात्मा बनता है और मनही से वह पतित होता है। जिसका मन ईश्वर के चरणों में लगा हुआ है उसे किसी भी पूजा और आध्यात्मिक साधन की आवश्यकता नहीं है। (गीता में श्रीकृष्णजी ने कहा है—मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो)

२६७ जब सन्यासी की क्या दशा होती है जो विश्वास से नहीं बल्कि संसार से क्षणभर के लिये ऊबकर सन्यासी हो जाता है ?

जो पुरुष पिता, माता अथवा स्त्री से न पटने के कारण सन्यासी हो जाता है उसे वैरागी (ascetic by disgust) सन्यासी कहते हैं। उसका वैराग्य क्षणिक होता है। धनी पुरुष के यहां जब उसे अच्छे वेतन की नौकरी मिल जाती है तो वह अपने वैराग्य को भूल जाता है।

२६८ कोई भी बात क्या एक बारगी नहीं हो सकती?

साधारण नियम तो यह है कि पूर्णता प्राप्त करने के लिये मनुष्य का वर्षों पहिले से तैय्यारी करनी पड़ती है। बाबू द्वारिकानाथ मित्रा एक दिन में हाइकोर्ट के जज नहीं बना दिये गये थे। हाइकोर्ट के जज होने के पहिले उन्हें कई वर्ष परिश्रम और अध्ययन करना पड़ा था। जो उनकी तरह परिश्रम करने के लिये और दुख झेलने के लिये तैयार नहीं हैं वे छोटे २ ऐसे वकील बने रहेंगे जिनको मुकदमे भी नहीं मिलते। तथापि परमेश्वर की कृपा से कालीदास की तरह कभी कभी एक दम उन्नति होती है। कालीदास एक अपढ़ गवार थे लेकिन मा सरस्वती की कृपा से हिन्दुस्तान के सब से बड़े कवि हो गये।

२६९ भक्ति का प्रचण्ड स्वरूप क्या है?

जोर जोर से हमेशा "जै काली की" कहना और हाथ उठा कर पागल की तरह नाच नाच कर 'हरी बोलो, हरी बोलो" कहना प्रचण्ड भक्ति का लक्षण है। कलियुग में प्रचण्ड भक्ति की अधिक आवश्यकता है। सौम्य ध्यान की अपेक्षा इससे फल जल्दी मिलता है, स्वर्ग का राज्य (सुख) एकदम सारों के साथ हमला करके ले लेना चाहिये।

२७० मनुष्य को अपने विचार और इच्छा के अनुसार फल मिलता है। ईश्वर तो कल्पवृक्ष है जिससे उसके भक्त जो चाहें सो पा सकते हैं। एक दरिद्र का लड़का अपने परिश्रम से हाईकोर्ट का जज होकर सोचता है, 'अब मुझे बड़ा सुख है, मैं सीढ़ी के सब से ऊपर वाले डंडे तक पहुँच गया हूँ। वाह वाह! अब तो सब कुछ ठीक है।"

ही खुजलाने के बाद असह्य दुख मिलता है। उसी प्रकार संसार के सुख पहिले बड़े सुखदायक मालुम होते हैं। लेकिन पीछे से उनसे असह्य और अकथनीय दुख मिलता है।

२७७ मंत्र से पूत किये हुये राइ के दानों(mustard seeds) को रोगी पर फेंकने से उसका भूत उतरता है किन्तु यदि भूत दोनों ही में समा गया हो तो फिर यह किस प्रकार उतारा जा सकता है। उसी प्रकार जिस हृदय से तुम ईश्वर का चिन्तन करते हो यदि वह संसार के दुवासनाओं से दूषित हो गया हो तो फिर तुम ऐसे दूषित हृदय से किस प्रकार सफलता पूर्वक भगवान की भक्ति कर सकते हो।

२७८ नाव पानी में रह सकती है परन्तु पानी नाव में नहीं रह सकता। उसी प्रकार मुमुक्षु संसार में रह सकता है लेकिन संसार को मुमुक्षु में नहीं रहना चाहिये।

२७९. जो अपने गुरू को केवल साधारण मनुष्य समझता है उसे उसकी प्रार्थना और भक्ति का क्या फल मिल सकता है! हम लोगों को अपने गुरु को साधारण मनुष्य नहीं समझना चाहिये। ईश्वर के दर्शन होने से पूर्व शिष्य को पहिले अपने गुरू का ईश्वरी दर्शन होता है और फिर गुरू स्वयं ईश्वर स्वरूप बनकर शिष्य को परमेश्वर का दर्शन करवाता है तब शिष्य को गुरू और परमेश्वर एक ही दिखलाई पड़ते हैं। शिष्य जो वर माँगता है गुरू उसे देता है। इतना ही नहीं बल्कि गुरू शिष्य को निर्वाण के परम सुख तक पहुँचा देता है। जो जो शिष्य माँगता है वह सब गुरू देता है।

२८० प्रार्थना का भी क्या कोई फल मिलता है? जी हां, मिलता है। जब मन और वाणी एक ही में मिल जाते हैं तब प्रार्थना का फल मिलता है। उस मनुष्य को प्रार्थना का कोई फल नहीं मिलता जो मुँह से कहता है, "हे प्रभो, यह सब कुछ तेरा है" लेकिन भीतर में उसी समय सोचता रहता है कि यह सब कुछ मेरा है।

२८१ एक स्थान चारों ओर ऊँची दीवाल से घिरा था। लोगों को नहीं मालूम था कि यहां क्या है। एक बार चार मनुष्यों ने सीढ़ी लगाकर उसे देखने का विचार किया। पहिला मनुष्य जब चढ़ कर दीवाल पर पहुँचा तो वह मारे प्रसन्नता के फूला न समाया और भीतर कूद पड़ा। दूसरा मनुष्य भी दीवाल पर चढ गया और वह भी मारे प्रसन्नता के भीतर कूद पड़ा। तीसरे ने भी ऐसा ही किया। जब चौथा चढ कर दीवाल पर पहुँचा तो उसने देखा कि दीवाल के अन्दर एक विशाल रमणीक बाग है, उसमें अनेकों प्रकार के पेड़ और फल लगे हुये हैं। उसके भी जी में आया कि भीतर कूद पड़ूं, लेकिन उसने अपनी इच्छा रोक ली और सीढ़ी से नीचे उतर कर उसने उस शानदार बाग का समाचार दूसरे लोगों को बतलाया। ब्रह्म दीवाल से घिरा हुआ बाग है। जो उसे देख लेते हैं वे अपने अस्तित्व को भूलकर उसी में एकदम लीन हो जाते हैं। संसार के साधू और भक्त इसी श्रेणी में हैं। लेकिन जो भक्त मनुष्य जाति के उद्धारक होते हैं वे ईश्वर के दर्शन करते हैं और दूसरों को भी दिव्य दर्शन का आनन्द देने के लिये पाये हुये निर्वाण पद को अस्वीकार कर देते हैं और मानव जाति को उपदेश देकर ध्येय स्थान तक पहुंचाने के लिये खुशी से पुनर्जन्म लेकर उसके दुखों को सहन करते हैं।

२८२ शुद्ध ज्ञान और शुद्ध भक्ति दोनों एक ही हैं।

२८३ जिस प्रकार बालक अपनी मा से रो रो कर और तङ्ग करके खिलौने और पैसे लेता है और मा को देना ही पड़ता है उसी प्रकार जो ईश्वर को अपना सर्वप्रिय मित्र समझ कर उसके दर्शन के लिये सचाई के साथ भीतर ही भीतर रोते हैं उन्हें ईश्वर का दिव्य दर्शन अन्त में मिलता अवश्य है। इस प्रकार के सच्चे और आमदी भक्तों के सामने से ईश्वर छिपे नहीं रह सकते।

२८४ हे दिल, तू सचाई के साथ सर्व शक्तिमती आन्द-

माता को प्यार से बुलाओ, तो वह दौड़कर तेरे पास अवश्य पहुँचेगी जब मनुष्य मन और हृदय से ईश्वर को बुलाता है तो वह बिना आए रह नहीं सकता।

२८५. जमींदार चाहे जितना धनी क्यों न हो किन्तु जब उसकी दीन प्रजा प्रेम के साथ उसके सामने एक तुच्छ भेंट भी रखती है तो वह उसे स्वीकार करता है। उसी प्रकार ईश्वर सर्व शक्तिमान और पूर्ण है, सामर्थ्य-सम्पन्न है तथापि वह अपने सच्चे भक्त की छोटी से छोटी भेंट को भी बड़े आनन्द और सन्तोष के साथ स्वीकार करता है।

२८६ जब भगवान रामचन्द्र जी का जन्म हुआ तो केवल बारह ऋषियों को मालूम हुआ था कि वे परमेश्वर के अवतार हैं। उसी प्रकार जब ईश्वर का अवतार होता है तो केवल थोड़े से मनुष्य उसके दैवी स्वरूप को पहिचान सकते हैं।

२८७ घण्टे की अवाज़ जब तक सुनाई पड़ती है तब तक वह साकार रहता है लेकिन जब सुनाई नहीं पड़ती तो ऐसा मालूम होता है गोया वह निराकार हो। ईश्वर के साकार और निराकार होने का भी यही हाल है।

२८८ जिस प्रकार कृत्रिम फल या कृत्रिम हाथी को देखकर असली फल और असली हाथी का स्मरण हो आता है उसी प्रकार मूर्तियों की पूजा करने से निराकार और शाश्वत ईश्वर का स्मरण होता है।

२८९ केशवचन्द्र सेन मूर्ति-पूजा के कट्टर विरोधी थे। भगवान रामकृष्ण ने एक बार उनसे कहा, "इन मूर्तियों से हृदय में कीचड़, मिट्टी, पत्थर, भूसा आदि की भावना क्यों पैदा होती है? अरे! क्या तुम उसी प्रकार इन्हीं मूर्तियों में शाश्वत आनन्द मूर्ति, [illegible] ईश्वर की भावना नहीं कर सकते। इन मूर्तियों को शाश्वत, निराकार और [illegible] परमेश्वर का साकार स्वरूप समझो।

२९० छोटे अक्षर लिखने से पूर्व हरेक व्यक्ति को पहिले बड़े बड़े अक्षर लिखने का अभ्यास करना पड़ता है उसी प्रकार मन को एकाग्र करने के लिये पहिले साकार मूर्ति का ध्यान करना होगा। जब साकार में ध्यान लगने लगेगा तो फिर निराकार ईश्वर में ध्यान लगाना सहल हो जायगा।

२९१ निशाना लगाने वाला पहिले बड़ी बड़ी चीजों पर निशाना लगाना सीखता है, धीरे २ सतत अभ्यास के पश्चात् वह फिर छोटी २ चीजों में भी निशाना सफलता पूर्वक लगाने लगता है। उसी प्रकार साकार मूर्तियों में मन को जब एकाग्र होने का अभ्यास पड़ जाता है तो निराकार में ध्यान लगाना फिर मन के लिये आसान हो जाता है।

२९२ जिस प्रकार एक ही पदार्थ से—उदाहरणत चीनी से—नाना प्रकार के पशु और पक्षियों के स्वरूप (खिलौने) बनाये जा सकते हैं, उसी प्रकार जगत्माता भी भिन्न २ युगों में, भिन्न २ नाम और रूप से पूजी जाता है।

२९३ भिन्न २ पथ एक ही ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न २ मार्ग हैं। (कलकत्ते के समीप) काला घाट के काली जी के मन्दिर को पहुँचने के लिये भिन्न २ अनेक मार्ग हैं। उसी प्रकार ईश्वर के घर तक पहुँचने के लिये भिन्न २ अनेक मार्ग हैं। प्रत्येक धर्म मनुष्यों को ईश्वर तक पहुँचाने के लिये इन मार्गों में से एक मार्ग है।

२९४ एक ही पदार्थ से उदाहरणत सोने से—नाना प्रकार के गहने बनाये जा सकते हैं उसी प्रकार एक ही ईश्वर भिन्न २ देशों में भिन्न २ स्वरूपों में पूजा जाता है। कुछ लोग उसको पिता कहते हैं, कुछ माता कहते हैं, कुछ अपना मित्र बनाते हैं, कुछ अपनी प्रेमिका बनाते हैं, कुछ उसे अपना सर्वस्व समझते हैं और उसे अपना बच्चा मानते हैं। लोग उसे चाहे जो मानें लेकिन पूजा भिन्न २ रिश्तों से एक ही ईश्वर की होती है।

२१५ एक धनी व्योपारी किसी गरीब ब्राह्मण का शिष्य था। वह अत्यन्त कृपण था। एक दिन उस ब्राह्मण ने अपने पत्रे को लपेटने के लिये एक छोटा सा कपड़े का टुकड़ा मांगा। व्योपारी ने कहा "गुरूजी मुझे शोक है कि इस समय मेरे पास कोई टुकड़ा नहीं है। यदि कुछ घण्टे पहिले आप मांगते तो मैं दे देता। खैर कोई हर्ज नहीं मैं आपका ख्याल रक्खूंगा। आप कभी कभी स्मरण करवाते रहियेगा।" ब्राह्मण बेचारा निराश होकर चला गया। व्योपारी की स्त्री ने कहीं परदे की आड़ से सुन पाया। उसने तुरन्त ब्राह्मण को बुला भेजा और कहा, "महाराज, आप क्या मांग रहे थे।" ब्राह्मण देवता ने सब समाचार ज्यों का त्यों कह सुनाया। स्त्री ने कहा "अच्छा आप घर जाइये कल आपको सवेरे कपड़ा मिल जायगा।" व्योपारी जब दूकान बन्द करके रात को घर पहुँचा तो स्त्री ने उससे पूछा कि क्या आप दूकान बन्द कर चुके? उसने कहा, हाँ, कहो क्या काम है? स्त्री ने कहा, "इसी वक्त जाकर दो सब से बढ़िये कपड़े के टुकड़े लाओ।" व्योपारी ने कहा, "जल्दी क्या है सबेरे मिल जायगा।" स्त्री ने कहा, देना है तो अभी दो नहीं तो फिर मुझे कोई जरूरत नहीं है।" अब बेचारा व्योपारी कर ही क्या सकता था। गुरू जी थोड़े ही थे कि वादा करके टाल देते अरे यह तो महल की गुरू थी जिसकी आज्ञा तुरन्त मानना ही चाहिये नहीं तो घर में झगड़ा कौन मोल ले। व्योपारी इतनी रात को दूकान गया और दो टुकड़े ला कर उसे दे दिया। दूसरे दिन प्रात स्त्री ने कपड़े उस ब्राह्मण के पास भेज दिया और कहला भेजा कि अब जिस चीज की आवश्यकता आपको हो वह आप मुझसे मांगा कीजिये और वह आपको शीघ्र मिल जाया करेगी। कहने का तात्पर्य यह कि जो लोग परमेश्वर की आराधना पिता के नाते करते हैं उनकी अपेक्षा माता के नाते उसकी आराधना करने वालों की प्रार्थना के सफल होने में अधिक सम्भावना है।

२९६ एक ब्राह्मण एक बाग लगा रहा था। रात दिन वह उस बगीचे की देख रेख करता था। एक दिन उस बाग में एक गाय घुस गई और उसने ब्राह्मण द्वारा खूब सुरक्षित किये हुये पौधों में से आम के एक पौवे को नष्ट कर दिया। यह देख कर बड़ा क्रोध आया और उसने गाय को इतने ज़ोर २ से पीटा कि वह बेचारी मर गई। गोहत्या की खबर बिजली की तरह गाव भरमें फैल गई। ब्राह्मण वेदान्ती था, लोग जब उसे बुरा भला कहने लगे तो उसने उत्तर दिया, "वाह वाह! मैंने थोड़े गाय को मारा है। मेरे हाथ ने गाय को मारा है। हाथ का देवता इन्द्र है। इसलिये गोहत्या का पातक इन्द्र को लगाना चाहिये मुझे नहीं।" ब्राह्मण की बात को इन्द्र ने स्वर्ग ही में सुन लिया। वे एक वृद्ध ब्राह्मण का भेष रखकर बगीचे के स्वामी के पास गये और पूछा, "महाराज! यह बाग किसका है?" ब्राह्मण ने कहा—मेरा। इन्द्र ने कहा, यह बाग तो बड़ा सुन्दर है, आप का माली बड़ा चतुर है। देखो तो उसने कैसी खुबसूरती के साथ इन वृक्षों को लगाया है। ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "वाह वाह यह भी मेरा ही काम है। ये सब वृक्ष मेरी देख रेख में और मेरे कथनानुसार लगाये गये हैं" इन्द्र ने कहा, "यह तो बड़ी अच्छी बात है। हां, यह तो बतलाइये यह सड़क किसने बनाई है। यह बड़ी उत्तम रीति से तैय्यार की गई है।" ब्राह्मण ने उत्तर दिया "सब कुछ मैंने ही किया है।" इन्द्र ने तब हाथ जोड़ कर कहा, "महाराज, जब इन बाग की सब वस्तुयें आपकी हैं और उनके बनवाने का श्रेय आप ले रहे हैं तो गोहत्या करने का पाप आप बेचारे इन्द्र के सर पर क्यों मढ़ रहे हैं!"

२९७ एक चोर आधीरात को किसी राजा के महल में घुसा और राजा की रानी से यह कहते सुना कि मैं अपनी कन्या का विवाह उस साधू से करूगा जो नदी के किनारे रहते हैं। चोर ने विचारा कि यह अच्छा अवसर है। कल मैं भगवा वस्त्र पहिन कर साधुओं के

बीन बैठ जाऊँगा। सम्भव है राजकन्या का विवाह मेरे ही साथ हो जाय। दूसरे दिन उसने ऐसा ही किया। राजा के कर्मचारी सब साधुओं से राज कन्या का विवाहने की प्रार्थना करने लगे लेकिन किसी ने स्वीकार नहीं किया। तब वे चोर सन्यासी के पास गये और वही प्रार्थना उन्होंने उससे भी की लेकिन उसने भी कोई उत्तर नहीं दिया। कर्मचारी लौटकर राजा के पास गये और उनसे कहा कि महाराज, और तो कोई साधू राजकन्या के साथ विवाह करना स्वीकार नहीं करता। एक युवा सन्यासी अवश्य है, सम्भव है वह विवाह करने पर तैय्यार हो जाय। राजा उसके पास स्वयं गये और राजकन्या के साथ विवाह करने का उससे अनुरोध किया। राजा के स्वयं जाने से चोर का हृदय एक दम बदल गया। उसने सोचा, "देखो तो अभी तो सन्यासियों के केवल कपड़े पहिनने का यह परिणाम हुआ है कि इतना बड़ा राजा मुझसे मिलने के लिये स्वयं आया है। यदि मैं वास्तव में एक सच्चा सन्यासी बन जाऊं तो न मालूम आगे अभी और कैसे अच्छे २ परिणाम देखने में आवें। इन विचारों का उस पर ऐसा अच्छा प्रभाव पड़ा कि उसने विवाह करना अस्वीकार कर दिया और उस दिन से एक सच्चा साधू बनने के प्रयत्न में लगा। उसने विवाह जन्म भर न किया और अपनी साधनाओं से एक पहुँचा हुआ सन्यासी हुआ। अच्छी बात की नकल से ही कभी २ अपेक्षित और अपूर्व फल की प्राप्ति होती है।

२६८. एक बार अर्जुन के मन में ऐसा गर्व हुआ कि श्रीकृष्ण का मुझ जैसा सखा और भक्त कोई दूसरा नहीं। त्रिकालदर्शी कृष्ण झट इस बात को ताड़ गये। वे उसे घुमाने के लिये एक जंगल को ले गये। वहां अर्जुन ने एक विचित्र ब्राह्मण को देखा जिसके बगल में तलवार बांधी एक धनधार लटक रही थी लेकिन वह सूखे घास पात्र का आहार करता था। अर्जुन ने तुरन्त समझ लिया कि यह

सदाचारी ब्राह्मण विष्णु का एक सच्चा भक्त है। जीवहिंसा से उसे यहां तक घृणा है कि वह हरी घास तक खाना नापसन्द करता है। वह केवल सूखी घास और सूखे फल खाकर अपना जीवन व्यतीत करता है। किन्तु यह बात अर्जुन के समझ में न आई कि वह अहिंसा का तो इतना भारी पुजारी है लेकिन फिर वह तलवार क्यों बांधे बांधे फिरता है। परेशान होकर अर्जुन ने कृष्ण से पूछा, "भगवन, क्या बात है ? जीव हिंसा से उसे यहां तक घृणा है कि वह हरी घास तक नहीं खाता लेकिन तलवार लटकाये घूमता है।" कृष्ण ने कहा कि तुम स्वयं उससे इसका कारण पूछो। अर्जुन तब ब्राह्मण के पास गया और उससे पूछा, 'साधु महाराज, आप किसी की हत्या नहीं करते। आप सूखे फल खाते हैं। तब आप इस तलवार को क्यों लिये घूमते हैं ?' ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "चार मनुष्यों को मारने के लिये यदि सयोगवश उनसे भेंट हो गई तो।" अर्जुन ने पूछा, "पहिला कौन है ?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "लबाड़ नारद"। अर्जुन ने कहा, "उसने कौन सा पाप किया है ?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "जरा उसकी धृष्टता को तो देखो। वह मेरे प्रभू को अपने गाने बजाने से जगाता रहता है। उन्हें उनके आराम और तकलीफ का कुछ ख्याल ही नहीं है। दिन रात, समय बेसमय प्रभू की शान्ति को स्तुति और प्रार्थना से भंग करता है।" अर्जुन ने पूछा, "महाराज दूसरा कौन है ?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "धृष्ट द्रौपदी।" अर्जुन ने कहा, "उसका क्या अपराध ?' ब्राह्मण ने कहा "जरा उस स्त्री की धृष्टता को तो देखो, उसने मेरे प्रभू को उसी समय बुलाया जब कि वे भोजन को बैठ रहे थे। भोजन छोड़कर वे काम्यवन को भागे गये और पाण्डवों को दुर्वासा के श्राप से बचाया। उस अबला ने केवल इतना ही नहीं किया बल्कि मेरे प्रभू को सराय सरीखा भोजन भी कराया। अर्जुन ने पूछा, "महाराज तीसरा कौन है ?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "निर्दयी

प्रह्लाद। यह इतना निर्दयी था कि खौलते हुए कड़ाहे में ईश्वर का डलवाने में या हाथी के पैर के नीचे उनको कुचलाने में अथवा खम्भे में बंधवाने में उसको दया नहीं आई।" अर्जुन ने पूछा, "चौथा कौन है।" ब्राह्मण ने कहा 'अर्जुन"। अर्जुन ने पूछा,"उसने क्या अपराध किया है?" ब्राह्मण ने कहा, "उसकी धृष्टता तो सारा देखा, उसने कुरुक्षेत्र के युद्ध में मेरे भगवान को अपना सारथी बनाया है।" ब्राह्मण की भक्ति और उसके प्रेम को देखकर अर्जुन दंग रह गया। उस दिन से उसका अहङ्कार जाता रहा और उसने यह विचार छोड़ दिया कि मैं ईश्वर को सब से अधिक प्यार करता हूँ।

२९९ सदैव ऐसा समझो कि कुटुम्ब की चिन्तायें मेरी नहीं हैं, ईश्वर की हैं। मैं ईश्वर का नौकर हूँ, उसकी आज्ञा पालन करने के लिये मेरा जन्म हुआ है। जब ऐसी भावना मन में दृढ़ हो जायगी तो फिर कोई ऐसी बात शेष न रहेगी जिसे मनुष्य "अपनी" कह सके।

३०० भगवान रामकृष्ण कहा करते हैं, 'मेरी दी हुई आज्ञा का पालन क्या तुम पूर्णतया पालन कर सकोगे?" मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मेरी आज्ञा का तुमने यदि सोलहवां हिस्सा भी पालन किया तो तुम्हें मोक्ष अवश्य मिलेगा।"

३०१ अच्छा फौलाद बनाने के लिये लोहा भट्टी में कई बार तपाया जाता है और खूब अच्छी तरह पीटा जाता है। तब कहीं उसकी तेज़ तलवार बन सकती है और वह किसी भी भार मोड़ा जा सकता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जब दुख की भट्टी में कई बार तपाया जाता है और संसार की मार उस पर पड़ती है तब कहीं वह पवित्र हृदय बनता है और भगवतपद में लीन होता है।

३०२ एक पेड़ में एक यक्ष रहता था। उसके नीचे से एक दिन एक नाई गुज़रा। उसने किसी को कहते सुना कि क्या तुम अशर्फियों से भरे सात घड़े स्वीकार करोगे? नाई ने चारों ओर देखा

लेकिन उसे कोई दिखलाई न पड़ा। अशर्फियों के घड़ों ने उसके लोभ को बढ़ाया और उसने ज़ोर से चिल्लाकर उत्तर दिया कि हां, मैं स्वीकार करूँगा। उत्तर मिला कि घर जाओ, मैंने ७ घड़े तुम्हारे घर पहुँचा दिये हैं। इसकी सचाई की परीक्षा करने के लिये नाई तेज़ी से दौड़ कर घर गया। जब कि वह घर पहुँचा तो उसे सात घड़े दिखलाई पड़े। उसने उन्हें खोलकर देखा तो ६ अशर्फियों से पूरे भरे थे लेकिन एक कुछ खाली था। उसने विचारा कि जब तक सातवा भी अशर्फियों से अच्छी तरह न भर जायगा तब तक मुझे पूरी खुशी नहीं होगी। उसने अपने सोने चांदी के गहने बेंच डाले और उनकी अशर्फियां लेकर घड़े में डाला लेकिन वह विचित्र घड़ा पहिले की तरह खाली बना रहा। इससे नाई को बड़ा दुख हुआ। वह अब घर के अन्य प्राणियों के साथ भूखा रहने लगा और बचत का रुपया उसी घड़े में डालने लगा लेकिन तब भी वह न भरा। एक दिन नाई ने राजा से प्रार्थना किया कि महाराज! वेतन मेरा कम है, इससे गुज़र नहीं होगा, कृपया बढ़ा दीजिये। राजा नाई को बहुत चाहता था उसने उसका वेतन दूना कर दिया। नाई अब और अधिक रुपया बचाने लगा और उसे घड़े में फेंकने लगा लेकिन तब भी घड़ा न भरा। नाई अब भिक्षा मांगने लगा और अपने वेतन का रुपया और भिक्षा का रुपया घड़े में डालने लगा। महीनों बीत गये लेकिन घड़ा न भरा, कंजूस और दुखित नाई की अवस्था दिन बदिन खराब होती गई। एक दिन राजा ने उसकी यह अवस्था देखकर उससे पूछा, "क्यों जी! जब तुम्हारी तनख्वाह इस समय से आधी थी तब तुम बड़े सुखी और सन्तुष्ट थे, लेकिन अब तुम्हारी तनख्वाह पहिले से दूनी है तो भी तुम चिन्ताग्रस्त और दुखी हो। इसका क्या कारण है? क्या तुमको ७ अशर्फियों से भरे घड़े तो नहीं मिले?" नाई को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "महाराज आपसे किसने कहा?" राजा ने कहा, "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ये लक्षण

उस मनुष्य के हैं जिसे यक्ष ७ घड़े देता है। उसने मुझे देने को कहा था लेकिन मैंने उससे पहिले से पूछ लिया था कि वह द्रव्य खर्च करने के लिये हैं या जमा करने के लिये है। यक्ष बिना उत्तर दिये चला गया था। तुम्हें क्या मालूम नहीं कि यह द्रव्य खर्च नहीं किया जा सकता। इससे जमा करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न होती है। जाओ और घड़े वापस कर आओ। अब तो नाई को होश हुआ। वह वृक्ष के यक्ष के पास गया और उससे कहा कि अपने घड़े वापस लेलो। यक्ष ने उत्तर दिया "अच्छा"। जब नाई घर वापस आया तो उसने देखा कि घड़े गायब हो गये और साथ ही इतने समय की उसकी कमाई भी गायब हो गई। संसार में कुछ लोगों का यही हाल है। जिन्ह सच्चा आय और सच्चे व्यय का यथार्थ ज्ञान नहीं होता वे अपनी सारी पूंजी खो बैठते हैं।

२०३ लड़का धूल पर लोटता रहता है और मा बराबर उसके शरीर को पोंछ कर साफ करती रहती है। उसी प्रकार मनुष्य का पाप करना स्वाभाविक है और उस पाप को दूर करने के लिये ईश्वर में प्रेम उत्पन्न करना भी स्वाभाविक है।

२०४ रोगी का पेट चाहे भरा हो, उसको अजीर्ण का रोग चाहे हो गया हो लेकिन सरस और मधुर भोजन के पदार्थ सामने आने से उसके मुँह में पानी भर आता है, उसी प्रकार मनुष्य का कुछ भी काम भले ही न हो लेकिन रुपया पैसा अथवा दूसरी स्पृहणीय वस्तु जब उसके सामने आ जाती है तो उसका पवित्र मन चलायमान अवश्य हो जाता है।

२०५ जो मनुष्य अपना समय दूसरों के गुण दोष विवेचन करने में लगाता है वह अपना समय नष्ट करता है। वह समय को न तो आत्मचिन्तन में खर्च करता है और न परमात्मा के चिन्तन में। दूसरों के आत्मचिन्तन में कुछ अवश्य खर्च करता है।

३०६ परमेश्वर अनन्त (अमर्याद) है और जीव सान्त (समयाद) है। सान्त अनन्त को किस प्रकार ग्रहण कर सकता है ? ऐसा करना उसी तरह है जिस प्रकार नमक के खिलौने से समुद्र की गहराई का नापना। नमक का खिलौना घुलकर समुद्र में मिल जाता है। जीवात्मा उसी प्रकार जब ईश्वर की खोज म लगता है तो भेद भाव मिट जाता है और वह इश्वर में लीन हो जाता है।

३०७ भगवान रामकृष्ण कहा करते थे कि प्रत्येक वस्तु नारायण है। मनुष्य नारायण है, पशु नारायण है, साधु नारायण है, मूर्ख नारायण है। जिस २ का अस्तित्व है वह सब नारायण है। परमात्मा भिन्न २ स्वरूपों में खेल रहा है और सब वस्तुये उसके भिन्न २ प्रकार और उसके वैभव के स्थान हैं।

३०८ अपने हृदय की ओर लक्ष करके भगवान रामकृष्ण कहा करते थे, कि जो इश्वर को यहां देखता है वह उसे वहां (बाह्य जगत की ओर लक्ष करके) भी देखता है। जो यहां इश्वर को नहीं देखेगा वह बाहर इश्वर को कहीं भी नहीं देख सकेगा। जो इश्वर को अपने मन मन्दिर में देखता है वह इश्वर को विश्व मन्दिर में भी देखता है।

३०६ कौन किसका गुरू है ? केवल एक इश्वर ही सब जगत का गुरू और मार्ग दर्शक है।

३१० किसी भी पुरुष की आध्यात्मिक उन्नति उसके विचारों और कल्पनाओं पर अवलम्बित है। वह अन्तःकरण से प्रारम्भ होती है बाह्य कर्मों से नहीं। दो मित्र घूमते २ एक ऐसे स्थान में पहुँचे जहां भागवत पुराण हो रहा था। एक ने कहा, "भाई, चलो थोड़ी देर तक भागवत सुनें।" दूसरे ने कहा "यहां भाई भागवत सुनने से क्या लाभ ? चलो उस आनन्दगृह में आमोद प्रमोद में अपना समय व्यतीत करें।" पहिला इस पर राजी नहीं हुआ। वह बैठ कर भागवत सुनने लगा। दूसरा आनन्द गृह में गया लेकिन जिस आमोद प्रमोद का वह

स्वप्न देख रहा था वह उसे वहां नहीं मिला। वह सोचने लगा, "देखा तो मैं यहां क्यों आया ? मेरा मित्र वास्तव में सुखी है। वह भगवान कृष्ण का चरित्र और लीला सुन रहा है।" इस प्रकार आनन्द गृह में भी उसने कृष्ण का ध्यान किया, दूसरे मनुष्य को भागवत सुनने में आनन्द न मिला, वह कहने लगा, "अरेरेरे मैं अपने मित्र के साथ उस आनन्द में क्यों नहीं गया ? वह तो इस समय बड़ा आनन्द कर रहा होगा।" परिणाम यह हुआ कि जहां भागवत हो रहा था वहां बैठे वह आनन्द गृह का चिन्तन करके पाप के भागी बन रहे थे क्योंकि उसके विचार गन्दे थे। और जो आनन्द गृह में गया था वह वहीं से भागवत का स्मरण करके पुण्य का भागी बन रहा था क्योंकि उसका हृदय अच्छाई की ओर लग रहा था।

३११ कोई सन्यासी एक मन्दिर के पास रहते थे। उनके सामने एक रंडी का मकान था। बहुत से आदमियों का रोज़ आते जाते देख कर एक दिन उन्होंने रंडी को बुलवाया और उससे कहा, "देख तू दिन रात बड़ा पाप करती है, तेरी न मालूम परलोक में क्या दुर्गति होगी।" बेचारी रंडी अपने दुष्कर्म के लिये बड़ी लज्जित हुई, मन ही मन उसने पश्चात्ताप किया और ईश्वर से क्षमा मांगी। लेकिन चूंकि रंडी का काम करना ही उसके घराने का पेशा था इसलिये जीवन निर्वाह के लिये वह दूसरा पेशा आसानी से न कर सकती थी। जब वह शरीर से पाप करती तो मन में बड़ी दुखी होती और ईश्वर से क्षमा के लिये ज़ोरों से प्रार्थना करती। सन्यासी ने देखा कि मेरे कहने का इस पर कोई असर नहीं पड़ता, इसलिये उसने सोचा, "देखूँ जीवन में कितने आदमी रंडी के पास जाते हैं।" उस दिन से जब कोई रंडी के घर जाता तो सन्यासी जी उसके नाम का एक कंकड़ अलग रख लेते थे। समय पाकर उनके यहां कंकड़ों का ढेर लग गया। एक दिन सन्यासी ने रन्डी को ढेर दिखला कर कहा, "क्यों जी, देखती हो ?

जितने यहां पर कंकड़ हैं उतने घोर पाप तुमने किये हैं। इसलिये अब भी रास्ते पर आओ।" पाप के ढेर को देखकर रन्डी कांपने लगी। उसने ईश्वर से प्रार्थना किया कि हे ईश्वर, क्या आप इस पापमय जीवन से मुझे मुक्त नहीं करेंगे।

ईश्वर ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। रन्डी की मृत्यु हो गई। ईश्वर की अद्भुत लीला से उसी दिन सन्यासी का भी स्वर्गवास हो गया। विष्णु के दूत स्वर्ग से आकर रन्डी को स्वर्ग ले गये। रन्डी का सौभाग्य देखकर सन्यासी ने चिल्ला कर कहा, "क्या! यही ईश्वर का सूक्ष्म न्याय है? जन्म भर तो मैंने तपस्या की और जन्म भर मैं दरिद्र बना रहा जिसका फल यह मिला कि मैं नरक को भेजा जा रहा हूँ और यह रंडी जिसका जीवन पाप करते बीता, स्वर्ग को भेजी जा रही है!" सन्यासी के इन वचनों को सुनकर विष्णु के दूतों ने कहा, "ईश्वर की आज्ञा हमेशा न्यायानुकूल होती है, जैसा तुम सोचोगे वैसा ही पावोगे। मान और कीर्ति पाने के लिये तुमने अपना सारा जीवन दम्भ और बाहरी दिखाव में व्यतीत कर दिया और ईश्वर ने तुमको वैसा ही फल दिया। तुम्हारा हृदय सचाई के साथ कभी ईश्वर की ओर नहीं गया। यह रंडी मन से सदैव ईश्वर का स्मरण करती थी यद्यपि उसका शरीर पाप करता था। नीचे की ओर तो जरा देखो, किस प्रकार तुम्हारे और रंडी के शरीरों का लोगों की ओर से सत्कार मिल रहा है। चूंकि तुमने शरीर से पाप नहीं किया है इसलिये लोग तुम्हारे शरीर को फूलों से सजाकर बाजा बजाकर धूमधाम से फूँकने के लिये नदी की ओर लिये जा रहे हैं। इस रंडी के शरीर ने चूंकि पाप किया है इसलिये उसको गिद्ध और सियार नोच नोच कर फाड़ रहे हैं। चूँकि रंडी हृदय की पवित्र थी इसलिये वह स्वर्ग को जा रही है और तुम चूंकि रंडी के पापों की ओर बराबर सोचते थे इसलिये अपवित्र बन कर नरक को जा रहे हो। वास्तव में सच्ची रंडी तुम हो वह नहीं है।

३१२ एक मनुष्य नहाने के लिये नदी को जा रहा था। वहां उसने सुना कि एक मनुष्य संन्यासी होने के लिये कुछ दिन से तय्यारी कर रहा है। यह सुन कर उसने सोचा कि सन्यास जीवन में सब से उत्तम आश्रम है। उसने आधे कपड़े से अपने शरीर को लपेटा और तुरन्त सन्यासी बनकर जङ्गल का रास्ता पकड़ा और फिर घर कभी भी वापस नहीं आया। उत्कट वैराग्य का यह एक उदाहरण है।

३१३ एक बार एक प्रसिद्ध ब्राह्म मिशनरी (पुरोहित) ने कहा कि परमहंस रामकृष्ण पागल हैं। एक ही विषय पर सोचते सोचते बहुत से योरोपीय तत्त्वज्ञानियों की तरह उसका दिमाग फिर गया है। भगवान परमहंस ने पश्चात् समय पा कर उस पादड़ी से कहा था, तुम कहते हो कि योरोप में भी एक ही विषय पर सोचने के कारण बहुत से मनुष्य पागल हो जाते हैं। लेकिन जो उनका विषय है वह जड़ है या चैतन्य (matter or spirit)। यदि वे जड़ विषय पर ध्यान करते हैं तो उनके पागल होने में क्या आश्चर्य है? परन्तु सब जगत जिस चैतन्य से प्रकाशित होता है उस नित्य विषय पर विचार करने से मनुष्य किस प्रकार पागल हो सकता है? तुम्हारा धर्मग्रन्थ क्या तुम्हें यही सिखलाता है!

३१४ पुलिस का आदमी अपनी लालटेन का प्रकाश जिस पर फेंकता है उसे देख सकता है लेकिन जब तक वह स्वयं अपने ऊपर लालटेन का प्रकाश नहीं डालता तब तक उसे कोई पहचान नहीं सकता। उसी प्रकार ईश्वर सब को देखता है लेकिन उसे कोई नहीं देख सकता जब तक वह दया के वश स्वयं न प्रगट हो।

३१५ अभिमान राख के ढेर के सदृश है जिस पर जो पानी पड़ता है वह गायब होता जाता है। प्रार्थना और ध्यान का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता जिसका हृदय अभिमान से भरा हुआ है।

३१६ नीचे दिये हुये तीन अवस्थाओं में से किसी भी एक अवस्था को पहुँचने से मनुष्य को इश्वर की प्राप्ति होती है।

(१) यह सब मैं हूँ।

(२) यह सब तू है।

(३) तू मालिक है और मैं सेवक हूँ।

३१७ एक अहीरिन नदी के उस पार रहने वाले एक ब्राह्मण पुजारी को दूध दिया करती थी। लेकिन नाव की व्यवस्था ठीक न होने के कारण वह हर रोज ठीक समय पर दूध न पहुँचा सकती थी। ब्राह्मण के बुरा भला कहने पर बेचारी अहीरिन ने कहा, "महाराज, मैं क्या करू, मैं तो अपने घर से तड़के तड़के रवाना होती हूँ लेकिन मल्लाहों और यात्रियों के लिये मुझे बड़ी देर तक नदी के किनारे ठहरना पड़ता है।" पुजेरी जी ने कहा, "क्यों रे स्त्री, ईश्वर का नाम लेकर लोग तो जीवन के समुद्र को पार कर लेते हैं तू जरा सी नदी नहीं पार कर सकती।" वह भोली स्त्री पार जाने के सुलभ उपाय का सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुई। दूसरे दिन से अहीरिन ठीक समय पर दूध पहुँचाने लगी। एक दिन पुजेरी जी ने उससे पूछा, "क्या बात है कि अब तुझे देर नहीं होती।" स्त्री ने उत्तर दिया, "आपके बतालाये हुये तरीके से ईश्वर का नाम लेती हुई मैं नदी को पार कर लेती हूँ, मल्लाह के लिये मुझे अब ठहरना नहीं पड़ता।" पुजेरी को इसपर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने पूछा, "क्या तुम मुझे दिखला सकती हो कि तुम किस प्रकार नदी को पार कर सकती हो?" स्त्री उनको अपने साथ ले गई और पानी के ऊपर चलने लगी। पीछे घूम कर उसने देखा तो पुजेरी जी बड़ी आफत में पड़े थे। उसने कहा, 'महाराज क्या बात है आप मुह से ईश्वर का नाम ले रहे हैं लेकिन हाथों से अपने कपड़ों को समेट रहे हैं ताकि वे भीगें नहीं। आप उस पर पूरा विश्वास नहीं रखते?"

परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना और उसी पर अपने को छोड़ देना प्रत्येक स्त्री पुरुष द्वारा किये हुये अद्भुत चमत्कार की कुञ्जी है।

३१८ मन को एकाग्र करने का सब से सरल उपाय यह है कि उसे दीपक की ज्योति पर लगाओ। उस ज्योति का भीतरी नीला भाग कारण शरीर है। उस पर मन लगाने से एकाग्रता शीघ्र मिलती है। चमकता हुआ भाग जो नीले भाग को ढके हुये है सूक्ष्म शरीर कहलाता है और उसका बाहरी भाग स्थूलशरीर कहलाता है।

३१९ एक नेक ब्रह्मो ने भगवान रामकृष्ण से पूछा, "हिन्दू धर्म और ब्राह्मधर्म में क्या अन्तर है?" भगवान ने उत्तर दिया, "जो अन्तर एक राग और सब गायन शास्त्र में है उतना ही अन्तर ब्राह्मधर्म और हिन्दू धर्म में है। ब्राह्मधर्म ब्रह्म के एक ही राग से सन्तुष्ट होता है और हिन्दू धर्म कई रागों से बना है जिनके मिलने से एक उत्तम स्वर निकलता है।

३२० यदि कोई मनुष्य ध्यान में इतना तल्लीन हो जाय कि उसको अपने बाहर की किसी भी वस्तु की स्मृति न रहे यहाँ तक कि यदि पक्षी उसके बालों में घोंसला बनावें तो भी उसको उसका पता न रहे, तो वास्तव में ऐसे मनुष्य को ध्यान की पूर्णता मिली हुई समझना चाहिये।

३२१ किसी शिष्य ने भगवान रामकृष्ण से पूछा कि "महाराज विषय-वासना पर विजय मैं किस प्रकार प्राप्त करूँ? अभी तक सारा समय मैंने धर्मचिन्तन में लगाया है लेकिन मन में दुर्वासना आती ही जाती है।" भगवान् ने कहा "एक मनुष्य के पास एक प्यारा कुत्ता था, वह उसे बहुत चाहता था, वह उसको अपने साथ रखता था उसके साथ खेलता था और उसे चूमता चाटता था। एक दूसरे मनुष्य ने उसकी यह मूर्खता देखकर उससे कहा, "तुम इस कुत्ते का इतना लाड़ प्यार न करो। यह आखिर एक अविचारी जानवर है ऐसा न हो किसी

दिन काट ले।' कुत्ते के स्वामी ने यह बात मान लिया और उस दिन कुत्ते को गोद से फेंक कर ऐसा निश्चय किया कि अब मैं इस कुत्ते को अधिक प्यार न करूंगा। कुत्ता अपने स्वामी के बदले हुये इस भाव को न समझ सका। वह मालिक के पास दुम हिलाता हुआ जाता और चिल्ला २ कर तङ्ग करता कि वह उसे पूर्ववत प्यार करे। जब कुत्ते ने देखा कि मालिक अब किसी प्रकार मुझे अपनी गोद में नहीं लेता तो उसने उसको तङ्ग करना छोड़ दिया। तुम्हारी भी ऐसी ही दशा है। जिस कुत्ते को तुमने इतने अधिक समय से अपने हृदय में पाल रक्खा है वह इच्छा करने पर भी तुमको नहीं छोड़ेगा। लेकिन इसमें कोई हर्ज भी नहीं है। जब यह कुत्ता तुम्हारे पास आवे तो उसे मत प्यार करो उलटे उसे पीटते रहो। एक समय ऐसा आवेगा जब तुम उसके त्रास से मुक्त हो जाओगे।"

२९२ आजकल के अंगरेजी स्कूल में पढे हुये एक सज्जन ने एक बार भगवान परमहंस से कहा कि गृहस्थाश्रम में रहने वाले लोग भी सांसारिक प्रपचों से अदूषित रह सकते हैं। इस पर भगवान ने उत्तर दिया कि क्या आपको मालूम है कि आजकल के विषयवासनाओं से अछूत गृहस्थाश्रमी किस प्रकार के होते हैं? यदि कोई गरीब आदमी उनसे भिक्षा मांगने के लिये आता है तो वे कहते हैं कि भाई, हम तो इन सब झंझटों से अलग है, रुपये पैसे का सब प्रबन्ध हमारी स्त्री करती है, मैं तो रुपया पैसा हाथ से छूता तक नहीं हूँ। आप यहां नाहक रहकर अपना अमूल्य समय क्यों नष्ट कर रहे हैं। आप मेहरबानी करके दूसरा घर देखिये। एक बार एक ब्राह्मण ऐसे बाबू से बार बार अपनी मांग पेश करता रहा। उसकी मांगों से तंग आकर उन्होंने सोचा कि इस भिखमंगे को कुछ देना चाहिये। उन्होंने उससे कहा, कल आना जो कुछ हो सकेगा दिया जायगा। उन्होंने भीतर जाकर अपनी स्त्री से कहा, प्यारी, एक ब्राह्मण इस समय बड़े कष्ट में है,

परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना और उसी पर अपने को छोड़ देना प्रत्येक स्त्री पुरुष द्वारा किये हुये अद्भुत चमत्कार की कुञ्जी है।

३१८ मन को एकाग्र करने का सब से सरल उपाय यह है कि उसे दीपक की ज्योति पर लगाओ। उस ज्योति का भीतरी नीला भाग कारण शरीर है। उस पर मन लगाने से एकाग्रता शीघ्र मिलती है। चमकता हुआ भाग जो नीले भाग को ढके हुये है सूक्ष्म शरीर कहलाता है और उसका बाहरी भाग स्थूलशरीर कहलाता है।

३१९ एक नेक ब्रह्मों ने भगवान रामकृष्ण से पूछा, "हिन्दू धर्म और ब्राह्मधर्म में क्या अन्तर है ?" भगवान ने उत्तर दिया, "जो अन्तर एक राग और सब गायन शास्त्र में है उतना ही अन्तर ब्राह्मधर्म और हिन्दू धर्म में है। ब्राह्मधर्म ब्रह्म के एक ही राग से सन्तुष्ट होता है और हिन्दू धर्म कई रागों से बना है जिनके मिलने से एक उत्तम स्वर निकलता है।

३२० यदि कोई मनुष्य ध्यान में इतना तल्लीन हो जाय कि उसको अपने बाहर की किसी भी वस्तु की स्मृति न रहे यहाँ तक कि यदि पक्षी उसके बालों में घोंसला बनावें तो भी उसको उसका पता न रहे, तो वास्तव में ऐसे मनुष्य को ध्यान की पूर्णता मिली हुई समझना चाहिये।

३२१ किसी शिष्य ने भगवान रामकृष्ण से पूछा कि "महाराज विषय-वासना पर विजय मैं किस प्रकार प्राप्त करूँ ? अभी तक सारा समय मैंने धर्मचिन्तन में लगाया है लेकिन मन में दुर्वासना बाकी जाती है।" भगवान् ने कहा "एक मनुष्य के पास एक प्यारा कुत्ता था, वह उसे बहुत चाहता था, वह उसको अपने साथ रखता था उसके साथ खेलता था और उसे चूमता चाटता था। एक दूसरे मनुष्य ने उसकी यह मूर्खता देखकर उससे कहा, "तुम इस कुत्ते का इतना लाड़ प्यार न करो। यह आखिर एक अविचारी जानवर है ऐसा न हो किसी

अथवा आलू की है। उसी प्रकार ब्रह्म की शक्ति से मन, बुद्धि और इन्द्रियां अपना अपना काम करती हैं और जब यह शक्ति बन्द हो जाती है तो मन, बुद्धि और इन्द्रियां भी अपना काम बन्द कर देती हैं।

३२५ वर्षा का पानी जब घर की छत पर गिरता है तो वह बाघमुँह आकर के नालियों से जमीन पर बह जाता है। पानी वास्तव में आकाश से आता है किन्तु बाघमुंह वाले नल से आता हुआ दिखलाई पड़ता है। उसी प्रकार उपदेश निकलते तो साधुओं के मुखों से हैं किन्तु वास्तव में वे परमेश्वर से निकलते हैं।

३२६ सच्चा धार्मिक वही है जो एकान्त में भी पाप नहीं करता है। क्योंकि वह समझता है कि चाहे उसे कोई मनुष्य न देखे लेकिन ईश्वर अवश्य देखता है। सच्चा धार्मिक वही है जो एकांत जंगल में जहां उसे कोई नहीं देखता, ईश्वर के भय से जो उसे हर जगह देखता है, एक नवजवान स्त्री का पाकर उसपर निगाह भी नहीं डालता। सच्चा धार्मिक वही है जो किसी एकान्त स्थान में अशर्फियों की एक थैली पाकर उसे लेने की इच्छा नहीं करता। सच्चा धार्मिक वह नहीं है जो जनता की निन्दा का ख्याल करके केवल दिखाव के लिये धर्माचरण करता है। एकान्त और गुप्तपन का धर्म सच्चा धर्म है, अभिमान और दिखाव से भरा हुआ धर्म धर्म नहीं है।

३२७ बांस की टहनियों में से चमकते हुये पानी को गुजरते देखकर छोटे मच्छड़ बड़ी खुशी से उसमें घुस जाते हैं किन्तु फिर वापस नहीं आ सकते। उसी प्रकार मूर्ख मनुष्य संसार की चमक दमक देखकर उसमें फंस जाते हैं। जिस प्रकार जाल से बाहर निकलने की अपेक्षा जाल में जाना सरल है, उसी प्रकार संसार का त्याग करने की अपेक्षा संसार में रहकर संसारी बनना सरल है।

३२८ शीत खाई हुई दियासलाई का चाहे तुम जितना रगड़ो, वह जलती नहीं सिर्फ धुआं देकर रह जाती है, किन्तु सूखी दियासलाई

हम लोगों को एक रुपया उसे देना चाहिये। रुपया का नाम सुन स्त्री बहुत बिगड़ी और फिर उसने पति से कहा, "रुपये तो पत्त पत्थर हो गये हैं कि बिना सोचे समझे तुम जहा चाहते हो फेंक हो।" गिड़गिड़ाकर एक प्रकार से क्षमा मागते हुये बाबू जी ने का प्यारी, ब्राह्मण बड़ा गरीब है हम लोगों का एक रुपये से कम न दे चाहिये।" स्त्री ने कहा, "एक रुपया मैं नहीं दे सकती, लो, दो आ ले जाओ और तुम्हारा जी चाहे तो ब्राह्मण को दे दो।" इस गृह को चूकि घरेलू मामलों से कोई सम्बन्ध न था इसलिये उसने दो आने देना स्वीकर कर लिया। दूसरे दिन भिखमगा आया और उ दो आने दिये गये। प्रपञ्च से अदूषित तुम्हारे गृहस्थ स्त्रैण होते हैं उनकी नकेल स्त्रियों के हाथ में होती है क्योंकि वे घरेलू मामलों देखरेख नहीं करते। वे सोचते हैं कि हम बड़े पवित्र और उत्त मनुष्य हैं किन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो वे इससे बिल्कुल विरुद्ध होते हैं।

३२३ जानकर अथवा अनजान से, चेतन अवस्था में अथवा अचेतन अवस्था में, चाहे जिस हालत में मनुष्य ईश्वर का नाम ल उसे नाम लेने का फल मिलता अवश्य है। जो मनुष्य स्वयं जाकर नदी में स्नान करता है उसे भी नहाने का फल मिलता है, जो नदी में जबरदस्ती ढकेल दिया जाता है उसे भी नहाने का फल मिलता है अथवा जो गहरी नींद सो रहा है यदि उसके ऊपर कोई पानी उड़ेल दे तो उसे भी नहाने का फल मिलता है।

३२४ मनुष्य का शरीर पतीली की तरह है और मन, बुद्धि और इन्द्रिया उस पतीली के अन्दर के जल, चावल और आलू की तरह हैं। जब पतीली आग पर रक्खी जाती है तो जल चावल और आलू गरम हो जाते हैं। यदि उन्हें कोई छू ले तो उसकी अगुली जल जाती है यद्यपि गरमी न तो पतीली की है और न पानी, चावल

अथवा आलू की है। उसी प्रकार ब्रह्म की शक्ति से मन, बुद्धि और इन्द्रियां अपना अपना काम करती हैं और जब यह शक्ति बन्द हो जाती है तो मन, बुद्धि और इन्द्रियां भी अपना काम बन्द कर देती हैं।

३२५ वर्षा का पानी जब घर की छत पर गिरता है तो वह बाघमुँह आकर के नालियों से जमीन पर बह जाता है। पानी वास्तव में आकाश से आता है किन्तु बाघमुंह वाले नल से आता हुआ दिखलाई पड़ता है। उसी प्रकार उपदेश निकलते तो साधुओं के मुखों से हैं किन्तु वास्तव में वे परमेश्वर से निकलते हैं।

३२६ सच्चा धार्मिक वही है जो एकान्त में भी पाप नहीं करता है। क्योंकि वह समझता है कि चाहे उसे कोई मनुष्य न देखे लेकिन ईश्वर अवश्य देखता है। सच्चा धार्मिक वही है जो एकान्त जंगल में जहां उसे कोई नहीं देखता, ईश्वर के भय से जो उसे हर जगह देखता है, एक नवजवान स्त्री को पाकर उसपर निगाह भी नहीं डालता। सच्चा धार्मिक वही है जो किसी एकान्त स्थान में अशर्फियों की एक थैली पाकर उसे लेने की इच्छा नहीं करता। सच्चा धार्मिक वह नहीं है जो जनता की निन्दा का ख्याल करके केवल दिखाव के लिये धर्माचरण करता है। एकान्त और गुप्तपन का धर्म सच्चा धर्म है, अभिमान और दिखाव से भरा हुआ धर्म धर्म नहीं है।

३२७ बांस की टट्टियों में से चमकते हुये पानी को गुजरते देखकर छोटे मच्छड़ बड़ी खुशी से उसमें घुस जाते हैं किन्तु फिर वापस नहीं आ सकते। उसी प्रकार मूर्ख मनुष्य संसार की चमक दमक देखकर उसमें फंस जाते हैं। जिस प्रकार जाल से बाहर निकलने की अपेक्षा जाल में जाना सरल है, उसी प्रकार संसार को त्याग करने की अपेक्षा संसार में रहकर संसारी बनना सरल है।

३२८. शीत खाई हुई दियासलाई को चाहे तुम जितना रगड़ो, वह जलती नहीं सिर्फ धुआं देकर रह जाती है, किन्तु सूखी दियासलाई

हम लोगों को एक रुपया उसे देना चाहिये। रुपया का नाम सुनकर स्त्री बहुत बिगड़ी और फिर उसने पति से कहा, "रुपये तो पत्ते और पत्थर हो गये हैं कि बिना सोचे समझे तुम जहां चाहते हो फेंक रहे हो।" गिड़गिड़ाकर एक प्रकार से क्षमा मांगते हुये बाबू जी ने कहा, प्यारी, ब्राह्मण बड़ा गरीब है हम लोगों को एक रुपये से कम न देना चाहिये।" स्त्री ने कहा, "एक रुपया मैं नहीं दे सकती, लो, दो आने ले जाओ और तुम्हारा जी चाहे तो ब्राह्मण को दे दो।" इस गृहस्थ को चूंकि घरेलू मामलों में कोई सम्बन्ध न था इसलिये उसने दो आने देना स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन भिखमंगा आया और उसे दो आने दिये गये। प्रपंच से अदूषित तुम्हारे गृहस्थ स्त्रैण होते हैं। उनकी नकेल स्त्रियों के हाथ में होती है क्योंकि वे घरेलू मामलों की देखरेख नहीं करते। वे सोचते हैं कि हम बड़े पवित्र और उत्तम मनुष्य हैं किन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो वे इसके बिल्कुल विरुद्ध होते हैं।

२९३ जानकर अथवा अनजान से, चेतन अवस्था में अथवा अचेतन अवस्था में, चाहे जिस हालत में मनुष्य ईश्वर का नाम ले, उसे नाम लेने का फल मिलता अवश्य है। जो मनुष्य स्वयं जाकर नदी में स्नान करता है उसे भी नहाने का फल मिलता है, जो नदी में जबरदस्ती ढकेल दिया जाता है उसे भी नहाने का फल मिलता है अथवा जो गहरी नींद सो रहा है यदि उसके ऊपर कोई पानी उड़ेल दे तो उसे भी नहाने का फल मिलता है।

२९४ मनुष्य का शरीर पतीली की तरह है और मन, बुद्धि और इन्द्रियां उस पतीली के अन्दर के जल चावल और आलू की तरह हैं। जब पतीली आग पर रक्खी जाती है तो जल, चावल और आलू गरम हो जाते हैं। यदि उन्हें कोई छू ले तो उसकी अंगुली जल जाती है यद्यपि गरमी न तो पतीली की है और न पानी, चावल

अथवा आलू की है। उसी प्रकार ब्रह्म की शक्ति से मन बुद्धि और इन्द्रियां अपना अपना काम करती हैं और जब यह शक्ति बन्द हो जाती है तो मन, बुद्धि और इन्द्रियां भी अपना काम बन्द कर देती हैं।

३२५ वर्षा का पानी जब घर की छत पर गिरता है तो वह बाघमुँह आकर के नालियों से जमीन पर बह जाता है। पानी वास्तव में आकाश से आता है किन्तु बाघमुंह वाले नल से आता हुआ दिखलाई पड़ता है। उसी प्रकार उपदेश निकलते तो साधुओं के मुखों से हैं किन्तु वास्तव में वे परमेश्वर से निकलते हैं।

३२६ सच्चा धार्मिक वही है जो एकान्त में भी पाप नहीं करता है। क्योंकि वह समझता है कि चाहे उसे कोई मनुष्य न देखे लेकिन ईश्वर अवश्य देखता है। सच्चा धार्मिक वही है जो एकांत जंगल में जहां उसे कोई नहीं देखता, ईश्वर के भय से जो उसे हर जगह देखता है, एक नवजवान स्त्री को पाकर उसपर निगाह भी नहीं डालता। सच्चा धार्मिक वही है जो किसी एकान्त स्थान में अशर्फियों की एक थैली पाकर उसे लेने की इच्छा नहीं करता। सच्चा धार्मिक वह नहीं है जो जनता की निन्दा का ख्याल करके केवल देखाव के लिये धर्माचरण करता है। एकान्त और गुप्तपन का धर्म सच्चा धर्म है, अभिमान और देखाव से भरा हुआ धर्म धर्म नहीं है।

३२७ बांस की टहनियों में से चमकते हुये पानी को गुजरते देखकर छोटे मच्छड़ बड़ी खुशी से उसमें घुस जाते हैं किन्तु फिर वापस नहीं आ सकते। उसी प्रकार मूर्ख मनुष्य संसार की चमक दमक देखकर उसमें फंस जाते हैं। जिस प्रकार जाल से बाहर निकलने की अपेक्षा जाल में जाना सरल है, उसी प्रकार संसार को त्याग करने की अपेक्षा संसार में रहकर संसारी बनना सरल है।

३२८. सीत खाई हुई दियासलाई को चाहे तुम जितना रगड़ो, वह जलती नहीं सिर्फ धुआं देकर रह जाती है, किन्तु सूखी दियासलाई

जग सी रगड़ से एकदम जलने लगती है। सच्चे भक्त का हृदय सूखी दियासलाई की तरह होता है। ईश्वर का नाम धीरे से लेने पर भी उसके हृदय में प्रेम की ज्वाला जलने लगती है। विषयभोग और वैभव में फंसे हुए मनुष्य का हृदय शीत खाई हुई दियासलाई की तरह है। परमेश्वर सम्बन्धी उपदेश उसको चाहे जितने बार दिये जांय, किन्तु प्रेम की ज्वाला उसके हृदय में कदापि नहीं जल सकती।

३२९ ईश्वर शाश्वत और सनातन है। वह संसार का पिता है। बड़े महासागर की तरह उसका ओर छोर नहीं। किन्तु जब हम उसके ध्यान में लग जाते हैं, तो हमको उसी प्रकार आनन्द होता है जिस प्रकार एक डूबता हुआ मनुष्य धीरे धीरे किनारे पर लग जाय।

३३० भक्त के हृदय से निकलते हुये उद्‌गारों का अन्त क्यों नहीं होता? एक धनी गल्ले के व्योपारी के गोदाम में जब गल्ला तौला जाता है तो तौलने वाला गल्ला लेने के लिये भीतर नहीं जाता, (जैसे छोटे दूकानदार की दूकान में होता है) बल्कि एक नौकर ला ला गल्ले का ढेर लगाता जाता है। उसी प्रकार भक्तों के उद्‌गार ईश्वर की प्रेरणा से उनके दिलों और मस्तिष्कों में उत्पन्न होते हैं। लेकिन अपने पर अवलम्ब रखते हुये चतुर मनुष्यों के विचार और भाव जो पुस्तकों से प्राप्त होते हैं, छोटे दूकानदार के गल्ले की तरह शीघ्र खाली हो जाते हैं।

३३१ सब स्त्रियां देवी भगवती की अंश हैं इसलिये उनके साथ माता की तरह व्योहार करना चाहिये।

३३२ माया क्या है? आध्यात्मिक उन्नति में विघ्न डालने वाली विषयवासना का नाम माया है।

३३३ अपने पति पर अत्यन्त प्रेम करने वाली स्त्री जिस प्रकार मरने के अनन्तर भी अपने पति से मिलती है, उसी प्रकार अपने इष्टदेव पर अनन्य भक्ति रखनेवाले पुरुष को परमेश्वर की प्राप्ति होती है।

३३४ जिस ज्ञान से मन और अन्त करण (हृदय) की शुद्धि हो वह ही सच्चा ज्ञान है। शेष सब अज्ञान है।

३३५. सीसे का टुकड़ा जब पारे के [illegible] में [illegible] [illegible] है तो वह उसी में घुल जाता है। उसी प्रकार एक आत्मा जब ब्रह्म के महासागर में पड जाती है तो वह अपना मर्यादित अस्तित्व भूल जाती है।

३३६ ससारिक विचार और चिन्ता से अपने मन की स्वस्थता को बिगड़ने न दो। आवश्यक कामों को अपने अपने २ समय पर करो।

३३७ ब्रह्म के महासागर से बहने वाला वायु जिस जिस अन्त करण पर होकर बहता है, उस पर अपना प्रभाव अवश्य डालता है। सनक, सनातन आदि प्राचीन ऋषि इस वायु से द्रवीभूत हुये थे। ईश्वरभक्त नारद को दूर ही से इस दिव्य सागर के दर्शन हुये थे, उसके कारण वह अपने देह के मान को भूल कर हमेशा हरी के गुणानुवाद गाते हुए पागलों की तरह ससार भर में भ्रमण करते हैं। जन्म से विरक्त शुकदेव जी ने उस महासागर के जल का तीन बार हाथ से स्पर्श किया तब से पूर्ण आनन्द में निमग्न होकर वे लड़कों की तरह इधर उधर घूम रहे हैं। विश्व के गुरू महादेव जी ने उस महासागर का तीन अञ्जुली जल पान किया, तब से समाधि सुख में तल्लीन होकर वे निश्चेष्ट पड़े हैं। इस महासागर की अद्भुत शक्ति के सामर्थ्य का अनुमान कौन कर सकता है।

३३८ सच्चिदानन्द रूप अखण्ड वृक्ष पर राम, कृष्ण, बुद्धदेव, ईसामसीह आदि की असख्यों शाखायें हैं उनमें से दो एक कभी कभी इस ससार में आते हैं और प्रचण्ड उथल पुथल और क्रान्ति उत्पन्न करते हैं।

३३९ एक बार भगवान रामकृष्ण ने अपने एक पट्ट शिष्य से पूछा, "जब चीनी का शीरा कढाई में रक्खा जाता है तो मक्खियां चारों ओर से आकर उसी में बैठती हैं। कुछ तो ऊपर ही बैठकर शीरा पीती हैं और कुछ उसी में गिर पड़ती हैं और डूबकर नीचे चली जाती

हूँ। मैं आजकल का सिक्का हूँ। जो मुझ पर श्रद्धा करेगा वह सदा मोक्ष का अधिकारी होगा।

३४६ मांसाहारी लोग मछली के निरुपयोगी सर और दुम की परवाह नहीं करते, वे उसके बीच के हिस्से को पसंद करते हैं क्योंकि खाने के लिये बीचही का हिस्सा काम में आता है। उसी प्रकार धर्म ग्रन्थों के पुराने नियम और उनकी पुरानी आज्ञाओं को इस प्रकार छाँट काट करना चाहिये कि वे आधुनिक समय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

३५० ऐसा कहा जाता है कि "छाया" नाम की एक पक्षी की जाति है। ये पक्षी आकाश में इतनी ऊँचाई पर रहते हैं और ऊँचे आकाश को इतना पसन्द करते हैं कि वे पृथ्वी पर उतरना नहीं चाहते। वे अपने अंडे भी आकाश में देते हैं। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से जब अंडे गिरने लगते हैं तो बीच ही में फूट जाते हैं और बच्चे निकल कर फिर ऊपर की ओर अपनी बुद्धि से उड़ने लगते हैं। शुकदेव, नारद, ईसामसीह, शंकराचार्य और इसी प्रकार के दूसरे महात्मा इसी पक्षी के श्रेणी के हैं। बाल्यावस्था ही में वे इस संसार की वासनाओं से विरक्त हो जाते हैं और सत्यज्ञान और दिव्य आनन्द प्राप्त करने में लग जाते हैं।

३५१ भगवान परमहंस ने एक बार कहा था, "मुझे माला के फूल न चाहिये, मुझे उसका डोरा (सूत्र) चाहिये। मुझे विश्व की और कोई चीज़ न चाहिये। मैं केवल सूत्रात्मा (thread of spirit) चाहता हूँ जिस पर सारा विश्व लटक रहा है।

३५२ प्रकाश देना लैम्प का धर्म है। उसकी मदद से कोई भोजन बनाते हैं, कोई जाली दस्तावेज़ तैय्यार करते हैं और कोई धर्म ग्रन्थ पढ़ते हैं। उसी प्रकार कोई ईश्वर के नाम की सहायता से मोक्ष प्राप्त करते हैं और कोई अपनी बुरी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं, परन्तु ईश्वर के नाम की पवित्रता में को फ़र्क नहीं पड़ता।

ते ... राज तोतापुरी कहा करते थे, "यदि पीतल का घड़ा ... तो मोर्चा लग जायँ। उसी प्रकार यदि मनुष्य रोज़ ... न न करे तो उसका अन्त करण मलीन हो जाय।" उनको ... जी ने उत्तर दिया था कि घड़ा यदि सोने का हो तो उसको रोज़ मांजने की आवश्यकता नहीं है। जो मनुष्य ईश्वर तक पहुँच चुका है उसे प्रार्थना की अथवा तपस्या की कोई आवश्यकता नहीं है।

३५४ जिस प्रकार वृक्ष के एक ही बीज से नारियल का खोपड़ा और नारियल की गरी पैदा होती है उसी प्रकार एक ही ईश्वर से स्थावर, जङ्गम, आधिभौतिक और आध्यात्मिक सारी सृष्टि पैदा हुई है।

३५५ सज्जनों का क्रोध पानी पर खींची हुई लकीर की तरह होता है, वह लकीर की तरह शीघ्र गायब हो जाता है।

३५६ साधारण लोग धर्म के बारे में बड़ी बड़ी गप हांकते हैं लेकिन उसका थोड़ा सा भाग भी आचरण में नहीं लाते। परन्तु बुद्धिमान मनुष्य थोड़ा बोलते हैं लेकिन उनका सम्पूर्ण जीवन धर्ममय होता है।

३५७ कुटुम्ब की युवा स्त्री अपने सास ससुर का सत्कार करती है, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और उनकी आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं करती। लेकिन साथ ही उनसे वह अपने पति को कहीं अधिक प्यार करती है, उसी प्रकार तुम अपने इष्टदेव की खूब उपासना करो लेकिन दूसरे देवताओं का तिरस्कार न करो। उन सब का सतकार करो। ये सब देवता एक ही सच्चिदानन्द प्रभु की प्रतिमा हैं।

३५८ दौड़ते हुये सांप और लेटे हुये सांप में जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध माया और ब्रह्म में है। गत्यात्मक शक्ति माया है और स्थित्यात्मक शक्ति (force in potentes) ब्रह्म है।

३५९ जिस प्रकार समुद्र का पानी शांत रहता है और कभी उसमें बड़ी २ लहरें उठती हैं, यही हाल ब्रह्म और माया का है। शांत समुद्र ब्रह्म है, लहरों से भरा हुआ अशान्त समुद्र माया है।

३६० अग्नि और उसकी दाहक शक्ति में जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध ब्रह्म और माया में है।

३६१ परमेश्वर निराकार है और साकार भी है। वह साकार और निराकार दोनों के बीच का है। वह क्या है, यह वही जानता है।

३६२ जिस प्रकार सर्प अपने केंचुल से भिन्न है उसी प्रकार आत्मा देह से भिन्न है।

३६३ जिस प्रकार पारा लगे हुये शीशे में मनुष्य अपना चेहरा देख सकता है उसी प्रकार जिस पुरुष ने ब्रह्मचर्य द्वारा अपने बल और पवित्रता की रक्षा की है उसके अन्तःकरण में सर्वशक्तिमान प्रभु का दिव्य प्रतिबिम्ब प्रतिबिम्बित होता है।

३६४ ईश्वर दो अवसरों पर हंसते हैं, एक तो उस समय जब एक ही कुटुम्ब के भाई अपने हाथ में जरीब लेकर ज़मीन को नापते और कहते हैं, यह मेरी ज़मीन है और यह तुम्हारी ज़मीन है, और दूसरे उस समय जब रोगी तो मरणासन्न हो और डाक्टर कहे कि मैं उसे अच्छा कर दूंगा।

३६५. सर्प के दांतों के विष का प्रभाव सांप पर नहीं पड़ता। यह जब दूसरे को काटता है तब विष उसको मार डालता है। उसी प्रकार माया परमेश्वर में है। यह उस पर कोई प्रभाव नहीं डालता। यह माया विश्व भर को अलबत्ते मोहित किये हुये है।

३६६ बिल्ली दांतों से अपने बच्चों को दबा कर इधर उधर ले जाती है इससे उनको हानि नहीं पहुंचती। लेकिन जब चूहे को दबाती है तो चूहा मर जाता है। उसी प्रकार माया भक्त को नहीं मारती दूसरों को अवश्य मार डालती है।

३६७ रस्सी जल जाती है और ऐंठन ज्यों की त्यों बनी रहती है। लेकिन उससे कोई चीज बांधी नहीं जा सकती। उसी प्रकार मुक्त हुआ मनुष्य अहंकार का बाहरी आकार मात्र कायम रखता है लेकिन उसका स्वार्थ नष्ट हो जाता है।

३६८ जब घाव भर जाता है तो पपडी आप से आप सूख कर गिर जाती है, यदि कच्चे घाव से पपड़ी निकाली जाय तो उससे खून बहने लगता है। उसी प्रकार जब दिव्य ज्ञान की जागृति होती है तो सब जातिभेद मिट जाता है लेकिन जब तक दिव्य ज्ञान की जागृति नहीं होती तब तक जातिभेद मिटाना ...

३६९ 'मन' निग्रो के टेढे बाल की तरह है। जब तक जो चाहे उसे खींचा खींचे रहो लेकिन छोडते ही वह फिर टेढा हो जाता है। उसी प्रकार जब तक मन जबरदस्ती स्थिर रक्खा जाता है तब तक वह उत्तम हितकारी काम करता है। लेकिन उधर से पहरा हटाते ही वह फिर ठीक मार्ग से निकल भागता है।

३७० जब तक कड़ाही के नीचे आग रहती है तब तक दूध खौला करता है। आग निकालते ही खौलना बन्द हो जाता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक नवसिखिया जब तक आध्यात्मिक साधन करता रहता है तब तक उसका हृदय उत्साह से उमड़ता रहता है।

३७१ कुम्हार कच्ची मिट्टी से तरह तरह के बरतन बनाता है लेकिन पकी मिट्टी से नहीं बन सकता। उसी प्रकार उस मानवी हृदय में जो एक बार संसार की वासनाओं रूपी अग्नि में जल चुका है, ऊँचे भावों का प्रभाव नहीं पड़ सकता और उसका कोई दूसरा उत्तम आकार भी नहीं बनाया जा सकता।

३७२ एक धनी पुरुष के गुमाश्ते से यदि कोई पूछता है कि इस समय मालिक की अनुपस्थिति में यह सब सम्पत्ति किसकी है तो वह घमण्ड से फूलकर कहता है कि ये मकान, यह सम्पत्ति ये बाग बगीचे सब

मेरे हैं। एक दिन उसने मालिक के बागवाले तालाब से एक मछली फसाया जिसमें उसकी सख्त मनहाही थी। अभाग्यवश मालिक एकाएक पहुँच गया और अपने गुमास्ते को मछली फंसाते हुये पकड़ लिया। अपने नौकर की बेईमानी देख कर मालिक ने उसका तिरस्कार किया, उसकी सब कमाई छीन ली, यहाँ तक कि उसके खास अपने पुराने बरतन भी छीन लिये और मार कर निकाल दिया। जो झूठा अभिमान करता है उसको ऐसा ही दण्ड मिलता है।

३७३ कुछ मछलियों के कई जोड़ हड्डियां होती हैं और कुछ के केवल एक ही जोड़। मछली खाने वाले चाहे बहुत सी हड्डियां हों और चाहे एक ही हों सब हड्डियों को फेंक देते हैं। उसी प्रकार कुछ मनुष्यों के पाप की सख्या कुछ अधिक होती है और किसी के कम। परन्तु ईश्वर की कृपादृष्टि उचित समय पर सब को नष्ट कर देती है।

३७४ भक्ति मार्ग में कुछ एक अवस्था तक पहुँचने पर भक्त को साकार ईश्वर में आनन्द मिलता है और दूसरी एक अवस्था तक पहुँचने पर उसको निराकार ईश्वर में आनन्द मिलता है।

३७५ यदि सफेद कपड़े में एक छोटा सा भी काला दाग पड़ जाय तो वह बड़ा बुरा लगता है, उसी प्रकार साधु का एक छोटा सा पाप भी उसके और पवित्रता के कारण भयंकर दिखलाई पड़ता है।

३७६ साकार ईश्वर दृश्य है, तब भी हम उसे स्पर्श नहीं कर सकते और न उससे मित्रों की तरह मुंह से मुंह मिला कर बातचीत कर सकते हैं।

३७७ जिस प्रकार कच्ची ओषधि रिपट में घुल जाती है उसी प्रकार परमात्मा में तुम घुल जाओ।

३७८ एक शक्तिशाली सम्राट से मिलने के लिये द्वारपालों की और दूसरे प्रभावशाली राजकर्मचारियों की कृपा प्राप्त करना आवश्यक है, उसी प्रकार सर्वशक्तिमान ईश्वर के चरणों तक पहुँचने के लिये

पुष्कल भक्ति सपादित करनी चाहिये, पुष्कल भक्तों की सेवा करनी चाहिये और चिरकाल तक बुद्धिमानों का सत्सग करना चाहिये।

३७९ हेलेच (Helaucha) एक प्रकार की औषधि का और Pot herb का पीना एक ही बात नहीं है, गन्ने का चूसना और मिठाई का खाना एक ही बात नहीं है क्योंकि ये हानिकारक नहीं हैं। इनका सेवन बीमार भी कर सकता है। उसी प्रकार दिव्य गुह्य प्रणव (ओ३म्) यह शब्द नहीं है बल्कि ईश्वरवाचक मत्र है। और पवित्रता और प्रेम की इच्छा भी दूषित कामनाओं की इच्छा की तरह नहीं है।

३८० मछलियों का सरदार (The King fisher) पानी में डूबता है किन्तु पानी उसके परों को तर नहीं कर सकता। उसी प्रकार मुक्त हुये (जीवन्मुक्त) मनुष्य ससार में रहते हैं किन्तु ससार का उन पर कोई असर नहीं होता।

३८१ भक्तों को वही भोजन करना चाहिये जो उसके मन को चचल न करे।

३८२ चीनी और बालू मिला कर रखने से चींटी बालू को छोड़ देती है और चीनी को ले जाती है। उसी प्रकार परमहस और साधु बुराई को छोड़ कर भलाई ग्रहण करते हैं।

३८३ बारीक अन्न को नीचे गिराना और मोटे अन्न को ऊपर रखना चलने का स्वभाव है। उसी प्रकार भलाई को छोड़ना और बुराई को स्वीकार करना दुर्जनों का स्वभाव है।

३८४ हलकी और निरुपयोगी वस्तु का फेंकना और वजनदार और उपयोगी वस्तु को रखना सूप का स्वभाव है। ऐसा ही स्वभाव सज्जनों का भी होता है।

३८५ स्वच्छ और निरभ्र आकाश का एक बादल एकाएक आकर आच्छादित कर सकता है और चारों ओर अन्धेरा फैला सकता है। वही बादल फिर एकाएक हवाओं से उड़ जाता है। यही हाल

-माया का भी है। वह शान्त वातावरण को एकदम आच्छादित कर लेती है, दृश्य जगत की निर्माण करती है और फिर परमेश्वर श्वास से (कृपादृष्टि से) उड़ जाती है।

३८६ एक मनुष्य का लड़का बीमार हो गया। उसे लेकर के लिये वह एक साधु के पास गया। साधु ने कहा कि कल आना। दूसरे दिन जब वह साधु के पास गया तो साधु ने कहा, "लड़के मिठाई खाने को न देना तो लड़का अच्छा हो जायगा।" मनुष्य ने उत्तर दिया, 'यही बात आप कल भी तो कह सकते थे।" साधु ने कहा, "हां तुम्हारा कहना ठीक है, लेकिन कल मेरे सामने चीनी रक्खी हुई थी। उसे देख कर तुम्हारा लड़का कहता कि साधु ढोंगी है, यह चीनी स्वयं तो खाता है और दूसरे को मना करता है।

३८७ जो स्त्री एक राजा से प्रेम करती है, वह एक भिखारी के प्रेम को स्वीकार नहीं कर सकती। उसी प्रकार जिस जीवात्मा को परमेश्वर का कृपादृष्टि प्राप्त हो चुकी है वह संसार की क्षुद्र बातों में नहीं लिप्त हो सकता।

३८८ जिसने चीनी का स्वाद चख लिया है उसे गुड़ अच्छा नहीं लगता। जो रोज महल में सो चुका है उसे गन्दे झोपड़े में सोने में आनन्द नहीं मिलता। उसी प्रकार जिस जीवात्मा को दिव्य आनन्द की मिठास मिल चुकी है उसे संसार के दूसरे सुखों में आनन्द नहीं मिल सकता।

३८९ पाप पारे की तरह है। यह मुश्किल से छिप सकता है।

३९० जो गाजर खाता है उसके मुंह से गाजर की महक आती है, जो ककड़ी खाता है उसके मुंह से ककड़ी की महक आती है। उसी प्रकार जैसा हृदय में होता है वैसा ही मुंह से निकलता है।

३९१ किसी ने परमहंस जी से पूछा, "समाधि की दशा में क्या आपको बाह्य जगत का भान रहता है?" इसपर उन्होंने उत्तर

दिया, "समुद्र में पहाड़ और घाटिया हैं, लेकिन वे ऊपर से दिखलाई नहीं पड़ते, उसी प्रकार समाधि में मनुष्य को सच्चिदानन्द के दर्शन होते हैं, अपनी स्मृति उसी दर्शन के अन्दर छिपी रहती है।"

३९२ वकील को देखने से मुकदमों की और उनके कारणों की याद हो आती है उसी प्रकार एक सात्विक भक्त को देखने से ईश्वर की और परलोक की याद हो आती है।

३९३ वेदों और पुराणों का अवश्य पढना और सुनना चाहिये किन्तु तन्त्रों के नियमों के अनुसार काम करना चाहिये। प्रभू हरि का नाम मुंह से लेना चाहिये और कान से सुनना चाहिये। कुछ रोगों में केवल बाहर ही औषधि लगाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि पीने की भी जरूरत है।

३९४ दया के कामों में मनुष्यों को ईसाई होना चाहिये, कड़ाई के साथ बाह्य विधि को ठीक २ पालन करने में मुसलमान, और सब प्राणिमात्र के विषय म भूत दया करने में हिंदू होना चाहिये।

३९५. तालाब के पानी के ऊपर की काई यदि थोड़ी सी हटा दी जाय तो वह अपने स्थान पर फिर आ जाती है। किन्तु यदि वह बांस की खपच्ची से खूब दूर फेंक दी जाय तो वह फिर उसी स्थान पर नहीं आ सकती। उसी प्रकार माया यदि किसी प्रकार दूर कर दी जाय तो वह फिर लौट कर त्रास देती हैं। किन्तु यदि हृदय को भक्ति और ज्ञान से भर लिया जाय तो माया हमेशा के लिये दूर हो सकती है। वास्तव में इसी रीति से परमेश्वर मनुष्य को दृष्टिगोचर होता है।

३९६ जिस घर में हरि का गुणानुवाद हमेशा गाया जाता है, उस घर में भूतप्रेतों का प्रवेश नहीं हो सकता।

३९७ एक मेढक कुयें में चिरकाल से रहता था। वह वहां पैदा हुआ था और वहीं वह इतना बड़ा भी हुआ था। अभी वह छोटा बच्चा था। एक दिन समुद्र में रहनेवाला एक दूसरा मेढक उस कुयें

में गिर कर पहुँचा। कुयें के मेढक ने समुद्र के मेढक से पूछा "भाइ तुम कहा से आ रहे हो?"

समुद्र के मेढक ने कहा "मैं समुद्र से आ रहा हूँ।"

कुयें के मेढक ने कहा, "समुद्र! अरे वह समुद्र कितना बड़ा है।"

समुद्र के मेढक ने कहा, "वह समुद्र बहुत बड़ा है।"

कुयें के मेढक ने अपनी टांगों को फैलाकर कहा, "क्या समुद्र इतना बड़ा है।"

समुद्र के मेढक ने कहा, "समुद्र इससे कहीं बड़ा है।"

कुयें के मेढक ने कुयें के एक ओर से दूसरी ओर छलांग मार और पूछा "क्या समुद्र मेरे इस कुयें के बराबर बड़ा है।"

समुद्र के मेढक ने कहा, "मित्र तुम मेरे समुद्र का मुकाबला अपने कुयें से कैसे कर सकते हो?"

कुयें के मेढक ने कहा "मेरे कुये से बड़ी कोई चीज़ नहीं हो सकती तुम बड़े झूठे हो, इसलिये यहां से चले जाओ।"

संकुचित मन वाले मनुष्यों का यही हाल है, अपने कुये में बैठ हुआ वह समझता है कि सारी दुनियां मेरे कुये से बड़ी नहीं है।

३९८. जिसके पास श्रद्धा है उसके पास सब कुछ है, जिसके पास श्रद्धा नहीं है, उसके पास कुछ नहीं है।

३९९ श्रद्धा से रोग अच्छे होते हैं। श्रद्धा से रोग अच्छा करने वाले (Faith healer) वैद्य अपने रोगियों से कहते हैं कि तुम कहो कि मेरे रोग नहीं है, मुझ में कोई रोग नहीं है। रोगी ऐसा ही विश्वास करके कहता है और उसकी बीमारी अच्छी हो जाती है। उसी प्रकार जो मनुष्य सदैव यही कहता है कि परमेश्वर नहीं है, उसके लिये वास्तव में ईश्वर नहीं है।

४०० एक मनुष्य ने कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर कहा, "कि मैं राजा हो जाऊँ," थोड़ी देर में वह राजा हो गया। फिर उसने कहा,

"कि मुझे एक सुन्दर युवा स्त्री मिल जाय," थोड़ी देर में उसे एक सुन्दर युवा स्त्री मिल गई। उस वृक्ष के विलक्षण गुणों की जाँच के लिये उसने फिर कहा, 'एक बाघ आकर मुझे खा जावे,"थोड़ी देर में बाघ ने उसे धर दबोचा। ईश्वर कल्पवृक्ष है। जो उसके समक्ष कहता है कि मुझे कुछ नहीं मिला उसको वास्तव में कुछ नहीं मिलता। लेकिन जो कहता है, "ईश्वर तूने मुझे सब कुछ दिया है" उसे सब कुछ मिलता है।

४०१ समथर मैदान में खड़े होकर जब एक मनुष्य घास को और ताड़ के पेड़ को देखता है तो कहता है, यह घास बड़ी छोटी है और यह ताड़ का वृक्ष बड़ा ऊंचा है। किन्तु जब वह पहाड़ की चोटी पर उन्हें नीचे की ओर फिर देखता है तो दोनों पेड़ों का साफ २ न देख कर सारी ज़मीन एक समान हरी भरी देखता है। उसी प्रकार सांसारिक मनुष्यों की दृष्टि में पदवी और स्थिति में भेदभाव दिखलाई पड़ता है यानी एक राजा है दूसरा चमार है, एक पिता है दूसरा पुत्र है, आदि २। किन्तु जब एक बार दिव्य दृष्टि मिल जाती है तो सब समान दिखलाई पड़ने लगते हैं और ऊँच नीच अच्छे बुरे का भेदभाव सब मिट जाता है।

४०२ अहङ्कार इतना हानिकार है कि जब तक यह समूल नष्ट न किया जाय तब तक मोक्ष नहीं मिलता। ज़रा अपने बछड़े की ओर देखो। ज्यों ही वह पैदा होता है त्यों ही यह "हम हम" (मैं हूँ) चिल्लाने लगता है।" परिणाम यह होता है कि जब वह बड़ा होकर "बैल' हो जाता है तो वह हल में जोता जाता है और उसे बोझे से भरी गाड़ी खींचना पड़ता है। गाय तो खूटे में बांधी जाती हैं और साथ बच्चे जान से मारी जाती हैं। इतना दण्ड पाते हुये भी वह अपने अभिमान को नहीं छोड़ता, क्योंकि उनके चमड़े से जो मृदङ्ग बनाये जाते हैं उनमें भी बजाने पर यही आवाज निकलती है, 'मैं हूँ।" इस जानवर

में नम्रता नहीं आती जब तक रुई धुनने के लिये उसके श्रँतड़ियों की डोरी तैयार नहीं की जाती। उस वक्त कहता है, "तू है, तू है।" मैं की जगह "तू" अवश्य होना चाहिये, और यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक अन्तःकरण द्रवीभूत न हो जाय।

४०३ जिस प्रकार एक बालक एक गड़े हुये खम्भे को पकड़कर चारों ओर फिरहरी की तरह घूमता है उसी प्रकार ईश्वर का आश्रय लेकर तुम संसार के काम करो तो खतरे से बचे रहोगे।

४०४ पहिले ईश्वर को प्राप्त करो और फिर धन को प्राप्त करो लेकिन इसका उलटा न करो। आध्यात्मिक उन्नति करके यदि तुम संसार में काम करोगे तो तुम्हारे मन की शान्ति भङ्ग नहीं होगी।

४०५ ईश्वर यदि चाहे तो हाथी को सुई के छेद से निकाल सकता है। वह जो चाहे सो कर सकता है।

४०६ एक मनुष्य किसी साधू के पास जाकर बड़ी नम्रता से बोला, "साधु महाराज, मैं बड़ा दीन मनुष्य हूँ कृपया बतलाइये कि मुझे मोक्ष किस प्रकार मिल सकता है।" साधू ने उसको ध्यान से देख कर कहा, "जाकर मुझे वह वस्तु ले आओ जो तेरी अपेक्षा खराब हो।" मनुष्य चला गया और उसने बाहर भीतर सब जगह ढूँढ डाला लेकिन उसकी अपेक्षा कोई चीज़ बुरी न मिली, अन्त में उसने अपना पाखाना देखा और सोचा यह मुझ से खराब है। उसने उसे हाथ में लेने के लिये हाथ फैलाया, इतने में एक आवाज़ सुनाई पड़ी, "हे पापी, मुझे मत छू, मैं देवताओं के चढ़ाने योग्य स्निग्ध और मधुर भक्ष्य पदार्थ था। लोग मुझे देखकर प्रसन्न होते थे किन्तु अभाग्यवश तुम्हारे दुष्ट सहवास से मेरी यह दशा हुई। अब लोग मुझे देखकर रूमाल में अपना नाक दबाते हैं और मुँह बनाकर भाग जाते हैं। तुमने एक बार छूकर तो मेरी यह दुर्गति कर डाली, यदि तुम अब मुझे छूओगे तो न मालूम कैसी अब और दुर्दशा होगी।" इससे मनुष्य को नम्रता की

सच्ची शिक्षा मिली और वह अत्यन्त नम्र हो गया और आगे एक पहुँचा हुआ साधू हुआ।

८०७ मैं अपने ईश्वर को इसी जन्म म प्राप्त करूँगा। मैं अपने इश्वर को ३ दिनों म प्राप्त करूगा, नहीं नहीं मैं एकबार नाम लेकर उसको अपनी ओर खींच लूँगा। इस प्रकार के उत्साह और प्रेम से ईश्वर आकर्षित होता है और प्रसन्न होता है। लेकिन कच्चे भक्तों को यदि उनका जी भी लगे तो परमेश्वर के प्राप्त करने में युगों लग जाते हैं।

८०८ जिस प्रकार डूबता हुआ मनुष्य बड़े उत्सुकता के साथ बार २ साँस लेता है, उसी प्रकार जो मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है उसे उत्सुकता के साथ ईश्वर म अपना हृदय लगाना चाहिये।

४०९ वंशपरम्परा से खेती करने वाले किसान यदि १२ वर्ष तक भी पानी न बरसे तो भी खेत जोतना नहीं छोड़ते, लेकिन जो बनिया नया नया खेती करता है वह एक ही वर्ष के अवर्षण से खेती करना छोड़ देता है, उसी प्रकार श्रद्धावान भक्त—यदि जन्म भर भी भक्ति करने पर उसे ईश्वर न मिले—तो निराश नहीं होता।

४१० सन्यासियों को कोई वस्तु खाने के लिये तुम लोग न दो क्योंकि उससे उनके इन्द्रियों की शान्ति नष्ट हो जाती है।

४११ अद्वैत का दिव्य ज्ञान अपने जेब में रखकर जो तुम्हारा जी चाहे सो करो क्योंकि फिर तुमसे कोई बुराई न होने पावेगी।

४१२ दिन म पेट भर भोजन करो लेकिन रात में तुम्हारा भोजन हलका (जल्द पचने वाला) और थोड़ा होना चाहिये।

४१३ सांसारिक लोग समाधि सुख से विषय सुख को अधिक पसन्द करते हैं। भगवान परमहंस की कृपा से उनके एक सांसारिक शिष्य को अत्यन्त विनती करने पर समाधि लग गई। डाक्टरों ने बहुत

प्रयत्न किया लेकिन वे उसे समाधि से अलग न कर सके। समाधि ११ दिन तक कायम रही। इसके पश्चात परमहंस के छूने से होश आने पर उसने कहा, "भगवन, मेरे लड़के हैं, मेरे सम्पत्ति है, मुझे व्यवस्था करनी है। समाधि लगाने से मुझे क्या लाभ है।"

४१४ एक राजा के गुरू ने उसको "अद्वैत" का उपदेश दिया जिसका मतलब है "सब विश्व ब्रह्म है।" इससे उसको बड़ी प्रसन्नता हुई।

४१५ लङ्का जाने के पहिले श्रीरामचन्द्रजी को समुद्र बाँधना पड़ा था। किन्तु हनुमान जी जो श्रीरामचन्द्र जी के श्रद्धालु भक्त थे एक ही छलांग में श्रीरामचन्द्र जी में पूरी श्रद्धा रखने के कारण समुद्र का पार कर गये।

४१६ गाय का दूध वास्तव में उसके शरीर भर में व्याप्त है किन्तु कान खींच कर आप दूध नहीं निकाल सकते। दूध निकलने के लिये स्तन को खींचने पड़ेंगे। उसी प्रकार ईश्वर सब जगह व्याप्त है किन्तु आप उसे सब जगह नहीं देख सकते। वह पवित्र मन्दिरों में हो मूर्तों से प्रगट होता है जिनको भक्त लोग अपनी भक्ति से पुनीत करते चले आये हैं।

४१७ एक मनुष्य नदी का पार करना चाहता था। एक साधू ने उसे एक मन्त्र दिया और कहा कि इसकी सहायता से तुम पार जा सकोगे। उसने उसे हाथ में लेकर पानी के ऊपर चलना शुरू किया। जब वह नदी के बीच में पहुँचा तो उसके मन में आश्चर्य पैदा हुआ। उसने जेब को खोलकर देखा तो एक कागज के टुकड़े में 'ईश्वर' का नाम लिखा हुआ था। मनुष्य ने अविश्वासपूर्वक कहा, "क्या यही भेद की बात है?" उसका कहना था कि वह नदी में डूब गया। ईश्वर पर श्रद्धा रखने ही से बड़े २ चमत्कारपूर्ण कार्य होते हैं। श्रद्धा जीवन है और शङ्का मृत्यु है।

४१८ एक राजा एक ब्राह्मण की हत्या करके एक ऋषि की कुटी में यह पूछने के लिये गया कि इस पाप से छुटकारा पाने के लिये मुझे कौन सी तपस्या करनी चाहिये। ऋषि जी कुटी में नहीं थे, उन- पुत्र थे। उन्होंने राजा की बात सुनकर उनसे कहा कि आप तीन बार ईश्वर का नाम लीजिये तो आपका पाप से मुक्ति मिल जायगी। इतने में ऋषि जी भी स्वयं पहुंच गये। उन्होंने अपने पुत्र द्वारा बतलाये हुए उपाय को सुनकर कहा, 'तीन बार क्या, केवल एक बार परमेश्वर का नाम लेने से जन्म जन्मान्तर के पाप धो जाते हैं।"

हे मूर्ख तूने तीन बार नाम लेने के लिये कहा, इससे मालुम होता है तेरा श्रद्धा कितनी कमजोर है। जा तू चाण्डाल होजा।' वह पुत्र चाण्डाल हो गया जो रामायण में "गुह" नाम से प्रसिद्ध हुआ।

४१९ जहां घृणा, लज्जा और भय है वहां ईश्वर कभी भी प्रगट नहीं हो सकता।

४२० बद्ध हुआ आत्मा मनुष्य है, मुक्त हुआ आत्मा ईश्वर है।

४२१ प्रकृति के पांच तत्वों के संयोग पाने के कारण ब्रह्म' को दुख मिलता है।

४२२ स्वच्छ कांच के बिना (खास मसालों से) तैयार किए हुये पृष्ठ भाग पर कुछ नहीं उभरता किन्तु वही भाग जब रासायनिक मसालों से तैयार कर लिया जाता है (जैसे फोटोग्राफी में) तो उसपर चित्र खिंच जाते हैं। उसी प्रकार भक्ति का मसाला लगा हुआ हृदय ईश्वर के प्रतिबिम्ब को पकड़ सकता है दूसरा नहीं।

४२३ (वर्षा को छोड़कर) शेष ऋतुओं में कुओं में पानी बड़ी गहराई पर बड़ा कठिनता से प्राप्त होता है, लेकिन वर्षा ऋतु में जब देश के चारों ओर पानी ही पानी दिखलाई पड़ता है, तो सब जगह पानी बड़ा सुगमता से मिलता है। उसी प्रकार साधारणतया प्रार्थना और तपस्या से बड़ी कठिनता से ईश्वर के दर्शन होते हैं किन्तु जब ईश्वर का अवतार होता है तो ईश्वर हर जगह दिखलाई पड़ने लगता है।

४२४ जो सम्बन्ध चुम्बक और लोहे का है वही सम्बन्ध ईश्वर और मनुष्य का है। जिस प्रकार धूलि से भरा हुआ लोहा चुम्बक की ओर नहीं खिचता। किन्तु धूलि धो देने से जिस प्रकार लोहा चुम्बक की ओर खिचता है, उसी प्रकार प्रार्थना और अनुताप से जब माया की धूलि धुल जाती है तो जीवात्मा ईश्वर की ओर खिंच जाता है।

४२५ सिद्ध पुरुष प्राचीन वस्तु सशोधक (Archeologist) की तरह हैं जो हजारों वर्षों से काम में न लाये जाते हुये कुयें की उसके भीतर की मिट्टी और कूड़ा निकाल कर इस्तेमाल किये जाने योग्य बना देता है। अवतार इञ्जीनियर की तरह है जो उस स्थान में भी कुआँ खोदकर पानी निकाल सकता है जहां पानी पहिले नहीं था। सिद्ध पुरुष उन्हीं मनुष्यों को मोक्ष दे सकते हैं जिनके समीप मोक्ष रूपी पानी मौजूद है और अवतार उन लोगों को भी मोक्ष दे सकते हैं जिनका हृदय प्रेम रहित और रेगिस्तान की तरह सूखा है।

४२६ गुरू मध्यस्थ है। जिस प्रकार विवाह पक्का कराने वाला दूलह और दुलहिन को मिला देता है, उसी प्रकार गुरू मनुष्य और ईश्वर को मिला देता है।

४२७ एक मनुष्य एक बार अपने गुरू के चरित्र की आलोचना कर रहा था। उससे परमहंस रामकृष्ण ने कहा, "भाइ, व्यर्थ की बातों में अपना समय तुम क्यों नष्ट कर रहे हो, मोती को ले लो और सीप को फेंक दो। गुरू के बतलाये हुये मन्त्र का ध्यान करो और गुरू के दोषों का देखना छोड़ दो।"

४२८ जब कि कागज में तेल लग जाता है तो वह लिखने के काम में नहीं आता। उसी प्रकार वह आत्मा जिसमें दुगुण और विलासिता का तेल लग गया है आध्यात्मिक काम के लिये अयोग्य है। किन्तु जिस प्रकार तेल लगे हुये कागज के ऊपर यदि खड़िया मिट्टी लगा दी जाय तो वह लिखने के काम में आ सकता है, उसी

प्रकार त्याग रूपी खड़िया के लगने से उपरोक्त दूषित आत्मा आध्यात्मिक उन्नति कर सकती है।

४२९ एक ज़हरीली मकड़ी होती है, जिसके विष को तब तक कोई भी औषधि नहीं उतार सकती जब तक हाथ में हल्दी की जड़ी को लेकर मन्त्र पढ कर घाव का ज़हर पहिले न उतारा जाय। किन्तु जब हाथ घाव पर मन्त्र पढ कर फेरा जाता है तो औषधियों का प्रभाव ज़हर पर पड़ता है। उसी प्रकार जब संपत्ति और विषयभोग की मकड़ी मनुष्य को काट लेती है तो आध्यात्मिक उन्नति के पहिले उसे त्याग रूपी मन्त्रों से अपने को भर लेना चाहिये।

४३० छोटे बच्चे का मन सफ़ेद कपड़े की तरह है जो किसी भी रङ्ग में रङ्गा जा सकता है। किन्तु पूर्ण युवा पुरुष का मन रङ्ग हुये कपड़े की तरह है जिस पर कोई दूसरा रङ्ग सुगमता से नहीं चढ़ सकता।

४३१ एक धनवान मारवाड़ी ने भगवान रामकृष्ण से पूछा, "भगवन्, मैंने ससार को त्याग दिया है।" उन्होंने उसको उत्तर दिया, "तुम्हारा मन तेल के बरतन की तरह है, सब तेल निकाल लेने पर भी तेल की महक बरतन के बनी रहती है, उसी प्रकार यद्यपि तुमने ससार को त्याग दिया है तथापि उसकी वासनायें तुम्हारे हृदय में अभी तक चिपटी हुई हैं।"

४३२ कलकत्ते को बहुत से रास्ते गये हैं। एक संशयचित्त मनुष्य गांव से कलकत्ते का रवाना हुआ। मार्ग में उसने एक दूसरे मनुष्य से पूछा, कलकत्ते शीघ्र पहुँचने का कौन सा मार्ग है।" उसने उत्तर दिया, "इस मार्ग से जाओ।" थोड़ी दूर जाकर उसे दूसरा मनुष्य मिला। उसने उससे पूछा, "कलकत्ता जाने का सबसे छोटा मार्ग क्या यही है?" उसने उत्तर दिया, "नहीं, लौटकर पीछे जाओ और बायें हाथ वाला रास्ता पकड़ो।" उसने ऐसा ही किया। थोड़ी देर उस मार्ग पर जा कर उसे एक तीसरा मनुष्य मिला। उसने दूसरा

ही मार्ग कलकत्ता जाने का बतलाया। इस प्रकार संशयचित्त मनुष्य आगे न बढ़ सका। उसने रास्ता बदलने में ही अपना सारा दिन गंवा दिया। जिस प्रकार कलकत्ता जाने के लिये यह आवश्यक है कि, एक प्रामाणिक मनुष्य के बतलाये हुये मार्ग पर से जाया जाय, उसी प्रकार जो ईश्वर के पास पहुँचना चाहते हैं उनके लिये आवश्यक है कि वे एक ही मुख्य गुरू के उपदेश पर चलें।

४३३ जो एक विदेशी भाषा को सीखता है वह अपनी योग्यता प्रगट करने के लिये बालचाल में उस भाषा के बहुत से शब्दों को काम में लाता है, किन्तु जिसे उस विदेशी भाषा का पूरा ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो वह अपनी मातृभाषा में बालते समय उस विदेशी भाषा के शब्दों का व्यवहार नहीं करता। ऐसी ही दशा उन लोगों की है जो धार्मिक उन्नति में बहुत आगे बढ़ गये हैं।

४३४ पानी जब खाली बर्तन में भरा जाता है तो वह भड़भड़ का आवाज़ करता है किन्तु घड़ा जब भर जाता है तो भड़भड़ की आवाज फिर नहीं होती। उसी प्रकार जिस मनुष्य का ईश्वर के दर्शन नहीं हुये वह उसके अस्तित्व और उसके गुणों के विषय में बहुत सी व्यर्थ की दलीलें करता है किन्तु जिसे ईश्वर के दर्शन हो गये हैं वह शान्ति के साथ दिव्यानन्द का उपभोग करता है।

४३५ जिस प्रकार शराबी कोट को कभी अपने सर पर रखता है और कभी उसे पाजामा बनाकर पैरों में पहिनता है। उसी प्रकार ईश्वर भक्ति में तल्लीन मनुष्य को बाह्य जगत की स्मृति नहीं रहती।

४३६ जब तक यशप्रभाव और सम्पत्ति की इच्छा समूल नष्ट नहीं हो जाती तब तक ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते।

४३७ मनुष्य इस संसार में दो प्रवृत्तियों को लेकर जन्म लेता है, (१) मोक्ष की ओर ले जाने वाली विद्या प्रवृत्ति (२) विषयवासना की ओर ले जानेवाली अथवा बांधने वाली अविद्या प्रवृत्ति। जन्म लेते

पर दोनों प्रवृत्तियों के पलड़े समान रहते हैं। फिर ससार एक पलड़े में अपना भोग और सुख रखता है और आत्मा दूसरे पलड़े में अपना सुख रखता है। यदि बुद्धि ने ससार को पसन्द किया तो ससार का पलड़ा, भारी पड़ कर नीचे की ओर झुक जाता है किन्तु यदि बुद्धि ने (चैतन्य) आत्मा को पसन्द किया तो आत्मा का पलड़ा भारी होकर नीचे की ओर झुक जाता है।

४३८ . जब तक मनुष्य हमेशा सच न बोले तब तक वह ईश्वर को नहीं पा सकता क्योंकि ईश्वर सत्य की ज्ञान (सत्यसर्वस्व) है।

४३९ काटों से भरे हुये जङ्गल में नंगे पांव चलना असम्भव है। किन्तु यदि मनुष्य या तो जङ्गल भर में चाम बिछा दे या अपने पैर में चाम के जूते पहिन ले तो वह काटों के ऊपर चल सकता है। जङ्गल भर में चाम बिछाना कठिन है इसलिये चतुरता इसी में है कि अपने पैर में ही जूते पहिने जाय। उसी प्रकार इस ससार में मनुष्य की इच्छायें असंख्य होती हैं और सुखी होने के केवल दो मार्ग हैं- पहिला सब इच्छाओं का तृप्त करना और दूसरी इच्छा को एकदम, निकाल देना। सब इच्छाओं का तृप्त करना असम्भव है क्योंकि कुछ इच्छाओं की पूर्ति होने पर नवीन इच्छायें और पैदा हो जाती हैं। इसलिये चतुरता इसी में है कि सत्य ज्ञान और सन्तोष वृत्ति से इच्छायें कम की जाय।

४४० दलील की दो पद्धतियां हैं (१) सर्वसाधारण सिद्धान्त से विशेष सिद्धान्त निकालना (Inductive) (२) विशेष से सामान्य सिद्धान्त का निश्चय करना (Deductive)। एक पद्धति से मनुष्य सृष्टि के विचार से सृष्टिकर्ता के विचार को अर्थात् कार्य्य से कारण को जाता है। इसके बाद दलील की दूसरी पद्धति शुरू होती है। इस पद्धति से ईश्वर की सिद्धि होने पर मनुष्य सृष्टि के प्रत्येक भाग में ईश्वर को देखता है। एक पद्धति पृथक्करणात्मक है और

दूसरी संघटनात्मक। पहली पद्धति केले के गाभ को छीलते हुये भीतर के गूदे तक पहुंचना है और दूसरी पद्धति एक तह बनाकर उसी पर तह बनाते जाना है।

४४१ पागल, शराबी और बच्चों के मुहों मे ईश्वर प्राय बोलता है।

४४२ किसी के पूछने पर कि काम, क्रोध आदि मनुष्य के षट् रिपु क्या कभी नष्ट होंगे ? परमहंस रामकृष्ण ने उत्तर दिया, "जब तक इनका झुकाव संसार और संसार की वस्तुओं की ओर रहता है तब तक वे हमारे शत्रु रहते हैं, किन्तु जब इनका झुकाव ईश्वर की ओर हो जाता है तो वे मनुष्य के पक्के मित्र बन जाते हैं और उसको ईश्वर की ओर ले जाते हैं। संसार की वस्तुओं में लगी हुई कामना ईश्वर प्राप्ति के कामना में बदल जाना चाहिये और मनुष्यों की ओर किया जाने वाला क्रोध ईश्वर जल्दी न मिलने के क्रोध में बदल जाना चाहिये। इसी प्रकार शेष ४ मनोविकारों को भी ईश्वर की ओर कर देना चाहिये। ये मनोविकार समूल नष्ट नहीं किये जा सकते किन्तु वे लाभकारी बनाये जा सकते हैं।'

४४३ मृतक संस्कार के अवसर पर किसी के यहाँ भोजन न करो क्योंकि ऐसे समय के भोजन से भक्ति और प्रेम नष्ट हो जाते हैं। उस पुरोहित का भी अन्न न ग्रहण करो जो दूसरों को हवन कराकर अपनी जीविका चलाता है।

४४४ होश में या बेहोश में चाहे किसी भी रीति से यदि मनुष्य अमृत के कुण्ड में गिर पड़े तो उसमें डूबने से अमर हो जाता है, उसी प्रकार खुशी से या नाखुशी से किसी भी रीति से यदि मनुष्य ईश्वर का नाम ले तो वह अन्त में अमरत्व को प्राप्त होता है।

४४५ मन से फूल जाना बड़ा भारी पाप है। कौवे की ओर देखो। वह अपने को बड़ा बुद्धिमान समझता है। वह जाल में कभी

नहीं पड़ता, जरा सा खतरा आने से तुरन्त उड़ जाता है, और बड़े कौशल के साथ भोजन चुरा लाता है। लेकिन इतना होशियार होता हुआ भी बेचारा पाखाना खाता है। अपने को अत्यन्त बुद्धिमान समझने वाले की अथवा छोटे मोटे वकील जैसी बुद्धि रखने वाले की ऐसी ही दशा होती है।

४४६ पानी में रक्खा हुआ घड़ा बाहर भीतर और सब ओर पानी से भरा रहता है। उसी प्रकार ईश्वर में लीन हुये मनुष्य के भीतर, बाहर और सब ओर सर्वव्यापी ईश्वर दिखलाई पड़ता है।

४४७ सच्चा मनुष्य वही है जो इसी जन्म में मृत हो जाय अर्थात् जिसके मनोविकार और जिसकी कामनायें मुरदे शरीर की तरह नष्ट हो जाय। मनुष्य के हृदय में जब तक जरा भी सांसारिक वासना की गन्ध रहती है तब तक वह ईश्वर को नहीं देख सकता। इसलिये छोटी २ अपनी वासनायें सन्तोष वृत्ति से नष्ट कर डालो और बड़ी २ वासनाओं को विवेक और विचार से छोड़ दो।

४४८ शिव और शक्ति अर्थात् ज्ञान और शक्ति, दोनों की आवश्यकता सृष्टि उत्पन्न करने में है। सूखी मिट्टी से कोई कुम्हार बरतन नहीं बना सकता, उस काम के लिये पानी भी चाहिये। उसी प्रकार बिना शक्ति के शिव अकेला सृष्टि को उत्पन्न नहीं कर सकता।

४४९ ऐसा न समझो कि श्रीकृष्ण, राम, राधा और अर्जुन ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं थे, केवल रूपक ही (Allegories) थे, और शास्त्रों का अर्थ केवल गूढ़ है। वे मेरी तरह हाड़ मांसधारी मनुष्य थे। चूंकि उनके चरित्र दिव्य थे इसलिये वे ऐतिहासिक और परमार्थिक दोनों समझे जाते हैं।

४५० साधु के दर्शन के लिये जाते समय या मन्दिर को जाते हुये खाली हाथ न जाओ। उनको भेंट करने के लिये कोई न कोई वस्तु अवश्य लेते आओ चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो।

४५१ किसी को ईश्वर किस प्रकार मिल सकता है? उसको पाने के लिये तुम्हें अपने तन, अपने मन और अपने धन को बलिदान करना चाहिये।

४५२ जब मनुष्य का 'मनुष्यपण' नाश हो जाता है तो ईश्वर हृदय में प्रगट होता है, और ईश्वर का अंश नष्ट होने पर आनन्दमयी माता व्यक्त होती है। यह आनन्दमयी माता ईश्वर के (पुरुष के) वक्षस्थल पर अपना दिव्य नाच करती है।

४५३ अपने गुरू की निन्दा न सुनो। वह तुम्हारे माँ और बाप से भी श्रेष्ठ है। यदि कोई तुम्हारे माँ और बाप का अपमान करे तो क्या तुम चुप रहोगे? आवश्यकता पड़े तो गुरू की ओर से लड़ो और उनका मान रक्खो।

४५४ जिनका ध्यान और जिनकी उत्कण्ठा तीव्र है उन्हीं को ईश्वर जल्दी मिलता है।

४५५ सत्संग किसकी तरह है? यह आम्लातक की तरह है। इसमें छकला और गुठली अधिक होता है और गूदा कम और इसके खाने से पेट में शूल पैदा होता है।

४५६ जहां गुरू और शिष्य का भेदभाव नहीं है वह पवित्र स्थान बड़ा गुह्य है। उसका इतना गुण है कि वहां पहुँचते ही गुरू और शिष्य का भेदभाव मिट जाता है।

४५७ यदि प्रत्येक धर्म का ईश्वर एक ही है, तो भिन्न २ धर्म अपने ईश्वर का वर्णन भिन्न २ प्रकार से क्यों करते हैं? उत्तर—ईश्वर एक है लेकिन उसके स्वरूप अनेक हैं। जिस प्रकार घर का स्वामी एक का बाप है दूसरे का भाई और तीसरे का पति होता है और प्रत्येक व्यक्ति उसको अपने २ सम्बन्ध के अनुसार उसका नाम लेलेकर पुकारते हैं। उसी प्रकार भिन्न धर्म का ईश्वर के जिस स्वरूप का दर्शन होता है उसी के अनुसार वह उसका वर्णन करता है।

४५८ कुम्हार की दूकान में भिन्न २ प्रकार और आकार के बर्तन घड़ा, सुराही, रकाबी कसोरे आदि होते हैं किन्तु सब एक ही मिट्टी के बनते हैं। उसी प्रकार ईश्वर एक है किन्तु भिन्न देशों में भिन्न २ युगों में भिन्न २ नाम और स्वरूप से, उसकी पूजा की जाती है।

४५९ अद्वैत ज्ञान सब से ऊँचा है। परन्तु ईश्वर की पूजा सेव्य सेवक और भज्य भजक भाव से पहिले होनी चाहिये। यह सब से सुगम मार्ग है। इससे शीघ्र ही अद्वैत का ज्ञान प्राप्त होता है।

४६० शुद्ध श्रद्धा और निष्कपट प्रेम से जो कोई सर्वशक्तिमान प्रभु की शरण जाता है उसको वह तुरन्त प्राप्त होता है।

४६१ चमत्कार दिखलाने वालों और सिद्धि दिखलाने वालों के पास न जाओ। ये लोग सत्यमार्ग से अलग रहते हैं। इनके मन ऋद्धि और सिद्धि के जाल में पड़े रहते हैं। ऋद्धि सिद्धि ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग के रोड़े हैं। इन शक्तियों से सावधान रहो और उनकी इच्छा न करो।

४६२ सब सियारों का चिल्लाना एक समान होता है। उसी प्रकार सब साधुओं के उपदेश भी एक ही होते हैं।

४६३ चावल के बड़े २ बखारों के (Granaries) पास चूहों को फँसाने के लिये चूहेदानी रक्खी जाती है जिनमें लावा (भूरी) रक्खा होता है। चूहे दाना की महक से मुग्ध होकर चावल खाने के सच्चे स्वाद को भूल कर चूहेदानी में फँस जाते हैं और मारे जाते हैं। यही हाल जीवात्मा का भी है। वह दिव्यानन्द के ख्वाढी पर खड़ा हुआ है जिसमें सैकड़ों वैषयिक सुख का आनन्द होता है। इस दिव्य आनन्द भोग करने की अपेक्षा वह संसार के छोटे सुखों में तल्लीन होता है और माया जाल में पड़ कर मरण को प्राप्त होता है।

४६४ एकान्त जङ्गल में १४ वर्ष तपस्या करने के अनन्तर एक मनुष्य को पानी पर चलने की सिद्धि मिली। उससे अत्यन्त प्रसन्न हो

कर वह अपने गुरू के पास गया और बोला ' गुरू महाराज, मुझे पानी पर चलने की सिद्धि मिली है।" गुरू ने उसको फटकार कर कहा, "१४ वर्ष की तपस्या का यही परिणाम है ? वास्तव में इतना समय तूने व्यर्थ गँवाया है। १४ वर्ष कठिन परिश्रम करके जो तू नहीं पूरा कर सका उसे साधारण मनुष्य मल्लाह को एक पैसा देकर पूरा कर सकते हैं।"

४६५. परमहंस रामकृष्ण के किसी शिष्य ने दूसरों के दिल की बात जान लेने की कला सिद्ध की। इससे अत्यन्त प्रसन्न होकर उसने अपने अनुभव गुरू से कहा। भगवान रामकृष्ण ने फटकार कर उससे कहा, "तुझे धिक्कार है। ऐसी २ छोटी बातों पर तू अपनी शक्ति नष्ट न कर।"

४६६ जिस प्रकार एक बालक खम्भे को पकड़ कर उसके चारों ओर निर्भय होकर बराबर चक्कर लगाता रहता है और नहीं गिरता उसी प्रकार बुद्धिमानों को ईश्वर पर भरोसा करके बिना किसी भय के संसार में घूमना फिरना चाहिये।

४६७ कोल्हू घोड़े की आखों में जब तक पट्टी न लगाई जाय तब तक वह सीधा नहीं चलता। उसी प्रकार यदि सांसारिक मनुष्यों की आंखों में विवेक और वैराग्य की पट्टियां लगाई जाय तो वह भटक कर बुरे रास्तों में नहीं जा सकेगा।

४६८ जो साधू दवा बांटता है और स्वयं नशा लाने वाली चीजों का सेवन करता है वह सच्चा साधू नहीं है। ऐसे साधुओं की संगति से बचो।

४७९ जिस प्रकार कमल का पत्तियां गिर जाने से निशान शेष रह जाता है उसी प्रकार अहंकार के दूर हो जाने पर भी उसका कुछ भाग शेष रहता है लेकिन उससे हानि पहुँचने का डर नहीं रहता।

४७० दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर के भी जो इसी जन्म में ईश्वर को प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करता, उसका जीवित रहना व्यर्थ है।

४७१ जिनको अधिक लोग मान देते हैं और जिनकी आज्ञा का अधिक लोग पालन करते हैं उनमें कुछ भी प्रभाव न रखनेवाले लोगों से अधिक ईश्वर का अंश होता है।

४७२ एक बार नारद ऋषि अहंकार में आकर सोचने लगे कि मुझसे बढ़कर ईश्वर का दूसरा भक्त नहीं है। विष्णु भगवान चट इस बात को ताड़ गये। उन्होंने नारद को बुलाया और कहा आप अमुक स्थान में जाइये, वहा मेरा एक भक्त रहता है, उससे परिचय कीजिये। नारद वहां गये और देखते क्या हैं कि एक किसान बड़े तड़के उठता है, एक बार हरी का नाम लेता है और फिर दिन भर खेत में काम करता है और रात में एक बार हरी का नाम और लेकर सो जाता है। नारद ने अपने दिल म सोचा "भला यह गंवार परमात्मा का भक्त क्योंकर हो सकता है! इसम भक्तों के कोई लक्षण भी तो नहीं दृष्टिगोचर होते।" नारद लौटकर विष्णु के पास आये और सारी व्यवस्था बयान की। विष्णु ने कहा, "नारद तेल से भरे हुये इस प्याले को लेकर नगर की परिक्रमा कर आओ और याद रक्खो तेल एक बूद भी न गिरने पावे।" नारद ने वैसा ही किया और जब लौटे तो विष्णु ने पूछा "प्रदक्षिणा करते हुये, तुमने मुझे कितनी बार याद किया।" नारद ने उत्तर दिया, भगवन, एक दफा भी नहीं और मैं आपको याद भी कैसे कर सकता हूँ जब कि मुझे लबालब तेल से भरे हुये प्याले को देखना पड़ता था।' भगवान ने कहा, इस एक प्याले ही ने तुम्हें इस प्रकार अपनी ओर खींच लिया कि तुम मुझे बिलकुल भूल गये, परन्तु उस गँवार को देखो कि दिनभर गृहस्थी का काम करता है और तब भी दिन में दो दफे मुझे स्मरण कर लेता है।"

४७३ यदुनाथ मलिक ऐसे धनी लागों को लोग पूछने अधिक हैं लेकिन उनसे पास लोग जाते कम हैं, उसी प्रकार बहुत से लोग धर्मशास्त्र पढते हैं और बहुत से लोग धर्म-सम्बन्धी बातचीत करते हैं लेकिन ऐसे बहुत कम लोग हैं जो इश्वर के दर्शन करने का य उसके पास पहुँचने का कष्ट उठाते हों।

४७४ एक मनुष्य ने कहा, "चोदह वर्ष से मैं इश्वर क ढूंढ रहा हूँ प्रत्येक साधू का उपदेश माना है, सब तीर्थ स्थानों क पर्य्यटन कर आया हूँ, बहुत से साधुओं और महात्माओं का दर्शन किया है। अब इस समय मेरी अवस्था ७५ वर्ष की है और मुझे अभी तक कोई फल नहीं मिला है।" इस पर भगवान परमहंस न उत्तर दिया "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ जो इश्वर के पाने की उत्कट इच्छा करता है उसे इश्वर मिलता है। मेरी ओर देखो और धीरज धरो।"

४७५ बहुत से लोग इस वास्ते रोते हैं कि उनके लड़के नहीं हैं, बहुत से इसलिये रोते हैं कि उनके पास धन नहीं है। किन्तु कितने ऐसे हैं जो इस वास्ते रोते हों कि उनको इश्वर के दर्शन नहीं हुये! जो ढूंढता है वह पाता है। जो इश्वर के लिये रोता है उसे ईश्वर के दर्शन होते हैं।

४७६ गुरू पवित्र गंगा की तरह है। गंगा जी में सब प्रकार का कूड़ा-ककट फेंका जाता है किन्तु गंगा जी की पवित्रता उससे कम नहीं होती। उसी प्रकार गुरू की निन्दा और अपमान करने से उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

४७७ मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जो ईश्वर को ढूंढता है उसे इश्वर मिलता है। इसका प्रत्यक्ष फल अपने जीवन में ही करके देख लो। पूर्ण सचाई के साथ केवल तीन दिन तक प्रयत्न करो, तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

४७८ इस कलियुग में ईश्वर के दर्शन पाने के लिये केवल तीन दिन का सच्चा प्रयत्न काफ़ी है।

४७९ एक बार मैंने एक स्थान पर दो नपुंसक बैल देखे। एक गाय उस मार्ग से निकली। उसको देखकर एक बैल तो कामातुर होकर आवाज लगाने लगा और दूसरा शान्त खड़ा रहा। इस बैल की विलक्षण करतूत देख कर मैंने उसका पूर्व चरित्र पूछा तो मुझे मालुम हुआ यह जवानी में गाय के साथ समागम करने के बाद नपुंसक बनाया गया है और दूसरा बाल्यावस्था में। आदत या संस्कार का ऐसा ही परिणाम होता है। विषयभोग का अनुभव लिये बिना ही जो साधू संसार को छोड़ देते हैं वे स्त्रियों को देखकर कामातुर नहीं होते। किन्तु जो गार्हस्थ्य जीवन का सुख भोग करके सन्यासी होते हैं वे कई वर्षों तक इंद्रिय दमन का अभ्यास कर लेने पर भी कामातुर हो सकते हैं।

४८० जब कि बकरे का सर काट दिया जाता है तो धड़ कुछ देर तक हरक्त करता है। अहंकार का भी यही हाल है। मुक्तात्माओं का अहंकार नष्ट हो जाता है किन्तु शारीरिक काम करने के लिये उसका काफी अंश शेष रहता है किन्तु उससे मनुष्य संसार के बन्धन में नहीं बंध सकता।

४८१ जो अपने को जीवात्मा समझता है वह जीवात्मा ही है और जो अपने को ईश्वर समझता है वह वास्तव में ईश्वर ही है। जो जैसा सोचता है वह वैसा बनता है।

४८२ बहुत से मनुष्य अपनी नम्रता दिखलाने के लिये कहते हैं "मैं पृथ्वी पर रेंगनेवाला एक तुद्र कीटक हूँ।" इस प्रकार अपने को सदा कीटक समझने वाले लोग वास्तव में कीटक ही हो जाते हैं। अपने हृदय में निराशा को न आने दो। निराशा उन्नति के मार्ग में सब से भारी शत्रु है, जैसा मनुष्य सोचता है वैसा ही वह बनता है।

४८३ सूरज संसार भर को गरमी और प्रकाश देता है लेकिन जब बादल पृथ्वी को ढक लेते हैं तो वह कुछ नहीं कर सकता। उसी प्रकार जब तक अहङ्कार आत्मा को ढके रहता है तब तक ईश्वर कुछ नहीं कर सकता।

४८४ इस संसार में जो कोई सुख देता है उसमें दिव्यानन्द का कुछ भाग अवश्य रहता है। गुड़ और चीनी म जो अन्तर है वही अन्तर इस संसार और दिव्यानन्द में है।

४८५ पूर्ण सिद्ध पुरुषों में दो वर्ग होते हैं। एक वर्ग क व लोग हैं जो सत्य का शोध करते हैं और उसका आनन्द स्वय ही चखत हैं, दूसरों को नहीं देते। और दूसरे वर्ग मे वे लोग हैं जो दूसरों स भी कहते हैं, 'आओ और हमारे साथ इस सत्य का आनन्द चक्खो।"

४८६ "यदि सत्य एक ही शब्द में जानना चाहते हो तो मेरे पास आओ और हजारों शब्दों में जानना चाहते हो तो व्यास गद्दा पर बैठे हुये उपदेशकों के पास जाओ।" एक मनुष्य ने पूछा 'महा राज! कृपा करके मुझे सत्य एक ही शब्द में बतलाइये।" परमहंस रामकृष्ण ने उत्तर दिया 'ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है।"

४८७ इस शरीर के धारण करने में मैंने कितना स्वार्थ त्याग किया है और संसार का कितना बोझ धारण किया है, इसको कौन जान सकता है? ईश्वर जब अवतार धारण करता है तो उसका स्वार्थ-त्याग कितना प्रचण्ड होता है इसे कौन जान सकता है।

४८८ लोहार के निहाई की ओर देखो उस पर हथौड़े का कितनी जबरदस्त चोट पड़ती है लेकिन वह अपने स्थान से नहीं डोलता। मुझे धैर्य और सहनशीलता की शिक्षा उससे ग्रहण करनी चाहिये।

४८९ एक मनुष्य के ऊपर बहुत सा ऋण चढ गया था। ऋण से अपने को बचाने के लिये वह पागल बन गया। डाक्टरों ने उसकी

दवा की लेकिन वह अच्छा न हो सका। जितना अधिक वह अपने स्वाँग पर सोचता था उतना ही अधिक पागल वह हो जाता था। अन्त में एक डाक्टर उसके बहाने को समझ गया। उसने उसको एकान्त में ले जाकर कहा, "क्यों जी तुम यह क्या कर रहे हो? सचेत हो जाओ, ऐसा न हो कि पागल बनने का बहाना करते करते तुम सचमुच पागल बन जाओ। तुम्हारे में पागलपन के वास्तविक चिन्ह दिखलाई देने लगे हैं।" इस मर्मभेदी बात को सुन कर उस मनुष्य के होश ठिकाने आये और उस दिन से उसने पागल बनना छोड़ दिया। किसी एक चीज का बहाना करने से मनुष्य वही हो जाता है।

४६० ईश्वर सब मनुष्यों में हैं किन्तु सब मनुष्य ईश्वर में नहीं हैं। और इसी कारण वे दुख उठाया करते हैं।

४६१ जब तक मनुष्य बच्चे की तरह सादा नहीं हो जाता तब तक उसे दिव्य दृष्टि नहीं मिलती। तू आज पर्यन्त मिले हुये सांसारिक ज्ञान को भूल जा और छोटे बच्चे की तरह अज्ञानी बन जा तब तुझे सत्यज्ञान प्राप्त होगा।

४६२ सन्मान्य कुटुम्ब की सतीसाध्वी स्त्रियों की ओर जब मैं देखता हूँ तो मुझे ऐसा मालूम होता है कि मेरी जगन्माता ही पतिव्रता स्त्री का वेप रख कर उनमें वर्तमान है और जब मैं अपने कोठे पर बैठी हुई वेश्याओं की ओर देखता हूँ तो मुझे ऐसा मालुम होता है कि मेरी जगन्माता दूसरी तरह से विनोद कर रही है।

४६३ एक (१) के अंक पर जितने शून्य रक्खे जायँग उतना ही कीमत उसकी बढ़ती जायगी, लेकिन यदि एक (१) अलग कर दिया जाय तो शून्यों का कोई मूल्य नहीं रह जाता। उसी प्रकार जीव जब तक ईश्वर में नहीं संलग्न होता जो एक की तरह है तब तक उसकी कोई कीमत नहीं रहती। संसार में वस्तुओं की कीमत ईश्वर के साथ उनके सम्बन्ध रहने से होती है।

४९४ जब तक जीव का संयोग ईश्वर से है, जो एक के अंक की तरह है, और वह ईश्वर का काम करता है तब तक उसकी कीमत बराबर बढ़ती चली जाती है। यदि वह ईश्वर की ओर से मुख मोड़ लेता है और अपने ही स्वार्थ के लिये बड़े बड़े काम करता है तो उसको कोई लाभ नहीं होने का।

४९५. जिस प्रकार मैं कभी २ कपड़े पहिने रहता हूँ और कभी २ नङ्गा रहता हूँ उसी प्रकार ब्रह्म भी कभी गुणधर्म सहित होता है और कभी गुणधर्म रहित। सगुण ब्रह्म शक्ति संयुक्त ब्रह्म है, उसे ईश्वर या सगुण देव कहते हैं।

४९६ मुक्त आत्मा में क्या माया होती है? गहने निखालिस सोने के नहीं बनते उसमें कुछ न कुछ मिलावट होनी ही चाहिये। उसी प्रकार जब तक मनुष्य के देह है तब तक देह यात्रा चलने के लिये कुछ माया होनी चाहिये। जो मनुष्य माया से बिल्कुल रहित हो गया हो वह २१ दिनों से अधिक जीवित नहीं रह सकता।

४९७ सांसारिक मनुष्यों की बुद्धि और ज्ञान, ज्ञानियों की बुद्धि और ज्ञान के सदृश हो सकते हैं, सांसारिक मनुष्य तपस्वियों के सदृश त्याग भी कर सकते हैं। लेकिन उनके सब प्रयत्न व्यर्थ होते हैं। कारण इसका यह है कि उनकी शक्तियां ठीक मार्ग पर नहीं लगतीं। उनके सब प्रयत्न विषय भोग, मान और संपत्ति मिलने के लिये किये जाते हैं, ईश्वर मिलने के लिये नहीं।

४९८ जहां दूसरे लोग मस्तक झुकाते हैं वहां तुम भी अपने मस्तक को झुकाओ। बुद्धिमानों को मस्तक झुकाने का परिणाम अच्छा ही होता है।

४९९ धोबी अपने घर मैले कपड़ों से भर लेता है लेकिन वे सब उसके नहीं होते। उन्हें धोकर वह लोगों के पास पहुँचा देता है तो

उसका घर खाली हो जाता है। जिन मनुष्यों के विचारों में मौलिकता नहीं है, वे धोबी की तरह हैं। विचारों में धोबी न बनो।

५०० जिस प्रकार मछली से शोरबा, कबी कटलेट आदि पदार्थ बनाये जाते हैं लेकिन कोई शोरबा, पसन्द करता है, कोई कबी पसन्द करता है और कोई कटलेट। उसी प्रकार विश्व का स्वामी परमेश्वर एक ही है लेकिन अपने भक्तों को भिन्न २ रुचि के अनुसार भिन्न २ स्वरूपों में व्यक्त होता है। और प्रत्येक भक्त को अपना २ स्वरूप अच्छा लगता है। किसी का वह दयालु स्वामी है, किसी का दयालु पिता है, किसी की हंसमुख मा है, किसी का सच्चा मित्र है, किसी का सच्चा पति है किसी का आज्ञाकारी पुत्र है।

५०१ शहर में नवीन आये हुये मनुष्य को रात्रि में विश्राम करने के लिये पहिले सुख देने वाले एक स्थान की खोज कर लेनी चाहिये। और वहां अपना सामान रखकर फिर उसे शहर में घूमने जाना चाहिये, नहीं तो अंधेरे में उसे बड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा। उसी प्रकार इस संसार में आये हुये को पहिले अपने विश्राम स्थान की खोज कर लेनी चाहिये। और इसके पश्चात् फिर दिन का अपना काम करना चाहिये। नहीं तो जब मृत्यु रूपी रात्रि आवेगी तो उसे बहुत सी अड़चनों का सामना करना पड़ेगा और मानसिक व्यथा सहनी पड़ेगी।

५०२ माया को देखने की जब मेरी उत्कट इच्छा हुई तो एक दिन मैंने एक दृश्य देखा—एक छोटा सा बूंद बढ़ता गया और उसकी एक कन्या बन गई। कन्या एक स्त्री हो गई और उसने एक बच्चा पैदा किया और फिर वह उसे खा गई। इस प्रकार उसने बहुत से बच्चे पैदा किये और सबको एक एक करके खा गई। तब मेरी समझ में आया कि माया यही है।

५०३ प्रश्न—ब्रह्म क्या है?

उत्तर—ब्रह्म शब्द की व्याख्या नहीं हो सकती, जिस मनुष्य ने समुद्र को न देखा हो यदि उससे यह पूछा जाय कि समुद्र कितना बड़ा है तो मह यही कहेगा कि समुद्र पानी का प्रचण्ड विस्तार है, समुद्र पानी का ढेर है, उसमें चारों ओर पानी ही पानी है।

५०४. अपने विचारों के द्रोही न बनो, निष्कपट बनो, अपने विचारों के अनुसार काम करो। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। सच्चा और सरल हृदय से प्रार्थना करो, तुम्हारी प्रार्थना अवश्य सुनी जायगी।

५०५ *जिस प्रकार मां अपने बीमार बच्चों में से किसी* को भात और कढी देती है, दूसरे को साबूदाना और अरारोट देती है और तीसरे को रोटी और मक्खन देती है। उसी प्रकार ईश्वर ने भिन्न२ लोगों के लिये उनकी प्रकृति के अनुसार भिन्न २ मार्ग निकाल रक्खे हैं।

५०६ मनुष्य अति शीघ्र प्रशंसा करते हैं और अति शीघ्र बुराई करते हैं, इसलिये दूसरे लोग तुम्हारे विषय में क्या कहते हैं, इस पर कुछ ध्यान न दो।

५०७ घण्टाकर्ण की तरह कट्टरता (Bigotry) न करो। एक मनुष्य था जो केवल शिव की पूजा किया करता था और दूसरे देवताओं से घृणा करता था। एक दिन शिवजी ने प्रगट होकर उससे कहा "जब तक तुम दूसरे देवताओं से घृणा करते हो तब तक मैं कभी भी नहीं प्रसन्न हूँगा।" मनुष्य चुप रहा। कुछ दिनों के अनन्तर शिव जी फिर प्रगट हुये। इस बार वे हरी और हर के वेष में प्रगट हुये। यानी आधा अङ्ग उनका शिव का था और दूसरा आधा विष्णु का। वह मनुष्य आधा खुश हुआ और आधा नाखुश हुआ। उसने नैवेद्य *शिवजी वाले हिस्से की ओर* चढाया। शिवजी ने कहा, "तुम्हारी कट्टरता क्यों नहीं जाती? मैंने दो दो स्वरूप को धारण करके तुम्हें यह समझाने का प्रयत्न किया था कि सर्व देवता और देवियां एक ही

ईश्वर के स्वरूप हैं लेकिन तुमने कोइ शिक्षा नहीं ली, इसलिये इसके लिये तुम्हें चिरकाल तक दु ख भोगना पड़ेगा।" वह मनुष्य चला गया और एक गांव में रहने लगा। शीघ्र-ही वह विष्णु का विद्वेषी निकला। उस गाव के लड़के "विष्णु" का नाम ले ले करके उसे बहुत तङ्ग करने लगे। उस मनुष्य ने कान में दो घन्टे लटकाये जिनको वह उस समय बजाता था जब लड़के विष्णु का नाम लेते थे ताकि विष्णु का नाम उसके कानों में न जावे। उस समय से लोग उसे घन्टा-कर्ण कहने लगे।

५०८. अज्ञानियों की निन्दा के भय से या लोगों के उपहास के डर से धर्माचरण करने में लज्जा न करो। ऐसा समझो कि संसार के लोग क्षुद्र कीटक हैं, उनको महत्व देने की कोई आवश्यकता नहीं है।

५०९ एक पुरुष और उसकी स्त्री ससार का त्याग करके तीर्थ यात्रा करने के लिये बाहर निकले। एक बार जब वे सड़क पर जा रहे थे और स्त्री कुछ पीछे रह गइ थी तो पुरुष ने एक हीरे का टुकड़ा सड़क पर पड़ा हुआ देखा। वह यह सोचकर उसे पृथ्वी पर गाड़ने लगा कि ऐसा न हो स्त्री के जी में उसे ले लेने का लालच लग जाय और उसके त्याग (वैराग्य) का फल भ्रष्ट हो जाय। जब कि वह पृथ्वी को खोद रहा था तो स्त्री भी आ पहुँचा और उसने उससे पूछा कि क्या कर रहे हो। उसने नम्रता से गोल मोल उत्तर दे दिया। उसने हीरे को देख लिया और उसके विचारों को समझ कर कहा, "तुमने ससार क्यों छोड़ा यदि हीरे और धूलि में तुम्हें अब भी अन्तर मालूम होता है।"

५१० एक बार महाराज बर्दवान के पंडितों में झगड़ा हुआ कि शिव और विष्णु में बड़ा देवता कौन है। कुछ पंडितों ने कहा शिव और कुछ ने कहा विष्णु। जब विवाद बहुत बढ़ गया तो एक बुद्धिमान पंडित ने खड़े होकर कहा, न तो मैंने शिव को देखा है और

न विष्णु को देखा है, तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि दोनों में बड़ा कौन है। उसी प्रकार ऐ मनुष्यो, एक देवता की तुलना दूसरे से न करो। जब तुम एक देवता को देख लोगे तो तुमको मालूम होगा कि दोनों देवता एक ही ब्रह्म के स्वरूप हैं।

५११ पानी जब जम जाता है तो वह बर्फ हो जाता है। उसी प्रकार ईश्वर का साकार देह सर्वव्यापी निराकार ब्रह्म का व्यक्त स्वरूप है। इसको हम जमा हुआ (Solidified) सच्चिदानन्द कहते हैं। जिस प्रकार बर्फ पानी का भाग है वह पानी में रहता है, और उसी में पिघल कर मिल जाता है, उसी प्रकार सगुण देव निर्गुण देव का भाग है। सगुण देव निर्गुण ब्रह्म से उत्पन्न होता है, उसी में रहता है और अन्त में उसी में लीन होकर अन्तर्ध्यान हो जाता है।

५१२ परमात्मा का नाम चिन्मय है, उसका वासस्थान चिन्मय है, और वह सर्व चैतन्य स्वरूप है।

५१३ जो प्यासा है वह नदी के पानी को मटमैला देखकर उसका तिरस्कार नहीं करता और न वह पानी मिलने की आशा से नया कुआं खोदने लगता है। उसी प्रकार जिसको धम की सच्ची तृष्णा लगी है वह अपने पास वाले धम का तिरस्कार नहीं करता और न अपने लिये वह एक नया धम चलाता है। जिसको सच्चा प्यास लगी है उसे ऐसे ऐसे विचारों के लिये समय नहीं मिलता।

५१४ कुछ वर्ष पहिले जब हिन्दू और ब्रह्म बड़ी उत्सुकता से अपने २ धम का उपदेश कर रहे थे, उस समय किसी ने भगवान रामकृष्ण से पूछा कि इस विषय में आपका क्या मत है? इस पर उन्होंने कहा, "मुझे तो ऐसा मालुम होता है कि मेरी जगन्माता इन दोनों धार्मिक दलों से अपना काम करवा रही है।"

५१५ दान सोच समझकर करो। कुछ लोगों को दान देने से पुण्य के बदले पाप होता है। एक मनुष्य ने एक स्थान पर सदाव्रत

खोल रक्खा था। वहां होकर जानेवाले सब को उसमें भोजन मिलता था। एक कसाई एक गाय को कसाईखाने ले जा रहा था। वह बहुत थक गया था। सदाव्रत में जाकर उसने भोजन किया और फिर ताजा होकर बड़ी आसानी से गाय को कसाईखाने में ले गया। गाय मारने का पाप १ और २ के सम्बन्ध से कसाई और सदाव्रत खोलने वाले को लगा।

५१६ शाश्वत को अशाश्वत से आत्मा को अनात्मा से और अदृश्य को दृश्य के द्वारा पहुँचना चाहिये।

५१७ जो सादा वनस्पत्याहार करता है लेकिन ईश्वर प्राप्ति की इच्छा नहीं करता, उसके लिये सादा भोजन उतना ही बुरा है जितना गोमांस। लेकिन जो गोमांस खाता है और ईश्वर प्राप्ति की चिन्ता में रहता है उसके लिये गोमांस उतना ही अच्छा है जितना देवताओं का अन्न।

५१८ प्रश्न—सांसारिक मनुष्य संसार की प्रत्येक वस्तु को छोड़ कर ईश्वर में क्यों नहीं आकर मिलते।

उत्तर—यह संसार रङ्गभूमि की तरह है जहां नाना प्रकार के भेष रखकर मनुष्य अपना अपना पार्ट करते हैं। जब तक कुछ देर तक वे अपना पार्ट नहीं कर लेते तब तक अपना भेष वे बदलना नहीं चाहते। उनको थोड़ी देर खेल लेने दो इसके बाद वे अपने भेष को आपसे आप बदल डालेंगे।

५१९ वे मनुष्य धन्य हैं जो गंगा जी के तट पर निवास करते हैं।

५२० जिस प्रकार चन्द्रमा प्रत्येक लड़के का "मामा" है, (लड़के चन्द्रमा को चन्दामामा कहते हैं) उसी प्रकार ईश्वर सब लोगों का आध्यात्मिक गुरू है।

५२१ आत्मा और आकार, भीतरी विचार और बाह्य चिन्ह दोनों को मान दो।

५२२ एकाग्र ध्यान से ध्येय वस्तु का स्वरूप उत्तम मालूम होता है। वह स्वरूप ध्यान करने वाले के हृदय में भर जाता है।

५२३ सूर्य पृथ्वी से अनेकों गुना बड़ा है लेकिन दूर होने के कारण वह छोटे चक्र ऐसा दिखलाई पड़ता है। उसी प्रकार ईश्वर बहुत बड़ा है लेकिन उससे दूर होने के कारण हम उसके वास्तविक बड़प्पन को नहीं समझ सकते।

५२४ समुद्र की लहर और समुद्र में जो सम्बन्ध है, वही सम्बन्ध अवतार (राम, कृष्ण आदि) और ब्रह्म में है।

५२५ लोग हमेशा राजा जनक का उदाहरण देते हैं कि उनको संसार में रह कर आध्यात्मिक ज्ञान मिला लेकिन मानव जाति के सारे इतिहास में केवल यही एक ऐसा उदाहरण मिलता है। यह नियम नहीं अपवाद (exception) है। साधारण नियम तो ऐसा है कि बिना कनक और कान्ता को छोड़े किसी की आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती। अपने को जनक समझो। न मालूम कितनी शताब्दियां गुजर चुकीं, और संसार ने अभी तक दूसरा जनक पैदा ही नहीं किया।

५२६ जीवनपर्यन्त प्रेम और भक्ति से गुह्य तत्वों को सीखो। इससे तुम्हारा लाभ होगा।

५२७ एक शिष्य को अपने गुरू की शक्ति पर अत्यन्त श्रद्धा थी। वह उनका नाम लेकर नदी पर चलता था। गुरू ने इसे देख कर सोचा, "ओहो, मेरे नाम में इतनी शक्ति है! अरे मुझे पहले नहीं मालूम था कि मेरी शक्ति इतनी बड़ी है।" दूसरे दिन "मैं, मैं, मैं" कह कर गुरू जी भी नदी पर चलने लगे, लेकिन ज्योंही उन्होंने नदी में पैर रक्खा त्योंही वे पानी के नीचे चले गये और डूब गये। बेचारे

को तैरना तक न मालूम था। श्रद्धा से बड़े २ आश्चर्यजनक चमत्कार होते हैं किन्तु अहङ्कार से मनुष्य का नाश होता है।

५२८ शंकराचार्य जी को एक मूर्ख शिष्य हर बात में उनकी नकल करता था। जब शंकराचार्य जी कहते "शिवोऽहम" तो शिष्य भी वही कहने लगता। अपने शिष्य को ठीक मार्ग पर लाने के लिये एक दिन उन्होंने किसी लोहार की दूकान से जलता हुआ लोहा लेकर खा लिया और अपने शिष्य से कहा कि तू भी ऐसा कर। किन्तु शिष्य ऐसा न कर सका और उस दिन से उसने "शिवोऽहम" कहना छोड़ दिया। क्षुद्र अनुकरण सदैव बुराई का घर है। किन्तु बड़े लोगों के उदाहरण से अपना सुधार करना हमेशा उत्तम है।

५२९ एक मनुष्य खाली घर पर बैठा था। उसकी स्त्री रोज कोसा करती थी। एक दिन जब उसका लड़का बहुत बीमार था और डाक्टरों ने उसको अच्छा करने से जवाब दे दिया तो वह नौकरी की तलाश में घर से बाहर निकला। इतने में लड़के की मृत्यु हो गई और लोग उसके पिता को ढूंढने लगे लेकिन उनका पता न लगा। जब सन्ध्या हुई तो वे घर को लौटते हुये दिखलाई पड़े। उसकी स्त्री ने कहा तुम बड़े निर्दयी हो, लड़का बीमार है तुमको घर से बाहर नहीं जाना चाहिये। उस मनुष्य ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, 'मैं स्वप्न में देखा था कि मेरे ७ लड़के थे और उनके साथ बड़े आनन्द से मैं अपना समय व्यतीत करता था। लेकिन जब मैं जग पड़ा तो मैंने एक लड़के को भी न देखा। वह एक झूठा स्वप्न था। स्वप्न के सात पुत्रों का मुझे कुछ भी शोक नहीं है।" उसी प्रकार जो इस संसार को स्वप्नवत् समझता है उसको साधारण मनुष्य की तरह सांसारिक बातों में हर्ष और विषाद नहीं होता।

५३० जिस प्रकार किरायादार घर में रहने के लिये किराया

देता है उसी प्रकार जीवात्मा को शरीर में रहने के लिये बीमारी और रोगों का किराया (कर) देना पड़ता है।

५३१ सैकड़ों सांसारिक मनुष्य मुझसे मिलने के लिये रोज़ आते हैं लेकिन उनके संग से मुझे इतना आनन्द नहीं होता जितना आनन्द उस सज्जन मनुष्य के सत्संग से होता है जिसने संसार को त्याग दिया है।

५३२ सच्चे धार्मिक मनुष्य का ऐसा सोचना चाहिये कि दूसरे सब धर्म भी तो सत्य की ओर जाने के भिन्न २ मार्ग हैं। दूसरों के धर्म के लिये हमें सदैव पूज्य बुद्धि रखनी चाहिये।

५३३ क्षमा तपस्वियों का सच्चा लक्षण है।

५३४ एक तालाब में कई घाट होते हैं। कोई भी किसी घाट से उतर कर तालाब में स्नान कर सकता है या घड़ा भर सकता है। घाट के लिये लड़ना कि मेरा घाट अच्छा है और तुम्हारा घाट बुरा है, व्यर्थ है। उसी प्रकार दिव्यानन्द के झरने के पानी तक पहुँचने के लिये अनेकों घाट हैं। संसार का प्रत्येक धर्म एक घाट है। किसी भी धर्म का सहारा लेकर सचाई और उत्साह भरे हृदय से आगे बढ़ो तो तुम वहाँ तक पहुँच जाओगे लेकिन तुम यह न कहो कि मेरा धर्म दूसरों के धर्म से अच्छा है।

५३५. जब कि घंटा बजाया जाता है तो उसमें से एक आवाज़ पहिचानी जा सकती है और ऐसा मालूम होता है कि हरेक आवाज का एक २ स्वरूप है। किन्तु जब घंटा बजना बन्द हो जाता है तो आवाज़ धीरे २ लुप्त होती जाती है और फिर उसका कोई स्वरूप नहीं रह जाता। घण्टे की आवाज की तरह ईश्वर साकार और निराकार दोनों है

५३६ श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति और दिव्यज्ञान का लाभ माया से ही प्राप्त होता है, नहीं तो इनका आनन्द कैसे मिलता। केवल माया से ही

द्वैत और सापेक्षता (Relativety) उत्पन्न होते हैं। माया हट जाने पर भोक्ता और भोज्य, सेव्य और सेवक कोई नहीं रह जाता।

५३७ प्रश्न क्या भक्त का पूर्ण समागम ईश्वर से होता है? यदि होता है तो किस प्रकार?

जिस प्रकार एक सहृदय स्वामी अपने पुराने आज्ञाकारी नौकर की ईमानदारी, सेवा और चतुरता से उसको स्वयं पकड़ कर अपने स्थान पर बिठाता है लेकिन नौकर शर्म से स्वयं नहीं बैठना पसन्द करता। उसी प्रकार संसार का प्रभू परमात्मा अपने प्यारे भक्त की भक्ति और स्वार्थत्याग से प्रसन्न होकर उसे अपने स्थान में ले जाता है और उसे ईश्वरत्व देता है यद्यपि नौकर उसकी सेवा छोड़ना और उसी में मिल जाना पसन्द नहीं करता।

५३८ एक दिन परमहंस रामकृष्ण ने देखा कि आसमान अभी स्वच्छ था, एकाएक बादलों ने उसे घेर लिया और फिर हवा बादलों को उड़ा ले गई और आसमान फिर स्वच्छ हो गया। उन्होंने प्रसन्न होकर नाचना शुरू किया और फिर कहा, "माया का भी यही हाल है। माया पहिले नहीं थी, लेकिन एकाएक उसने ब्रह्म के शान्त वातावरण को आकर घेर लिया और सारे विश्व को उत्पन्न किया और फिर उसी ब्रह्म के श्वास से अब छिन्नभिन्न हो गई है"

५३९ यदि मनुष्य बच्चे पैदा करता है और फिर उनका पालन पोषण करता है तो इसमें उसकी बहादुरी नहीं है, क्योंकि कुत्ते और बिल्ली भी बच्चों को पैदा करते और उनका पोषण करते हैं। सच्ची बहादुरी तो अपने धर्म के पालन करने में है जो केवल अर्जुन में देखी गई थी।

५४० शिष्य को उपदेश देते हुये गुरू ने दो उंगलियां उठाई जिसका मतलब यह था कि ब्रह्म और माया दोनों भिन्न हैं, और फिर

एक उगली नीचे करके उसने कहा कि जब माया नष्ट हो जाती है तो सिवाय एक ब्रह्म के ससार में और कोई नहीं रह जाता।

५४१ जब तक दिव्य साक्षात्कार का लाभ नहीं हुआ और जब तक पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा सोना नहीं हुआ तब तक "करने वाला मैं हूँ" ऐसा भाव अवश्य वर्तमान रहता है और मैंने इस अच्छे काम को किया है, मैंने उस बुरे काम को किया है" ऐसा भेदभाव भी अवश्य रहता है। दो की अर्थ भेदभाव की कल्पना माया है। जो ससार के प्रवाह के अस्तित्व का कारण है। सत्वप्रधान विद्या माया की शरण जाने से मनुष्य सुमार्ग में चलकर ईश्वर तक पहुँचता है वही मनुष्य माया के सागर को पार कर सकता है जिसको ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। वह पुरुष जो जानता है कि करने वाला ईश्वर है, मैं करने वाला नहीं हूँ, इस देह में रहता हुआ भी मुक्त है।

५४२ जिस प्रकार कृपण का सारा ध्यान द्रव्य की ओर लगा रहता है उसी तरह तू अपने सारे ध्यान को ईश्वर की ओर लगा।

५४३ दिव्य प्रेम की घूट पीने वाला भक्त एक गहरे पियक्कड़ की तरह है जो शिष्टाचार के नियमों से बंधता नहीं।

५४४ एक चोर अंधेरी कोठरी में चोरी करने के लिये घुसता है और वहां रक्खी हुइ चीज़ों को टटोलता है। वह पहिले एक मेजपर हाथ रखता है और कहता है 'नहीं आगे बढो यह तो मेज़ है। इसके बाद वह एक कुरसी पर हाथ रखता है और कहता है, अरे यह तो कुरसी है आगे बढ़ो। इस प्रकार भिन्न २ चीज़ों पर हाथ रखता हुआ अन्त में उसका हाथ रोकड़ का संदूक पर पड़ता है और वह प्रसन्न होकर कहता है कि जिस चीज़ की खोज इतने समय से कर रहा था, वही चीज़ बड़ी कठीनता से अब मुझे मिली है। ब्रह्म की भी खोज इसी प्रकार की है।

५४५ जिस प्रकार काई और घास के कारण तालाब के

भीतर की मछली बाहर से नहीं दिखलाई पड़ती, उसी प्रकार ईश्वर मनुष्य के अन्त करण में वर्तमान है लेकिन माया के परदे के कारण दिखलाई नहीं पड़ता।

५४६ जब तक "कामना" का किंचित् चिन्ह भी रहता है तब तक ईश्वर के दर्शन नहीं होते। इसलिये छोटी २ वासनाओं को तृप्त करलो और बड़ी, २, वासनाओं को विचार और विवेक से छोड़ दो।

५४७। जिस डोरे के सिरे म यदि कुछ भी फुचडा है तो वह सुइ के भीतर नहीं जा सकता, उसी प्रकार जब तक वासना का कुछ भी चिन्ह शेष है तब तक मनुष्य स्वर्ग के राज्य में नहीं घुस सकता।

५४८ बुद्धिमान मनुष्य वही है जिसे ईश्वर का दर्शन होता है। वह एक छोटे बच्चे की तरह हो जाता है। छोटे बच्चे को एक प्रकार का अहङ्कार होता है लेकिन वह अहङ्कार एक आभासमात्र है, स्वार्थपूर्ण अहङ्कार नहीं है। छोटे बच्चे का अहङ्कार जवान मनुष्य के अहङ्कार की तरह नहीं होता।

५४९ छोटे बच्चे का अहङ्कार शीशे में प्रतिबिम्बित मुख की तरह होता है। शीशे में प्रतिबिम्बित मुख असली मुख की तरह होता है, उससे किसी को हानि नहीं पहुँच सकती।

५५० जब तक हमारे हृदय आकाश में वासनाओं की हवायें बहती रहेंगी तब तक उसमें ईश्वर के दिव्य स्वरूप का दर्शन होना असम्भव है। शान्त और समाधि सुख में मग्न हुये हृदय में दिव्य स्वरूप का दर्शन होता है।

५५१ उसने ईश्वर का दर्शन किया है और अब वह बिल्कुल बदल गया है।

५५२ चूंकि ईश्वर हमें भोजन देता है इसलिये हम उसे दयालु नहीं कह सकते। क्योंकि लड़कों को भोजन देना और उनका

पोषण करना प्रत्येक पिता का कर्तव्य है। लेकिन जब वह हमको
मार्ग से बचाये जाता है और मोह में पड़ने से रोकता है-तब उसे
सच्चा कृपालु कह सकते हैं।

५५३ समाधी के सातवें अथवा सब से ऊची सीढी पर पहुँ
हुये और सदैव ईश्वरचिन्तन में मग्न महात्मा मानव जाति के कल्या
करने के लिये अपने आध्यात्मिक पद को छोड़ कर नीचे आते हैं
उन्हें अपने विद्या का अहकार होता है लेकिन वह अहंकार पानी प
खींची हुई लकीर की तरह केवल आभास मात्र होता है।

५५४ समाधि का सुख मिलने पर किसी को नौकर और कि
को भक्त का अहकार होता है। दूसरों को उपदेश देने के लि
शकराचार्य्य को विद्या का अहकार था।

५५५ गुरू ने शिष्य से पूछा कि मुझ म क्या कुछ अहका
है। शिष्य ने उत्तर दिया—हा थोड़ा सा है और वह निम्न लिखि
हितों के लिये है। (१) शरीर की रक्षा के लिये (२) ईश्वर की
भक्ति बढाने के लिये (३) भक्तों के सत्सग में मिलने के लिये (४)
दूसरों को उपदेश देने के लिये। चिरकाल तक प्रार्थना करने के
पश्चात् आपको यह अहकार मिला है। मेरी तो कल्पना ऐसी है कि
आपके जीवात्मा की स्वाभाविक अवस्था समाधि है इसलिये मैं कहता
हूँ कि आपका अहकार आपकी प्रार्थना का फल है।

मास्टर साहब ने कहा कि मैंने तो इस अभिमान को कायम नहीं
रक्खा बल्कि मेरी जगत् माता ने कायम रक्खा है। प्रार्थना स्वी
करना मेरी माता का काम है।

५५६ साकार और निराकार परमात्मा का दर्शन हनुमान जी
को मिला था। लकिन उन्होंने ईश्वर के सेवक होने का अहङ्कार कायम
रक्खा और यही हालत नारद, सनक, सनातन और सनत्कुमार की थी।

किसी ने पूछा कि नारद इत्यादि भक्त ही थे या ज्ञानी भी थे। इस पर परमहंस जी ने जवाब दिया कि नारद इत्यादि महात्माओं को ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति थी लेकिन तब भी वे नाले के पानी की तरह खुल्लम-खुल्ला बात चीत करते थे और गाते थे। इससे ऐसा मालूम होता है कि उनको भी विद्या का अहङ्कार था जो एक प्रकार से उनको ईश्वर से अलग करने का एक चिन्ह था और जो दूसरों को धर्म की सच्चाई का उपदेश दे रहा था।

५५७ स्वाती नक्षत्र के निकलने पर सीप समुद्र तल से पानी के सतह पर आता है और उस समय तक उतराता रहता है जब तक उसको स्वाती का बूंद नहीं मिलता। इसके बाद वह समुद्र के तह पर चला जाता है और कुछ समय के अनन्तर उसमें से एक सुन्दर मोती निकलता है। उसी प्रकार बहुत से ऐसे उत्सुक मुमुक्ष होते हैं जो शाश्वत आनन्द के द्वार को खोलने वाले गुरुओं की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान में विहार करते हैं और इस परिश्रम में कहीं ऐसा एक भी गुरू मिल गया तो उनके सांसारिक बन्धन नष्ट हो जाते हैं, और वे मनुष्यों का सत्सङ्ग छोड़ कर अन्त करण रूपी गुफा में स्थित हो जाते हैं और वहीं पर उस समय तक पड़े रहते हैं जब तक उनको नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं होती।

५५८ इस युग के लोग हर एक वस्तु के तत्व की ओर अधिक ध्यान देते हैं। वे धर्म के मुख्य तत्व को ग्रहण कर लेते हैं और विधि, संस्कार, मतमतान्तर इत्यादि अप्रमुख तत्वों को ग्रहण नहीं करते।

५५९ सीप जिसके भीतर मोती रहता है कम मूल्य का होता है किन्तु मोती की उपज के लिये उसकी बड़ी आवश्यकता है। सम्भव है जिसने मोती उसमें से निकाला है उसको सीप का कुछ भी उपयोग न हो। उसी प्रकार जिसको परमेश्वर की प्राप्ति हो गई उसको विधि और संस्कारों की कोई आवश्यकता नहीं है।

पोषण करना प्रत्येक पिता का कर्तव्य है। लेकिन जब वह हमको दुरे मार्ग से बचाये जाता है और मोह में पड़ने से रोकता है तब उसे हम सच्चा कृपालु कह सकते हैं।

५५३ समाधी के सातवें अथवा सब से ऊंची सीढ़ी पर पहुँचे हुये और सदैव इश्वरचिन्तन में मग्न महात्मा मानव जाति के कल्याण करने के लिये अपने आध्यात्मिक पद को छोड़ कर नीचे आते हैं। उन्हें अपने विद्या का अहंकार होता है लेकिन यह अहंकार पानी पर खींची हुई लकीर की तरह केवल आभास मात्र होता है।

५५४ समाधि का सुख मिलने पर किसी को नौकर और किसी को भक्त का अहंकार होता है। दूसरों को उपदेश देने के लिये शकराचार्य्य को विद्या का अहंकार था।

५५५ गुरू ने शिष्य से पूछा कि मुझ में क्या कुछ अहंकार है। शिष्य ने उत्तर दिया—हां थोड़ा सा है और वह निम्न-लिखित हितों के लिये है। (१) शरीर की रक्षा के लिये (२) ईश्वर की भक्ति बढ़ाने के लिये (३) भक्तों के सत्सग में मिलने के लिये (४) दूसरों को उपदेश देने के लिये। चिरकाल तक प्रार्थना करने के पश्चात् आपको यह अहंकार मिला है। मेरी तो कल्पना ऐसी है कि आपके जीवात्मा की स्वाभाविक अवस्था समाधि है इसलिये मैं कहता हूँ कि आपका अहंकार आपकी प्रार्थना का फल है।

मास्टर साहब ने कहा कि मैंने तो इस अभिमान का कायम नहीं रक्खा बल्कि मेरी जगत् माता ने कायम रक्खा है। प्रार्थना सफल करना मेरी माता का काम है।

५५६ साकार और निराकार परमात्मा का दर्शन हनुमान जी को मिला था। लेकिन उन्होंने ईश्वर के सेवक होने का अहङ्कार कायम रक्खा और यही हालत नारद, सनक, सनातन और सनत्कुमार की थी।

किसी ने पूछा कि नारद इत्यादि भक्त ही थे या ज्ञानी भी थे। इस पर परमहंस जी ने जवाब दिया कि नारद इत्यादि महात्माओं को ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति थी लेकिन तब भी वे नाले के पानी की तरह खुल्लम-खुल्ला बात चीत करते थे और गाते थे। इससे ऐसा मालूम होता है कि उनको भी विद्या का अहङ्कार था जो एक प्रकार से उनको ईश्वर से अलग करने का एक चिन्ह था और जो दूसरों को धर्म की सच्चाई का उपदेश दे रहा था।

५५७ स्वाती नक्षत्र के निकलने पर सीप समुद्र तल से पानी के सतह पर आता है और उस समय तक उतराता रहता है जब तक उसको स्वाती का बूंद नहीं मिलता। इसके बाद वह समुद्र के तह पर चला जाता है और कुछ समय के अनन्तर उसमें से एक सुन्दर मोती निकलता है। उसी प्रकार बहुत से ऐसे उत्सुक मुमुक्ष होते हैं जो शाश्वत आनन्द के द्वार को खोलने वाले गुरुओं की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान में विहार करते हैं और इस परिश्रम में कहीं ऐसा एक भी गुरू मिल गया तो उनके सांसारिक बंधन नष्ट हो जाते हैं, और वे मनुष्यों का सत्सङ्ग छोड़ कर अन्त करण रूपी गुफा में स्थित हो जाते हैं और वहां पर उस समय तक पड़े रहते हैं जब तक उनको नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं होती।

२५८ इस युग के लोग हर एक वस्तु के तत्व की ओर अधिक ध्यान देते हैं। वे धम के मुख्य तत्व का ग्रहण कर लेते हैं और विधि, संस्कार, मतमतान्तर इत्यादि अप्रमुख तत्वों का ग्रहण नहीं करते।

२२९ सीप जिसके भीतर मोती रहता है कम मूल्य का होता है किन्तु।मोती की उपज के लिये उसकी बड़ी आवश्यकता है। सम्भव है जिसने मोती उसमें से निकाला है उसको सीप का कुछ भी उपयोग न हो। उसी प्रकार जिसको परमेश्वर की प्राप्ति हो गई उसको विधि और संस्कारों की कोई आवश्यकता नहीं है।

५६० दल (शेवाल घास) बड़े स्वच्छ तालाबों में नहीं उत्पन्न होता, वह छोटे २ तलइयों म होता है। उसी प्रकार जिस पक्ष के लोग पवित्र, उदार और नि स्वार्थी हैं उनमें दल (भेद) उत्पन्न नहीं होता। किन्तु जिस पक्ष के लोग स्वार्थी, कपटी और हठवादी होते हैं उनमें दल अधिक ज़ोर पकड़ता है (बगला में दल के दो अर्थ होते हैं एक तो शेवाल घास और दूसरे भेद। यहा दल शब्द पर श्लेष है)।

५६१ जो तुम दूसरों से करवाना चाहते हो उसे पहिले तुम स्वय करो।

५६२ दुष्ट मनुष्य का मन कुत्ते की टेढी पूछ की तरह होता है।

५६३ नवीन उत्पन्न हुआ बछड़ा बड़ा उत्साही, चढ़पढ़ और प्रसन्नचित्त होता है। दिन भर वह इधर उधर घूमता रहता है, केवल दूध पीने के लिये अपनी माता के पास जाता है। लेकिन जब उसके गले में रस्सी डाल दी जाती है तो उसका उत्साह नष्ट हो जाता है, दुखी और उदास रहता है और सूख कर दुबला पड़ जाता है। उसी प्रकार जब तक बच्चे का ससार से सम्बन्ध नहीं रहता तब तक वह दिन भर आनन्द से रहता है लेकिन विवाह हो जाने पर जब घर का बोझ उस पर पड़ जाता है तो उसका आनन्द नष्ट हो जाता है, दिन रात वह घर की चिन्ताओं में चूर रहता है मुख उसका पीला पड़ जाता है और माथे पर झुर्रियां पड जाती हैं। वह पुरुष धन्य है जो जन्म भर लड़का बना रहता है जो प्रात काल के हवा के सदृश स्वतंत्र है, खिले हुये फूल की तरह सुन्दर है और ओस के बिन्दु की तरह पवित्र है।

५६४ जिस प्रकार मुलायम मिट्टी पर चिन्ह उभड़ता है किन्तु पत्थर पर नहीं। उसी प्रकार दिव्य ज्ञान का प्रभाव भक्तों के हृदयों पर पड़ता है, बद्ध प्राणियों के हृदयों में नहीं।

५६५ बहते हुये पानी पर पूर्णिमा के चन्द्रमा की किरणों का प्रतिबिम्ब साफ २ नहीं दिखलाई पड़ता, उसी प्रकार सांसारिक कामना

और मनोविकार से त्रस्त हुये हृदय पर ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता।

५६६। जिस प्रकार मक्खी कभी पाखाने पर बैठती है और कभी देवताओं के नैवेद्य पर बैठती है। उसी प्रकार सांसारिक मनुष्य का मन कभी धार्मिक बातों पर लग जाता है और कभी धन और विषयभोग के सुख में लीन हो जाता है।

५६७ ज्वर से पीड़ित और प्यास से दुखी मनुष्य यदि ठंडे पानी से भरे हुये और खटाईयों से भरे हुये खुले मुंह वाले बोतलों के पास रक्खा जाय तो क्या यह सम्भव है कि वह पानी पीने अथवा खटाई खाने की इच्छा को रोक सके? उसी प्रकार विषयभोग के ताप से तपे मनुष्य के एक ओर सुन्दरता और दूसरी ओर द्रव्य रक्खा जाय तो क्या वह अपने मोह को रोक सकता है। सन्मार्ग से वह अवश्य गिर जायगा।

५६८ जिस बर्तन में दही रक्खा जाता है उसमें कोई दूध नहीं रखता, क्योंकि उसमें रखने से दूध फट जाता है दही का बर्तन दूसरे काम में भी नहीं आ सकता, क्योंकि आग पर रखने से वह चटक जाता है। इसलिये उसे प्राय निरुपयोगी ही समझना चाहिये। एक सज्जन और अनुभवी गुरू अमूल्य और उदात् उपदेशों को एक सांसारिक मनुष्य के हवाले नहीं करता क्योंकि वह अपने क्षुद्र फायदे के लिये उनका दुरुपयोग करता है और न वह उससे ऐसा कोई उपयोगी काम ही करवायेगा जिसमें कुछ भी परिश्रम पड़े। सम्भव है वह यह समझे कि गुरु मुझसे अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

५६९ प्रश्न—मन के किस अवस्था पहुंचने पर सांसारिक मनुष्य को मोक्ष मिल सकता है?

५७० उत्तर—ईश्वर की कृपा से यदि किसी में त्याग का तत्व जल्दी आ जावे तो वह कनक और कान्ता की आसक्ति से छूट सकता है और सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है।

५७१ ईश्वर जिस घर में रहता है उस घर के दरवाजे के खोलने के लिये कुंजी एक बिलकुल उलटेढंग से लगाई जाती है। ईश्वर तक पहुँचने के लिये तुमको संसार छोड़ना होगा।

५७२ किसी से परमहंस जी ने कहा था "क्यों जी संसार में अपने जीवन का एक बड़ा भाग व्यतीत करके अब तुम ईश्वर को ढूंढने के लिये निकले हो। ईश्वर का दर्शन करके यदि तुम संसार में रहते तो तुमको कौन सी शान्ति और कौन सा आनन्द न मिलता।"

५७३ सांसारिक विचारों और चिन्ताओं से अपने मन को न घबड़ाओ। जो सामने आवे उसको करते रहो और अपना मन हमेशा ईश्वर की ओर लगाये रहो।

५७४ अपने विचार के अनुसार तुम्हें हमेशा बोलना चाहिये। विचार और वाणी में एकता होना चाहिये। यदि तुम कहते हो कि "ईश्वर हमारा सर्वस्व है" और अपने मन से तुम संसार को सर्वस्व समझते हो तो इससे तुमको कोई लाभ नहीं होगा।

५७५ एक बार ब्राह्मो धर्म के लड़कों ने मुझ से कहा कि हम लोग राजा जनक के अनुयायी हैं, संसार में रहते हैं लेकिन उसमें आसक्ति नहीं रखते। मैंने उनको जवाब दिया कि ऐसा कहना बहुत सहल है लेकिन राजा जनक होना बड़ा कठिन है। संसार में निष्पाप और निर्मल रहना बड़ा कठिन है। जनक ने शुरू में बहुत भारी तपस्या की थी। मैं तुमसे यह नहीं कहता कि उसी तरह का कष्ट तुम भी सहो, लेकिन मैं तुमसे यह कहता हूँ कि कुछ दिन तक शान्ति के साथ एकान्त स्थान पर रहकर भक्ति का अभ्यास अवश्य करो। ज्ञान और भक्ति को प्राप्त करके तब संसार के कामों में लगो। उत्तम दही उसी समय बनता है जब दूध बर्तन में थोड़ी देर तक रक्खा रहता है। बर्तन के हिलने अथवा बर्तन के बदलने से अच्छी दही नहीं बनती। जनक जी अनासक्त थे, इस वास्ते लोग उनको विदेह (बिना

देह का) कहते थे। वे जीवन मुक्त थे। "मेरे देह है" ऐसी भावना नष्ट करना बड़ा कठिन है। जनक सचमुच एक बड़े वीर थे। ज्ञान और कर्म की दो तलवार बड़ी आसानी के साथ अपने हाथ में पकड़े हुये थे।

५७६ अगर तुम ससार से अनासक्त रहना चाहते हो तो तुमको पहले कुछ समय तक एक वर्ष, छ महीने, एक महीना या कम से कम बारह दिन तक एकान्त स्थान पर रहकर भक्ति का साधन अवश्य करना चाहिये। एकान्तवास में तुम्हें हमेशा ईश्वर में ध्यान लगाना चाहिये और दिव्य प्रेम के लिये उसकी प्रार्थना करनी चाहिये। उस समय तुम्हारे मन में यह विचार आना चाहिये कि ससार की कोई वस्तु मेरी वस्तु नहीं है, जिनको मैं अपनी वस्तु समझता हूँ वे अति शीघ्र नष्ट हो जायेंगी। वास्तव में तुम्हारा दोस्त ईश्वर है। वही तुम्हारा सर्वस्व है उसको प्राप्त करना ही तुम्हारा ध्येय होना चाहिये।

५७७ अपने विचारों और अपनी श्रद्धा को अपने मन में रक्खो बाहर किसी से न कहो, नहीं तो तुम्हारी हानि होगी।

५७८ यदि तुम हाथी को खूब नहला कर उसे छोड़ दो तो वह शीघ्र ही धूल में लेट कर अपने शरीर को मैला कर लेगा। किन्तु यदि तुम उसे नहला कर उसको बाड़े म बांध दो तो वह स्वच्छ रहेगा। उसी प्रकार महात्माओं के सत्सग से तुम्हारा अत करण यदि पवित्र हो जावे और यदि तुम सासारिक मनुष्यों से बराबर मेल रखते रहो तो तुम्हारे अत करण की पवित्रता अवश्य नष्ट हो जायगी लेकिन यदि तुम अपने मन को ईश्वर में लगाये रहो तो तुम्हारे अन्त करण की पवित्रता नष्ट न होगी।

५७९ जैसे शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिंब नहीं पड़ता। उसी प्रकार जिनका अन्त करण मलीन और अपवित्र है और जो माया के वश में हैं उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब

नहीं पड सकता है, उसी प्रकार स्वच्छ हृदय में ईश्वर का प्रतिबिंब पडता है, इसलिये पवित्र बनो।

५८० संसार में पूर्णता प्राप्त करने वाले मनुष्य दो प्रकार के होते हैं, एक वे जो सत्य को पाकर चुप रहते हैं और उसके आनन्द का अनुभव बिना दूसरों की कुछ परवाह किये स्वयं लिया करते हैं और दूसरे वे जो सत्य को प्राप्त कर लेते हैं लेकिन उसका आनन्द वे अकेले ही नहीं लेते बल्कि नगाडा पीट पीट कर दूसरों से भी कहते हैं कि आओ और मेरे साथ इस सत्य का आनन्द लो।

५८१ विवेक दो प्रकार का होता है (इसकी व्याख्या हो चुकी है)।

५८२ ग्रन्थ का अर्थ सदैव धर्मशास्त्र के नहीं होता। उसका अर्थ ग्रंथि अर्थात् गाठ भी होता है। सब अभिमान को छोड़कर सत्य की खोज करने के लिये बड़ी उत्सुकता और शाध के साथ जो कोई ग्रन्थ नहीं पढता, तो केवल पढने ही से उसम धूर्तता और अहंकार पैदा हो जाता है। ये सब विकार उसके मन के ग्रन्थ (गांठ) हैं।

५८३ जिनको थोड़ा ज्ञान होता है वे अहंकार से भरे रहते हैं। एक सज्जन से ईश्वर विषय पर मेरी बातचीत हुई। उन्होंने कहा, "अरे मैं इन सब बातों को जानता हूँ।" मैंने उत्तर दिया, "जो दिल्ली जाता है क्या वह कहता फिरता है कि मैं दिल्ली गया था। क्या एक बाबू अपने मुख से कहता है कि मैं बाबू हूँ ?"

५८४ जिन लोगों को आत्मज्ञान नहीं मिल सकता उन लोगों में से निम्नलिखित लोग हैं (१) जो अपने ज्ञान की चर्चा इधर उधर करते फिरते हैं (२) जिन्हें अपने ज्ञान का घमण्ड है (३) और जिन्हें अपनी संपत्ति का अभिमान है। यदि कोई उनसे कहे, "अमुक स्थान में एक अच्छा सन्यासी रहता है, उनसे मिलने के लिये क्या आप चलेंगे ?" तो वे कहेंगे कि हमें जरूरी काम करना है इसलिये

दर्शन जा सकेंगे। किन्तु अपने मन में वे सोचते हैं, "हम तो बड़े दरजे के मनुष्य हैं उससे मिलने के लिये हमें क्यों जाना चाहिये।"

५८५ बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके यहा कोई ऐसे प्राणी नहीं होते जिनकी देख रेख उन्हें करनी पड़े किन्तु तो भी वे जान बूझकर कुछ प्राणी रख कर अपने को ससार में बाध लेते हैं। वे स्वतन्त्र रहना पसन्द नहीं करते। जिनके न कोइ भाइ हैं और न सम्बन्धी हैं वे बैठे बैठाये, कुत्ता बिल्ली अथवा बन्दर पाल लेते हैं और उन्हीं की चिन्ता में व्याकुल रहते हैं। मनुष्यों पर माया का ससारी जाल पड़ा रहता है।

५८६ अधिक ज्वर म जब मनुष्य को गहरी प्यास लगती है, तो वह समझता है कि मैं समुद्र को पीकर ही छोडूगा, किन्तु जब ज्वर उतर जाता है तो वह कठिनता से एक प्याला पानी पीता है और थोड़े ही पानी से उसकी प्यास बुझ जाती है। उसी प्रकार मनुष्य माया के भ्रम में पड़ कर अपनी लघुता को (मैं कितना छोटा हूँ इसे) भूल जाता है और सोचने लगता है कि मैं सारे ईश्वर को अपने हृदय में भर सकता हूँ किन्तु जब उसका भ्रम दूर हो जाता है तो ऐसा देखा जाता है कि ईश्वरीय दिव्य प्रकाश के एक किरण से उसका हृदय नित्यानन्द से भर सकता है।

५८७ परमहंस रामकृष्णदेव ने एक बार एक वाद विवाद करने वाले से कहा था "यदि तुम सत्य को दलीलों से जानना चाहते हो तो ब्राह्म उपदेशक केशवचन्द्र सेन के पास जाओ, किन्तु यदि उसे केवल एक शब्द में जानना चाहते हो तो मेरे पास आओ।"

५८८ जिसका मन ईश्वर की ओर लगा हुआ है उसे भोजन, वस्त्र आदि क्षुद्र बातों पर ध्यान करने की फुरसत नहीं रहती।

५८९ सच्चा सात्विक भोजन वही है जिससे मन चचल न हो।

५९० द्रव्य के अभिमान करने का कोइ कारण नहीं दिखलाइ

पड़ता । यदि तुम यह कहते हो कि मैं धनी हूँ तो संसार में, बहुत से ऐसे धनी पड़े हैं जिनके मुकाबले में तुम कुछ भी नहीं हो । सन्ध्या समय जब जुगनू चमकते हैं तो वे समझते हैं कि संसार को प्रकाश हम दे रहे हैं किन्तु जब तारे निकल आते हैं तो उनका अभिमान चूर्ण हो जाता है, और फिर तारे समझते हैं कि संसार को प्रकाश हम देते हैं । थोड़ी देर में आकाश में जब चन्द्रमा चमकने लगता है तो तारों का नीचा देखना पड़ता है और वे कान्तिहीन हो जाते हैं । अब चंद्रमा अभिमान में आकर समझता है कि संसार को प्रकाश मैं दे रहा हूँ और मारे खुशी के नाचता फिरता है । जब प्रातःकाल सूर्य का उदय होता है तो चन्द्रमा की भी कान्ति फीकी पड़ जाती है । धनी लोग यदि सृष्टि की इन बातों पर विचार करें तो वे धन का अभिमान कभी न करें ।

५९१ रुपया जिसके पास है वह सच्चा मनुष्य है । रुपये का उपयोग करना जिन्हें नहीं आया वे मनुष्य कहलाने योग्य नहीं ।

५९२ बंगाली लिपि में तीन "सकार" के छोड़कर एक ही उच्चारण के दूसरे अक्षर नहीं होते । तीनों "सकार" का अर्थ "क्षमस्व" सहन कर, ऐसा होता है । इससे यह सिद्ध होता है कि लड़कपन में लिपि से ही हमको सहनशीलता का पाठ पढ़ाया जाता है । सहनशीलता मनुष्य के लिये बड़े महत्व का गुण है ।

५९३ सहनशीलता साधुओं का सच्चा गुण है ।

५९४ प्रश्न—मनुष्य में देवतापन कितने समय तक ठहरता है ?

उत्तर—लोहा जब तक आग में रहता है तब तक लाल रहता है । ज्योंही वह आग से निकाल लिया जाता है त्योंही वह काला पड़ जाता है । उसी प्रकार जब तक आत्मा समाधि में रहता है तब तक मनुष्य देव सदृश रहता है ।

५९५ जब तक अहङ्कार रहता है तब तक ज्ञान और मुक्ति

का मिलना और जन्म और मृत्यु से छूटना असम्भव है।

५९६ यदि कपड़े को मैं अपने सामने लटका दूं तो मैं तुम्हारे चाहे जितने समीप रहूँ तुम मुझे नहीं देख सकते। उसी प्रकार ईश्वर सब वस्तुओं की अपेक्षा तुम्हारे अधिक समीप है लेकिन अहङ्कार के परदे के कारण तुम उसे नहीं देख सकते।

५९७ प्रश्न—महाराज, हम लोग इस प्रकार क्यों बंधे हैं? हम लोगों को ईश्वर के दर्शन क्यों नहीं होते?

उत्तर—जीव के लिये अहङ्कार ही माया है। अहङ्कार प्रकाश को बन्द किये रहता है। जब "मैंपन" नष्ट हो जाता है तो सब कष्ट दूर हो जाते हैं। यदि ईश्वर की कृपा से "मैं स्वयं कुछ नहीं करता, यह भाव दिल में बैठ जाय तो मनुष्य इसी जीवन में मुक्त हो जाता और उसे फिर किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

५९८ कीर्ति को चाहने वाले लोग भ्रम में रहते हैं। उनको मालूम नहीं कि सब वस्तुओं के दाता ईश्वर ने प्रत्येक बात पहिले से निश्चित कर रक्खी है और सब का श्रेय उसी को है, किसी मनुष्य के नहीं है। चतुर मनुष्य हमेशा कहते हैं कि "हे ईश्वर तू ही सब करता है, तू ही हमारा सर्वस्व है।" किन्तु अज्ञानी लोग भ्रम में पड़कर कहते हैं, "इसको मैं करता हूँ, सब मेरे परिश्रम से होता है" इत्यादि।

५९९ जब तक तुम कहते हो कि 'मैं जानता हूँ" अथवा 'मैं नहीं जानता हूँ', तब तक तुम अपने को एक ही व्यक्ति समझते हो। मेरी जगन्माता कहती है 'जब मैं तुम्हारा सब अहङ्कार नष्ट कर देती हूँ तब तुमको परमेश्वर का साक्षात्कार होता है।' जब तक ऐसा नहीं होवा, तब तक मुझमें और मेरे चारों ओर "मैंपन" रहता है।

६०० यदि तुमको ऐसा मालुम पड़े कि हमारा "मैंपन" नहीं दूर हो सकता तो उसको सेवक के नाते से रहने दो। "मैं ईश्वर का

संभव है यह बुझ जाय, किन्तु यदि तुम्हारा आध्यात्मिक तेज महान् है तो हरेक के हाथ का भोजन करने से कोई हानि नहीं हो सकती

६१२ अध्यात्म विषय की ओर लगे हुये मनुष्यों की एक विशेष जाति बन जाती है। वे सामाजिक बन्धनों की कुछ परवाह नहीं करते

६१३ प्रिय मित्र, ज्यों ज्यों मेरी आयु बढ़ती जाती है त्यों त्यों मैं प्रेम और भक्ति के गुह्य तत्वों को अधिकाधिक समझ रहा हूँ।

६१४ प्रश्न—सच्चा भक्त ईश्वर को किस प्रकार देखता है?

उत्तर—वृन्दावन की गोपियाँ श्रीकृष्ण भगवान को जगन्नाथ करके नहीं मानती थीं बल्कि गोपीनाथ करके मानती थीं। उसी प्रकार भक्त ईश्वर को अपना निकट सम्बन्धी करके मानता है।

६१५. अपने पति के साथ किये हुये रात के सम्भाषण को सब स्त्रियों से कहने में एक स्त्री को लज्जा मालूम होती है। वह किसी से नहीं कहती और न कहने की उसकी इच्छा होती है। यदि संयोग से बात कहीं प्रगट हो जाती है तो उसे बड़ा दुःख होता है। किन्तु अपनी जिगरी सिखयों से निःसंकोच भाव से वह सब कह देती है। कभी २ तो बिना पूछे ही कहने में अधीर हो उठती है। उनसे कहने में बड़ा आनन्द मालूम होता है। उसी प्रकार ईश्वर का भक्त समाधि के समय अनुभव किये हुये आनन्द को भक्त को छोड़कर दूसरों से कहना पसन्द नहीं करता। कभी २ तो दूसरे भक्त से कहने के लिये वह भी अधीर हो उठता है और ऐसा करने में उसे आनन्द मालूम होता है।

६१६ चीनी को खूब जलती हुई आग में पकाओ। जब तक उसमें मिट्टी और मैल है तब तक उसमें से धुआं निकलता रहेगा और "बुल" "बुल" की आवाज़ होती रहेगी। किन्तु जब सब मैल जल जाती है तो न तो धुआं निकलता है और न आवाज ही होता है। सुन्दर स्वच्छ शीरा तैयार हो जाता है। यह शीरा चाहे पतला हो और

चाहे गाढ़ा हो मनुष्य और देवता दोनों को पसन्द होता है। श्रद्धावान मनुष्यों का ऐसा ही स्वभाव होता है।

६१७ बरसात का पानी ऊँची जमीन पर नहीं ठहरता बल्कि ढालू जमीन म बहकर चला जाता है। उसी प्रकार ईश्वर की कृपा नम्र मनुष्यों के दिलों में बहकर जाती है, अभिमानी मनुष्यों के दिल में नहीं ठहरती।

६१८ अभिमान से उसी प्रकार खाली रहो जिस प्रकार उड़ती हुई पर्ची आंधी के सामने अभिमान से खाली रहती है।

६१९ एक भक्त पुरुष चुपचाप ईश्वर का नाम मन में लेकर माला जपा करता था। भगवान परमहंस ने उससे कहा, "तुम एक ही मडू को पकड़े क्यों बैठे हो, आगे बढ़ो।" भक्त ने उत्तर दिया कि आगे बढ़ना बिना ईश्वर की कृपा के नहीं हो सकता। भगवान परमहंस ने कहा, "अरे भाई, उसक कृपा की हवा दिनरात हमारे चारों ओर चला करती है, यदि तुम्हें जीवन के महासागर को पार करना है तो मस्तिष्क रूपी नौका का पाल खोलो।

६२० ईश्वर के कृपा की हवा बराबर बहा करती है। इस समुद्र रूपी जीवन के मल्लाह उससे लाभ नहीं उठाते, किन्तु तेज और सबल मनुष्य सुन्दर हवा से लाभ उठाने के लिये अपने मन का परदा हमेशा खोल रहते हैं और यही कारण है कि वे अति शीघ्र निश्चित स्थान को पहुँच जाते हैं।

६२१ जब तक हवा नहीं चलती तभी तक पङ्खों की आवश्यकता रहती है, किन्तु जब हवा चलने लगती है तो पङ्खों की आवश्यकता नहीं रह जाती। उसी प्रकार जब तक ईश्वरीय सहायता न मिले तब तक अपने ही परिश्रम से ईश्वर प्राप्ति का उपाय करना चाहिये और जब ईश्वर की ओर से सहायता मिलने लगे तो मनुष्य अपने परिश्रम को बन्द कर दे।

६२३ जब तक कुतुबनुमा की सुई उत्तर की ओर रहती है तब तक जहाज़ को भय नहीं रहता, उसी प्रकार जब तक जहाज़ रूपी मानवजीवन के कुतुबनुमा की सुई रूपी मन परब्रह्म की ओर रहे तब तक उसको किसी प्रकार का भय न रहेगा।

६२४. प्रश्न—जब तुम संसार में डाल दिये जाव तो तुम्हें क्या करना चाहिये ?

उत्तर—उसी ईश्वर को सौंप दो, अनन्यभाव से उसकी शरण जाओ। इस प्रकार तुम्हें कोई दुःख न होगा और तुम्हें तब मालूम होगा कि हर एक बात उसकी इच्छा से होती है।

६२५. संसार में रहना या उसको छोड़ना ईश्वर की इच्छा है। इसलिये उसी पर सब छोड़कर काम किये जाओ। इससे अधिक तुम और कर क्या सकते हो ?

६२६. कनक और कान्ता ने संसार को पाप में डुबा रक्खा है। कान्ता को जब तुम जगत्माता के व्यक्त स्वरूप की दृष्टि से देखोगे तो वह निःशस्त्र हो जायगी।

६२७ प्रश्न— मुमुक्षु की शक्ति कहाँ रहती है ?

उत्तर—वह ईश्वर का पुत्र है। आंसू उसकी बड़ी शक्ति है। जिस प्रकार रोते हुये बच्चे की इच्छा मां पूरी करती है, उसी प्रकार रोते हुए भक्त की इच्छा ईश्वर पूरा करता है।

६२८ प्रश्न—शान्ति दिल में कभी २ रहती है, वह हमेशा क्यों नहीं रहती ?

उत्तर—बांस की आग जल्द बुझ जाती है जब तक और बांस लगा कर वह कायम न रक्खा जाय। उसी प्रकार आध्यात्मिक तेज कायम रखने के लिये भक्ति के सतत अभ्यास की आवश्यकता है।

६२९ मित्र, जब तक जीवित रहूँगा तब तक मुझे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा है।

६३० प्रारम्भ में मनुष्य को चाहिये कि वह एकान्त स्थान में ईश्वर का ध्यान करे, नहीं तो संसार की अनेक बातों से उसका मन उचट जायगा। यदि दूध और पानी को हम एक साथ रखें तो दोनों अवश्य मिल जायँगे, किन्तु यदि दूध से मक्खन निकाल लिया जाय और तब पानी के साथ रक्खा जाय तो पानी से नहीं मिलेगा, वह उस पर उतराता रहेगा। उसी प्रकार सतत अभ्यास से मनुष्य को ध्यान लगाने की बान पड़ जाय तो फिर चाहे जहां रहे उसका मन संसार की बातों में न जाकर सीधा ईश्वर में लगेगा।

६३१ ध्यान का अभ्यास करते समय नवसिखिये को कभी २ एक प्रकार की निद्रा आती है जिसे योगनिद्रा कहते हैं। उस समय उसको कुछ ईश्वरीय चमत्कार दिखलाई पड़ते हैं।

६३२ "ध्यान में जिसको पूर्णता प्राप्त हो उसे मोक्ष जल्दी मिलता है" ऐसी एक कहावत है। क्या तुम्हें मालूम है कि मनुष्य को ध्यान में पूर्णता कब मिलती है? ध्यान करते समय चारों ओर दिव्य वातावरण उत्पन्न हो जाय और उसकी आत्मा ईश्वर में लीन हो जाय तब।

६३३ संसार में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्हें समाधि का सुख मिल सके और जिनका अहङ्कार दूर हो। चाहे जितने समय तक विवेक के साथ विचार करो, अहङ्कार बराबर आता है। आज तुम पीपल के वृक्ष को काटते हो तो कल उसमें से अँखुये निकलने लगते हैं।

६३४ चिरकाल तक अपनी दुर्वृत्तियों से झगड़ा करने पर और आत्मज्ञान प्राप्त होने पर जब समाधि लगने लगे तब कहीं अहङ्कार दूर होता है। किन्तु समाधि का लगना बड़ा कठिन है अहङ्कार पीछा नहीं छोड़ता। इसी कारण संसार में जन्म लेकर बारबार आना पड़ता है।

६३५ समाधि में आना जाना पड़ता है। समाधि में तुम परमेश्वर तक आकर उसी में मिल जाते हो। इसके पश्चात् तुम वहां से अपना आत्मा को हटा कर फिर उसी स्थान पर चले आते हो जहां से रवाना हुये थे। इससे तुम्हें मालूम होता है कि तुम्हारी आत्मा की उत्पत्ति ईश्वर से ही हुई है, और ईश्वर, मनुष्य और प्रकृति एक ही ईश्वर के स्वरूप हैं। इनमें से यदि किसी को भी तुम अपने वश में करलो तो तुम एक प्रकार से ईश्वर का साक्षात्कार कर लेते हो।

६३६ क्या तुम्हें मालूम है कि सात्विक मनुष्य किस प्रकार ध्यान लगाता है? वह अध रात्रि के समय परदे के अन्दर अपने बिस्तर पर ईश्वर का ध्यान लगाता है जहां उसे कोई देख नहीं सकता।

६३७ फूले हुये कमल की सुगन्धि वायु द्वारा पाकर भौंरा आप से उसके पास जाता है। जहा मिठाइयां रक्खी रहती हैं वहां चींटियां आप से आप जाती हैं। भौंरे को या चींटियों को कोई बुलाने नहीं जाता। उसी प्रकार जब मनुष्य शुद्ध अन्त करण और पूर्ण ज्ञानी हो जाता है तो उसके चरित्र की सुगन्धि आप चारों ओर फैलती है और सत्य की खोज करने वाले आप उसके पास जाते हैं। वह उनको स्वयं बुलाने नहीं जाता कि मेरे पास आओ और मेरी बातें सुनो।

६३८ गुरू के वाक्यों को सुनकर रामचन्द्र जी ने संसार को छोड़ने का विचार किया। उनके पिता राजा दशरथ ने वशिष्ठ मुनि को उपदेश करने के लिये भेजा। वशिष्ठ जी ने देखा कि रामचन्द्रजी पर घना वैराग्य सवार है। उन्होंने कहा, "रामचन्द्रजी, पहिले मुझसे विवाद कीजिये और फिर संसार को छोड़िये। मैं आप से पूछता हूँ कि क्या संसार ईश्वर से अलग है? यदि है तो आप उसे खुशी से छोड़ सकते हैं।" इन बातों पर विचार करके राम ने देखा कि ईश्वर का प्रकाश जीव और संसार दोनों में है। हरेक वस्तु उसी के शरीर में मौजूद है। अतएव राम चुप हो रहे।

६३९. अपने स्वामी के घर के बारे में नौकरानी कहती है कि ह घर मेरा ही है यद्यपि उसको मालूम है कि स्वामी का घर उसका र नहीं है, उसका घर तो दूर वर्दवान या नदिया जिले के एक गाव ं है। उसका ध्यान अपने गांव वाले घर में बराबर लगा रहता है। गोद में लिये हुये स्वमी के पुत्र की ओर भी इशारा करके वह कहती , "मेरा हरी बड़ा नटखट है, मेरा हरी फलानी चीज़ खाना चाहता , किन्तु वह इस बात को अच्छी तरह से जानती है कि हरी मेरा लड़का नहीं है। (परमहंस भी कहते हैं कि) जो मेरे पास आते हैं उनसे मैं बराबर कहता हूँ कि तुम लोग इस नौकरानी की तरह अनासक्त जीवन व्यतीत करो। मैं उनसे कहता हूँ कि संसार में रहो लेकिन संसार के बन कर न रहो। अपने मन को ईश्वर की ओर लगाये रहो जो तुम्हारा स्वर्गीय घर है और जहाँ से सब उत्पन्न होते हैं। भक्ति के लिये प्रार्थना करो।

६४०. एक विद्वान ब्राह्मण ने एक बार एक राजा के पास जाकर कहा, "महाराज, मैंने धर्मग्रन्थों का अच्छा अध्ययन किया है। मैं आपको भगवद्गीता पढ़ाना चाहता हूँ।" राजा विद्वान् से चतुर था। उसने मन में विचार किया कि जिस मनुष्य ने भगवद्गीता का अध्ययन किया होगा वह और भी अधिक आत्मचिन्तन करेगा, राजाओं के दरबार की प्रतिष्ठा और धन के पीछे थोड़े ही पड़ा रहेगा। ऐसा विचार कर राजा ने ब्राह्मण से कहा कि, "महाराज आपने स्वयं गीता का पूर्ण अध्ययन नहीं किया है। मैं आपको अपना शिक्षक बनाने का वचन देता हूँ लेकिन अभी आप जाकर गीता का अध्ययन अच्छी तरह और कीजिये।" ब्राह्मण चला गया, लेकिन बराबर वह यही सोचता गया कि देखो तो राजा कितना बड़ा मूर्ख है। वह कहता है कि तुमने गीता का पूर्ण अध्ययन नहीं किया और मैं कई वर्षों से इसी का बराबर अध्ययन कर रहा हूँ।" उसने जाकर एक बार गीता

६४६ मा, मैं यन्त्र हूँ और तू यन्त्री (मशीन चलानेवाला)। मैं घर हूँ और तू उसमें रहने वाली स्वामिनी है। मैं म्यान हूँ और तलवार है। मैं रथ हूँ और तू रथी है मैं वही करता हूँ जिसके के लिये तू आज्ञा देती है। मैं वही कहता हूँ जो तू कहलाती है। दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करता हूँ जैसी तेरी इच्छा होती है कुछ नहीं हूँ तू सब कुछ है।

ओ३म् ओ३म् ओ३म्

कृष्ण कीर्तन

प्रकाशक व हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता —

गोयल ब्रादर्स, थोक पुस्तकालय,

दरीबा कलां, देहली।

॥ ओ३म् ॥

कृष्ण कीर्तन

संग्रह कर्त्ता—

महाराज बिहारी श्रीवास्तव

उर्फ नन्ने बाबू

सचालक श्री कैलाश मित्र मण्डल

प्रकाशक —

गोयल ब्रादर्स, थोक पुस्तकालय,

दरीबा कलां, देहली।

श्री भानु प्रिंटिंग वर्क्स, कटरा खुशालराय, देहली।

कृष्ण कीर्तन

— ✲ —

भजन नं० १

कृष्ण गीता में वायदा कर गये आवन का।
कर गये आवन का बेड़ा बचावन का॥
साठ लाख गौओं भी बेचारी।
जिनके गले चल गई आरी॥
कृष्ण तुम्हे प्रेम रहा न बन २ चरावन का।
भारत दु:ख अति भारी।
दु:ख पा रही विधवा नारी॥
कृष्ण अब समय आगया बेड़ा बचावन का।
हे दुष्ट दल दलन करो महाराज,
वायदा हो जाय न खिलाफ।
ओ कृष्ण अब समय आगया चक्र चलावन क
चक्र चलावन का, खड़ग उठावन का॥

भजन नं० २

खोजता फिरता कपूं नादान, तेरे मन मन्दिर में भगवान ।
स्वास स्वास और रोम रोम मे, बसे दया निधान ॥
पाप मैल तू पापी धोले, बीज हृदय मे प्रेम का बोले ।
राम नाम का सुमरन करले, जो चाहे कल्याण ॥
ये जीवन मृत्युका स्वपना,आख खुली तो कोईन अपना ।
पागल पन छोड़ तू मोह का, करले उसी का ध्यान ॥
मधुर कृष्ण दर्शन का प्यासा, पूरी करदे मन अभिलापा ।
जिससे तेरा जन्म सुफल हो, अमर रहे ये ज्ञान ॥

भजन न० ३

नाम हरी का बोलो मनुआ, नाम हरी का बोलो ।
कर्म तराजू पर अपने, तुम पुण्य पाप को तोलो ॥
मन गगा है तन जमना है तिर्वेणी जल ज्ञान बना है ।
जीवन की उजली चादर के, धब्बे को तुम धोलो ॥
ये दुनिया सुन्दर ठगननी है चोर लुटेरों की भगनी है ॥
खोटा खरा खरा परख के मोती, चीन चीन कर मोलो ।
देश दूर है वक्त है थोड़ा, थक न जाए उमर का घोड़ा ॥
मधुर प्रभु का नाम सुमर ले, मोच द्वार को खोलो ॥

भजन न० ४

श्यामा ने जो बजाई थी पिछली बहार मे।
अब तक पड़े हुवे हैं उसीके खुमार म॥
ए वादे सबा कह दीजियो तू जाके श्याम से॥
माला के फूल सूख गए इन्तजार में॥
गर मेरे घर न आएतो राधाके भी न जाए।
हैं लुत्फ जब कि दोनों रहें इन्तजार मे॥
डाला किसी भक्त ने है तुम्हारे गले में हार।
खुशबू ए प्रेम आती है फूलों के हार में॥
उमर ए दराज माग कर लाया था चार दिन।
दो आरजू मे कट गये दो इन्तजार में॥

भजन न० ५

भजो रे मन राधे कृष्ण मुरार।
पार तेरा किसी ने न पाया ऋषी मुनी गए हार॥
पल मे देखे राजा रानी प्रजा के सरदार।
पल मे भीख मिली न मागे, मांगे द्वार ही द्वार॥
बनी बनी में सब कोई साथी कुटुम्ब बधु परवार।
बिगड़ी में कोई बात न पूछे रूठ रहा ससार॥

भजन न० ६

खबर करदो रघुनन्दन को खड़े हैं दर पे दर्शन को।
लख चौरासी स्वाग बनाए नाना कष्ट उठाये॥
जन्म मरण से हो दुखी गिरे चर्ण पर आये।
झुकाये हुवे है गर्दन को ॥ खबर करदो ०॥
नवका पापों से भरी डूब रही मझधार।
इमी कच्छु छनन चली बस एक तुम्हीं आधार॥
झुकाये हुए है गर्दन को ॥ खबर कर दो० ॥

भजन न० ७

मन मोह लिया मेरा हाय सखी मनमोहन मतवालेने।
इस मोहन मतवाले ने, इस सुन्दर नन्द दुलारे ने॥
उस सुन्दर नन्द दुलारे ने, सब कष्ट मिटाये मीराके।
चमकाये भाग सुदामा के,उस दो जगके उजियारे ने॥
भरी सभामें धाया था,सुन टेर अबला की आया था।
द्रौपदीका चीर बढ़ाया था,उस काली कमलिया वालेने॥
मन मोह लिया मेरा हाय सखी———

भजन न० ८

श्याम पिया मोरी रग दे चु दरिया।
रग दे चु दरिया श्यामा रग दे चु दरिया।

विना रंगाये मैं तो जाऊं नहीं श्यामा ।
बीत जाये सारी उमरिया ॥ श्याम पिया०
आप ही रंग दे चाहे मोल मंगा दे ।
प्रेम नगर में लागी रे बजरिया ॥ श्याम पिया०
ऐसी रंग दे रंग नहीं छूटे ।
धोबी धोए चाहे सारी उमरिया ॥ श्याम पिया०
चन्द्र सखी भज बाल कृष्णा छव ।
तेरे ही चर्णों से लागी रे बजरिया ॥ श्याम पिया०

भजन न० ६

श्याम रूपमें दर्शन भक्तोंको दिखला दिया कृष्ण मुरारीने।
इए पल मे जलवा प्रीतिका दिखला दिया कृष्ण मुरारीने ॥
जब गृह ने गजको घेर लिया,घबरा कर तेरा नाम लिया।
झट आकर उसकी टेर सुनी छुड़वा दिया कृष्ण मुरारीने॥
प्रहलादको खम्भ से बाध दिया,तब उसने तेरा नामलिया।
सिंह रूपमे आकर सहायताकी छुडवादिया कृष्ण मुरारीने ॥
जब इन्द्र ने ब्रजको घेर,लिया तब उसने तेरा नाम लिया।
रखकर उ गली पर गिरवर को,दिखला दिया गिरधर धारीने॥
श्याम रूपमे दर्शन

भजन नं० ९

कान्हा मुरली वाला अबके सम्भल नगरी आयो जी।
भक्त प्रहलाद ने राम कहा जब नरसी रूप दिखायो जी॥
गौतम नार अहिल्या तारी राम रूप दिखलायो जी।
द्रोपदि जब दुष्टों ने घेरी सभा मे चीर बढायो जी॥
महाभारत का युद्ध हुवा जब गीता ज्ञान सुनायो जी।
इन्द्रने कोप किया जब भारी नख पर गिरवर उठायो जी॥
इस कलियुग मे कल्की बनकर गऊऐं चरावन आयो जी।
भक्त जनों तुम करो कीर्तन घोड़े चढ़ कर आयो जी॥

भजन न० १०

दिल लेलिया है मेरा, ओ नन्द के दुलारे।
पनिया भरन गई थी, जमना नदी किनारे॥
गल बीच फूल माला, लोचन पदम विशाला।
घट में खिला उजाला, तन विपत वसन धारे॥
बन्शी इधर लगाये, मधुरी ध्वनि सुनाये।
अभी गार सुर उलाई, घर काज सब बिसारे॥
कहता है तुझ से आशा, बे दिल यही ए मोहन।
आजा जरा तू मोहन, जमुना नदी किनारे॥

भजन न० १२

मेरा पयाम ले जा, मथुरा को जाने वाले ।
मेरा पयाम ले जा, गोकुल को जाने वाले ॥
चरणों मे सानरे के, मेरा पयाम ले जा ।
कहना मेरी जवानी, दु:ख दर्द की कहानी ॥
मेरा यही सदेशा, मोहन के नाम ले जा ।
ए देवकी के प्यारे, ए नन्द के दुलारे ॥
भारत के आसमा पर, चमके हुए सितारे ।
कहनाकि ए मुरारी, चलती है दिल पै आरी ।
हर दम है बेकरारी, मेरा पयाम ले जा ।
क्या तेरा नाम लेता, गीता का नाम भूले ॥
अमरत हो वात जिसकी, उसका पयाम भूले ।
वो तान फिर सुनादे, वशी बजाने वाले ॥
जमना को जाने वाले, मेरा पयाम लेजा ॥

भजन न० १३

मन मदिर प्रात बसाले, ओ मूरख भोले भाले ।
दिलकी दुनियाँ करले रोशन, अपने घरमें ज्योति जगाले ॥
प्रीत है तेरी रीत पुरानी, बसाले अपने मन म प्रीति ।

प्रीति है तेरी रीति बसाले, अपने मन में प्रीति ।
नफरत एक आजार है प्यारे,दुःख का सारा नाम है प्यारे
आजा असली रूप मे आजा, तू ही प्रेम रूप है प्यारे ।
यह हारा तो सब कुछ हारे, मन के मारे हारे प्यारे ॥
भारत माता है दुखियारी, दुखियारे हैं सब नर नारी ।
तू ही उठाले सुन्दर मुरली, तूही बनजा श्याम बिहारी ॥
तू जागे तो दुनिया जागे, जाग उठे सब प्रेम पुजारी ।
गायें तेरे सब गीत, बसाले अपने मन मे प्रीत

भजन न० १४

ए जग के पालन हारे, मेरी बिगड़ी हुई को बना जाओ ।
मैं तो पाप नगरमे भटकत हूं,मोहि ज्ञानकी राह दिखाजाओ ॥
तुम्ही नाम चैन के सहारे हो, निर्मल जनके रखवारे हो ।
मोरी नैया फसी भवसागर में, आनके पार लगा जाओ ॥
तरसत हैं आंखें दर्शन को,अब धीर नहीं व्याकुल मनको ।
मोहि रूप दिखाकर मनमोहन,मोरे मनकी प्यास बुझाजाओ

भजन न० १५

सुनले प्यारे यह बात मेरी,जप नाम हरी जप नाम हरी ।
टल जायेगी जो बिपता है पड़ी,जप नाम हरी जप नामहरी ॥

सब पाप तेरा धुल जायेगा, संकट से मुक्ति पायेगा।
यह शब्द है वो मित्र प्यारे, वैकुन्ठ की बाट दिखायेगा॥
तीरथ न्हाये क्या हुआ, जो मन मे मैल समाय।
सत्य नाम जाने बिना, कोई न मुक्ती पाय॥
आयेगा तेरे काम यही, जप नाम हरी जप नाम हरी॥

भजन नं० १६

हाथ बाधे मै खड़ा मोहन मन्दिर के सामने।
तुम रहो प्यारे कृष्णा मेरी नजर के सामने॥
प्रेम राधा से किया वह प्रेम मुझको दो बता।
फिर जपूंगा प्रेम से माला हरि के सामने॥
मोह तीनो लोक तुमने बासुरी की तान से।
रद हुने दुनियाके स्वर,अब तेरे स्वरके सामने॥
काली दहमे आप मोहन कूदे थे खातिर गेंद की।
नाग काला नाथ कर लौटे उमर के सामने॥
रात दिन करते भजन गुलजो दर्शन के लिये।
सावली सूरत दिखा दो ध्यान करके सामने॥

भजन नं १७

मैं हरि गुण गावत नाचूंगी।

ज्ञान ध्यनि की, गठरी बनाकर हरि हर संग खेलूंगी ॥
मैं तो हरि गुण गावत नाचूंगी ॥
अपने महल मे बैठ२ कर भगवत गीता नाचूंगी ।
मैं तो हरी गुण गावत नाचूंगी ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर प्रतिम सुधारस चाखूंगी ।
मैं तो हरी गुण गावत नाचूंगी ॥ /

भजन न० १८

हरी नाम रतन धन पायो ।
हरी नाम रतन धन पायो ॥
खोटे को चोर न लूटे ।
दिन दिन होत सवायो ॥ (हरी नाम०)
अग्नि न जाले नीर न डोवे ।
धरती धरे न समायो ॥ (हरी नाम०)
नाम की नाँव भजन की बतिया ।
भव सागर से तरलो भईया ॥ हरी नाम
मीरा के प्रभु गिर धर नागर ।
चरण कमल चित लायो ॥ (हरी नाम०)

भजन न० १९

बसो मेरी आंखों मे नन्दलाल ।

मानली मूरत मोहनी मूरत ।
नैन वने विशाल । वसे मेरी आखों म० ॥
मोर मुकट सिर कानन कुण्डल ।
माथे तिलक शोभे भाल ॥ वसे मोरे आखों मे०
अधुर सुधा रस मुरली बाजती और वैजयन्ती माल ।
मोरा प्रभु मन तन सुख दायी भक्त वत्सल गोपाल ॥
(वसे मोरे आखों में०॥

भजन न० २०

एक वार जो प्रेमसे गगा मे स्नान किया तो पार हुआ ।
सच कहते है कुल दुनिया पर भागीरथ का उपकार हुआ ॥
दु:ख दर्द मिटे सुख चैन मिले मा गगा तारन हारी है ।
जन हर २ गगे मुखसे कहा दिलसे सब दूर विकार हुआ ॥
इस गगा अमृत धारी म सब ब्राह्मण अछूत बराबर है ।
यह प्रेम की धारा बहती है प्रेमी का बेड़ा पार हुआ ॥
छल कपटको दिलसे दूर करो तब सुफल यह तीरथ तेरा है ।
वरना सब धन व्यर्थ हुआ वहा जाना भी बेकार हुआ ।
कलियुग के पापी बन्दों को और सब अक्ल के अन्धोंको ।
भव सागर पार उतारन को गगा का अवतार हुआ ॥

भजन न० २१

म ध्वनि लागी गोपाल ध्वनि लागी,
अब ना मिटेगी राम धुन लागी ।
ुरु को लागी प्रहलाद जी को लागी,
अब ना मिटेगी राम ध्वन लागी ॥
कुबजा को लागी अहिल्या को लागी । अब ना मिटेगी०
द्रोपदी को लागी नरसिंह को लागी ॥ अब ना मिटेगी०
मीरा को लागी शिवरी को लागी । अब ना मिटेगी०
ग्वालों को लागी सखियों को लागी ॥ अब ना मिटेगी०
मोरध्वजको लागी गिधराज को लागी । अब ना मिटेगी०
नन्ने को लागी नूजी को लागी ॥ अब ना मिटेगी०

भजन नं० २२

आवो मन मोहन आवो मन मोहन ।
आवो सखी सब मिलकर आवो रूठे हुवे मोहनको मनाओ
हस २ कर यू कहते ही जाओ । आवो मन मोहन०
टेर सुनो अब तो गिरधारी ।
भीर पड़ी हम पर अति भारी ॥
हम व्याकुल हैं और दुखियारी ॥ आवो मन मोहन०

अब तो आकर कष्ट निहारो।
निज भक्तन के काज सहारो॥
टूटी नैया नाथ उबारो। आओ मोहन०
भूल गये क्यों प्रीत निभाना।
सपने में भी दर्श दिखाना॥
तुम बिन सून सान जमाना। आओ मन मोहन
प्रेम के प्यारे तुम सावरिया।
तुम बिन सूनी प्रेम नगरिया॥
बीत गई मेरी सारी उमरिया। आओ मन मोहन०

भजन न० २३

आया द्वार तुम्हारे रामा आया द्वार तुम्हारे।
जब जब भीड़ पड़ी भगतन पर तुमने ही कष्ट निवार
रामा तुमने ही कष्ट निवारे। आया द्वार०
मन मन्दिर में छाया अन्धेरा दीपक कौन उजारे॥
रामा दीपक कौन उजारे। आया द्वार०
नैया मोरी बीच भवर में कौन यह पार उतारे॥
रामा तू ही पार उतारे। आया द्वार०

भजनन ०२४

पुजारी प्रेम से है ससार ।
रैन अन्धेरी बादल छावे ॥
बिजली चमके दिल घबराये ।
अब तो खोलो द्वार—पुजारी प्रेम से ।
छोड दे मिट्टी का यह मन्दिर ।
आजा मेरे मन के अन्दर ॥
करले सोच विचार—पुजारी प्रेम से ॥
प्रेम की नैया प्रेम खिवैया ।
प्रेम से बेडा पार—पुजारी प्रेम से० ॥
थाली म कुछ फूल सजा कर ।
प्रेम की मन म ज्योति जगाकर ॥
तन मन दे मन वार—पुजारी प्रेम से०

भजन न० २५

सुन री सखी क्यों श्याम जगी जगा कर चल दिये ।
सोई पडी थी नींद मे मुझको जगा कर चल दिये ॥
मैन कहा ठहरो जरा क्यों दिल चुराकर चल दिये ।
मुह से तो बोले नहीं मुस्करा कर चल दिये ॥

अब तो आकर कष्ट निहारो ।
निज भक्तन के काज सहारो ॥
टूटी नैया नाथ उबारो । आवो मोहन०
भूल गये क्यों प्रीत निभाना ।
सपने मे भी दर्श दिखाना ॥
तुम बिन सून सान जमाना । आवो मन मोहन
प्रेम के प्यारे तुम सांवरिया ।
तुम बिन सूनी प्रेम नगरिया ॥
बीत गई मेरी सारी उमरिया । आवो मन मोहन

भजन न०२३

आया द्वार तुम्हारे रामा आया द्वार तुम्हारे,
जब जब भीड़ पड़ी भगतन पर तुमने ही कष्ट निवा
रामा तुमने ही कष्ट निवारे । आया द्वार०
मन मन्दिर में छाया अन्धेरा दीपक कौन उजारे ॥
रामा दीपक कौन उजारे । आया द्वार०
नैया मोरी बीच भवर म कौन यह पार उवारे ॥
रामा तू ही पार उवारे । आया द्वार०

भजनन ०२४

पुजारी प्रेम से है ससार ।
रैन अन्धेरी बादल छाये ॥
बिजली चमके दिल घबराये ।
अब तो खोलो द्वार—पुजारी प्रेम से ।
छोड दे मिट्टी का यह मन्दिर ।
आजा मेरे मन के अन्दर ॥
करले सोच बिचार—पुजारी प्रेम से ॥
प्रेम की नैया प्रेम खिवैया ।
प्रेम से बेडा पार—पुजारी प्रेम से० ॥
थाली म कुछ फूल सजा कर ।
प्रेम की मन मे ज्योति जगाकर ॥
तन मन दे मन वार—पुजारी प्रेम से०

भजन न० २५

सुन री सखी क्यों श्याम बशी बजा कर चल दिये ।
मोद पडी थी नींद मे मुझको जगा कर चल दिये ॥
मैंने कहा ठहरो ज़रा क्यों दिल चुराकर चल दिये ।
मुह से तो बोले नहीं मुस्करा कर चल दिये ॥

किस से कहूं, तू ही वता मैं दर्दे गम का माजरा
उनको तो सूझी हसी मुझको रुला कर चल दिये
क्या खता मुझ से हुई, जो चल दिये मुह फेर क
मैं पकडती रह गई दामन छुडा कर चल दिये
लौ लग रही है श्याम से दर्शन को दिल वचैन है
मन मे मेरे प्रेम का दीपक जला कर चल दिये

भजन न०२६

यह हैरत है कि मन मोहन तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं
धरू क्या भेष कुब्जा का या राधा वन के आऊं मैं
करू किस भांति से पूजा तुम्हारे पाक चरणों की
बना कर फूल दिल को प्रेम श्रद्धा से चढ़ाऊं मैं
तुम्हारे दर की चौखट पर यह माथा अपना घिसर कर
निराला जन यह पूजा के लिये चन्दन चढ़ाऊं मैं
मुझे वरदान दो ससार मे तुम अपनी भक्ति का
तुम्हारी सांवरी सूरत के आगे सर झुकाऊं मैं
यह हैरत है कि मन मोहन तुम्हें क्यों कर—

भजन न० २७

मेरा मन मेरा मन यही कहता है सीने म।

ओ मुरारी तू आजा रसीने मे ।
मेरे मन की लगी को बुझा दो प्रभु,
वो छवि है निराली दिखा दो प्रभु,
बिन दर्श मजा नहीं जीने मे ।
मैं तो कृष्णा ही कृष्णा पुकारा करूं,
तेरे नाम पे तन मन वारा करूं ।
मै तो खुश हूं, इस ही करीने मे ॥
मुझे झाँकी निराली दिखाया करो ।
तुम ही प्रेम का प्याला पिलाया करो,
कुछ मजा ही नहीं और पीने म ।
कब गउयें आकर चराओगे तुम,
कब वेद का डंका बजाओगे तुम ।
कौन सम्वत तिथि महीने म ॥
तेरे ध्यान म, मैं दिन रैन रहा,
तेरे दर्श बिना बेचैन रहा,
मै तो मौत के डूबा पसीने में ।

भजन न० २६

मन मूरख क्यों दिवाना है, आन रहे कब जाना है ।
फूल खिला जो आज चमनमें, कल उसको मुरझाना है ॥मन

धूप खिली जो आज तो कल को घन अंधियारा छाना है।
मन मूरख क्यों दीवाना है—
जिसको हम चाहें कुछ ठहरे चला उसे हा जाना है। मन

भजन न० ३०

दरश दिखलाये जा कल्कि कमल वाले।
प्यारे मोहन मदन मुरारी,
दीना नाथ दीन हितकारी।
सोये भक्तों को जगाये जा श्यामा मुरली वाले॥
हाय प्रगट हरि सतयुग करदो,
कष्ट छांट दुष्टन् को कर दो।
खड्ग चलाय दो रावण मारन हारे दरश—
जैसे युग युग विपत उभारे,
तैसे ही हरि कष्ट उभारो।
बिगड़ी बनाय दो पद्मावती के प्यारे॥ दरश—
करदो आशा पूरी मन की,
राखो लाज हरि अपने जन की।
छवि दिखलाय दो कान्हा मुरली वाले, दरश—
सेवक नृसिंहदास तिवारी,
आशा करता दरश की भारी।
धीर बंधाय दो काली मगती वाले॥

ध्वनि (१)

तुम कृष्णा के गुण गाओ,
तुम मोहन के गुण गाओ ।
कृष्ण नाम की माला लेकर,
घर घर में फिर आओ । कृष्णा—
कृष्ण नाम का झंडा लेकर,
गली-गली लहराओ । कृष्णा—
कृष्ण नाम का अमृत लेकर,
प्यासों को पिलवाओ । कृष्णा—
एक बार सब मिलकर बोलो,
जल्दी कृष्णा आवो । कृष्णा—
भक्त जनो तुम करो कीर्त्तन,
मोहन से मिल जाओ । कृष्णा—

ध्वनि (२)

तू टेढ़ो तेरी टेढ़ी रे मुरलिया,
कीट तेरा टेढ़ो मुकुट तेरा टेढ़ो ।
टेढ़ी रे तेरे मुख की मुरलिया,
गोकुल तेरी टेढ़ी, वृन्दावन तेरा टेढ़ो ।

टेढ़ी रे तेरी मथुरा नगरिया,
ग्वाल तेरे टेढ़े सखिया तेरी टेढ़ी।
टेढ़ी रे तेरी यशोदा डुकरिया,/

ध्वनि (३)

मुरली वाले श्याम तू मुरली मधुर बजाया कर,
बैठ कदम की डाल पर मुरली मधुर सुनायाकर।
तान से भई तान से सुने जमाना ध्यान से,
जमना तट आनकर अद्‌भुत रास रचाया कर।
नाम तेरा सुख चैन है दाम तेरा बेचैन है,
जमुनातट आनकर कभी तो दरश दिखायाकर।

ध्वनि (४)

सियाराम ३ भजले प्यारे
राधेश्याम ३ भजले प्यारे
तू मन-मन्दिर म शिव शंकर का ध्यान धरले प्
सियाराम ३ भजले प्यारे
तू मन-मन्दिर मे श्याम सुन्दर का ध्यान धरले प्

ध्वनि (५)

शिम्भू जै शिम्भू २ जै शिम्भू कैलाशपती,

जै शकर जै शकर २ जै शकर त्रलोकपती ।
जै गौरा जै गौरा २ जै गौरा जै पार्वती,
जै शिम्भू जै शिम्भू २ जै शिम्भू कैलाशपती ॥

ध्वनि (६)

राधे गोविन्दा राधे गोविन्दा राधे गोविन्दा राधे ।
राधे राधे राधे जै हो राधे राधे राधे ॥

ध्वनि (७)

श्री श्याम सुन्दर मदन मोहन वृन्दावन चन्द ।
जै जै राधे कृष्णा राधे कृष्ण राधे गोविन्द ॥

ध्वनि (८)

राधा वर जै कृष्ण मुरलीधर माधो घनश्याम,
राधा वर जै कुंज बिहारी मुरलीधर माधो घनश्याम ।

ध्वनि (९)

जै मन मोहन कुंज बिहारी गोवरधन घनश्याम ।
तुम हितकारी सकट हारी चीर बढैया श्याम ॥

ध्वनि (१०)

बोल हरी बोल मुकन्द माधव मुकन्द हरी बोल ।
बोल हरी बोल मुकन्द माधव मुकन्द हरी बोल ॥

ध्वनि (११)

हरी के प्रेमी भाईयों हरीनाम बोलो,
हरी नाम का रतन अनमोलो।
राधे राधे कृष्णा बोलो ।
हरी के प्रेमी भाईयों हरीनाम बोलो ॥

ध्वनि (१२)

जैराम हरे जै कृष्ण-हरे,
अब प्रगट हो, कल्की रूप धरे।

ध्वनि (१३)

माधो वन्शी बजायेजा, दिल को मेरे लुभायेजा।
रस भरी तान सुनायेजा, दिल को मेरे लुभायेजा ॥

ध्वनि (१४)

नमो कृष्ण गोपाल माधो मुरारी,
नमो कल्की भगवान् माधो मुरारी।

ध्वनि (१५)

जै रघुनन्दन जै सियाराम।
जानकी वल्लभ सीताराम ॥

ध्वनि (१६)

कब आवोगे नन्दलालजी, कब आवोगे गुपालजी,

लेने को हमारी सुध, सावरे नदलालजी ॥
नईया मोरी बीच भवर मे आन फसी नदलालजी,
इसको पार लगावन को, कब आवोगे नदलालजी ।

ध्वनि (१७)

गोपिये प्रिये गोपीनाथ, गोपी जन वल्लभ,
गोपिये वल्लभ राधेश्याम, गोपिये वल्लभ राधेश्याम ।

ध्वनि (१८)

तेरी महिमा से होगये, मेरे काम तमाम ।
हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम ॥
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम,
तेरी कृपा से होगये मेरे काम तमाम ॥

ध्वनि (१९)

जै हो मन मोहन राधे मन मोहन,
जै हो मनमोहन जै हो मनमोहन जै हो मनमो।
राधे मन मोहन जै हो मन मोहन ॥

ध्वनि (२०)

गोविन्द गोपाल भजो मन श्री राधे-
श्रीराधे श्रीराधे

श्रीराधे गोपाल भजो मन श्रीराधे ।
आवो आवो कृष्ण मुरारी जाओ भंवर में,
फसी हमारी—पार लगा तत्काल ॥
भजो मन श्रीराधे
वृन्दावन मे रास रचा जा,
जमना तट पर रास रचा जा।
प्रेम रूप गोपाल भजो मन श्रीराधे ॥

भजन न० ३१

छुपा है कहा जाके प्यारा कन्हैया,
दिखा जा तू सूरत हमारा कन्हैया,
कन्हैया कन्हैया कन्हैया कन्हैया ।
बहुत नाम रोशन है तेरा जहा में ॥
गरीबों का है प्यारा कन्हैया ।
कन्हैया कन्हैया कन्हैया कन्हैया,
जुदाई म तेरी न है चैन दिल को ॥
फिर आना फिर आना दुलारा कन्हैया, कन्हैया० ॥
बुरा हाल है हम भारत का इस दम ।
कहाँ फिर हो पैदा हमारा कन्हैया ॥ कन्हैया—

भजन न० ३२

दीन दुखिया अनाथों का जो नाथ है।
सुख मे और दुख मे सदा साथ है ॥
कौन है कृष्ण है द्वार का नाथ है।
लौ लगा उनके चरणो से माया को तन ॥
कृष्ण भज कृष्ण भज कृष्ण भज कृष्ण भज।
नाथ गोकुल में गौयें रचाते रहे ॥
रास जमुना किनारे चसते रहे। रचाते रहे
नित नई अपनी लीला दिखाते रहे।
तुमने तारी अहिल्या उभारा था गज ॥कृष्ण भज ४
मेरे जीवन की घनश्याम जन श्याम हो।
ध्यान मे उस घड़ी बस तेरे ध्यान हो ॥
उस दम मेरी ज़बा पर तेरा नाम हो।
मरते-मरते कहूँ कृष्ण भज कृष्ण भज ॥ कृष्ण भज

(भगत की पुकार) जमन न० ३३

कब मेरी हसरत निकाली जायगी-
या मेरी आशा यों ही रह ज यगी ॥
तेरे दर्शन की हैं आखें मुन्तजिर।

कब तेरी आखिर सवारी आयगी ॥
तेरे दर पर अब लगाई है सदा ।
क्या ये मेरी झोली खाली जायगी ॥
कब तेरी होगी दया हम पर बता ।
बिन दरश यह आंख पथरा जायगी ॥
ऐ मोहन अब कष्ट होंगे दूर यों ।
हिन्द में जब देह धारी जायगी ॥

जवाब कृष्ण का

यह है भगतों की परीक्षा का समय ।
जाच और पड़ताल भी की जायगी ॥
अगर तेरा मन साफ है तो याद रख-
आरजू हरगिज न खाली जायगी ॥
तेरे कर्मों की सजा मिल जायगी ।
जब वही तेरी निकाली जायगी ॥

भजन नं० ३४

मुद्दतों से कृष्णा ना दर्शन दिखाया आपने ।
इस क़दर बेचैन क्यों भारत बनाया आपने ॥
वरना गुवाल था जब कि कोप इन्द्र ने किया ।

गोरधन नख पै लिया ब्रज को बचाया आपने ॥
कुब्जरी थी कंस की दासी ध्यान जब तेरा किया ।
बल निकाला रूप झट सुन्दर बनाया आपने ॥
कूदे झट तुम काली दह मे गैंद लेने के लिये ।
नाथा छिन मे नाग काली भय न खाया आपने ॥
नारियों को जल के अन्दर नग्न न्हाना पाप है।
बस इसी से वस्त्र सखियों का छिपाया आपने ॥
द्रोपदी के नग्न करने को दुशाशन ने गहा ।
टेर सुनकर चीर को उसके बढाया आपने ॥
महाभारत मे शिथिलता देखी अर्जुन की जभी ।
करके चेतन ज्ञान गीता का सुनाया आपन ॥
भक्त वत्सल आपने भक्तों के सब कारज करें ।
सत मोरध्वज का जाके आजमाया आपने ॥
गैंदा पन्ना और किशन तेरे ध्यानमे रहते मगन ।
लालमन कहे मान भक्तों का बढ़ाया आपने ॥

भजन न० ३५

आजा नन्द दुलारे, अब तो आजा नन्द दुलारे ।
एक दिन भीड पडी द्रोपदी पर, सभा म तोहे पुकारे ॥ आजा०

कब तेरी आखिर सवारी आयगी ॥
तेरे दर पर अब लगाई है सदा ।
क्या ये मेरी झोली खाली जायगी ।
कब तेरी होगी दया हम पर बता ।
बिन दरश यह आंख पथरा जायगी ॥
ऐ मोहन अब कष्ट होंगे दूर यों ।
हिन्द में जब देह धारी जायगी ॥

जवाब कृष्ण का

यह है भगतों की परीक्षा का समय ।
जाच और पडताल भी की जायगी ॥
अगर तेरा मन साफ है तो याद रख-
आरजू हरगिज न खाली जायगी ॥
तेरे कर्मो की सजा मिल जायगी ।
जब यही तेरी निकाली जायगी ॥

भजन न० ३४

मुद्दतों से कृष्णा ना दर्शन दिखाया आपने ।
इस कदर बेचैन क्या भारत बनाया आपने ॥
बरा मुसल धार जब कि कोप इन्द्र ने किया ।

गोरधन नख पै लिया वृज को बचाया आपने ॥
कुबरी थी कंस की दासी ध्यान जब तेरा किया ।
बल निकाला रूप झट सुन्दर बनाया आपने ॥
कूदे झट तुम काली दह मे गेंद लेने के लिये ।
नाथा छिन मे नाग काली भय न खाया आपने ॥
नारियों को जल के अन्दर नग्न न्हाना पाप है।
बस इसी से वस्त्र सखियों का छिपाया आपने ॥
द्रोपदी के नग्न करने को दुशाशन ने गहा ।
टेर सुनकर चीर को उसके बढ़ाया आपने ॥
महाभारत में शिथिलता देखी अर्जुन की जभी ।
करके चेतन ज्ञान गीता का सुनाया आपन ॥
भक्त वत्सल आपने भक्तों के सब कारज करे ।
सत मोरध्वज का जाके आजमाया आपने ॥
गेंदा पन्ना और किशन तेरे ध्यानमें रहते मगन ।
लालमन कहे मान भक्तों का बढ़ाया आपने ॥

भजन न० ३५

आजा नन्द दुलारे, अब तो आजा नन्द दुलारे ।
एक दिन भीड़ पड़ी द्रोपदी पर, सभा म तोहे पुकारे ॥ आजा०

गज और ग्राह लड़े जल भीतर, तुम गजराज उबारे। आज्ञा०
महाभारत का युद्ध हुआ जब, चक्र सुदर्शन धारे॥ आज्ञा०
कंस ने जुल्म किया जब भारी, केश पकड़ कर मारे। आज्ञा०
महिमा तुम्हारी कोई न जाने, ऋषि मुनि सब हारे॥ आज्ञा०
'प्रेम' जगत से तोड़के नाता, आया द्वार तुम्हारे। आज्ञा०

भजन न ३६

भज राम सीता राम सीता राम सीता राम।
गोविंद सीता राम सीता राम सीता राम॥
आलम मे राम लक्ष्मण जलवा दिखा रहे हैं।
कुदरत के सारे नकशे आंखों म छा रहे हैं॥ भज राम०
रघु बल दिखाया ऐसा तोडा धनुष सभा में।
राजा जनक खुशी से सर को झुका रहे हैं॥ भज राम०
सीता को व्याह करके रघुनाथ घर को आये।
खुश होके सब अवध मे खुशियां मना रहे हैं॥ भज राम०
रथ पर बिठाकर रावण सीता को लेगया है।
जगल से राम लक्ष्मण लका को जा रहे हैं॥ भज राम०
रावण को मार कर के सीता को दी रिहाई।
लका को फतह करके रघुनाथ आ रहे हैं॥ भज राम०

॥ इति शुभम ॥

गज और ग्राह लड़े जल भीतर, तुम गजराज उभारे। आजा०
महाभारत का युद्ध हुवा जब, चक्र सुदर्शन धारे॥ आजा०
कंस ने जुल्म किया जब भारी, केश पकड़ कर मारे। आजा०
महिमा तुम्हारी कोई न जाने, ऋषि मुनि सब हारे॥ आजा०
'प्रेम' जगत से तोड़के नाता, आया द्वार तुम्हारे। आजा०

भजन नं ३६

भज राम सीता राम सीता राम सीता राम।
गोविंद सीता राम सीता राम सीता राम॥
आलम में राम लच्मण जलवा दिखा रहे हैं।
क़ुदरत के सारे नकशे आखों में छा रहे हैं॥ भज राम०
रघु बल दिखाया ऐसा तोड़ा धनुष सभा में।
राजा जनक खुशी से सर को झुका रहे हैं॥ भज राम०
सीता को व्याह करके रघुनाथ घर को आये।
खुश होके सब अवध में खुशियां मना रहे हैं॥ भज राम०
रथ पर बिठाकर रावण सीता को लेगया है।
जंगल से राम लच्मण लंका को जा रहे हैं॥ भज राम०
रावण को मार कर के सीता को दी रिहाई।
लंका को फतह करके रघुनाथ आ रहे हैं॥ भज राम०

॥ इति शुभम ॥

भजनों की पुस्तकें

यों तो पाठक गण आपने बहुत से भजनों की पुस्तकें पढ़ी ही होंगीं परन्तु क्या आपने कभी इस पर तानिक विचार किया है कि ऐसी वैसी अशलील भजनों की पुस्तक के बजाय अच्छे २ धार्मिक भजनों की पुस्तकें ही पढनी चाहियें। गन्दे २ गानों की पुस्तकें पढ़ कर अपने चरित्र को दूषित करना है। अगर आप सचरित्र मनुष्य बनना चाहते हो तो सदैव श्रेष्ठ पुस्तकों का ही अवलम्बन करो कभी गन्दी किताब मत पढो। इन पुस्तकों में से जो पसन्द हों वह हमको आर्डर देकर तलब करें।

भजन हरिकृष्ण कीर्तन	=)	भ० महिलामन मोहनी भजनमाला	॥)
,, कीर्तन भजनावली	=)	,, चैनसुख भजनावली	=)
,, स्त्रीगायन पुष्पाजली	=)	,, कल्कि अवतार	=)
,, राष्ट्रीय भजन	=)	,, वाल्मीक भजनावली	=)
,, भक्ति सागर	=)	,, उपदेशक भजनावली	=)
,, ज्ञानवती मैना	=)	,, कृष्णपुष्पाजली	–)
,, फुरकती मैना	–)	,, आरती संग्रह	–)
,, शब्द वेदांत शकरदास	।)	,, लाडो देवी	=)
,, कृष्ण कीर्तन	=)	,, ब्रह्मज्ञान चिन्तामणि	≡)
,, गुरु चेला सम्वाद	≡)	,, ज्ञान पकड	≡)

प्रकाशक व हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता —

गोयल ब्रादर्स, थोक पुस्तकालय,

दरीबा कलां, देहली।

असली

नरसी का भात

बतर्ज़ राधेश्याम

पाठक गण ! भारतवर्ष मे शायद ही कोई ऐसा अभागा हि
होगा जो राधेश्याम की तर्ज को पसन्द न करता हो। इस तर्ज ने
न अपना ऐसा प्रभाव किया कि जो इस तर्ज के सामने और स
तर्जें फीकी पड़ गई। रामायण जैसी सर्व श्रेष्ठ धार्मिक पुस्त
इसी तर्ज में घर घर व कथाओं के ढंग पर पढ़ी जाती है। पर
सर्वदा एक ही पुस्तक के पढते रहने से रुचि कम होने लगती
अत कभी २ रामायण के अलावा और भी नये २ जीवन चरि
इसी तर्ज में पढ़ने आवश्यक हैं।

सबसे श्रेष्ठ नरसीभक्त का जीवन चरित्र हमारे यहां मौ
है। जिसका मूल्य केवल ।) है एक बार पढ़ना शुरू कर देने
बिना खत्म किये हुए नहीं छोड़ेंगे। भक्ती रस का यह ही अ
नमूना है क्योंकर ऐसे समय में जबकि मनुष्य धीरे २ नास्ति
होते जा रहे हैं अर्थात इस विश्व के किसी एक निमाता होने
भी सन्देह करते हैं।

पुस्तक मिलने का पता —

गोयल ब्रादर्स, थोक पुस्तकालय,

दरीबा कलाँ, देहली।

भारतके तीर्थ व नगर

(सचित्र)

लेखक व प्रकाशक—
सीताराम गुप्त 'विनोद' डी० काम०,
कबीरचौरा, बनारस सिटी।

प्रथम बार २०००]   सन् १९३५   [मूल्य ||=)

भूमिका

हिन्दी भाषामें यद्यपि कई इस प्रकारकी पुस्तकें मैंने देखीं परन्तु उनको आज कलके समयानुसार नहीं पाया। श्री साधु सिंहका 'भारत भ्रमण' अब बहुत पुराना हो गया है इसके अतिरिक्त वह इतना बड़ा तथा इतने विस्तारसे लिखा गया है कि यात्रियोंके लिये सुविधाजनक नहीं है। 'भारतके तीर्थस्थान' नामक पुस्तकमें भी भारतके समस्त तीर्थों और नगरोंका वर्णन नहीं है इसके अतिरिक्त उसका आकार इस प्रकारका है कि सरलतासे वह कोटकी जेबमें नहीं आ सकती। 'चारों धामकी यात्रा' पुस्तकमें भी सब नगरों तथा तीर्थोंका वर्णन नहीं है इनके अतिरिक्त किसी भी पुस्तकमें भारतके रेलोंका नक्शा नहीं है।

मैंने इन त्रुटियोंको दूर करनेकी चेष्टा की है और प्राय समस्त भारतमें भ्रमण करनेके कारण मुझको इन सब स्थानोंका पूरा ज्ञान है। मैंने यात्रियोंकी सुविधाके लिये भारतका एक नक्शा भी दिया है। चूँकि हमारी दूसरी तीर्थ-यात्रा-रेलगाड़ी शीघ्र ही चलनेवाली थी अतएव पुस्तकके छपानेमें शीघ्रता की गई है जिसके कारण कुछ त्रुटियाँ रह गई होंगी। इस पुस्तकको विशेषतया तीर्थयात्रा करनेवाले यात्रियोंके हेतु छपवाया गया है और आशा की जाती है कि उनकी आवश्यकता इससे पूरी हो जावेगी।

पाठकोंसे निवेदन है कि इस पुस्तककी त्रुटियोंको क्षमा करें तथा अपनी बहुमूल्य सम्मति प्रदान करके कृतार्थ करें ताकि उनको दूसरे संस्करणमें स्थान दिया जावे।

सीताराम गुप्त, 'विनोद'

सूची

भारतके तीर्थ व नगर

पेशावर

यह नगर सरहदी सूबा (North Western Frontier Province) की राजधानी है। यहाँपर इस प्रान्तके छोटे लाट जाड़ेमें रहा करते हैं तथा अफगानिस्तानके भी राजदूत यहाँ रहा करते है। यहाँपर एक बड़ी भारी छावनी है जिसमें अधिकांश अंगरेजी फौजें रहा करती है। छावनी चारों तरफसे कटीली तारोंकी दीवारसे घिरी हुई है और स्थान स्थानपर फाटक बने हुए है जोकि आठ बजे रातको बन्द हो जाते हैं।

शहरका बाजार, कम्पनी बाग तथा चिड़ियाखाना और लाट साहबकी कोठी देखने योग्य हैं।

कराची

यह नगर सिन्धका प्रसिद्ध बन्दरगाह है। कुछ वर्ष पहले यह बिल्कुल मामूली बन्दर था, परन्तु जबसे दिल्ली भारतकी राजधानी बनी है, इस नगरकी तिजारती विशेषता बढ़ गई है। संसारमें तथा पंजाब द्वारा दिल्ली आनेवाला सब माल इसी बन्दर द्वारा आता है। इसके अतिरिक्त पंजाबका सब गेहूँ तथा

सरसों और तेलहनका चालान इसी नगरसे जहाज़पर चढ़कर जाता है। यह नगर धीरे धीरे बहुत बढ़ गया है और अब तो सिन्ध प्रान्तके अलग हो जानेपर उस प्रान्तकी राजधानी बन जायेगा। यहाँपर विशेषतया जहाजोंके बन्दर देखने योग्य हैं।

श्रीनगर

यह नगर रियासत जम्मू काश्मीरकी गर्मियोंकी राजधानी है और झेलम नदीके दोनों किनारे बसा हुआ है। नगरकी सिविल लाइन तो बहुत साफ है परन्तु अन्य भाग बहुत गन्दे हैं। इस नगरमें प्रायः लोग गर्मियोंमें बाहरसे आकर ठहरा करते हैं। जो लोग अपने स्वास्थ्यके ध्यानसे आते हैं वह लोग तो बहुधा काश्मीरके अन्य स्थानोंमें रहा करते हैं परन्तु जो लोग सैरके विचारसे आते हैं वह बहुधा श्रीनगरमें ही ठहरा करते हैं। यहाँपर यात्रियोंके लिये सनातनधर्म सभा, गुरुद्वारा तथा बद्रिकाश्रममें एक सप्ताह और आर्यसमाजमें तीन दिन तक मुफ्त स्थान मिलता है। इससे अधिक दिन ठहरनेवाले अधिकतर इन्हीं स्थानोंमें ठहरा करते हैं, परन्तु अधिक दिन ठहरनेवाले हाउस बोटोंमें जिनका भिन्न भिन्न किराया है ठहरा करते हैं। हाउस बोट झेलम नदी, नहर अथवा डल झीलमें रहा करती हैं। झेलम नदीपर सात पुल बँधे हुए हैं जिनको यात्री शिकारा द्वारा ३॥ घण्टेमें बड़ी सरलतासे देख सकता है। [illegible] लगभग आदमी पूरे नगरकी सैर कर लेता है परन्तु शिकारा में झेलम नदीमें सातों पुलतक जाकर नहर द्वारा लौटना चाहिये।

देखने योग्य स्थान अमीरा कदल बाज़ार, सरकारी रेशम का कारखाना, रेज़ीडेन्सी, चनार बाग, डल झील महाराज

का महल, श्री शकराचार्य्य मन्दिर, जामा मसजिद, रघुनाथ-मन्दिर, चश्मा शाही, निशात बाग़, शालामार बाग़, हरवान्का बन्द। शालामार बाग़ इत्यादिको रविवारके दिन देखना चाहिए क्योंकि इसी दिन सारे फव्वारे खुले रहते हैं और लोगोंकी भीड़ होती है।

काश्मीरकी दस्तकारी, रेशमी कपड़े, शाल और ऊनी कपड़े, लकड़ीके नक्क़ाशीका काम, पेपर मेशी (काग़ज़ी काम) केसर व शहद। यात्रियोंको काश्मीरियोंमे बहुत सावधान रहना चाहिए। वह भाव मोल तोल बहुत अधिक करते हे। कभी कभी तो एकका चौगुना भी हॉकते हैं। वस्तुओंका मूल्य लगाते समय अपने यहाँका भी मूल्यका ध्यान रखना चाहिए और यह भी ध्यान रखना चाहिये कि आपको असली चीज़ नहीं मिल रही हे।

गुलमर्ग

यह स्थान श्रीनगरसे २७ मीलकी दूरीपर, और समुद्रकी सतहसे ८७०० फीटकी उँचाईपर हे। लोग श्रीनगरसे लारियों-पर टगमर्ग तक जाते हैं उसके पश्चात् पैदल या घोड़ोंपर ३॥ मीलकी चढाई चढ़ते हैं। गुलमर्गमें अधिकतर अंग्रेज़ ही रहा करते हैं और उनके लिये होटल तथा क्लब भी है। हिन्दुस्तानियोंके लिये भी एक होटल हे, परन्तु हिन्दुस्तानियोंको यहाँ अधिक दिनों तक अच्छा नहीं लगता। गुल्मर्गसे ३ मीलकी चढ़ाईपर एक स्थान खिलेनमर्ग हे जहाँपर यात्रियोंको जमी हुई बर्फ मिलती हे।

पहलगाँव

यह स्थान श्रीनगरसे ६४ मीलकी दूरीपर है और समुद्रतलसे ७००० फीट ऊँचा है। यहाँपर भी सर्दी काफ़ी रहती है परन्तु गुलमर्ग जैसी नहीं। यह पहाड़की घाटीमें बसा हुआ सुन्दर स्थान है। यहाँपर अंग्रेज़ तथा हिन्दुस्तानी लोग ज़्यादा अधिक आते हैं तम्बुओंको किरायापर लेकर एक-दो मास तक स्वास्थ्यके ध्यानसे रहा करते हैं। यहाँका जलवायु अति ही निर्मल तथा स्वास्थ्यकर है। यहाँ पर अंग्रेज़ी होटलके अतिरिक्त कई हिन्दू होटल भी हैं। यहाँके समीप ही कई सैर करने योग्य स्थान हैं। अमरनाथकी भी यात्रा यहींसे आरम्भ होती है। लोग लारियोंमें यहाँ तक आते हैं इसके पश्चात् पैदल या घोड़ों पर जाते हैं।

अमरनाथ

यह स्थान पहलगावसे प्रायः २७ मीलकी दूरी पर है और यहाँ पर सदा बर्फ जमी रहती है। यहाँ पर शिवजीका मंदिर है जो कि श्रावणकी पूर्णिमाको खुला करता है। लोग प्रायः तीन दिनमें जाते हैं। पहले तो रियासतकी ओरसे कोई प्रबंध न रहता था परन्तु एक वर्ष बर्फ़की ज़बरदस्त वर्षा हुई जिसके कारण बहुतसे यात्रियोंकी मृत्यु हो गई तबसे काश्मीर सरकारकी ओरसे रास्तेमें स्थान स्थान पर हस्पताल रहते हैं। यात्रीगण अमरनाथकी गुफामें जाते हैं उसी समय दर्शन करके लौट आते हैं यात्रियोंमें कोई वहाँ पर टिकता नहीं। यहाँका दृश्य मनोहर ही नहीं भयानक है और सर्दी बड़ी कड़

पड़ती है। रास्तेमें **शेषनाग** और **पंचतारनी** आदि मिलते हैं। रास्ता बड़ा ही मनोरम है।
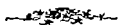
वैष्णव देवी

वैष्णव देवीका मंदिर जम्मूसे ३८ मीलकी दूरी पर है। यात्रीगण जम्मूसे लारी पर सवार होकर **कटरा** जो कि २९ मीलकी दूरपरी है जाते हैं और वहांसे वैष्णव देवीकी यात्रा पैदल आरंभ होती है। बहुतसे यात्री तो जम्मूसे ही पैदल पहाड़ी रास्तेसे जाते हैं। इस रास्तेमें रानी तालाव, कोलॉवाला तालाव, टौंडावाली, हनुमानकी ढक्की आदि मिलते हैं।

वैष्णव देवीका मंदिर एक गुफाके भीतर है और यहॉ पर आवादी बिल्कुल नहीं है केवल मेलेके दिनोंमें दुकाने आ जाती हैं। यहाँका मेला दशहरेके नवरात्रसे कार्तिक पूर्णिमा तक होता है और प्राय सदा भीड़ रहती है। चढाईका रास्ता कठिन है परन्तु सदा यत्रियोंके चढनेसे प्राय सीढियॉ सी बन गई हैं।

वैष्णव देवीके मंदिरके रास्तेमें निम्न दर्शन होते हैं (१) कोल कॅघोली (२) देवा माई (३) चरण पादुका (४) आदि कुमारी (५) भैरव यति। इन सब स्थानोंके दर्शन केवल लौटती वार ही किया जाता है चढाईके समय दर्शन नहीं करना चाहिए।

भारतवर्षमें ७ प्रसिद्ध देवियॉ हैं। कहा जाता है कि सातों बहनें थीं। उनके मंदिर निम्न स्थानोंमें हैं (१) कामाक्षा देवी कामरूप (आसाम) (२) ज्वालादेवी व (३) काङ्गड़ा देवी, काङ्गड़ा जिला (पंजाब) (४) चंडी देवी-हरिद्वार (५) नैना देवी-हरिद्वार (६) मन्सा देवी-अम्बाला (७) वैष्णव देवी-काश्मीर।

नोट—काश्मीरमें इन स्थानोंके अतिरिक्त अन्य बहुतसे स्थान हैं जिनका पूरा वर्णन कश्मीर गाइड (यह पुस्तक हमारे यहाँ १) में मिलती है। पुस्तक अंग्रेज़ीमें है) में विस्तारपूर्वक दिया हुआ है।

रावलपिण्डी

यह नगर रावलपिण्डी कमिश्नरीका केन्द्र है। यहाँपर भी सरकारी बड़ी भारी छावनी है जिसमें बहुत सी हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेज़ी फौजें रहती हैं। गर्मियोंके दिनोंमें काश्मीर जाने वालोंकी काफी भीड़ रहा करती है। श्रीनगरके यात्री बहुधा यहाँसे लॉरी पर सवार होकर श्रीनगर जाते हैं।

लाहौर

पंजाबकी राजधानी लाहौर ऐतिहासिक तथा बड़ा प्राचीन नगर है। लोगोंका कहना है कि लाहौरका पहला नाम लवपुर था और इस नगरको भगवान् रामचन्द्रके पुत्र महाराज लवने बसाया था। ऐतिहासिक दृष्टिसे भी लाहौरका बड़ा ऊँचा दर्जा है। शहरके दो भाग हैं। एकतो पुराना और दूसरा नया। पुराने शहरके चारों तरफ पहले खाईं थी जो कि पाट दी गयी है और इसमें म्युनिसिपल बाग है। यह शहर के चारों ओर होनेसे बड़ा खुशनुमा मालूम पड़ता है। पुराने शहरमें कई फाटक हैं जो कि अब तक शाहआलमी, लाहौरी, मोरी, भाटी वगैरह आदिक नामसे प्रसिद्ध हैं।

लाहौरी दरवाज़ेके सामने एक प्रसिद्ध सड़क अनारकली बाज़ार है। यह बड़ा ही प्रसिद्ध बाज़ार है जहाँपर हर प्रकारका

चीज़ें मिल सकती हैं। यहाँकी शोभा देखने ही योग्य है। इस बाजारका नाम अनारकली नामकी लौंडीके नामपर पड़ा था। अनारकलीपर अकबर पुत्र जहाँगीर जो कि उस समय शाहजादा था आशिक हो गया था और शादी करना चाहता था। अकबरने इस बातको पसन्द नहीं किया अतएव इसको जीतेजी दफना दिया था। अभी तक लाहोरमें अनारकलीकी क़ब्र मौजूद है।

यहाँपर मेडिकल कालेज, गवर्नमेंट कालेज, डी० ए० वी० कालेज, सनातन धर्म कालेज, दयालसिंह कालेज और इस्लामिया कालेज है और अनेकों स्कूल आदि हैं।

देखने योग्य स्थान—शाही मसजिद, किला, राजा रणजीत सिंहकी समाधि, सर गंगारामकी समाधि, शाहदरा, शालामार बाग़, मालरोड, कम्पनी बाग़, अनारकली, जादूघर, चिड़ियाख़ाना, कौन्सिल चैम्बर, लाट साहबकी कोठी, आदि।

अमृतसर

इस नगरका नाम अमृतसर (अमृत तालाब) के नाम पर पड़ा। यहाँपर सिख मतका एक बड़ा भारी तालाब है जिसमें प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर है। कहा जाता है कि प्राचीन समयमें एक कोढ़ीने इस तालाबमें स्नान किया था जिसके कारण उसका कोढ़ रोग जाता रहा। तबसे यह तालाब प्रसिद्ध है। राजा रणजीत सिंहने यह स्वर्ण मंदिर बनवाया था। यहाँपर सिखोंका बहुत ज़ोर है। पहले हिन्दू लोग भी इसी मंदिरमें जाते थे और ग्रंथ साहिबकी पूजा करते थे

परन्तु हिन्दुओं और सिखोंमें मतभेद हो जानेपर और सिखों के हिन्दुओंकी मूर्तियोंके तोड़नेपर हिन्दुओंने अपनी सहायता देनी बंद कर दी और दुर्ग्याना मंदिरका निर्माण कराया जिसका स्वयं पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीयजीने अपने हाथोंसे शिलारोपण किया। इस मंदिरकी शोभा दिनोदिन बढ़ती जा रही है। अमृतसरका कोई भी हिन्दू सिखोंके स्वर्ण मंदिरमें नहीं जाता बल्कि सब प्रातःकाल दुर्ग्याना मंदिर जहाँपर कि श्री लक्ष्मीनारायणकी सुन्दर मूर्ति स्थापित है जाते हैं। कहा जाता है कि यह तालाव सीताजीके समयका जब कि यह वनवासके समय आई थीं है।

जलियाँवाला बाग—सन् १९१९ ई० में रोलेट क़ानूनके पास होने पर हिन्दू मुसलमानोंने इसके विरुद्ध प्रदर्शन किया था। वह सभा इसी बागमें हुई थी, इस अवसर पर सरकारकी तरफसे गोली चली थी जिसमें बहुतेरे आदमियोंकी मृत्यु हुई थी और बहुतसे लोग घायल हो गये थे। इसके पश्चात पंजाबके प्रमुख नगरोंमें फौजी क़ानून जारी हो गया था। तभीसे यह बाग प्रसिद्ध हो गया है।

अमृतसरके व्योपारी प्रायः सीधे विलायतसे व्योपार करते हैं। यहाँपर बड़े बड़े व्योपारी रहते हैं। यहाँका हाल बाज़ार, खाल्सा कालेज, दुर्ग्याना मंदिर, स्वर्ण मंदिर देखने योग्य हैं।

स्यालकोट

यह भी बड़ा प्राचीन नगर है। भक्त पूरनमल का नगर यही है। यहाँसे थोड़ी दूरपर वह कुआँ भी वर्तमान है जिसमें

भक्त पूरनमलको हाथ पाँव काट कर डाल दिया गया था। उस कुँवेके पास गुरु गोरखनाथका मंदिर भी है। स्यालकोटमें पुराने समयका एक क़िला भी उपस्थित है जिसमें आजकल म्युनिसिपल कमेटी, डिस्ट्रिक्ट बोर्डके दफ्तर, और पुस्तकालय आदि हैं।

स्यालकोटमें अधिकतर खेलके सामान तैयार होते हैं और यह काम प्राय गली गलीमें होता है।

शिमला

यह नगर हिमालय पर्वतपर प्राय ७००० फीट की ऊँचाई पर बसा हुआ है। शिमले पहुँचने के लिये अम्बाले छावनी से बड़ी लाईन द्वारा काल्का और कालका से छोटी लाईन द्वारा शिमला पहुँचना होता है। पहाड़पर रेलगाड़ी द्वारा चढने उतरनेका दृश्य बड़ा ही मनोरम दिखलाई पड़ता है।

पहले तो शिमला केवल पंजाबके गवर्नरकी ग्रीष्म ऋतुकी राजधानी था परन्तु जबसे दिल्ली राजधानी हुई है वाइसराय की भी ग्रीष्म ऋतुकी राजधानी दार्जिलिङ्गसे शिमले चली आई है। अतएव शिमलेकी प्रसिद्धि और भी बढ गई है। ग्रीष्म ऋतुमें सरकारी समस्त बडे बड़े कर्मचारी तथा भारतके बडी कौन्सिलके सदस्य और राजे महाराजे यहाँपर एकत्रित होते हैं।

यहाँपर कई सिनेमा, मशहूर दुकानें, होटल और क्लब हैं। छोटे शिमलेमें वायसराय तथा गवर्नरकी कोठियाँ हैं। अरन्डेल का मैदान जो कि प्राय दो मीलकी उतराईपर मिलता है बड़ा ही मनोहर है। यहाँपर डूरेन्ड फुटबालका प्रसिद्ध टूरनामेन्ट

प्रति वर्ष हुआ करता है जिसमें बड़े लाट भी उपस्थित हुआ करते है। जाकू पहाड़पर एक मंदिर है जहाँपर बहुतसे बन्दर रहते है जिनके कारण मन्दिरका नाम मंकी टेम्पल (Monkey temple) अर्थात् बन्दरोंका मंदिर पड़ गया है। यहाँसे शिमले की छटा देखने ही योग्य होती है। लोग यहाँ जाकर बन्दरोंको चने खिलाते है।

शिमलेके अतिरिक्त शिमलेके रास्तेमें कई स्थानोंपर विशेष कर सोलनमें रईसोंकी कोठियाँ बनी हुई हैं।

कसौली

शिमलेके रास्तेमें कसोलीका प्रसिद्ध स्थान पड़ता है, जहाँपर जानवरोंके काटे हुये रोगियों का इलाज होता है। यहाँ पर इसी कार्य्यके लिये एक बड़ा भारी हस्पताल है। पहले सारे भारतवर्ष भरमें एक यही हस्पताल था परन्तु अब तो जानवरों के काटनेका इलाज प्राय सभी मेडिकल कालेजके हस्पतालोंमें होता है।

डलहौसी

यह पंजाबका मशहूर पहाड़ी स्थान (Hill station) है। यहाँका जल वायु स्वास्थ्यके लिये बहुत ही लाभदायक है। जो लोग स्वास्थ्यके लिये पहाड़पर जाना चाहते हैं वह शिमलेके स्थानपर डलहौसी ही जाते हैं क्योंकि शिमले इतनी भीड़ डलहौसीमें नहीं रहा करती। अतएव शान्ति प्रिय लोग अक्सर यहीं जाते हैं।

डलहौसी जानेके लिये अमृतसर से पठानकोट रेल द्वारा और पठानकोटसे मोटर द्वारा जाना होता है।

कटासराज

खेवड़ा स्टेशनसे जहॉ पर कि नमककी खान है यह स्थान प्राय १२ मीलकी दूरी पर है। रास्ता बिल्कुल पहाडी है परन्तु रास्तेमें कई बड़े बागों तथा कुछ ग्रामोंके मिल जानेसे रास्तेकी थकावट नहीं मालूम होती। कटासराजमें एक बड़ा भारी कुण्ड है जिसकी गहराईका आज तक पता नहीं लगा। इसी कुण्डसे सदा स्वच्छ तथा निर्मल जल निकला करता है जो कि हाजमेंके लिये बड़ा ही लाभदायक है। यहॉ पर प्रत्येक बैसाखीको जो कि सदा १३ अपरैलको पडती है बड़ा भारी मेला होता है जिसमें अधिकाश रावलपिण्डी, शाहपुर आदिके अधिक यात्री आते हैं। कहा जाता है कि पाण्डवोंने यहाँ पर कुछ काल निवास किया था।

चिन्तपुर्णी

चिन्तपुर्णी देवीका मदिर होशियारपुरसे प्राय १७ मीलकी दूरी पर पहाड़ों पर स्थापित है। होशियारपुरसे दो रास्ते—एक पैदलका और दूसरा मोटरका—जाते है। अधिकाश लोग पैदल ही जाते हैं। यहा पर श्रावण मासमें बड़ा भारी मेला होता है।

ज्वालामुखी

ज्वालामुखीमें ज्वाला जीका मदिर स्थापित है। यहा आता है किसी समयमें यह ज्वालामुखी पर्वत था परन्तु आज कल केवल मदिर ही मदिर है और यहॉ पर अधिकतर पडोंके मकान हैं। यहाँ पहुँचनेका रास्ता अमृतसरसे पठान कोटको लाइन द्वारा है। पहले तो केवल पठान कोट ही तक रेलवे लाइन थी इसके पश्चात् लारी द्वारा यात्रा करनी पड़ती थी परन्तु अब तो यहाँ तक लाइन वन गई है।

काङ्गडा

ज्वालामुखीके रास्तेमें काङ्गडेमें काङ्गड़ा देवीका मन्दिर पड़ता है। इस मन्दिरकी भी प्रसिद्धि ज्वालाजीके ही इतनी है लेकिन पजावके वाहर यात्री अधिकतर ज्वाला जी ही जाते हैं। ज्वाला जी तथा काङ्गड़ा दोनों ही बड़े सुन्दर स्थान हैं जहाँ पर एकवार जानेसे जलवायुके कारण लौटनेकी इच्छा नहीं होती।

कुरुक्षेत्र

पजावमें हिन्दुओंका सबसे बडा तीर्थ स्थान कुरुक्षेत्र है। यह स्थान दिल्ली अम्बाला लाइनपर दिल्लीसे कुछ फासले पर वसा है। दिल्लीसे लारियाँ भी जानेके लिये मिला करती हैं। इसी स्थान पर महाभारतका प्रसिद्ध पाण्डव कौरव महायुद्ध जिसके कारण भारत रसातलको चला गया, हुआ था। भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश यहीं पर किया था। उस स्थान पर एक मन्दिर भी है जहाँ पर यात्री दर्शन किया करते हैं। यहाँ एक बड़ा भारी मैदान है जिसमें दो तालाब

है। एक तालाब जिसका नाम सैन्यहत है छोटा है और दूसरा तालाब बड़ा भारी है अत समयमें दुर्योधन इसी तालाबमें छिपा था और भीमने उसका वध यहीं किया था। तालाब इतना भारी है कि उसके बीचमें मिट्टी पड़ गई है और स्थान स्थान पर वृक्ष निकल आये हैं। यदि तालाबकी केवल मिट्टी निकाली जावे और तालाबको साफ किया जावे तो लाखों रुपयेका व्यय है। कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार कमेटीने इस कार्य्यको करना चाहा परन्तु कमेटीको दान के रूपमें बहुत कम धन मिलनेके कारण यह कार्य्य पूर्णरूप न हो सका तथापि कमेटी कुछ न कुछ कार्य्य किया ही करती है।

कुरुक्षेत्रके मैदानसे कुछ थोड़े दूरके फासले पर 'बाणगंगा नामक स्थान है। इसी स्थान पर अर्जुनने बाण शैय्या पर पड़े हुये भीष्म पितामहको बाण द्वारा जल निकालकर जल पिलाया था। कहा जाता है कि यह वही धारा है।

कुरुक्षेत्रमें प्रत्येक सूर्य्यग्रहण पर स्नान करनेके लिये बड़ी भीड़ हुआ करती है। कई लाख यात्री इकत्रित हुआ करते हैं। पण्डों तथा यात्रियोंके अनेक तम्बू लग जाते हैं। ऐसे अवसर पर सरकार, सेवा समिति, महावीर दल तथा रेलवेका अति उत्तम प्रबन्ध रहा करता है। रेलवे कम्पनीकी स्पेशल पर स्पेशल छूटती है। यात्रीगण ग्रहणके समय पहले सैन्यहतमें स्नान करके बड़े सरोवरमें स्नान करते हैं उसके पश्चात् जाकर बाण गंगामें स्नान किया करते हैं और मन्दिरोंमें दर्शन किया करते हैं।

देहली

भारतवर्षकी प्राचीन तथा वर्तमान राजधानी है। इसने इतने सम्राट तथा राज्य देखे हैं कि, भारतवर्ष ही क्या संसारके

किसी नगर ने नहीं देखा होगा। दिल्लीका पहला नाम हस्तिना पुर फिर इन्द्रप्रस्थ और अब दिल्ली या देहली है। यहा पर पहले पाण्डवोंका राज्य था यदि दिल्लीका इतिहास वर्णन किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक तैयार हो जावेगी।

देखने योग्य स्थान—शहर, पुराना मेगज़ीन, किला महल, जामा मसजिद, फतेहपुरी मसजिद, काश्मीरी गेट और चाँदनी चौक।

शहरके उत्तर जहाँपर दिल्लीके प्राचीन शहरको फौज घेरे डालकर पड़ी थी।

शहरके निकट ही दक्खिनमें फिरोज़ाबाद, पुराने किलेके खण्डहर हुमायूँ बादशाह, तथा नवाब सफदरजंग इत्यादिके मक़बरे—राजा जयसिंहका यन्त्र मन्त्र देखने योग्य हैं उसके और दक्खिन चलकर होज़ खासमें शहशाह फिरोजशाहका मक़बरा सीरी जहापनाह, रायपिथौराका क़िला, लालकोटका क़िला और कुतुबमीनार मिलते हैं।

पुरानी दिल्लीके स्थानपर अब नई दिल्लीकी नई इमारतें नय रूपमें नये नाम रायसेनासे मिलतीं है। यहाँकी सुन्दर सड़कें और सुन्दर भवन देखने योग्य हैं। लेजिस्लेटिव एसेम्बली और कौन्सिल आफ स्टेट, सेक्रेटेरियट भवन, लाट साहबकी कोठी देखने ही योग्य हैं।

हरिद्वार

यहाँसे भागीरथी गङ्गा पहाड़ छोड़कर मैदान में प्रवेश करती हैं। यहाँपर गङ्गाका जल ऐसा निर्मल है कि, पानीके नीचेकी पड़ी वस्तु साफ़ तौरपर दिखलाई पड़ती है। यहाँ
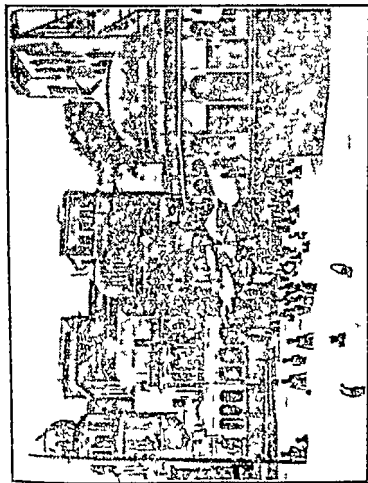
ब्रह्मकुण्ड, हरिद्वार

हरकी पैड़ीपर ब्रह्मकुण्डमें स्नान करनेका बड़ा भारी महात्म है विशेष कुम्भके समय तो लाखोंकी संख्यामें यात्री आते हैं। ब्रह्मकुण्डपर ही 'गङ्गा धारा' का मन्दिर है। इसके अतिरिक्त चण्डी देवी और माया देवीके मन्दिर पहाड़ोंपर बने हुए हैं।

कनखल—हरिद्वारके समीप कनखल है जहाँपर भी बहुत से मन्दिर दर्शन करने योग्य हैं। यहांपर नहर भी निकली है।

ऋषीकेश

हरिद्वारसे २३ मीलकी दूरीपर एक ऊँचे पर्वतपर गङ्गाके किनारे बसा हुआ है। यहाँ रेल भी हरिद्वारसे जाती है तथा लारियां भी सदा चला करती हैं। यहाँपर भरतजीका मन्दिर दर्शन करने योग्य है।

लक्ष्मण झूला—यह ऋषी-केशसे थोड़ी ही दूरपर है और बड़ा ही मनोहर स्थान है। श्रीकेदारनाथ या बद्रीनाथ जाते समय यात्री यहाँ ठहरा करते हैं। पहले यहाँ गङ्गाजी पर एक पुल था जोकि, यात्रियोंके चढ़नेपर झूला करता था अतएव इसका नाम लक्ष्मण झूला पड़ा परन्तु वह पुल अब बह गया है और एक मज़बूत पुल बना दिया गया है।

श्री बद्रीनाथ धाम

चारों धामोंमेंसे एक मुख्य धाम श्री बद्रिकाश्रम है। शेष तीन धाम तो समुद्रके किनारे बसे हुए हैं जहाँपर कि यात्रीगण रेलवेसे सरलतापूर्वक पहुँच सकते हैं परन्तु श्री बद्रिकाश्रम हिमालयके कठिन मार्गमें स्थित होनेके कारण बहुत

कम यात्रियोंका साहस होता है। तथापि सहस्रोंकी सख्यामें प्रतिवर्ष श्रद्धालु हिन्दू, बूढ़े जवान, स्त्री मर्द सब जाते ही हैं। अब तो हिमालयन एयर ट्रान्सपोर्ट (Himalayan Air Transport Co) के हवाई जहाज भी चलते हैं। यह जहाज़ हरिद्वारसे गोचर भूमितक यात्रियोंको पहुँचाते हैं। उसके बाद प्राय दो दिनका रास्ता डाँडियोंमें तै करना पड़ता है परन्तु अधिकतर यात्री पैदल ही बद्रीनाथकी यात्रा करते हैं। कुछ लोग डाँडी आदिमे भी जाते हैं। बडी लाइनसे हरिद्वार पहुँच कर ब्रह्मकुंडमे स्नान करनेके पश्चात् यात्री ऋषीकेश जाते हैं और फिर लक्ष्मण झूलेसे श्री बद्रीनाथकी चढ़ाई आरम्भ हो जाती है। थोड़ी थोडी दूरपर यात्रियोंके सुविधाके लिए चट्टियाँ बनी हुई है जहाँपर आराम करनेके लिए स्थान तथा भोजनकी सामग्री बिकती हैं। गरुड चट्टी, फूल चट्टी आदिसे होता हुआ भीलेश्वर, देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, गगा और मन्दाकिनीका सगम, रुद्रेश्वर, गुप्तकाशी, धामकोटी, महिषासुर मर्दिनी, मन्दराचल, शाकम्भरी, दुर्गा, त्रियुगी नारायण, मुण्डकटा गणेश, गौरीकुण्ड, चीरवासा, भैरव, श्री केदारनाथ, ऊखीमठ, मध्यमेश्वर, तगनाथ मण्डलगाँव, रुद्रनाथ, गोपेश्वर, चमोली, विरह नदी और अलकनन्दाका सगम, आदि बदरी, कल्पेश्वर, वृद्ध बदरी, जोशीमठ, भविष्य बद्री, विष्णुप्रयाग, पाण्डुकेश्वर, योगबद्री, आदि होते हुए यात्री बद्रीनाथजीके दर्शन करते हैं और इसके पश्चात् लौटती बार छोटी लाइनके काठगोदाम स्टेशनमें लौटते हैं।

मथुरा

यह भगवान् कृष्णकी जन्मभूमि है और यमुनाजीके किनारे बसा हुआ है। इस नगरीकी छवि अति ही निराली है। धार्मिक विचारोंके अतिरिक्त ऐतिहासिक स्थान भी है। यहाँपर बहुतसे सुन्दर मन्दिर हैं जिनमेंसे निम्न उल्लेखनीय हैं। (१) श्रीद्वारकाधीश, (२) देवकी, (३) बेगूसराय रानी, (४) सेठ चूरुवाला (५) किशोरी रमन (६) श्रीनाथजी (७) मथरेशजी (८) रानी तिलोई (९) गोवर्धनजी (१०) केशवदेव (११) गोपीनाथ

विश्रामघाट—जहाँपर भगवानने कंसको मारकर विश्राम किया था, देखने योग्य है। यहाँपर सन्ध्या समय आरतीके समय बड़ी भीड़ होती है।

यहाँ अनेक सुन्दर धर्मशाले हैं जहाँ पर यात्रियोंके ठहरनेका उत्तम प्रबन्ध है।

मथुरामें सबसे बड़ा स्नानका मेला यमद्वितियाको लगता है।

महावन—मथुरासे छ मीलकी दूरीपर महावनकी पुराना बस्ती है। यहाँ पर श्रीकृष्णजीको यशोदाके पुत्रीके साथ श्याम लालके मठ पर बदला गया था यह मठ तथा नन्दजीका महल जहाँ पर भगवान्ने क्रीणा की थी अभी तक उपस्थित हैं।

गोकुल—महावनके समीप ही गोकुल नगरी है जहा पर भगवान्ने प्रथम श्रीकृष्ण का अवतार धारण किया था।

वृन्दावन—मथुरासे पाँच मील उत्तर वृन्दावनकी पवित्र नगरी है जहाँपर अनेकों मन्दिर हैं। इनमें गोविन्द देवका मन्दिर १५९० ई० में और गोपीनाथका १५८० ई० अर्थात् ३४० वर्ष पहले बने थे। सेठोंका मन्दिर सन् १८५१ में ६० लाख

रुपयेकी लागतसे बना था। मथुरासे वृन्दावनको छोटी लाइन गई है। मथुराका जादूघर भी इतिहासिक दृष्टिसे देखने योग्य है।

यहाँ पर गोविन्दजो, गोपीनाथ, सेठोंका मन्दिर, निकुञ्ज वन, निधुवन, बंशीवट, गोपेश्वर महादेव, आदिको अवश्य देखना चाहिये।

आगरा

यह किसी समय सयुक्त प्रान्तकी राजधानी था। यह अकबरका नगर करके प्रसिद्ध है और मुगलिया राज्यका नमूना है। यहाँपर प्रसिद्ध ताजमहल है जो कि, आगरा छावनीसे थोड़ी दूरपर है। उसके बाद क़िला, इहतीमादुल्लाका मक़बरा, मच्छी भवन, शीश भवन, दिवाने ख़ास, मोतीमहल इत्यादि हैं।

फतेहपुर सिकरी—आगरेसे २० मीलकी दूरीपर फतेह पुर सिकरी है जहाँपर बराबर लारियाँ और मोटर जाते हैं। यह शहर बरबाद पड़ा हुआ है, कदाचित पानीकी दिक्क़तसे यह शहर छोड़ दिया गया था परन्तु फिर भी देखने योग्य है।

आगरेके पास ही राधास्वामी मतका केन्द्र दयाल बाग है जो कि धार्मिक विचारके अतिरिक्त भी शिल्पकलाके विचारसे दर्शनीय है।

आगरेमें दर्री, क़ालीन और चमड़ेके अच्छे अच्छे कार-ख़ाने हैं।

फतेपुर सीकरी

कानपुर

गंगाजीके किनारे बसा हुआ नवीन नगर है। इस नगरको संयुक्तप्रान्तका शिल्प-कला तथा व्यापारका केन्द्र कहा जाता है। यह नगर गत कुछ वर्षोंमें केवल अपने व्यापारके कारण बढ़ा है। यहाँपर ऊनी तथा सूती कपडेकी मिलें, चमडे तथा जूतेके कारखाने, चीनीके कारखाने, शराबके कारखाने तथा आटेकी कलें हैं। इस स्थानपर ई० आई० आर०, बी० एन० डबल्यू० आर०, बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० तथा जी० आई० पी० की रेलें आकर मिलती हैं। स्टेशन देखने योग्य तथा सुखदाई बना हुआ है।

यहाँपर 'मेमोरियल वेल' और बाग, बगावतके समयका घाट, गिरजाघर, श्री प्रयागनारायण तथा श्री गुरुप्रसादके मन्दिर देखने योग्य हैं।

प्रयाग

यह संयुक्तप्रान्तकी राजधानी है और यमुना तथा गंगाजीसे घिरा हुआ है। यहाँपर त्रिवेणीघाट (संगम) पर स्नान करनेका बड़ा महात्म है। प्रत्येक वर्ष माघ मेला माघके मासमें हुआ करता है। बारह वर्षपर यहाँपर कुम्भ लगा करता है त्रिवेणी संगम इलाहाबाद स्टेशनसे प्राय ६ मीलकी दूरीपर है।

यहाँपर भरद्वाजजीका मन्दिर, अलोपी मन्दिर तथा अक्षय वट अति प्रसिद्ध है। अक्षयवटका मंदिर क़िलेके अंदर जमीनके भीतर है जहाँपर अक्षयवटका वृक्ष उपस्थित है। यह मन्दिर विशेष धार्मिक त्योहारोंपर यात्रियोंके लिये खुला करता है।

देखने योग्य स्थान—खुसरू बाग, अलफ्रेड पार्क, विक्ट-

विद्यालय, आनन्द भवन (-अब-स्वराज्य भवन), क़िला और हाईकोर्ट हैं।

चित्रकूट

यह स्टेशनसे ३॥ मीलकी दूरीपर है। यहाँपर परिक्रमाका माहात्म्य है, जो कि १० मील का है और पञ्चकोशीके नामसे प्रसिद्ध है। इस परिक्रमामें ३३ मन्दिर हैं जिनमेंसे कोटतीर्थ, दिनागना, हनुमान धारा, फाटक शिला, अनसूइया, गुप्त गोदावरी, भरतकूप हैं। स्टेशनसे जानेके लिये लारियाँ मिलती हैं। चित्रकूट करवी स्टेशनसे जाना चाहिये जहाँपर लारियाँ और बैलगाड़ियाँ सदा मिलती हैं। यहाँपर कुछ जगहमें बृटिश राज्य तथा कुछमें देशी राज्य होनेके कारण राज्यसे खरीद कर कोई सामान विशेषकर भाँग, गाँजा, आदि जो कि राज्यमें बहुत सस्ती है, लानेकी बड़ी मुमानियत है और बृटिश राज्यके खुफिया सदा लगे रहते हैं जो कि तुरत ही ऐसे आदमीको गिरफ्तार कर लेते हैं और पीछे बड़ा झंझट होता है। अतएव यात्रियोंको होशियार रहना चाहिये।

विन्ध्याचल

यह स्थान हिन्दुओंका बड़ा पवित्र स्थान है। यहाँपर माता भगवतीका बड़ा विशाल मन्दिर है जहाँपर प्रतिवर्ष नव रात्रमें बड़ा भारी मेला होता है। पर्वत पर विन्ध्यवासिनी देवीका मंदिर तथा विन्धाचलसे उत्तर गंगाकी तटपर विन्धेश्वर नामक शिव लिङ्ग है। यहाँपर भगवती, काली, और अष्टभुजाके

दर्शनको 'त्रिकोण' यात्रा कहते हैं। नगर गंगाके किनारे मिर्जापुरसे प्रायः ४ मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। पहाड़ोंके कारण यह स्थान स्वास्थ्यके लिये भी लाभ दायक है।

मिर्जापुर

यह स्थान मिर्जापुर जिलेका केन्द्र है। यहाँके क़ालीन बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँसे प्रतिवर्ष लाखों रुपयेके क़ालीन बाहर तथा योरुपमें जाते हैं। यहाँपर कई कालीनके कारखाने हैं।

काशी

काशीजीका वर्णन करना सूर्य्यको दीपक दिखलाना है। कोई भी हिन्दू ऐसा नहीं होगा जो कि काशीजीको नहीं जानता हो। विश्वनाथपुरी अनादि-कालसे चली आ रही है। वैसे तो यहाँपर सहस्रोंकी संख्यामें मन्दिर हैं परन्तु श्रीविश्वनाथजीका स्वर्णमन्दिर, अन्न पूर्णाजी तथा दुर्गाबाड़ी, भैरवनाथ, बड़ा गणेश बहुत ही प्रसिद्ध हैं। घाट भी यहाँपर अनेकों हैं अर्थात् पञ्चतीर्थ, अस्सीघाट, दसाश्वमेध, वरुणा संगम, पञ्चगङ्गा, लालमिश्र, तुलसी, इत्यादि परन्तु दसाश्वमेध और मणिकर्णिका बहुत प्रसिद्ध हैं। शास्त्रोंके अनुसार कुल प्राणियोंके लिये जो कि यहाँ बसते हैं और जिनकी यहाँ मृत्यु होती है भगवान् शङ्करने इस नगरकी स्थापना अपने त्रिशूल पर पाँच कोसमें की है। जिनकी यहाँ मृत्यु होती है वह आवागमनसे रहित हो जाते हैं।

चन्द्रग्रहणके समय यहाँपर स्नान करनेसे मनुष्य मोक्षको प्राप्त होता है।

देखने योग्य स्थानः—हिन्दूविश्वविद्यालय। यह काशी से कुछ दूरीपर नगवा ग्राममें है। यहाँपर समस्त भारतके छात्र पढ़ते हैं। इसको पूज्य पण्डित मदनमोहन मालवीयजीने स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त मोतीझील, काशी विद्यापीठ, काशी-नागरी प्रचारिणी-सभा, माधोदासका धरहरा, (अर्थात् औरंगजेबकी मसजिद) ज्ञानवापी, अमृतकुण्ड, नागकुण्ड, काशी-करवट, कालकूप, नन्देश्वर कोठी इत्यादि हैं।

सारनाथ—काशीसे अर्थात् बनारस सिटीसे ३॥ मील की दूरीपर बी० एन्० डब्लू० रेलवे अर्थात् छोटी लाइनपर सारनाथ भी देखने योग्य है। यहींपर भगवान् बुद्धने प्रथम अपने मतका प्रचार किया था। यह स्थान अब तो बड़ा ही रमणीक बन गया है। और बौद्ध मत का एक सुन्दर मन्दिर भी बना है। यहाँपर श्रावणके मासमें हिन्दुओंका भी मेला होता है।

रामनगर—यह गंगाजीके दूसरे किनारेपर महाराज बनारसकी राजधानी है।

काशीमें सब प्रकारकी सवारियाँ मिलती हैं परन्तु इक्के बहुतायतसे मिलते हैं।

अयोध्या

श्री रामचन्द्रजीका जन्मस्थान अयोध्या फैजाबादसे ५ मीलकी दूरीपर सरयूके तटपर बसा हुआ है। यह नगर भी बहुत ही पुराना है। यहाँपर सैकड़ों मन्दिर हैं जिनमेंसे तीस भगवान् शंकर और ६३ विष्णु भगवानके हैं। विशेष दर्शनयोग्य मन्दिर हनुमान गढ़ी, नागेश्वरनाथ जी, दर्शनसिंह जी
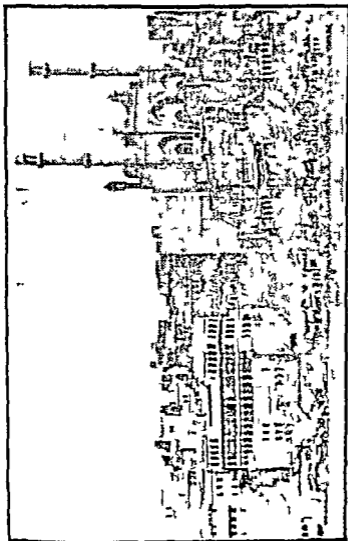
वेनी माधव घाट, काशी ।

मणिकर्णिका घाट, काशी ।

तथा सीताकोमन्दिर हैं यहाँपर बन्दर बहुतायतसे हैं अतएव उनसे सावधान रहना चाहिए। सरयूजीमें कछुए बहुत रहते हैं परन्तु यह किसीको कुछ हानि नहीं पहुँचाते, अतएव उनसे कोई डरनेकी आवश्यकता नहीं।

सवारियाँ यहाँपर बहुतायतसे हे।

फैजाबाद—अयोध्याजीसे प्राय: तीन मीलकी दूरीपर है। यह ज़िलेका केन्द्र स्थान है।

लखनऊ

यह अवधकी राजधानी हे, बल्कि एक प्रकारसे इसे सयुक्तप्रान्तकी राजधानी ही कहिये। इस प्रान्तके गवर्नर प्राय यहाँ ही रहा करते हे। लखनऊ बड़ा ही सुन्दर बना हुआ हे और अमीनाबाद पार्क तथा मालरोड देखने ही योग्य हे। लखनऊका नया स्टेशन भी बड़ा सुन्दर बना हे। यहाँपर देखने योग्य हुसेनाबाद, इमामबाड़ा, बड़ा इमामबाड़ा, मच्छीभवन शाहनजाफ, जामा मसजिद, कैसरबाग, दिलकुशा, जादूघर, कौंसिल चेम्बर, मारटीनेयर कालेज, छतरमंजिल इत्यादि हैं।

हर तरहकी सवारियाँ यहाँ मिलती हैं।

नीमसार

यह गोमती नदीके किनारे सीतापुर जिलेमें इक्यावन पित्र स्थानोंमेंसे एक हे। यहाँपर प्राचीन समयमें ऋषियोंने बैठकर पुराणोंकी रचना की थी। यहाँपर प्रत्येक अमवस्याको मेला लगा करता हे और सोमवती अमवस्याको बड़ा भारी मेला लगा करता है।

जबलपुर

मध्य प्रान्तमें नागपुरके बाद मशहूर नगर जबलपुर ही है। यहाँपर कई बीड़ीके कारखाने हैं। जबलपुरकी प्रसिद्धि अधिकतर नर्मदाके किनारे सगमरमरके पहाड़ तथा उसका धुवाँधार नामी पानीके झरनेके कारण हैं। बहुतसे यात्री बाहरसे आते हैं और भेड़ा घाटपर जो कि शहरसे प्राय १४ मीलकी दूरीपर है मोटरों द्वारा जाते हैं और यहाँके झरने तथा संगमरमरके पहाड़ोंका आनन्द लेते हैं। यहाँपर सरकारी नावें मिलती हैं जिनको कि किरायापर लेकर यात्रीगण नर्मदाकी सैर करते हैं। चाँदनी रातमें नावमें बैठकर इन पहाड़ोंका दृश्य देखने योग्य होता है।

पशुपतिनाथ

श्री पशुपति नाथ महादेवका मन्दिर नैपाल राज्यकी राजधानी काटमण्डूसे एक कोस उत्तर है। यहाँ पर जानेके लिये बी० एन्० डबल्यू० रेलवेके रक्सोल स्टेशन जाना होता है। यहाँसे पैदल या घोड़े पर सवार होकर ६२ मीलकी यात्रा की जाती है। अधिकतर यात्री पैदल ही जाते हैं। रास्तेमें अनेक चट्टियाँ मिलती हैं। यहाँपर शिव चतुर्दशीको बड़ा भारी मेला लगता है। मन्दिरके पूर्व विष्णुमती नदी बहती है जिसमें यात्री गण स्नान करके मंदिरमें पशुपति नाथके दर्शन करते हैं।

देखने योग्य स्थान—पशुपतिनाथ, बागमती नदी, गुजेश्वरी देवी, हनुमान ढोका, इन्द्र चौक, टूडीखिलीका मैदान, काया मर्लीका दरबार, मछिन्द्रनाथ मन्दिर, मात्स्यूजाके मन्दिरमें केवल राजदर्बारके लोग पूजा करते हैं।

नेपालके प्रधान रक्षक देवता मुछन्दर नाथ जिनका मंदिर वागमती नदीके किनारे है की रथ-यात्राका उत्सव मेषकी सक्रान्तिको होता है।

जनकपुर

श्री जानकी माताका जन्म स्थान तथा राजा जनककी राजधानी जनकपुरका नाम किसने नहीं सुना है। परन्तु यह स्थान जो कि किसी समय भारतवर्षका ही नहीं संसारका प्रसिद्ध स्थान था और जिसकी शोभा गोस्वामी तुलसीदासजीने रामायणमें वर्णनकी है अब उजाड़ पड़ा हुआ है और सिवाय चन्द मन्दिरों और पुजारियोंके कुछ शेष नहीं है। यहाँ जानेके लिये बी० एन्० डबल्यू० रेल्वेके जनकपुर रोड स्टेशन जाना पड़ता है। उसके पश्चात् लारियोंसे जाना पड़ता है। यहा पर धनुष यज्ञका बडा भारी मेला लगता है।

पटना

बिहार उड़ीसाकी राजधानी पटना गंगाके किनारे प्राय ७ मीलकी लम्बाईमें बसा हुआ है यद्यपि इसकी चौड़ाई बहुत ही कम है। यह ऐतिहासिक नगर बड़ाही पुराना है और प्राचीन समय पाटलीपुत्रके नामसे प्रसिद्ध था। पटनेका नाम पाटन देवीके नाम पर पडा है। कुछ वर्ष तक तो जब कि बिहार बंगालमें सम्मिलित था पटना मामूली शहरोंमें गिना जाता था परन्तु जबसे बिहार प्रान्त अलग हुआ है पटना तरक्की करने लगा है और यहाँ पर नया पटनाके नामसे एक अलग है।

पटना बसा है जहाँ पर कि अफसरोंकी कोठियाँ लाट साहबकी कोठी और दफ्तर हैं।

पटनेमें चौकके समीप श्री गुरुगोविन्द सिंहजी कि सिखोंके गुरु हुये हैं जन्म स्थान है जहाँ पर एक बड़ा भारी गुरुद्वारा है। यहाँ पर सहस्रोंकी संख्यामें सिख दर्शन करनेके लिये प्रति वर्ष आते हैं।

पटनेमें देखने योग्य स्थान गोलघर, जादूघर, लाट साहबकी कोठी, लाट साहबका दफ्तर, कौन्सिल चेम्बर, श्रीमान् राय बहादुर राधाकृष्ण जालानका बाग तथा संग्रहित वस्तुएँ, राय बृजराज कृष्णका बाग तथा कालेज वगैरह हैं।

पुनपुन

यह स्थान पटना स्टेशनसे प्राय ८ मीलकी दूरीपर रेलवे स्टेशन है और पुनपुन नदीके किनारे बसा हुआ है। शास्त्रोंके अनुसार गयाजी श्राद्ध प्रथम यहाँसे प्रारम्भ होना चाहिये बिना यहाँसे श्राद्ध आरम्भ किये हुये गयाका श्राद्ध पूर्ण नहीं होता। अतएव यात्रीगण गया जानेके पूर्व यहाँपर प्रथम श्राद्ध करते हैं।

राजगृह

पटने जिलेमें पहाड़ियोंके पास ही स्थित यह प्राचीन स्थान है। यहाँ पर जानेके लिये पहले ई० आई० आर० का स्टेशन बख्तियारपुर आना पड़ता है। यहाँसे छोटी लाइन मिलती है जो कि राजगृह स्टेशन पहुँचाती है। राजगृहमें गात कुण्ड, मार्कण्ड कुण्ड, व्यास कुण्ड, गंगा यमुना कुण्ड, अनन्त नारायण कुण्ड

सप्तर्षिधारा, काशीधारा और ब्रह्मकुण्ड है। गंगा यमुना कुण्डमें एक धारा गरम और एक ठंढी है। शेष सब कुण्ड गरम हैं सप्तर्षि धारामें सात झरने हैं जो कि अत्री, भारद्वाज, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र वशिष्ट और यमदग्नि कहे जाते हैं। इन कुण्डोंका पानी स्वास्थके लिये विशेषकर चर्मरोगके लिये लाभदायक कहा जाता है। यहाँ पर कहा जाता है कि पाण्डवोंने निवास किया था। प्रत्येक तीसरे वर्ष मलमासके मासमें यहाँ बड़ा भारी मेला होता है जब कि लाखोंकी सख्याम यात्री गण आते हैं।

इस स्थानकी प्रसिद्धी बौद्धोंमें भी बहुत हैं और बहुतसे बौद्ध प्रति वर्ष यहाँ पर आते हैं। क्योंकि बेभार पर्वतके दक्षिण सोन भण्डार नाम एक विशाल गुफा है यहीं पर बुद्धकी उप स्थितिमें उनके ५०० चेलोंने धर्म सभाकी थी। राजगृहके रास्तेमें प्रसिद्ध जैन स्थान पावापुरी पड़ता है जहाँ पर कि उनके सम्प्रदायके चलाने वाले गुरु महावीर स्वामीका जन्म हुआ था। यहाँ पर प्रति दीवालीको बड़ा भारी मेला होता है और सहस्रोंकी सख्यामें दूर दूरसे जैनी आते हैं। तालाबके बीचमें स्थित मंदिर देखने योग्य हैं।

पावापुरीके अतिरिक्त राजगृहके रास्तेमें प्रसिद्ध प्राचीन विश्वविद्यालय नलन्दाके खण्डरात मिलते हैं। इस स्थान पर बौद्ध भिक्षु रहा करते थे। बहुतसे बौद्ध यहाँ पर प्रति वर्ष आते हैं। राजगृहसे आठ मीलपर बड़गाँवामें जरासिन्धकी राजधानी बताई जाती है।

गया

यह प्रसिद्ध तीर्थस्थान फाल्गु नदीके किनारे बसा हुआ

द । यहाँपर यात्रीगण श्राद्ध क्रिया करते हैं। विशेषकर पितृपक्षमें बहुत भीड़ रहती है।

विष्णुपद मन्दिरमें विष्णुजीके पदके चिन्ह रखे हैं। कहा जाता है कि, विष्णुके पदके स्थानपर मन्दिर बना हुआ है। यहींपर श्राद्ध किया जाता है। दूसरे प्रसिद्ध मन्दिर रामशिला, प्रेतशिला और ब्रह्मयोनी है।

वायु पुराणमें लिखा है कि गयासुर नामक एक असुर था जिसने दैत्योंके गुरु शुक्राचार्यसे धर्मशास्त्र आदि पढ़कर कठिन तपस्याकी। उसी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु ने वरदान दिया कि जो उसका शरीर छूयेगा वह बैकुन्ठ जायेगा। इसपर ब्रह्माजी बहुत विचलितहुये और भगवान्से प्रार्थना की। भगवान्ने कहा कि गयासुरका एक अंग यज्ञके लिये मांगिये। ब्रह्माजीने गयासुरसे उसके शरीरका एक अंग यज्ञ करनेके लिये मांगा। गयासुरने यज्ञ करनेकी सम्मति देदी। यज्ञ आरम्भ होने पर उसका शरीर हिलने लगा। देवताओंके रोकनेसे जब हिलना नहीं रुका तो उन्होंने भगवान्से पुनः प्रार्थनाकी। भगवानने अपने गदाघातसे उसका शरीर निस्पन्द किया। मृत्युके समय उसके वर मांगनेपर भगवान्ने उसको वरदान किया कि जहाँ पर उसकी मृत्यु हुई है वह शिला होकर रहेगा और शिलापर भगवान विष्णुके पदके चिन्ह होंगे और जो उस शिलापर पितरोंके श्राद्ध करेंगे उनके पितृगण सब पापोंसे मुक्त हो जायेंगे। इसी कारण यहाँका नाम 'गया' पड़ा।

गयामें श्राद्ध करनेके लिये ४५ पद हैं जिसमें पुनपुन पद प्रथम है।

बुद्धगया—यह गयासे ७ मीलकी दूरीपर है। बहुत अच्छी पक्की सड़क है, बहुत सी लारियाँ सदा आनेके लिये

मिलती हैं। यहींपर भगवान् बुद्धने अन्तिम तपस्या की थी उनको यहींपर ज्ञान प्राप्त हुआ और संसारके बन्धनोंसे मुक्त हो गये। उसी स्थानपर मन्दिर बना हुआ है। यहाँपर एक पचास फुट लम्बा चबूतरा है। यहाँपर भगवान् बुद्ध ज्ञान प्राप्त होनेपर सात दिन तक ध्यानमें मस्त चलते रहे। यहीं पर पवित्र 'बो' वृक्ष उपस्थित है जिनके नीचे भगवान् बुद्धने बैठकर तपस्या की थी।

राँची

बिहार प्रान्तकी ग्रीष्म ऋतुकी राजधानी है परन्तु गर्मीके दिनोंमें यहाँपर गर्मी ही पड़ती है परन्तु रातें ठण्डी हुआ करती हैं। राँचीसे कुछ फासलेपर एक पागलखाना है यहाँपर हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेज पागलोंका इलाज होता है।

पारसनाथ

पारसनाथ पहाड़की चोटी पर जो कि ४४७९ फीट ऊँची है। स्टेशनसे १२ मीलकी दूरीपर २४ जैन मंदिर हैं जो कि २४ जैन मुनियोंके निर्वाण प्राप्तिके स्मारकमें बनाये गये हैं। मधुवनसे जो कि पहाड़की तराईमें है ७१ मीलकी चढ़ाई है। डुमरी थानाके सब इन्सपेक्टरके पास पहलेसे पत्र डालने पर डोलीका भी प्रबन्ध हो सकता है। यहाँपर चीते बहुतायत से पाये जाते हैं।

भागलपुर

यह भी बिहारका प्रसिद्ध नगर है तथा भागलपुर कमिश्नरी का सदर मुक़ाम है। यहाँका रेशमी कपड़ा बहुत मशहूर है।

(गौरीशङ्कर, संसारमें सबसे ऊँची चोटी) पर प्रभाव देखने ही योग्य होता है। उसका वर्णन करना कठिन है।

ढाका

यह ऐतिहासिक नगर जो कितने ही बड़े बड़े नवाब देख चुका है और बंगालकी राजधानी रह चुका है यद्यपि उतना प्रसिद्ध अब नहीं हैं तथापि अब भी कुछ कम नहीं है। ढाकाकी मलमल भारतवर्ष हीमें नहीं वरन संसारभरमें प्रसिद्ध थी और एक समय था कि यूरपमें यहाँका कपड़ा पहनना फख्र समझा जाता था परन्तु समय सदा एक सा नहीं रहता। समयके फेरसे तथा कर्मचारियों और व्यापारियोंके लोभके कारण यहाँका व्यवसाय नष्ट कर दिया गया तथापि इतना होनेपर भी यहाँकी कारीगरी देखने योग्य है।

तारकेश्वर

हावड़ेसे १२ मीलकी दूरीपर तारकेश्वर महादेवका मन्दिर बंगालमें प्रसिद्ध मन्दिर है। पहले यह स्थान घना जंगल था और सिंहलद्वीपके नामसे प्रसिद्ध था। इसी जंगलमें भगवान शिवकी मूर्ति पड़ी थी। एक ग्वालेकी कपिला गऊ नित्य जाकर इनपर दूध चढ़ा आती थी। ग्वालेको जब नित्य उसका दूध नहीं मिलने लगा तो उसने कारणका पता लगाना चाहा। उसने कपिला गौको दूध चढ़ाते देख लिया। भगवान ग्वालेपर भी इसकी गऊके कारण प्रसन्न हो गये और उसको दर्शन दिया।

यहाँपर शिवरात्रि और चैत्र सक्रान्तिको बड़ा भारी मेला लगता है।

गंगा-सागर

कलकत्तेसे जहाजपर सवार होकर यात्री यहाँपर जाते है। यहाँकी यात्रामें प्राय तीन दिन लगते हैं। वहाँपर पहुँचकर जहाजसे उतर कर गगाजी और समुन्द्रके सगममें स्नान करके कपिल मुनिका दर्शन करके जहाजपर सवार हो जाना पड़ता है। यहाँ समुद्रके सगम समीप ही बड़ा भारी जगल है जिसमें शेर, चीते आदि जगली जानवर बहुतायतसे पाये जाते हैं। यह मन्दिर केवल एक दिन मकरसक्रान्तिके दिन खुलता है। इस अवसर पर बहुत सी दुकाने आदि भी जाती हे और मेलेके लिये जगलकी सफाई की जाती है।

कलकत्ता

कलकत्ता प्रसिद्ध नगर तथा व्यापारका केन्द्र है। यह भारतवर्षका सवसे बड़ा नगर तथा ब्रिटिश राज्यमें सबसे दूसरा बड़ा नगर है। अनेक वर्षोतक यह भारतवर्षकी राजधानी रहा है। अब भी बगालकी राजधानी है। यहाँपर प्राय सब सम्प्रदायके मनुष्य पाये जाते हैं।

देखने योग्य स्थान:—हवड़ेका पुल, गगाजी, विक्टोरिया मेमोरियल, जादूघर, चिड़ियाघर, इम्पीरियल लाइब्रेरी, लाट साहबकी कोठी, इडनगार्डेन, खिदरपुर डाक, हाईकोर्ट, मेडिकल कालेज, बोटानिकल गार्डेन, किला, जकूरिया झील, घौरङ्गी इत्यादि।

मन्दिर—कालीजीका मन्दिर कालीघाटमें, समीप ही नकुलेशका मन्दिर आदि गंगापर, सर्कूलर रोडपर परेशनाथ जीका जैन मन्दिर है।

कलकत्तेसे छ मीलकी दूरीपर दक्षिणेश्वरका सुन्दर बाग है जहाँपर गंगाके किनारे १२ शिवमन्दिर हैं। यहाँपर परमहंस श्रीरामकृष्णजीने तपस्या करके भगवान्‌के दर्शन किये थे।

नवद्वीप

बंगालमें नदिया नामक एक नगर है। यहाँपर पहले हिन्दुओंका राज्य था परन्तु पीछे मुसलमानोंका कब्जा हो गया। महाराज कृष्ण चैतन्य महाप्रभुने यहीं जन्म लिया था जिसके कारण यह स्थान बड़ा पवित्र माना जाता है। संस्कृत भाषाका भी यह स्थान काशीकी तरह केन्द्र है।

कामाख्या

कामाख्या देवीका मन्दिर गौहाटीसे कुछ मीलके फासले पर पर्वत पर बना हुआ है। गौहाटीमें एक स्टेशन पश्चिम ए० बी० आर० का कामाख्या स्टेशन भी है। मन्दिरके अन्दर अष्टधातुकी दशभुजी मूर्तिके दर्शन होते हैं। अँधेरी गुफाके कारण यहाँ पर सदा दीपक जला करते हैं। और गुफाके बीचमें योनि पीठ उपस्थित है।

शिलांग

आसामकी राजधानी शिलाङ्ग खासिया जैंतिया पहाड़ पर

समुद्रकी सतहसे ४९०८ फीटकी ऊँचाई पर बसा है। यहाँ जानेके लिये पाण्डु स्टेशनसे मोटरें मिलती हैं। यहाँकी आबहवा अच्छी है। यहाँ पर वार्ड झील, लाट साहबकी कोठी, बोटानिकल बाग़ देखने योग्य हैं। शिलाङ्गके रास्तेमें आसामकी पुरानी राजधानी **गौहाटी** पड़ती है जो कि ब्रह्म पुत्र नदीके किनारे बसी हुई है और व्यापारका केन्द्र है। यहाँ पर पहाड़का दृश्य देखने योग्य है। शिलाङ्ग जिलेका पुराना सदर मुक़ाम चिरा पूँजी ४४५२ फीटकी ऊँचाई पर बसा हुआ समीप ही है। यहाँ पर संसारभरसे अधिक वर्षा होती है। औसत वर्षा यहाँ पर प्रति वर्ष ४२६ इञ्च है जिसमें अधिकतर वर्षा जूलाईके मासमें होती है। सन् १८६१ में ९०३ ई० वर्षा यहाँ पर हुई थी। यहाँ पर बड़ा भारी बाजार है जहाँ से सिलहटकी नारंगियां बाहर भेजी जाती हैं।

कटक

उड़ीसामें सबसे बड़ा नगर है और अब तो उड़ीसाप्रान्तके पृथक् हो जानेपर यहाँकी राजधानी बनेगा जिसके लिये सरकारसे तैयारियाँ आरम्भ हो गई हैं। यहाँपरका बाँध तथा महानदी देखने योग्य है। कटकसे कुछ फासलेपर एक बड़ा सुन्दर स्थान देखने योग्य है।

यहाँपर चाँदीका बड़ा सुन्दर काम होता है।

भुवनेश्वर

यहाँ पर भगवान् लिङ्गराजका विशाल मन्दिर है। मन्दिर स्टेशनसे प्राय पाँच मीलकी दूरी पर है और स्टेशनपर बहुत

सी बेलगाड़ियाँ मिलती हैं। सुन्दर जंगलमें रास्ता जाता है। यात्रीगण जाकर प्रथम बिन्दुसागरमें स्नान तथा पिण्डदान करते हैं उसके उपरान्त मन्दिरमें जाकर भगवान्‌के दर्शन करते है। इस मन्दिरके मुकाबलेका कोई दूसरा मन्दिर नहीं है। मन्दिरकी ऊँचाई प्राय १८० फीट है। मन्दिरके ठीक बीचो बीच भगवान् विराजमान हैं। यह स्थान ११ हाथ गोलाकार है और सदा जलसे भरा रहता है। भगवान्‌की कोई मूर्ति नहीं है। यहाँ पर भगवान् वायुरूपमें विराजमान हैं।

जगन्नाथ जीकी तरह यहाँ भी प्रसाद बिका करता है और यात्रीगण बिना भेदभावके भोजन करते हैं। मन्दिरके एक शिलालेखसे यह प्रतीत होता है कि मन्दिर ७०० वर्ष पूर्वका बना हुआ है। पहले यहाँ पर बहुतसे मन्दिर थे और यह इधर का काशी कहा जाता था। कहा जाता है कि यहाँ ७५०० मन्दिर थे जिनके खण्डहर अभी तक पड़े हुये हैं। पास ही में कई एक दर्शनयोग्य मन्दिर है। यहाँ पर एक सुन्दर धर्मशाला भी है।

साक्षीगोपाल

जगन्नाथ पुरी जाते समय रास्तेमें साक्षीगोपालका मन्दिर पड़ता है यहाँ पर भगवान साक्षीके रूपमें विराजमान हैं। यहाँकी एक कथा प्रसिद्ध है कि एक कुलीन ब्राह्मण जब मथुरामें बीमार था तो उसकी सेवा एक अकुलीन ब्राह्मण युवकने की। कुलीन ब्राह्मणने उस युवकको अपनी कन्या देनेका वचन दिया परन्तु पुरी धाम पहुँचने पर उसने इन्कार कर दिया। युवकने इस बातकी नालिश पुरीके राजाके यहाँ की। राजाने साक्षी माँगी तो युवकने

कहा कि वहाँ पर भगवान कृष्णके सिवा और कोई न था। राजाने कहा कि उनको साक्षी रुपमें लावो। युवक मथुरा गया और वहाँ पर भगवान्‌की प्रार्थना की। भगवान् चलने पर राज़ी हो गये परन्तु एक शर्त कराली कि वह ब्राह्मण पीछेकी तरफ नहीं देखेगा युवक राज़ी हो गया। इस स्थान तक भगवान चले आये और वह ब्राह्मण भगवान्‌के पाँवके नुपुरोंकी ध्वनि सुनकर समझता रहा कि आ रहे हैं। यहाँ पर आनेके पश्चात् रेतके कारण भगवान् के नुपुरोंकी आवाज बन्द हो गई। ब्राह्मणने पीछे फिर कर देखा तो भगवान् खड़े थे। उसने भगवान्‌से चलनेको कहा। भगवान् यह कह करके कि उसने अपनी शर्त तोड़ दी है और पीछेको देख लिया जानेसे इन्कार कर दिया। इसी लिये यहाँ पर उनका मन्दिर बना। राजाने कुलीन ब्राह्मणसे लड़की दिलाई। तभीसे मंदिरके पुजारी यहाँ पर कुलीन तथा अकुलीन ब्राह्मण हैं जो कि आज कल सैकड़ों घर हैं।

श्री जगन्नाथपुरी

श्री जगन्नाथपुरीको श्रीक्षेत्र, नीलाचल या पुरुषोत्तम क्षेत्र भी कहते हैं। यह कलकत्तेसे ३१० मीलकी दूरीपर है और हिन्दुओंका बहुत बड़ा और पुराना तीर्थ स्थान है।

श्री जगन्नाथजीका मन्दिर—रेलवे स्टेशनसे करीब १ मीलपर है। यह बहुत बड़ा और अति सुन्दर बना हुआ है। यह संसार भरमें प्रसिद्ध है। लोग इसको देखकर मुग्ध हो जाते हैं और उन्हें अवाक् रह जाना पड़ता है। इसका सम्बन्ध पहिले वाह्निक इतिहाससे था पर जगद्‌गुरु शंकर भगवान्‌ने अपने समयमें यहाँपर अपनी गद्दी स्थापित की थी।
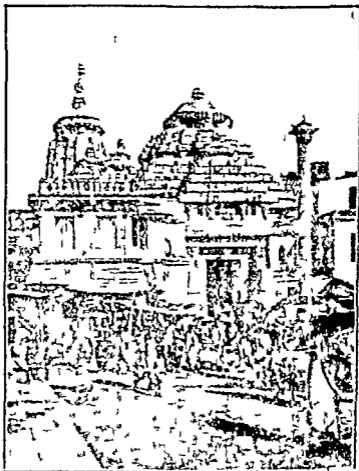
श्री जगन्नाथजीके मन्दिरका फाटक

जगन्नाथजीके मन्दिरके चारों तरफ और भी बहुतसे मन्दिर हैं, जिनमें विमलादेवी (दुर्गा), लक्ष्मी, स्वर्गद्वार, श्री गोवर्धन मठ, सेतमाधव, सेतगगा, इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके सिवा यहाँ बहुतसे कुण्ड और सरोवर भी हैं। यहाँका रथयात्रा मेला अति प्रसिद्ध है जिसमें लाखोंकी भीड़ होती है।

यहाँ यात्रियोंको भोजन बनानेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मन्दिरके भोग लगानेके पश्चात् दाम देनेपर महाप्रसाद मिलता है। भोग या महाप्रसादका अन्दाज़ इतने हीसे हो सकता है कि, मेलेके अवसरोंपर १००००० से ऊपर यात्री लोग भोजन पाते हैं जिस समय कि रसोइयादारोंकी संख्या उनके सहायकोंको छोड़कर २०० के हो जाती है। लोग अपनी शक्ति और श्रद्धाके अनुसार ठाकुरजीपर चढ़ावा चढ़ाते हैं और सब लोग जाति भेद त्याग कर एक साथ बैठकर महाप्रसाद पाते हैं। यहाँ सब आधुनिक सवारियाँ उचित मूल्यपर मिलती हैं।

स्टेशनसे मंदिर जाते समय रास्तेमें चन्दन तालाब मिलता है यहाँ पर यात्रीगण स्नान करके मंदिरमें दर्शन करने जाते हैं। समुद्रमें स्नान करनेके पश्चात् वह लोग मार्कण्डे तालाब पर भी स्नान करते है। स्टेशनसे प्राय ½ मील पर जनकपुर है जहाँ पर रथयात्राके समय भगवान जाते हैं। स्टेशनके समीपही प्राय: १०० गजकी दूरी पर बेदी हनुमान् त था चमनीरे हैं।

जगन्नाथ जीमें वैसे तो सदा ही भीड़ रहती है परन्तु रथ यात्राके अवसरपर जब कि भगवान् रथपर सवार होकर जनक पुर जाते हैं लाखों आदमियोंकी भीड़ होती है। इनके बड़े ऊँचे ऊँचे रथ बनते है। प्रत्येक वर्ष यह रथ नये बना करते हैं और पुराने रथ बेंच दिये जाते हैं। लोग उस रथकी लकड़ीको मृतक

सम्स्कारके लिये पवित्र मानते हैं। यहाँपर कई सुन्दर धर्मशाले हैं। अंग्रेज़ यात्री भी यहाँपर जल्वायु परिवर्तनके लिये आते हैं। उनके लिये रेलवेका होटल अलग है।

कोर्णक

यह स्थान जगन्नाथपुरीसे सड़क द्वारा ५४ मील है जिनमें २५ मील पक्की सड़क परन्तु २९ मील कच्ची सड़क है। यहाँ पर एक बहुत ही प्राचीन उजड़ा मन्दिर है परन्तु अब भी उसकी कारीगरी देखने योग्य है। यह सूर्य्यका मन्दिर है जिसमें २४ बड़े बड़े पत्थरके पहिये और घोड़ बने हुये हैं। कहा जाता है कि इस मन्दिरके निमाणकर्ता कृष्ण पुत्र सम्बा थे। नारद जी तो सदा ही झगड़ा लगाते फिरते थे। एक बार वह सम्बाको उस स्थान पर ले गये जहाँ पर भगवान् कृष्णकी १६०० स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं और भगवान्से कह दिया कि सम्बा यहाँ पर बुरी नियतसे गये थे और यही नहीं बल्कि उनकी रानियोंने कृष्णके बजाय सम्बाको प्रेम किया। कृष्णजीने बिना सोचे समझे सम्बाको कोढ़ी होनेका शाप दे दिया। पीछे जब उनको नारदजीके करतूतका पता लगा तो उन्होंने सम्बाको सूर्य्यकी तपस्या करनेको कहा ताकि वह शापसे मुक्त हो जावे। सम्बाने सूर्य्यकी तपस्या की और यह मन्दिर बनाया। सूर्य्य भगवान्ने प्रसन्न होकर उनका कोढ़ दूर किया।

इस मन्दिरको मुसलमान बादशाहोंने जो कि इधर आन थे नष्ट कर दिया था तथापि अब भी मन्दिर देखने योग्य है। कुछ लोगोंका कहना है कि यह मन्दिर बौद्ध समयका है।

अलवर

यह अलवर राज्यकी राजधानी है। यहाँका पुराना तथा नया महल और राज्यका कृष्ण मन्दिर और विजय-सागर और श्री सेढ देखने योग्य है।

जयपुर

यह जयपुर राज्यकी राजधानी है। नगर बडा ही सुन्दर बना हुआ है और देखने ही योग्य है, सारा शहर विशेषकर सारे बाजार एक ही ढगके बने हुए हैं और सबका रग गेरुआ है। स्थान स्थानपर सुन्दर चोक बने हुए हैं। महाराजके पुराने महलमें अब कचहरी लगती है। यहाँके महल तथा महाराजे का बाग तथा दरबार आदि देखनेके लिये पास लेने पड़ते हैं। यहाँ केवल पारसी या अगरेज स्त्रियाँ ही जाने पाती हैं अन्य किसी स्त्रीके जानेकी आज्ञा नहीं है।

महाराजके दरबारे आम और खास बडे ही सुन्दर बने हुए हैं। इसके पश्चात् महाराजके निजी बागका क्या कहना है। सुन्दरता देखने ही योग्य है। इसी बागमें एक मन्दिर है जहाँपर लोग सध्या और प्रात काल आरतीके समय जाने पाते हैं।

यंत्रमंत्र—पुराने महलके पास ही महाराजा मानसिंहका बनाया हुआ यत्रमत्र है जिसके द्वारा नक्षत्रोंकी चाल देखी जाती है। इसी प्रकारके यत्रमत्र उन्होंने काशी मथा दिल्ली आदिमें भी बनवाये हैं परन्तु यह इतने विशाल और पूर्ण नहीं हैं।

हवामहल—यह महल इस प्रकारका बना हुआ है कि किसी भी ओर की हवा चले यहाँ सदा लगती है।

हवामहल जयपुर
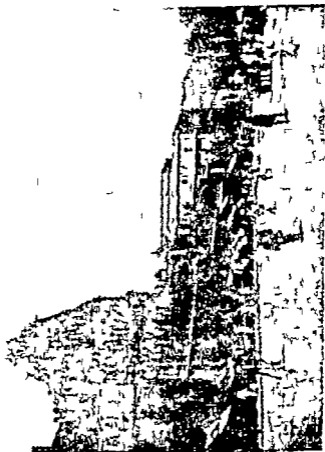
चिड़ियाघर और जादूघर— यहाँके सार्वजनिक बागमें यह दोनों स्थान हैं। यहाँके जादूघरमें विशेषकर जयपुरके कला के सब नमूने देखने योग्य हैं। चिड़ियाघरमें भी जानवरोंका अच्छा समूह है।

गलता—सूरजपोलके बाहर पहाड़ीकी घाटीमें यह सुन्दर स्थान बना हुआ है। कहा जाता है कि यहाँपर गालव ऋषीका आश्रम था। यहाँपर सवारियाँ पहाड़के नीचे तक जाती हैं इसके पश्चात् पहाड़ पर चढ़ना पड़ता है। ऊपर पहुँचनेपर गालवी गगाका झरना मिलता है जिसमें यात्री स्नान करते हैं।

आमेर

जयपुरसे ६ मीलकी दूरीपर जयपुर राजाकी पुरानी राजधानी आमेर है जहाँपर जानेके लिये बराबर सवारी मिला करती है। यहाँपर महाराणा मानसिंहका पुराना किला और महल पहाड़पर है और अब भी जयपुरके राजोंकी शादी यहीं पर हुआ करती है। यहाके दरबार, दिवाने आम, गणेशपोल रंग महल, जशमन्दिर, सुहाग मन्दिर आदि देखने योग्य हैं। इस किलेमें कालीका मन्दिर है। आमेरका किला इतना सुन्दर कहा जाता है कि इसकी प्रशसा सुनकर दिल्लीके मुगल बादशाहोंने इसकी नक्काशीकी नकल अपने किलोंमें की। आमेरके रास्तेमें राज्यका श्मशान मिलता है जहाँपर जयपुरके राजाओंकी छतरियाँ बनी हुई हैं।

अजमेर

अजमेरको चौहान वंशके राजा अजने बसाया था। यह स्थान इतिहासमें प्रसिद्ध चोहान वंशज पृथ्वीराज तथा विशल देवका जन्मस्थान है। राजा अजने तारागढ़की पहाड़ी पर एक किला 'गढ विटली' बनवाया था जिसको कि कर्नल टाडने 'राजपुतानेकी कुंजी' कहा है।

धार्मिक दृष्टिसे भी अजमेरका बड़ा ऊँचा स्थान है। अजमेरके पास ही हिन्दुओंका बड़ा भारी तीर्थ पुष्कर है। यहीं पर स्वामी दयानन्द सरस्वतीका स्वर्गवास हुआ था। यहीं पर जैनियोंका भी एक सुन्दर मन्दिर है और मुसलमानोंकी पवित्र दरगाह ख्वाजामुइनुद्दीन चिश्तीका है।

अजमेरमें निम्नस्थान देखने योग्य हैं।

अढाई दिनका झोंपडा—११५३ में प्रथम चौहान राजा विशलदेवने मन्दिर बनवाया था। सन् ११९२ में शहाबुद्दीन गोरीने इस मन्दिरको गिरवाकर एक मस्जिद बनवा दी। कहा जाता है कि काम अढाई दिनमें हुआ। मराठोंके राज्यके समय यहाँपर मुसलमान फकीरोंका अढ़ाई दिनका उर्स हुआ करता था। इसमें भारतके प्राचीन कला तथा नक्काशीके काम देखने योग्य हैं।

ख्वाजा साहेबकी दरगाह—ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती जो कि अफगानिस्तानके रहनेवाले थे और जिन्होंने २१ वर्षकी आयुमें फकीरी ली थी आकर अजमेरमें बस गये थे। यह सन् ११९२ में मुसलमान शहाबुद्दीन गोरीके साथ भारतमें आये थे। इनका जीवन बड़ा पवित्र था और ९७ वर्षकी आयुमें मरे थे।

अकबर बादशाह आगरासे पैदल चलकर इनकी ज़ियारतके

लिये आया था और अकबरी मस्जिद बनवाई थी। यहाँपर जहाँगीरने एक छोटी मस्जिद, शाहजहाँने गुम्बज और सङ्गमरमरकी जुमा मस्जिद, और हैदराबादके निजामने ७० फीट ऊँचा एक दरवाजा बनवाया था। यहाँपर दो बड़े डेग भात बनानेके लिये हैं।

आनासागर—महाराज पृथ्वीराजके पितामह महाराज आनाजीने सन् ११३५—११५० के भीतर दो पहाड़ोंके बीच बद बाँधकर इस तालाबको जो कि १३०० फीट लम्बा है बनाया।

दौलत बाग़—आनासागरके किनारे जहाँगीरने दौलत बाग और उसके बीचमें एक महल बनवाया था लेकिन उस समयका केवल फौवारा बचा है। सन् १६३७ ई० में बादशाह शाहजहाँने इस तालाबके किनारे १२४० फीट लम्बा सुन्दर सङ्गमरमरका घाट और पाँच बारह दरियाँ बनवाई।

नसियाँजीका जैन मन्दिर—लाल पत्थरका बना हुआ यह सुन्दर मन्दिर देखने योग्य है। श्री आदिनाथके जीवनका प्रसग और लीला, सृष्टि होनेकी उत्पत्तिका दृश्य, अयोध्या नगरी प्रयाग और अक्षयवटके पास ऋषभदेवकी मूर्ति आदि देखने योग्य है।

इनके अतिरिक्त मेयो कालेज, बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवेके कारखाने देखने योग्य हैं।

पुष्कर

यह अजमेरसे ७ मीलकी दूरीपर है और अजमेरसे यहाँ को सड़क गई है। यहाँपर पुष्कर नामकी झील है। यहाँ

पुष्कर

एक विशेष बात यह है कि, हिन्दुओंके प्रायः सब मतोंके मन्दिर उपस्थित हैं जिनमेंसे निम्न मन्दिर प्रसिद्ध हैं।

(१) ब्रह्मा जी, (२) वर जी, (३) रंग जी, (४) बद्रीनाथ जी, (५) आतमेश्वर महादेवजी, (६) सावित्री जी, (७) धाई जी और (८) श्री रंग जी।

यहाँपर कई मेले लगते हैं परन्तु कार्तिक मासके एकादशीसे पूर्णिमा तक स्नानका सबसे बड़ा महात्म है। इस अवसरपर कहा जाता है कि देवता लोग भी पुष्करमें स्नान करने आते हैं

पुष्करमें १५ धर्मशाले हैं।

आबू पहाड़

आबू रोड स्टेशनसे आबू १७ मीलकी दूरीपर है और समुद्रकी सतहसे ६५५० फीटकी ऊँचाईपर बसा है। यह स्थान राजपूताने भरमें एक ही स्थान है। आबूकी सुन्दरता देखने ही से पता चलता है। यहाँपर छावनी, 'रेजीडेन्सी' गिर्जाघर, क्लब इत्यादि सब हैं। यहाँपर 'सनसेट प्वाइन्ट' से सूर्यास्तका दृश्य देखने ही योग्य होता है।

यहाँपर ३/४ मील लम्बी 'नखी तालाब' नामी एक सुन्दर झील है जिसको लोग नेल तालाब भी कहते हैं। उसमें चन्द छोटे छोटे टापुओंपर वृक्ष लग गये हैं और उसमें सर्वदा झरनोंका पानी गिरता है। यहाँके लोगोंका कहना है कि महिषासुरके भयसे भागकर छिपनेके लिये देवताओंने अपने नेल अर्थात नखोंसे खोदकर इस झीलको बनाया था। इसीलिये इसका नाम नेल तथा नखी तालाब पड़ा।

देलवाड़ा मंदिर—यहाँपर पहाड़के ऊपर पाँच जैन मन्दिर

पुष्कर

एक विशेष बात यह है कि, हिन्दुओंके प्राय: सब मतोंके मन्दिर उपस्थित हैं जिनमेंसे निम्न मन्दिर प्रसिद्ध हैं।

(१) ब्रह्मा जी, (२) रंग जी, (३) रंग जी, (४) बद्री नाथ जी, (५) आत्मेश्वर महादेवजी, (६) सावित्री जी, (७) वाई जी और (८) श्री रंग जी।

यहाँपर कई मेले लगते हैं परन्तु कार्तिक मासके इकादशीसे पूर्णिमा तक स्नानका सबसे बड़ा महात्म है। इस अवसरपर कहा जाता है कि देवता लोग भी पुष्करमें स्नान करने आते है

पुष्करमें १५ धर्मशाले हैं।

आबू पहाड़

आबू रोड स्टेशनसे आबू १७ मीलकी दूरीपर है और समुद्रकी सतहसे ६५५० फीटकी ऊँचाईपर बसा है। यह स्थान राजपूताने भरमें एक ही स्थान है। आबूकी सुन्दरता देखने ही से पता चलता है। यहाँपर छावनी, 'रेजीडेन्सी' गिर्जाघर, क्लब इत्यादि सब है। यहाँपर 'सनसेट प्वाइन्ट' से सूर्यास्तका दृश्य देखने ही योग्य होता है।

यहाँपर ½ मील लम्बी 'नखी तालाब' नामी एक सुन्दर झील है जिसको लोग नेला तालाब भी कहते हैं। उसके चन्द छोटे छोटे टापुओंपर वृक्ष लग गये है और उसमें सर्वदा झरनोंका पानी गिरता है। वहाँके लोगोंका कहना है कि महिषासुरके भयसे भागकर छिपनेके लिये देवताओंने अपने नख अर्थात नखोंसे खोदकर इस झीलको बनाया था। इसीलिये इसका नाम नेला तथा नखी तालाब पड़ा।

देलवाड़ा मंदिर—यहाँपर पहाड़के ऊपर पाँच जैन मन्दिर

हैं जिनके चारों ओर पर्वतोंकी चोटियाँ हैं। इनमेंसे दो मन्दिर भारतवर्ष के समस्त जैन मन्दिरोंमें सबसे अधिक सुन्दर हैं। इनमें सगमरमरपर सुन्दर फूलके नक्काशीके काम बहुत विचित्र हैं। पहिले मन्दिरको जो कि आदिनाथका है उसे गुजरातके राजा भीमदेवके मन्त्री विमलशाने सन् १०२२ में १८ करोड ५३ लाख में और दूसरे नेमीनाथजीके मन्दिरको गुर्जर नरेश विशलदेवके मन्त्री वस्तुपाल तेजपालने सवत् १२३१ में १२ करोड़ ५३ लाखमें बनवाया था। देलवाड़ाका नाम पहले देवलवाडा था। १॥≋)॥। राजाका कर लगता है।'

वसिष्ठाश्रम—श्री वसिष्ठजीका आश्रम यहीं था। मन्दिरमें जानेके लिये ७०० सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। यहाँ पर श्री वसिष्ठजी तथा राम व लक्ष्मणके मंदिर हैं।

अर्बुदा देवीका मंदिर—यह मंदिर भी पहाड़पर है और यहाँतक जानेके लिये सुन्दर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। मंदिर पहाड़ की गुफामें है।

अम्बाजी

आबूरोडसे १२ मीलपर दाता राज्यमें प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ पर सरस्वती नदी, कोटेश्वर महादेव तथा अम्बाजीकी मूर्ति है। कहा जाता है कि यहाँ कन्हैयाके बाल यहीं उतारे गये थे। रुक्मिणी इसी देवीकी पूजा करती थीं। और यहीं से उनका हरण हुआ था। नवरात्रिमें यहाँ पर बड़ा भारी मेला लगता है। यहाँ पर मोटरें बराबर जाती हैं। राज्यसे १॥=) अब्राह्मण तथा ॥=) ब्राह्मणों और स्त्रियोंसे कर लगता है।
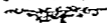
सिद्धपुर

सिद्धपुर नामका स्टेशन बी० बी० एण्ड सी० आई० कम्पनी पर आबू रोडसे ३७ मीलके फासलेपर दक्षिणमें है। नगर सरस्वती नदीके किनारे बसा हुआ है। यह नदी आबू पहाड़से निकलकर कचकी खाडीमें जा गिरती है परन्तु रास्तेमें बहुतसे स्थानोंपर लुप्त हो जाती है। कौरवोंके विनाश तथा दुःशासनके खून पीनेके पापका प्रायश्चित भीमने इसी स्थान पर सरस्वतीमें स्नान करके किया था। सिद्धपुरमें इसमें स्नान करने योग्य जल रहता है और सुन्दर घाट भी बना हुआ है। जिन सज्जनोंकी माताका स्वर्गवास हो गया है यहाँपर श्राद्ध करते हैं अतएव सिद्धपुरको मातृ गया भी कहते हैं। वैसे तो यहाँपर बहुतसे मन्दिर आदि हैं परन्तु ४ स्थान सरस्वती नदी, रुद्र-महालय, गोविन्दराव तथा माधवरावके मन्दिर और विन्दुसर दर्शन योग्य हैं।

सिद्धपुरसे प्राय १ मीलकी दूरीपर विन्दुसर तालाव है जहाँपर पहुँचनेके पूर्व तीन मन्दिर मिलते हैं जिनमें शेषशायी भगवान, लक्ष्मीनारायण तथा राम, लक्ष्मण सीताजीकी मूर्तियाँ हैं। विन्दुसर ४० फीट लम्बा चौड़ा तालाव है जिसके किनारे यात्रीगण पिण्डदान करते हैं कहा जाता है कि श्रीकपिल ऋषी की माता देवहूतिका शरीर बिन्दु सरोवरमें स्नान करनेसे सुन्दर हो गया था। बिन्दुसरके किनारे मातृ श्राद्धका बड़ा महात्म्य पुराणोंमें है। इसीके समीप एक दूसरी बावली है जहाँपर कि एक छोटेसे मन्दिरमें सिद्धेश्वर महादेवकी मूर्ति है।

ग्वालियर

यह महाराज सींन्धियाकी राजधानी है, यह प्राचीन जैनियोंका पवित्र स्थान है और भारतीय कला यहापर देखनेहीं योग्य है इसके अतिरिक्त यहाँका किला बड़ा ही सुन्दर बना हुआ है। यहाँ पर जयाजी चोक, जादूघर, मोती महल, संगीत पाठशाला, नयामहल, फूलबाग, मानमन्दिर, सुसवाहा मन्दिर, तेलीमन्दिर, राजका कारखाना तथा मिट्टी बर्तनके कारखाने देखने योग्य हैं। सागरतालका मेला दिसम्बरके मासमें लगता हैं और बीस दिन तक लगा रहता है।

चित्तोड गढ

यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है। यहींपर महारानी पद्मिनीके कारण सहस्त्रों वीर राजपूतों का बलिदान हुआ अन्तमें सैकड़ों राजपूतनियोंने दहकती हुई चितामें प्राण विसर्जन किये। यह कथा किसीसे छिपी नहीं है। यहांका ऐतिहासिक क़िला दिल्लीके किलेके टक्करका है। कहा जाता है कि इस क़िले को भीमने बनाया था क्योंकि भीमके नामके कई स्थान भीम गोडी, भीम लत आदि किलेमें मिलते हैं। पीछे मौर्यवंशके चित्रागदने यहाँ नगर बसाया जोकि चित्रकूटके नामसे प्रसिद्ध हुआ। यह नाम बिगड़ते बिगड़ते चित्तोड हो गया। इस नगरको मौर्य्य राजा मानसिंहने वर्तमान महाराणाके पूर्वज बाप्पारावल जो कि उनके भानजे थे दिया था। महाराणा उदयसिंहके उदयपुर बसानेतक यही नगर इस राज्यकी राजधानी था। क़िलेके अन्दर आठ बड़े बड़े तालाब हैं और मीरा बाई तथा अम्बिका माईके दर्शन होते हैं। यहाँके राणा कुम्भाका

विवाह मीराबाईके साथ हुआ था। मीराबाईका कहना था कि उसने कृष्णको अपना पति मान लिया है दूसरेसे शादी नहीं करेगी! मीराबाईकी कथा प्रसिद्ध है उसे सब ही जानते हैं।

कीर्तिस्तंभ—१२-१३ वीं सदीमें जीजा नामक एक धनाढ्य जैनीने श्री आदिनाथकी स्मृतिमें सात मंजिलास्तंभ बनवाया था जो कि ८० फीट ऊँचा है और इसमें ४९ सीढ़ियाँ हैं। नीचे से उपर तक स्तंभमें अच्छी पच्चीकारीका काम है।

विजयस्तंभ—महाराणा कुंभाने मालवा और गुजरातके सुल्तानोंको इकेले ही लड़ाईमें हराया था। उसीकी यादगारमें १५ वीं सदीमें ९० लाख रुपया लगाकर इस स्तंभको बनवाया था। स्तंभ नौ मंजिला है और इसमें १७५ सीढ़ियाँ हैं। इसकी तुलना दिल्लीके कुतुब मीनारसे की जाती है।

चितौड़से शृंगार चवरी, मीराबाईका कुंभ श्याम मंदिर, कालिका देवीका मंदिर, तुलजा भवानी, अन्नपूर्णा, अद्भुत नाथ नीलकंठ, शतविंश देवरा, वगैरह मंदिर, मुकुटेश्वर, सूर्यकुण्ड भीमगोड़ी, गोमुख, चत्रग आदि तालाब, पद्मिनी, जयमल, फत्ता, हिंगलु, वगैरह महल और महाराणका नया महल देखने योग्य हैं।

नाथद्वारा

चितोड़गढ़से मावली स्टेशन और फिर नाथद्वारा जाना होता है। यहाँका मन्दिर बहुत ही प्रसिद्ध है जिसमें लाख रुपयोंकी सम्पत्ति है। इसी गद्दीके लिये अभीतक झगड़ा चल रहा था। मंदिरमें जोकि वल्लभ सम्प्रदायके वष्णवोंका है, कहा जाता है कि श्रीनाथजीकी मूर्ति जो पहले ब्रजमें थी स्थापित है।

उज्जैनका बाजार, कालियादेह महल, अहल्या बाईका श्री गोपालमन्दिर, महाराज सवाई जयसिंहकी महत्त्वपूर्ण वेधशाला भी देखने योग्य है। उज्जैनसे कुछ फासले पर ओंकारेश्वरका मन्दिर है।

राजकोट

यह हालार विभागके देशी राज्यकी राजधानी है और पोलिटिकल एजेन्टका सदर स्थान है। यहाँ पर भी सब राज्योंकी तरह महल, बँगले, धर्मशालायें इत्यादि हैं। यहाँ पर राजकुमार कालेज है जहाँ पर राजवाड़ोंके राजकुमार शिक्षा पाते हैं। यह कालेज देखने योग्य है।

जामनगर

यह काठियावाडमें नवानगर राज्यकी राजधानी है। नगर बिल्कुल नये ढग पर सुन्दररूपसे बसा है। यहाँकी सड़कें, बंगले, मकान इत्यादि सब ही बड़ी सुन्दरतासे बने हैं। बढ़ते हुये राज्योंका नमूना जामनगर है। यहाँका Guest House देखने योग्य है।

द्वारिकाजी

बम्बई हातेका काठियावाड प्रायद्वीपके पश्चिमोत्तर कोनेमें द्वारिका एक छोटा सा ग्राम तथा प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। इसे लोग गोमती द्वारिका भी कहते हैं। द्वारिकापुरी भारतवर्षके ४ धामोंमें एक धाम और सप्तपुरियोंमेंसे एक पुरी है।
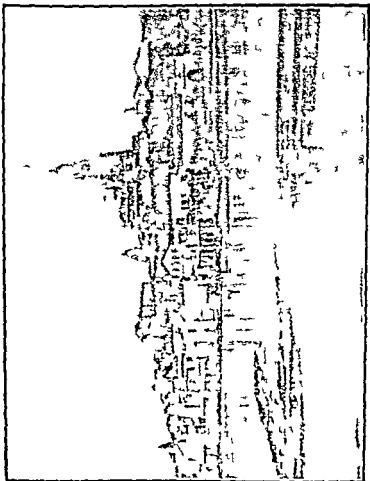
द्वारिकाजी

द्वारिकाके एक भागके चारों ओर जो कि, लगभग १७ बीघा होगा एक पक्की दीवार बनी हुई है जिसमें चारों ओर फाटक बने हैं । दक्षिणकी दीवारमें रणछोडजीके मन्दिरका खास घेरेका फाटक है । द्वारिकामें कई एक धर्मशालाए और अनेक मन्दिर, बडौदा राज्यकी कचहरियां इत्यादि हैं ।

गोमती—द्वारिकाके पश्चिम समुद्र और दक्षिण गोमती नामक लंबा खाल है जो कि, समुद्रके ज्वारके जलसे भरा रहता है । गोमतीके कारण लोग द्वारिकाको गोमती द्वारिका भी कहते हैं । गोमतीके उत्तरी किनारे पर अर्थात् द्वारिकाकी तरफ ९ पक्के घाट, सगमघाट, नारायणघाट, वासुदेवघाट गऊघाट, पार्वतीघाट, पाण्डवघाट, ब्रह्माघाट, सुरधामघाट और सरकारीघाट हैं । समुद्र और गोमतीके संगम पर सगम नारायणका मन्दिर, वासुदेवघाटके समीप हनुमानजीका मदिर तथा नृसिंहजीका स्थान है । सरकारीघाटके पूरब निष्पाप नामक छोटा तालाब है । यात्रीगण प्रथम निष्पाप कुण्डमें भेंट देकर स्नान करते हैं और जिसकी इच्छा होती है पिण्डदान भी करता है । इस कुण्डके समीप एक दूसरा छोटा कुण्ड, सांवलियाजी व गोवर्द्धन नामके मन्दिर तथा महाप्रभुकी बैठक है । प्रति यात्रीको यहा पर पहले नियमित कर देना पडता है । गोमतीमें स्नान करनेका १-) कर बड़ोदा राज्यकी ओरसे लगता है ।

गोमतीके दक्षिण किनारे पर पँचकुआँ नामसे प्रसिद्ध ५ पवित्र कूप हैं । यात्रीलोग इनमेंसे जल निकाल कर आचमन और मार्जन करते हैं ।

मंदिर—यात्रीगण गोमतीमें स्नान करके रणछोड़ जी आदि देवताओंके दर्शन करते हैं । मन्दिरमें दर्शन करनेका

नियमित कर ॥)॥ पाँव छूनेका और १॥)॥ अभिषेक अर्थात् स्नान, वस्त्र पहनाने आदिका कर है। जो यात्री एकबार नियमित कर दे देता है वह नित्य दर्शन कर सकता है। जो यात्री नियमित कर नहीं देता वह मन्दिरके बाहरसे दर्शन कर सकता है।

बेट द्वारिका

गोमती द्वारिका अथवा मूल द्वारिकासे २० मीलकी दूरीपर बेट द्वारिका नामी टापू है। यहाँपर ओखापोर्टतक रेल जाती है और यहाँसे नावपर, सवार होकर बेट द्वारिकाको जाना होता है। नाववाले =) एक तरफका भाड़ा लेते हैं। समुद्रकी चौड़ाई १½ मील है।

बेट द्वारिका टापू दक्षिण-पश्चिमसे पूर्वोत्तर तक लगभग ७ मील लम्बा है। किन्तु सीधी लाइनमें नापनेसे उसकी लम्बाई ५ मीलसे अधिक नहीं है। उसके दक्षिण पश्चिमका आधा भाग लगभग ६० फीट ऊँचा पथरीला है। पूर्वोत्तरके नोकको लोग हनुमान अन्तरीप कहते हैं। क्योंकि उस अन्तरीपके पास उस टापूमें हनुमानका एक मन्दिर है। उस टापूमें ग्राम करके मंदिरोंके सम्बन्धी ब्राह्मण बसते हैं। बेट द्वारिकाके टापूमें किसी चीजकी पैदावार नहीं है। जगह जगह मीज तथा नागफेनी बहुत लगी हैं। बेट द्वारिका श्रीकृष्णका विहार स्थान माना जाता है। टापूके उत्तरके किनारेके पास बेट द्वारिका नामक एक गाँव है, जहाँ यात्रियोंके जरूरी कामकी सभी वस्तुएं मिलती हैं। कई एक धर्मशालायें बनी हैं। कई सदाव्रत लगे हैं, और रणछोड़ सागर, रत्न तालाब, कचौरी तालाब, शंख तालाब

इत्या द जलाशय और बहुतसे देव मंदिर बने हुए हैं। कृष्ण भगवान्‌के महलमें मन्दिरके अतिरिक्त, उस टापूमें मुरली मनोहर का मन्दिर, हनुमान टेकरी, देवीका मन्दिर, नवग्रहका मन्दिर, नीलकंठ महादेवका मन्दिर घिगणेश्वर महादेवका मन्दिर, पद्मेश्वर महादेवका मन्दिर, कचौरी तालावके पास रामचन्द्रजीका मंदिर और शंख तालावके किनारेपर शंखनारायण का मंदिर है। जलाशयोंमें रणछोड़ सागर, जो महलके मन्दिर और शंखोद्धारके बीचमें है, प्रधान है। उसके चारों बगलोंमें दीवार बनी है और जगह जगह घाट बने हैं। बेट द्वारिकामें हाजीपीरका एक रौजा है।

कृष्णके महल—बेट द्वारिकामें एक बड़े घेरेके भीतर दो मंजिले तीन मंजिले ५ महल बने हैं। उत्तरके बड़े फाटकसे होकर भीतरके पश्चिमवाले छोटे फाटकके पास जाना होता है। बिना 'कर' दिए हुए कोई उस फाटकके भीतर नहीं जाने पाता। कर ?-) लगता है। भीतर राजाओंके महलके तरहसे अलग अलग महल बने हैं। गोमती द्वारिकाके समान यहाँ भी मंदिरोंके देवताओंके चरण छूनेका 'कर' ॥)॥ पुजारियोंको देना पड़ता है। जो यात्री नियमितकर नहीं देता वह बाहरसे दर्शन करने पाता है। यहाँ पूजाका 'कर' अलग लगता है। यहा दिन रातमें १२ बार भोग लगता है। राधाजीके महलसे सत्यभामा, जामवती और रुक्मिणीके मन्दिरोंमें भी भोग लगानेको तैयार करके भेजा जाता है। बेट द्वारिकामें गोमती द्वारिकासे अधिक भोग रागका प्रबन्ध रहता है। अनेक यात्री अपने खर्चसे भोग लगवानेके लिए भंडारमें रुपया देते हैं। नित्यके नियमित भोगके खर्चके लिए बड़ौदाके महाराज और कठियावाड़के ठाकुर, सेठ इत्यादि धार्मिक लोग रुपया देते हैं। यात्री भोग लगी हुई सामग्री मोल

ले सकते हैं। दिन रातमें ९ बार आरती होती है। नित्य मन्दिरोंके द्वार १२ बजे दिनमें बंद हो जाते हैं और ४ बजे खुलकर रातमें ९ बजे बन्द होते हैं। पक्के छाप लगानेका कर १) लगता है।

शंखोद्धार—कृष्णके महलसे लगभग ½ मील दूर बेटद्वारिकाके टापूके भीतर शंखोद्धार नामक तीर्थमें शंख तालाब नामक पोखरे और शंख नारायणका सुन्दर मन्दिर है। मार्गमें रणछोड़ सागर मिलता है।

गोपी तालाब

जो यात्री रामडाकी सडकसे बेट द्वारिकाको आता है वह गोपी तालाब होकर गोमती द्वारिका लौट आता है। घाटीसे लगभग २ मील पश्चिम दक्षिण गोमती द्वारिकाके मार्गमें गोमती द्वारिकासे १३ मील पूर्वोत्तर गोपी तालाब नामक कच्चा सरोवर है। मार्गमें पीली रंगकी भूमि मिलती है। गोपी तालाबके भीतरकी पीत रंगकी मिट्टी पवित्र गोपी चंदन है। बहुतेरे यात्री गोपी तालाबमें गोपी चन्दन निकालकर और बहुतेरे लोग गोपी चंदनके पासे तथा गोले जो वहांके लोग बेंचते हैं मोल लेकर घर ले जाते हैं। यहाँपर गोमती द्वारिकासे लारी जाती है।

नागेश्वर

गोपी तालाबसे ३ मील और बेट द्वारिकाकी घाटीसे ५ मील दक्षिण पश्चिम ओर गोमती द्वारिकासे १० मील पूर्वोत्तर नागेश्वर नामकी बस्तीके पास नागेश्वर नामक शिवका छोटा

मन्दिर है। नागेश्वरसे दक्षिण पश्चिम ४ मील पर एक बस्ती, ९ मील पर एक वावली और १० मील पर (खाईंसे १५ मील) गोमती द्वारिका है।

रामड़ा

पेट द्वारिकासे प्राय छ मीलकी दूरी पर रामडा नामक एक ग्राम है। अनेक यात्री विशेषकर साधुलोग यहाँ आकर शख, चक्र आदिके छाप लगाते हैं जो कि द्वारिका जी का छाप कहलाता है।

जूनागढ गिरनार

जूनागढ़ नगर जूनागढ़के नवाबकी राज धानी है। यहाँके नवाबका महल, बाग और चिड़ियाखाना तथा पुराना किला देखने योग्य हैं। यह क़िला बहुत ही पुराना हिन्दुओंके समयका बना हुआ है। पहले इसमें जेलखाना था परन्तु अब बेकार पड़ा रहता है। यहाँ पर इन्द्रेश्वर महादेव तथा नरसी जीका मन्दिर अवश्य देखना चाहिये।

गिरनार पर्वत पर जूनागढ़से १४ मीलकी दूरी पर श्री दत्तात्रेयका मन्दिर है। प्राय दस मीलके पश्चात् चढाई आरम्भ होती है। यहाँके पहाड़की कठिन चढ़ाई है यद्यपि पहाड़ काट कर सुन्दर सीढ़ियाँ बना दी गई हैं तथापि हजारों सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। चढ़ाई प्रातःकाल ही आरम्भ कर देनी चाहिये और साथमें खानेके लिये कुछ अवश्य ले लेना चाहिये क्योंकि पर्वत पर कुछ नहीं मिलता। सोरठ महलसे जनभायोंके मन्दिर

तथा गुरु दत्तात्रेयका मार्ग फट कर गया है। आगे चढने पर दाहिने हाथका मार्ग जैनियोंके मन्दिरको गया है और बाई तरफ कुछ ही दूरी पर गोमुखी गंगा दिखलाई पड़ती है। गोमुखी गंगासे चलने पर श्री गोरखनाथका पहाड़ मिलता है जहाँ पर गोरखनाथने तपस्या की थी। उस गुफामें राख तथा चिमटा पड़ा रहता है। इसके आगे पहाड़के दो चट्टान आपसमें मिले हैं जिनके बीचसे यात्रियोंको गुजरना पड़ता है। इस रास्तेको मोक्ष योनि कहते हैं। मोटा आदमी बड़ी कठिनतासे निकलता है। यहाँसे कुछ दूर सीधा रास्ता मिलता है और दत्तात्रेय पर्वत पास ही मालूम पड़ता है परन्तु कुछ उतारके बाद फिर चढाई आरम्भ होती है। दत्तात्रेयजीके मन्दिरमें उनके पाँवके चिह्न रखे हुये हैं। मदिरसे कुछ दूरी पर कमण्डल तीर्थ हैं जहाँ पर दत्तात्रेयजी स्नान करते थे।

जूनागढसे कुछ फासले पर जैनियोंका प्रसिद्ध नेमीनाथका विचित्र मदिर है।

प्रभास क्षेत्र

जूनागढ़ स्टेशनसे वेरावल स्टेशनको आना पड़ता है। यहाँ पर प्रसिद्ध सोमनाथका मदिर है। यह वही सोमनाथका मदिर है जहाँसे करोड़ों रुपयोंका सामान हजारों ऊँटों पर लाद कर महमूद गजनी ले गया था। यहाँ पर मुसलमानोंका अधिक प्रभाव है। सोमनाथका पुराना मदिर अब बिल्कुल बन्द पड़ा रहता है परन्तु जूनागढ़के मुसलमान कर्मचारियोंके कहने पर खुला करता है। यद्यपि यह मदिर अब बुरी दशामें है तथापि इसकी कारीगरी देखने योग्य है। सोमनाथके नये मदिरको इन्दौरकी महारानी अहल्याबाईने बनवाया था।

सोमनाथ कस्बेके चारो तरफ दीवार है और यहाँ पर एक धर्मशाला है जहाँ पर यात्री ७ दिन ठहर सकते हैं। यहाँ नाना फाटकके समीप अग्निकुण्ड नामक एक कुण्ड है तथा कुछ दूर जाने पर ब्रह्मकुण्ड नामक बावली मिलती है। नगरके पूर्व हिरण्य नदी, सरस्वती नदी तथा कपिलाका संगम मिलता है जिसको 'प्राची त्रिवेणी' कहते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर भगवान् श्री कृष्णको व्याधने तीरसे मारा था और यहीं पर उनका शवदाह हुआ था। यहाँ पर कई मंदिर हैं।

—— o ——
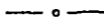
सुदामापुरी

जूनागढ़से कुछ फासले पर जेतपुर स्टेशनसे छोटी लाईन की गाड़ी पोरबन्दरनामी जहाजके बन्दरको जाती है। उसीके पास सुदामापुरी नामी ग्राम है जहाँ पर भगवान् कृष्णके सह पाठी सुदामा जी रहा करते थे।

अहमदाबाद

अहमदाबादको अहमदशाहने चौदहवीं शताब्दीमें बसाया था। अब यह नगर बढ़कर एक बड़ा भारी शिल्पकलाका स्थान हो गया है। आजकलके जितने नवीन आविष्कार हैं अर्थात् रेल, ट्राम, मोटर, बिजली, जलकल सब यहां पाये जाते हैं। यहांपर कपड़े बनानेकी अनेक मिलें हैं जिनमेंसे केलिको बहुत प्रसिद्ध है। अहमदाबाद आजकल व्यापारका बड़ा भारी केन्द्र है। यह नगर साबरमती नदीके किनारे बसा हुआ है।

पुराना शहर साबरमती नदीके किनारे १५ से २० फीट

ऊचा शहरपनाहसे घिरा हुआ है। इस शहरपनाहमें १२ फाटक हैं।

नगरमें प्राय १२५ जैन मन्दिर और अनेक हिन्दू मन्दिर हैं। इसके अतिरिक्त अनेक मसजिदें भी हैं।

स्वामीनारायणका मन्दिर—शहरके पूर्वोत्तर भागमें शहर के उत्तर दरियापुर नामक फाटकसे दक्षिण जानेवाली चौडी सड़कके किनारेके पास १८५० ई० का बना हुआ स्वामीनारायणका विशाल मन्दिर है। मन्दिरमें भोग रागकी बड़ी तैयारी रहती है।

हाथीसिंहका जैन मन्दिर—शहरके उत्तर दिल्ली फाटकसे लगभग ६०० गज़ उत्तर सड़कके पूर्व हाथीसिंहका बड़ा जैन मन्दिर है। यह मन्दिर सन् १८४८ ई० में १० लाखकी लागतसे तैयार हुआ था। मन्दिर बड़ा सुन्दर और देखने योग्य है।

अहमदशाहका मक़बरा, जामा मसजिद, रानी सिप्रीकी मसजिद इत्यादि अनेक सुन्दर मसजिदें हैं।

कांकरिया झील—शहरके दक्षिण राजपुर फाटकसे ½ मीलपर दर्शनीय कांकरिया झील है जिसको लोग हौजी कुतुब भी कहते हैं। उसको अहमदाबादके सुल्तान कुतुबुद्दीनने सन् १४५१ में बनवाया था। यह झील ३४ पहल्का गोलाकार है। झीलके सब पहलोंमें सीढियां बनी हैं। झीलके मध्यमें ७१ गज लम्बा और इतना ही चौड़ा एक टापू है। झीलके किनारेसे मध्य तक सुन्दर सड़क बनी हुई है। टापू भी देखने ही योग्य है।

शहरके आस पास, माता भवानीका पुराना कूप, दादा हरिका कूप, शान्तिदासका मन्दिर, अजीमखांका महल इत्यादि देखने योग्य हैं।

डाकोर

बम्बई हातेके अन्तर्गत गुजरात प्रदेशके खेड़ा जिलेमें डाकोर एक छोटासा ग्राम तथा तीर्थ स्थान है।

डाकोरमें एक तालाब जिसको गोमती तड़ाग कहते हैं, रणछोड भगवानका मन्दिर, त्रिविक्रमजीका मन्दिर, एक अस्प ताल और पोस्टआफिस है। डाकोर पश्चिमी भारतमें यात्राका एक प्रधान स्थान है। वहाँ मन्दिरोंमें भगवान्के भोग रागका बड़ा प्रबन्ध रहता है। प्रति मास वहा बहुतसे यात्री जाते हैं। कार्त्तिक पूर्णिमाको वहा बड़ा मेला होता है। जिसमें लगभग १००००० मनुष्य जाते हैं।

डाकोरकी कथा—ऐसा प्रसिद्ध है कि, बुढ़ान भक्त नामक एक ब्राह्मण, जिसको रामदास भी कहते है डाकौरमें रहता था। वह प्रति वर्ष गोमती द्वारिकामें जाकर बड़ी श्रद्धा भक्ति से रणछोड़जीका दर्शन किया करता। सवत् १२७२ (सन् १२३५) में रणछोड भगवान्ने उससे कहा कि, "विप्र! तुम अति वृद्ध हो गए, इसलिये तुम्हें यहा आनेमें क्लेश होता है। तुम आधीरातके समयमें गाड़ी ले आवो मैं तुम्हारे सग तुम्हारे नगर को चलूँगा। तुम वहाँ ही मेरा दर्शन करते रहना।" भगवान्की आज्ञानुसार वह ब्राह्मण गाड़ी लाया। रणछोड़जीकी मूर्त्ति उस पर विराजमान हुई। ब्राह्मण गाड़ी लेकर डाकोर पहुँचा।

चोरी होनेपर गोमती द्वारिकाके पुजारी लोग बुढ़ान भक्त पर सन्देह करके रणछोड़जीको खोजते हुए डाकोरकी ओर दौड़े रणछोड़जीने बुढ़ानभक्तसे कहा कि, द्वारिकाके पुजारी आते हैं, तुम मुझको तालावमें छिपा दो। ब्राह्मणने ऐसाही किया। पुजारियोंने जब बुढ़ानभक्तके गृहमें मूर्त्तिको नहीं पाया तब

तालावमें भालेसे टटोलकर मूर्त्तिको निकाला। भालेकी नोकका चिन्ह मूर्त्तिके फटि स्थानमें दीख पड़ता है। बुद्धान-भक्तने पुजारियोंसे कहा कि, तुम लोग मुझसे मूर्त्तिके बराबर सोना लेकर छोड़ दो। पुजारियोंने लोभवश यह बात स्वीकार की। ब्राह्मण बहुतसा सोना लाकर मूर्त्तिको तोलने लगा। किन्तु मूर्त्तिका पलरा नहीं उठा। जब रणछोड़जीके स्वप्नके अनुसार उसने सब सोनेको पलरेसे उतार कर अपने स्त्रीके कानकी बारी उस पलरेपर रक्खी, तब मूर्त्तिका पलरा उठ गया।

उस समय रणछोड़जीने पुजारियोंको स्वप्न दिया कि "तुम लोग यहाँसे चले जावो। गोमती द्वारिकामें गोमती गंगाका माहात्म रहेगा। लड़वा गाँवके पास पृथ्वीके गर्भमें एक मेरी मूर्ति है। तुम लोग उसको निकालकर बेट द्वारिकामें स्थापित करो। मैं नित्य ७ पहर डाकोरमें और १ पहर बेट द्वारिकामें निवास करुगा।" पुजारियोंने भगवानकी आज्ञानुसार लड़वा गावसे मूर्तिको लाकर बेट द्वारिकामें स्थापित किया। एक दूसरी मूर्ति गोमती द्वारिकामें स्थापित की गई।

बड़ौदा

यह गायकवाड़ राज्यकी राजधानी है और मरहट्टाके राज्य के समय स्थापित हुआ था। यह राज्य भारतवर्षके समस्त रियासतोंमें उद्च बढ़कर है।

यहा पर बहुत सी कपड़ेकी मिलें हैं और महाराजका लक्ष्मी विलास महल, मकरपुरा महल, पुस्तकालय, क्षीरसागर, कन्या गुरुकुल, बाग चिड़ियाघर, जादूघर, नज़रबाग इत्यादि देखने योग्य हैं।

भड़ौंच

यह नगर नर्मदा नदीके दाहिने किनारे पर उसके मुहानेसे लगभग ३० मीलकी दूरी पर भड़ौंच ज़िलेका केन्द्र स्थान है। नर्मदाके पास १०० फीटसे अधिक ऊँची पहाड़ी पर पुराना क़िला है जिसमें जेलख़ाना अस्पताल, गिरजा, कचहरी इत्यादि हैं–नगरके दक्षिण नर्मदा नदी पर रेलवेका सुन्दर पुल है। यहा पर नर्मदाके किनारे भृगु ऋषीका मदिर है जिसे लोग शहरके पहिलेका बना बताते हैं। भड़ौंचका पहिला नाम भृगुपुर था और सन् ६० से २१० तक इसका नाम बडगजा था।

शुक्ल तीर्थ—यह भड़ौंचसे १० मील पूर्व नर्मदा नदीके किनारे प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहा पर कवि, ऑकारेश्वर और शुक्ल नामक ३ पवित्र कुण्ड और अनेक देव मन्दिर हैं। ऑकारेश्वरके निकट एक मन्दिरमें शुक्लनारायणकी मूर्ति है। यहा कार्तिकमें मेला लगता है। चन्द्रगुप्तने अपने ८ भाइयोंके मारनेके पातकसे छुटनेके लिये यहा पर जाकर स्नान किया था।

कबीर वट—शुक्ल तीर्थसे १ मील पूर्व मगलेश्वरके सामने नर्मदा नदीके टापूमें कबीर वटके नामसे एक बहुत बड़ा वट वृक्ष है। लोग कहते हैं कि कबीरजीके दातुनसे यह वृक्ष हुआ था।

सूरत

यह शहर ताप्ती नदीके किनारे पर बसा हुआ है। यहीं पर प्रथम विदेशियोंकी कोठियाँ थीं और यह बहुत दिनोंसे व्यापार का केन्द्र बना हुआ है। शहरमें ताप्ती नदीके किनारेके पास

सन् १५४० का बना हुआ पुराना किला है जिसकी दीवारें ८ फुट चौड़ी है और इसके पास ही विक्टोरिया पार्क है।

हिन्दुओंके अनेक मन्दिर हैं परन्तु स्वामी नारायणका मन्दिर तथा हनुमानजीके मंदिर अति प्रसिद्ध है। स्वामी नारायणके विशाल मन्दिरमें ३ गुम्बज हैं जो कि नगरके प्रायः स्थानोंसे दिखलाई पड़ते हैं।

मुसलमानोंकी भी अनेक मसजिदे हैं जिनमें चार प्रधान हैं (१) नव सैयद साहबकी मसजिद गोपी झीलके किनारे (२) सैयद इद्रीसकी मसजिद, (३) मिर्ज़ा सामियाकी मसजिद (४) ख़्वाजा दीवानीकी मसजिद।

दिल्ली जानेवाली सड़कके निकट सन् १८७१ का बना हुआ ८० फीट ऊँचा घड़ीका बुर्ज है जहांसे सारा शहर दिखाता है।

बम्बई

बम्बई प्रांतकी राजधानी बम्बई एक टापू पर बसी है। लक्ष्मीका ऐश्वर्य्य यहीं पर दिखलाई पड़ता है। जिधर ही देखिये विशाल सुन्दर भवन बने हुये हैं। प्रायः सब प्रकारके आधुनिक आविष्कार अर्थात्, बिजली, ट्राम, जलकल इत्यादि आरामके सामान यहां पर उपस्थित हैं। बम्बई यहां भारी व्यापारका केन्द्र है। यहां पर बहुतसे बैंक, तिजारती कोठियां, कपड़ेकी मिलें इत्यादि हैं। यहांका फोर्ट (किला) महल्ला जहां कि प्रायः अंग्रेज़ोंकी बस्ती है देखने ही योग्य है। यहां पर कई सिनेमा कम्पनियोंके कार्य्यालय भी देखने योग्य हैं।

देखने योग्य स्थान—विक्टोरिया टर्मिनस-स्टेशन,

चोपाटी, मालाबार हिल, विक्टोरिया पार्क, चिड़ियाघर, जादू घर, ताजमहल होटल, गवर्नमेन्ट हाउस, पारसियोंका दोखमा (जहाँ पर उनके मुर्दे जानवरोंके खानेके लिये छोड़े जाते हैं) क्राफोर्ड मारकेट, हाईकोर्ट तथा अपोलो बन्दर इत्यादि हैं।

मंदिर—महालक्ष्मी, मुम्बई देवी—(कालवा देवी रोडके पास), द्वारिकाधीश, वाल्केश्वरका मंदिर।

(बम्बईके पूरे विवरणकी पुस्तक अलग ही बिकती है। इस छोटी पुस्तकमें पूरा वर्णन देना कठिन है)

एलिफेन्टाके गुफा मंदिर—बम्बईसे ६ मीलकी दूरी पर एलिफेन्टा नामका टापू है। यहा पर लोग अपोलो बन्दरसे जहाज पर चढकर जाते हैं। यहाके चट्टानोंको काटकर बीचमें गुफा मंदिर बनाये गये हैं जहा पर त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र) मूर्ति है। हजारों आदमी प्रति वर्ष दर्शन करने जाते हैं। यहा पर शिवरात्रिके दिन बडा भारी मेला लगता है।

नासिक

यह नासिक रोड स्टेशनसे ५ मीलके फासले पर गोदावरी नदीके किनारे है। यहाँका महातम काशीजीके महात्मसे कम नहीं है। विशेषकर सिंह ब्रस्तके समय लोग अपनी माताका श्राद्ध करने आते हैं, निम्नलिखित मन्दिर अति प्रसिद्ध है। इस देखकर हरिद्वार याद आ जाता है। नासिकमें प्रवेश करनेका ।) कर म्युनिसिपेल्टीका टैक्स लगता है।

पञ्चवटी—गोदावरीके बाँयें किनारेसे ½ मीलकी दूरीपर एक बड़ा भारी पुराना बटका वृक्ष था जिसे पञ्चबटी कहा जाता
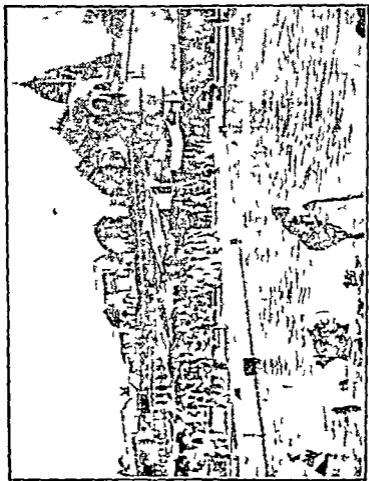
रामघाट नासिक

है। वटवृक्षके समीप ही सीता गुफा नामक गुफ़ा है जिसमें बैठकर प्रवेश करना पड़ता है। इस गुफाके भीतर एक दूसरी गुफा है। पहली गुफामें ९ सीढ़ियोंके पश्चात् भगवान् राम, लक्ष्मण और सीताजीकी मूर्ति मिलती है और दूसरी गुफामें पञ्चरत्नेश्वर महादेव हैं।

कालाराम मन्दिर—सीता गुफासे ५० गजकी दूरी पर यह मन्दिर है मन्दिर बड़ा ही सुन्दर है और कहा जाता है कि १० लाख रुपयेकी लागतसे बना है।

कपालेश्वर मन्दिर—कालाराम मन्दिरके पश्चिम ओर सबसे पुराना मन्दिर कपालेश्वरका है।

सुन्दर नारायण मन्दिर—गोदावरीके दाहिने किनारे विक्टोरिया पुलके समीप यह मन्दिर १७१६ में इन्दौरके राजा होलकरोंने बनाया था।

कुण्ड—यहाँ लक्ष्मण कुण्ड, धनुष कुण्ड और राम कुण्ड है। भगवान् रामने जिस स्थान पर गोदावरीमें स्नान करके महाराज दशरथको पिण्डदान किया था उसीको रामकुण्ड या राम गया कहते हैं। यहाँ पर पिण्डदान करनेका महात्म है।

तपोवन—नासिकसे दो मीलकी दूरीपर गोदावरी नदीके किनारे गौतम ऋषिका तपोवन है।

पाण्डव गुफा—बम्बईकी सड़कपर नासिकसे पाँच मील की दूरीपर पाण्डव गुफा है जहाँपर २४ प्राचीन बौद्ध गुफायें हैं जहाँपर बहुतसी बौद्ध मूर्तियाँ हैं।

त्र्यम्बकेश्वर—जितने यात्री नासिक जाते हैं वह सब त्र्यम्बकेश्वर अवश्य जाते हैं। यह नासिकसे २० मीलकी दूरीपर है और सदा लारियाँ चलती रहती हैं जो १२ आना एक ओरका

प्रति यात्रीका किराया लेती है। ।) कर यहाँकी म्युनिस्पेल्टी प्रति यात्रीसे लेती है।

ब्रह्मगिरि—यहाँ पर पहाड़ीके निकट ही प्रसिद्ध गोदावरी गोमुखी द्वारा निकलती है। जहाँपर पहुँचनेके लिये ७५० सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। इसीके निकट ही त्र्यम्बकशिवका मन्दिर है।

कुशावर्त कुण्ड—यह कुण्ड त्र्यम्बक बस्तीके पास ही बड़ा भारी कुण्ड है। गोदावरीका जल पर्वतके शिखरसे उसके भीतर आता है और पृथ्वीके अन्दरसे बहता ।। ६ मीलकी दूरीपर चक्रतीर्थमें जाकर प्रकट होता है।

एलौरा

यहाँ पर जानेके लिये मनमाड स्टेशनसे औरंगाबाद जाना होता है। औरंगाबादसे १४ मीलकी दूरी पर यह गुफायें हैं। इन गुफाओंको देखनेसे प्राचीन भारतके कारीगरोंकी कारीगरीका पता चलता है। जिस समयमें न तो इंजीनियरिङ्ग इतनी बढ़ी थी और न इस प्रकारके सामान थे, कि आसानीसे काम किया जा सके। उस समय पहाड़के पहाड़को काट कर इतना बड़ा मंदिर आदि बनाना कितना दुष्कर कार्य है। विशेषज्ञों का मत है कि यह काम कमसे कम १०० वर्षमें किया गया होगा।

एलोराकी गुफायें दो भागमें विभक्त हैं। एक तो कैलाश मन्दिर और दूसरे गुफा मन्दिर। कैलाश मंदिरमें शिवजीकी मूर्तियाँ हैं तथा मन्दिरकी दीवारों पर रामायण तथा महाभारत

कारली गुफा

पूना स्टेशनके समीप लानवी स्टेशन है जिससे ६ मील फासले पर ६०० फीटकी उँचाई पर कारली गुफा है। यह गुफा बौद्धोंके समयकी है। यह बड़ी भारी गुफा है जो कि पर्वतमें काट कर बनायी गयी है। कुछ पडोंने इसे शिवकी गुफा करके प्रसिद्ध किया है। वास्तवमें यह भी इलौरा और अजन्ताकी भाँति बौद्धोंका है।

पंढरपुर

कुर्डूवाडी नामी जक्शनसे छोटी लाईन पढरपुरको जाता है और शोलापुरसे भी पक्की सड़क जाती है। शोलापुरसे पढरपुर ३८ मील पश्चिम है और यहाँसे लारियाँ बराबर जाता रहती हैं। यह स्थान महाराष्ट्रोंका बड़ा पवित्र स्थान माना जाता है और यहाँपर आषाढ़में तथा कार्तिककी शुद्ध पक्षकी एकादशीको बड़ा भारी मेला लगता है जिसमें सहस्रोंकी संख्यामें महाराष्ट्र यात्री आते हैं।

बीजापुर

यह स्टेशन भी पढरपुरकी लाइनमें है और पुराना शहर है। १५ वीं सदीमें दक्षिण भारतमें एक ही शहर था और मुसलमान बादशाह आदिलशाहकी राजधानी रहा है। रेलवे स्टेशनसे शहरमें घुसते ही एक बड़ी इमारत 'बोली गुम्बज' भी मिलती है जिसका गुम्बज़ १९८ ऊँचा है। इस गुम्बज़की ऐसी बनावट है कि आप कितना भी धीरेसे बोलें

दूसरी तरफ जरूर सुनाई पड़ता है। इसी इमारतके हातेमें एक जादूघर है जिसमें प्राचीन चीजें रखी हैं। मुहम्मद आदिल शाहने जोकि आखिरी बादशाह था और जिसने 'घोली गुम्बज' बनवाई थी असार महल भी बनवाया था जो कि अबतक खड़ा है। बाक़ी सब इमारतोंको शाहजहाँ बादशाहने गिरवा दिया था। यह महल केवल इसलिये बच रहा कि इसमें मुहम्मद साहिबके दाढ़ीके दो बाल जिनको मीर मुहम्मद सालेह हमदानी लाये थे, रखे हुये थे। यह पाँच आदमियोंकी कमेटीकी रखवालीमें रखा गया है और यही लोग केवल उस कमरेमें जिसमें कि बाल रखे हैं जा सकते हैं। बाल शीशेकी नलीमें हैं जो कि सोने तथा आबनूसके सदूकमें रखे हुये हैं। बक्स कभी नहीं खोला जाता और यह बातें केवल किंवदन्ती है।

यहाँपर अरबी किताबोंका बड़ा भारी पुस्तकालय भी था।

निदवन्दा

यह स्टेशन पूनेसे बगलोर जानेवाली रेलपर है। शिवगगा जानेके लिये यही सबसे नज़दीक स्टेशन पड़ता है। शिवगगाके गुफामें बना हुआ एक बड़ा भारी मदिर है और पाताल गगा नामी एक कुण्ड है जिसके तहका पता ही नहीं चलता। पहाड़की चोटीपर दो स्तभ हैं जिनमेंसे एकसे कहा जाता है कि शरद् ऋतुमें एक दिन जल निकलता है। मकर सक्रान्तिके दिन यहाँपर बड़ा भारी मेला लगता है। बैलगाड़ी और घटके यहाँपर सवारीके लिये मिलते हैं। यहाँ दो धर्मशालायें भी हैं।

शोलापुर

यह जिलेका केन्द्र है तथा दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध है। यहाँपर रेशमी और सूती कपड़े अच्छे बनते हैं और बहुतसे कपड़ेके कारख़ाने हैं। यहाँ पर छावनी है।

शहरसे १ मीलके फासले पर शोलापुरका पुराना क़िला है जो कि एक ओर सिद्धेश्वरी झील और अन्य ओर गहरी खाईसे घिरा है। किलेमें २३ बुर्ज हैं। क़िलेके पहले फाटक पर सन् १८१० ई० का शिलालेख पारसी अक्षरोंमें है।

नगरसे प्राय ३ मील उत्तर ६ मील लम्बी एक झील है जो कि, २½ लाखके खर्चसे सन् १८८१ में बाँध बाँधकर बनाई गई थी। इस झीलसे ३ नहरें निकली हैं और यहाँसे शहरमें पानी जाता है।

नगरके दक्षिण झीलके मध्यमें सिद्धेश्वरका मन्दिर है और इसीके पास म्युनिसपल बाग़ है।

गुलबर्गा

यह नगर हैदराबाद निज़ामके राज्यमें गुलबर्गा नामी जिलेका केन्द्र है और बहुत ही पुराना नगर है। यहाँपर निज़ामके अफसरोंके अनेक बँगले हैं।

यहाँपर एक पुराना क़िला है जिसमें फिरोज़शाहके समयकी बनी हुई २१६ फीट लम्बी और १७६ फीट चौड़ी जुमा मसजिद है। पूरी मसजिद एक ही छतके नीचे है। इतनी बड़ी मसजिद हिन्दुस्तानमें दूसरी नहीं है।

शहरके पूर्व महल्लेमें १६५० ई० की बनी हुई चिदनी खान

दानके प्रसिद्ध फ़क़ीर बन्दानेवाजकी दरगाह है। यह स्थान मुसलमानोंका तीर्थ स्थान है।

एक सुन्दर शिवका मन्दिर भी है।

हैदराबाद

भारतवर्षके देशी रियासतोंमें हैदराबाद सबसे बड़ी रियासत है। यहाँके राजा निजाम कहे जाते हैं। हैदराबाद राज्यकी राजधानी हैदराबाद पुराना शहर है। शहरके चारों ओर जंगल और पहाड़ियोंका मनोहर दृश्य है। शहरमें कई फाटक हैं। यहाँका बाज़ार बड़ा सुन्दर है।

यहाँपर निज़ामका महल, फलकनुमा, रेजीडेन्सी, चार मीनार, जामा मसजिद, चिड़िया घर, बाग़े आम, ओसमानिया यूनिवर्सिटी, हुसेनसागर, उस्मानसागर, हिमायतसागर, आदि देखने योग्य है।

सीताराम बागमें वरदराज, सीताराम और श्री रामानुजके प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

सिकन्दराबाद

यह शहर हैदराबादसे उत्तर छ मीलकी दूरी पर है। यहाँ पर निज़ामकी कचहरी तथा छावनी है। सड़कके पश्चिम हुसेनसागर तालाब है।
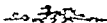
गोलकुण्डा

हैदराबादसे ७ मील पश्चिम हैदराबादके राज्यमें उजड़ा हुआ

पुराना शहर गोलकुण्डा है। यहा एक किला है जिसको वार गताके राजाने वनवाया था। क़िलेके पत्थरका घेरा ३ मीलसे अधिक लम्बा है। उसमें ८७ बुर्ज बने हुये हैं जिनमें कई पुरानी कुतुबशाही तोपें अब भी पड़ी हैं। पहले गोलकुण्डा हीरेकी खानके लिये प्रसिद्ध था। यह ऐतिहासिक शहर है।

सिंहाचलम्

यह स्टेशन वाल्टेयर स्टेशनके समीप है। स्टेशनसे प्राय: तीन मीलकी दूरी पर पहाड़के ऊपर नृसिंहस्वामीका मंदिर है। पर्वतपर ९८८ सीढ़ियाँ चढ़नेपर मंदिर मिलता है। मंदिर में ४० सीढ़ी चढ़नेपर भगवानके दर्शन होते हैं। मन्दिरसे प्राय: १०० गज़की दूरी पर गंगाधारा है जहाँ पर लोग स्नान करते हैं, बादमें जाकर भगवान्‌के दर्शन करते हैं। भगवान् की मूर्ति सदा चन्दनसे ढकी रहती है। कहा जाता है कि भगवान् वाराह नृसिंहको एक बहेलियेकी तीरसे चोट लग गई थी। प्रहलादने चन्दन घिस कर लगवाया था जिससे उनको तुरत लाभ पहुँचा, अतएव सदा चन्दन लगा रहता है। भक्तोंके लिये भगवानने वर्षभरमें एक दिन चन्दन हटा लेनेके लिये कहा था। गर्मियोंमें चन्दनयात्राका मेला होता है तब भगवानपरसे चन्दन उतारा जाता है। इस समय बड़ी भारी भीड़ होती है। इसके अतिरिक्त कार्तिक मासमें भी बड़ा भारी मेला लगता है।

राजमहेन्द्री

समुद्रसे ३० मील पश्चिमोत्तर गोदावरी नदीके बायें किनारे

पर राजमहेन्द्री प्रसिद्ध सुन्दर कस्बा है। इसमें अजायबघर, कालेज, अस्पताल, पार्क, गिर्जे और स्कूल हैं। गोदावरीके सात पवित्र धाराओंमेंसे अन्तिम धारा नरसापुरके निकट अन्तरवेदी स्थानमें है और सातवीं वसिष्ठ धारा वहाँ समुद्रमें मिलती है। यात्री लोग सातो धाराओंमें स्नान करते हैं और ये बड़ी पवित्र समझी जाती हैं।

मंगलागिरी

यह नगर गंतूर तालुकेमें बेजवादासे गुतकल जानेवाली लाइनपर बसा हुआ है। यहाँपर रुईके तथा चावलके कई कारखाने हैं परन्तु नगर विशेषकर हिन्दू-तीर्थ होनेके कारण प्रसिद्ध है। यहाँपर दो विष्णुके मंदिर हैं। एक तो बहुत पुराना दो मंजिला मंदिर पहाड़ पर बना हुआ है जहाँ पर प्राय ६०० सीढ़ी चढ़ कर जाना पड़ता है, और दूसरा नवीन तथा सुन्दर है। यहाँपर महाराजा तंजोरका दिया हुआ एक सुन्दर रत्न जड़ित पलंग है। कहा जाता है कि भगवान् कृष्ण इस पर सोये थे।

भद्राचलम्

बेजवादा सिकन्दराबाद लाइन पर भद्राचलम् रोड नामका एक स्टेशन है। यहाँसे मोटर द्वारा तत्पश्चात नावसे पारकर भद्राचलम् कस्बेमें पहुँचते हैं। राजमहेन्द्रीसे स्टीमरसे भी आ सकते हैं क्योंकि यह नगर गोदावरी नदीके किनारे ही बसा है परन्तु समय अधिक लगता है। भद्राचलम्में श्री रामचन्द्रजी

का बड़ा भारी मंदिर है जिसके मुकाबलेका धनी मंदिर दक्षिण भारतमें नहीं है। कहा जाता है कि भगवान् रामचन्द्रने यहाँके जंगलमें वास किया था और भद्राचलम्में सीताजीकी खोजमें गोदावरी नदीको पार किया था। मंदिरमें निजामके नौकर रामदासका भी चित्र है। कहा जाता है कि इसने सरकारी खजाने से छ लाख रुपये इस मंदिरके बनवानेमें लगा दिये थे। निज़ाम ने रामदासको क़ैद कर लिया था परन्तु भगवान् रामचन्द्रने स्वयं रामदासके नौकरका स्वरूप धारण करके उसके ऋणको चुका दिया था। प्रत्येक वर्ष रामनवमीके अवसर पर बड़ा भारी मेला लगता है।

पोनेरी

यह स्थान अरानी नदीके किनारे बसा हुआ है। यहाँ पर एक विष्णुका तथा एक शिवजीका मंदिर है। कहा जाता है कि मेलेके दिनोंमें दोनों देवताओंका परस्पर सम्मिलन हुआ करता है।

विजगापट्टम्

समुद्रके किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कस्बा विजगापट्टम् है, जिसको विशाखपट्टम् अर्थात् कार्तिकेयका नगर भी कहते हैं। इसमें अनेक सरकारी इमारतें और स्कूल, अस्पताल, मिशन, यतीमखाना, धर्मशाला, कोढ़ी खाना और गिर्जे इत्यादि हैं। इसके तीन ओर पहाड़ और चौथी ओर समुद्र है। समुद्रसे नहर बन्दरको जाती है। तीन भिन्न पहाड़ियों पर गिर्जा, मन्दिर और मसजिद पास ही पास हैं।

मद्रास

यह मद्रास हातेकी राजधानी तथा भारतवर्षमें तीसरा बड़ा नगर है। यहाँ पर शरद् ऋतुमें छोटे लाट रहते हैं। सन् १६३९ ई० में फ्रांसीसडेने विजयानगरके राजासे कुछ जमीनकी स्वीकृति ली थी, उसी स्थानपर मद्रास बना हुआ है। मद्रासमें अभी प्राचीनता दिखलाई पड़ती है। पुराने क़िलेमें अब दफ़्तर आदि हैं।

सन्ध्या समय मरीनेपर अर्थात् समुद्रके किनारेकी सड़क पर बड़ी भीड़ रहती है। प्राय सभी यहाँ टहलने आते हैं। इसे बम्बईकी चौपाटी समझनी चाहिये।

मन्दिर—यहाँपर अनेक सुन्दर मन्दिर बने हुये हैं परन्तु प्रसिद्ध वैष्णव मन्दिर ट्रिप्लीकेनमें श्री पार्थसारथी, शैव मन्दिर ट्रिप्लीकेनसे १ मीलकी दूरीपर मैलापुरमें श्री कपिलेश्वरजी और सन्त तिरुवेल्लुवरजीका मठ देखने योग्य है।

देखने योग्य स्थान—हाईकोर्ट, चिड़ियाघर, लाट साहबकी कोठी, जादूघर, बोटानिकल गार्डेन, क़िला, अनाथालय, रानीबाग, अबज़रवेटरी, जहाज़का बन्दरगाह आदि हैं।

तिरुत्तनी

रेनीगुण्टा और आरकोनम् जंक्शनके बीचमें मद्रासमे ५० मीलकी दूरीपर बसा है। यहाँ बस्तीमें स्कन्दजीका मन्दिर है और बहुतसे यात्री दर्शनार्थ आते हैं। श्रीसुब्रह्मण्या स्वामीका विख्यात मन्दिर पहाड़ीकी चोटीपर बड़ा ही सुन्दर दिखलाता है। चढ़ाई बड़ी सरल है और प्राय १ फर्लांग है। स्टेशनसे प्राय आध मील पर एक तालाब मिलता है फिर चढ़ाई। बहुत

चीनरोड मकान

पहले समयमें लोग अपनी जिह्वा काटकर देवताको चढ़ाते थे। यहाँपर बहुतसे कुण्ड हैं जिसमें स्नान करनेका बड़ा महात्म है।

त्रिवेलूर

यह स्थान आरकोनम् जंकशनके १७ मील पर है। यहाँ पर वरदराजजीका मन्दिर है जो कि तीन घेरेके भीतर है।

वरदराजका मंदिर:—३ घेरेके भीतर वरदराजका निज मंदिर है। पहिले घेरेकी लम्बाई १९० फीट और चौड़ाई १५५ फीट, और दूसरेकी लम्बाई ४५० फीट और चौड़ाई भी ४५० फीट और तीसरेकी लम्बाई ९४० फीट और चौड़ाई ७०० फीट है। पहिले घेरेके चारों बगलोंमें दालान और मध्यमें वरदराजका, जिनको श्रीवीरराघवा स्वामी भी लोग कहते हैं, मंदिर है। कई डेवढ़ीके भीतर वरदराजकी विशाल मूर्ति भुजंग पर शयन करती है। उस मन्दिरके बगलमें शिवजीका मन्दिर है। उस मन्दिरमें भी कई डेवढ़ीके भीतर शिवजी हैं। दोनों मन्दिरोंके आगे जगमोहन है। घेरेके आगेकी दीवारमें एक गोपुर है। दूसरे कोटके भीतर जो पीछेका बना हुआ है बहुतसे छोटे स्थान और दालान और बगलोंपर पहिले घेरेके गोपुरसे ऊँचे दो गोपुर हैं। और तीसरे घेरेके भीतर जो पीछेका बना है, ६६८ खम्भोंका एक मंडप तथा कई एक मन्दिर तथा स्थान और बगलोंपर पाँच गोपुर हैं, जिनमें आगे और पीछेके दो बहुत बड़े हैं। मन्दिरके घेरके फाटकके ऊपरकी इमारतको गोपुर कहते हैं। द्राविड़ मन्दिरोंमें ये बहुत बनते हैं। उनकी ऊँचाई बड़े २ मन्दिरोंके समान होती है। ये ११ गज तक बने हैं।

मन्दिरके पास एक तालाव है जिसमें उत्सवोंके समय भोग मूर्तियोंको लोग जलकेलि कराते हैं।

प्रति अमावस्याको तिरुवलूरके आसपासके यात्री यहाँ देवदर्शनके लिये जाते है, उत्सवके समय वहाँ यात्रियोंकी बड़ी भीड़ होती है।

भूतपुरी

तिरुवल्लूरके स्टेशनसे १२ मील दक्षिण श्री रामानुजस्वामी जीका जन्मस्थान भूतपुरी एक बस्ती है। भूतपुरीमें अनन्त सरोवर नामक तालावके पास रामानुज स्वामीजीका बड़ा मंदिर बना हुआ है। रामानुजस्वामी दक्षिण मुखसे विराजमान हैं। वहाँ केशव भगवान्का मन्दिर बना है। इनके अतिरिक्त वहाँ अनेक स्थान और बडे बडे स्तम्भ लगे हुए कई मडप बने हुए हैं।

उत्सवोंके समय बहुतसे यात्री विशेष करके रामानुजीय सम्प्रदायके आचारी लोग भूतपुरीमें जाते हैं।
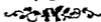
कालहस्ती

रेनीगुण्टा जॅक्शनसे २४ मील पूर्वोत्तर छोटी लाइनपर काल हस्तीका रेलवे स्टेशन है। द्रविड़ देशमें ५ तत्त्वसे ५ लिङ्ग प्रख्यात हैं; (१) शिवकाञ्चीमें एकाम्रेश्वर पृथ्वी लिङ्ग, (२) त्रिचनापल्ली ज़िलेके श्रीरङ्गम्के निकटका जम्बुकेश्वर जललिङ्ग, (३) दक्षिण अर्काट जिलेके तिरुवन्नामलइ क़स्बेके पासके अरुणाचलपर अग्नि लिङ्ग, (४) कालहस्तीमें कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और (५) चिद

म्परममें नटेश आकाशलिङ्ग। ऐसा प्रसिद्ध है कि काल अर्थात् सर्प और हस्तीने यहाँ तप करके महादेवजीसे वर माँगा था कि आप हम लोगोंके नामसे प्रसिद्ध होइये। उन्हीं दोनोंके नामसे शिवजीका नाम कालहस्तीश्वर हुआ। बड़े शिव लिङ्गपर सर्पके फण और हस्तीके दो दाँतके चिन्ह हैं। लिङ्गके नीचे भूमिपर लिङ्गकी पूजा होती है।

दक्षिणकी पहाड़ीके पादमूलके निकट कालहस्तीश्वरका विशाल मन्दिर पत्थरसे बना हुआ है। बड़े आँगनमें उसके पूर्वोत्तर पार्वतीजीका मन्दिर है। मन्दिरके चारों द्वारोंपर चित्रों से विभूषित ४ विशाल गोपुर बने हुए हैं। मन्दिरकी दीवारोंमें तेलङ्गी आदि अक्षरोंमें बहुतसे शिलालेख हैं।

त्रिवनमल्लाई

यहाँ पाँचो तेज लिङ्गोंका स्थान माना जाता है। (अर्थात् आकाश लिङ्ग, वायुलिङ्ग, जललिङ्ग, पृथ्वीलिङ्ग और अग्निलिङ्ग) यहाँ पर कार्तिक तथा चैत्रमें बड़े भारी मेले लगते हैं और इस मेलोंमें कमसे कम १ लाख यात्री इकत्रित होते हैं। शहरमें ६४ धर्मशालाएँ हैं।

पाण्डीचेरी

यह नगर फ्रान्सिसियोंका है। कहा जाता है कि नगर सुन्दर है। यहाँ पर चीज़ें सस्ती मिलती हैं क्योंकि सरकारी ड्यूटी नहीं लगती। बहुत लोग इसी लालचसे बहुत सी चीज़ें खरीदते हैं परन्तु वृटिश राज्यमें पहुँचते ही उन पर चुंगी लग जाती है अतएव वह वस्तु महँगी ही पड़ती है। इससे

अतिरिक्त पाँडीचेरी जानेवालोंकी बहुत जाँच पड़ताल हुआ करती है। पाण्डीचेरीमें लाइट हाउस, समुद्रमें जहाज़ पर चढ़नेके लिये पुल, डुपलेकी मूर्ति, लाट साहबकी कोठी, बाग कारखाने आदि देखने योग्य हैं।

तुङ्गभद्र

यह नगर तुङ्गभद्रा नामी नदीके किनारेपर बसा हुआ है। काशीसे आनेवाले सब यात्री यहाँ पतितपावनी तुङ्गभद्रामें स्नान करते हैं। यहाँसे ९ मील पूर्व राघवेन्द्र स्वामीका मंदिर है।
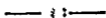
किष्किन्धा

होस्पेट स्टेशनसे दो मीलकी दूरीपर अंजनी पर्वत है जिस पर विरुपाक्ष शिवका मंदिर है। मंदिरके पुजारी मंदिरको पर्दो की तरह दिखलाते हैं। मंदिरसे प्रायः ½ मीलकी दूरीपर पूर्व दिशामें ऋष्यमूक पर्वत है। उसको चक्कर लगाकर तुङ्गभद्रा नदी बहती है और इसीको चक्रतीर्थ कहते हैं। इसके उत्तर ऋष्य मूक और दक्षिणमें श्री रामचन्द्रजीका मंदिर है। मंदिरके पास ही सूर्य्य, सुग्रीव आदिकी भी मूर्तियां हैं।

विरुपाक्षके मन्दिरसे प्रायः ४ मील पूर्वोत्तर माल्यवान पहाडी है जिसके एक भागका नाम प्रवर्षण गिर है। इसी स्थानपर भगवान रामचन्द्र तथा लक्ष्मणजीने वर्षा ऋतु बिताई थी। इसके पास ही स्फटिक शिला है जहाँपर भगवान राम चन्द्र हनुमान आदिकी मूर्तियाँ हैं तथा अनेक मंदिर हैं।

विरूपाक्ष मदिरसे प्राय दो मीलपर तुङ्गभद्रा नदीके वायें किनारे एक ग्राम आनागन्दी है जिसको बहुत लोग सुग्रीवकी राजधानी किष्किन्धा कहते हैं। यहाँसे प्राय एक मील पश्चिम पंपासर नामक तालाब है और पंपासरसे ६० मील पश्चिम शबरीका जन्म स्थान सुरेबनम् बस्ती है।

शृगेरी मठ

मैसूर राज्यमें विरुर स्टेशनसे प्राय ६० मीलपर कडूरके जिलेमें तुङ्ग नदीके वायें किनारेपर शृगेरी नामक एक ग्राम है। शृगेरीसे ९ मील पश्चिम शृङ्गगिरि नामक पर्वत है जिसके कारण इस ग्रामका नाम पड़ा। कहा जाता है कि यहाँ शृङ्गी ऋषिका जन्म हुआ था। यहाँपर आजकल श्री शंकराचार्य्य का मठ है।

भारतवर्षमें जब बौद्धोंका मत ज़ोरोंपर था श्री शंकराचार्य्य ने भगवान् शंकरकी कृपासे उनको सब स्थानपर पराजित करके शैवमत स्थापित किया और हिन्दू धर्मका सदा प्रचार बनाये रखनेके लिये उन्होंने भारतके चारों कोनोंपर चार मठ स्थापित किये। उत्तरमें गढवाल ज़िलेमें जोशीमठ, पूर्वमें पुरीमें गोवर्द्धनमठ, पश्चिममें द्वारिकापुरीमें शारदा मठ और दक्षिणमें शृगेरी मठ स्थापित किये। यही चारो मठोंके गुरु असली शंकराचार्य्य समझे जाते हैं जिनको देखकर वास्तवमें हृदयमें भक्ति उत्पन्न हो जाती है।

मैसूर

भारतके प्रसिद्ध हिन्दू राज्य मैसूरकी राजधानी मैसूर है।

मैसूर राज्य बहुत पुराना राज्य है और यहाँपर अशोकके दो शिला लेख भी प्राप्त हुये हैं जिससे ज्ञात होता है प्राचीन कालमें भी यह देश उन्नति पर था। वर्षमें दो बार यहाँपर बड़ा भारी जलसा होता है। एक तो महाराजा साहिबके जन्मदिवस पर और दूसरा दशहरेके अवसरपर जब कि दस दिन तक खूब चहल पहल रहती है। यहाँका दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। इस अवसरपर महाराजा साहिब नित्य दस रोज तक दरबार करते हैं और दसवें दिन बड़ा भारी जलूस निकलता है। सन्ध्या समय फौज निकलती है और सारा शहर महल इत्यादि बिजली की रोशनीसे चमकने लगते हैं। इस राज्यमें पाण्डवके समय का सिंहासन उपस्थित है जो कि दसहरेके दिनही निकलता है। यहाँके राजमहल, ललिता महल (मेहमानखाना जगमोहन महल, चिड़ियाघर, विश्वविद्यालय, मिर्ज़ा पार्क, बाज़ार आदि देखने योग्य हैं। मैसूर राज्य शिल्पकलाके लिये आजकल प्रसिद्ध हो रहा है।

शहरके पास ही चौमुण्डी पर्वत पर चौमुण्डेश्वरी देवीका मन्दिर है जहाँ पर कि महाराजा साहिब अक्सर जाया करते हैं। यहाँ पर चढ़नेसे सारे शहरको मनोहर दृश्य दिखलाई पड़ता है और यदि आसमान साफ रहा तो निलगिरि पर्वत भी दिखलाई पड़ता है। मैसूरसे १२ मील पर कृष्णराज सागर बनावटी झील भी देखने योग्य है।

श्री रंगापटम्

मैसूरसे ९ मीलकी दूरी पर यह स्थान है इसके चारों ओर कावेरी नदी बहती है। यहाँ पर टीपू सुलतान अन्त तक लड़ता

हुआ मारा गया था। यह स्थान देखने ही योग्य है। टीपू सुल्तानका क़िला, मक़बरा, महल आदि देखकर सराहना किये बिना मनुष्य रह नहीं सकता।

जेरोस्पा या जोग जलप्रपात

रिरुर स्टेशनसे शिमोगा स्टेशन जाना होता है। वहाँसे ६८ मील मोटरसे जाने पर जोग जलप्रपात (fall) मिलता है। शरावती नदीका यह जलप्रपात है और मैसूर राज्यमें सबसे सुन्दर स्थान है। प्रायः २५० फीट चौड़ा और १००० फीट नीचे जल गिरता है। यहाँका दृश्य सन्ध्या समय देखने योग्य होता है। जैसे जैसे अन्धेरा होता है वैसे ही इसकी सुन्दरता बढ़ती जाती है।

बंगलोर

यह मैसूर राज्यका सबसे बड़ा तिजारती शहर है। शहर दो भागोंमें बँटा हुआ है। एक भागमें तो पुराना शहर है और दूसरेमें छावनी है। पुराने शहरमें क़िलामी है। यहाँ पर विशेष कर गल्ला तथा रुईका व्यापार होता है और यहाँ कपड़े भी बनते हैं। यहाँ मैसूर महाराजका राजमहल भी है जो कि उनकी अनुपस्थितिमें देखनेको मिल जाता है। क़िलेमे प्रायः एक मील पूर्व हैदर अलीका लालबाग तथा जादूघर देखने योग्य है।

कोलरके स्वर्ण खान

मद्राससे बंगलोर जानेवाली रेल्वे लाइन पर बोरिंगपेट

नामी स्टेशन है जहाँसे एक शाख ८ मील लम्बी कोलर सोनेकी खानको गई है। भारतवर्षमें यह सबसे बड़ी सोनेकी खान है और यहाँका सोनेका निकास भारतके सोनेके निकासका ९' प्रतिशत है। समस्त संसारके सोनेके निकासका २ प्रतिशत सोनेका निकास भारतमें होता है। चार मील लम्बी पहाड़ीसे यहाँका सोना निकलता है।

यद्यपि सोनेकी उपस्थिति इस पर्वत पर बहुत दिनोंसे ज्ञात थी परन्तु १८८५ ई० तक कोई विशेषरूपसे नहीं निकाला जाता था। लण्डनके जान टेलर कम्पनीने पहले पहल इस कार्य्यको आरम्भ किया और बीस वर्ष कार्य्य करनेके पश्चात् यहाँसे बढ़िया सोना निकलने लगा। कावेरी नदीके जलप्रपातसे जो कि ९२ मीलकी दूरी पर है बिजली लाई जाती है और यहाँ पर प्रयोगकी जाती है। इन खानोंसे मैसूर राज्यको प्राय: दस लाख रुपयेके वार्षिक मालगुजारी मिलती है इसके अतिरिक्त बिजलीसे भी काफी आमदनी है। यहाँ पर तीस हजार आदमी काम करते हैं।

बालाजी

रेनीगुण्टा जंकशनसे ६ मील पश्चिम तिरुपदीका रेलवे स्टेशन है। कसबेसे लगभग १ मील दक्षिण सुवर्णमुखी नदी बहती है। तिरुमला पहाड़ीके पादमूलके पास नीचेकी तिरुपदी और पहाड़ीके ऊपर, ऊपरकी तिरुपदी जहा बालाजीका प्रसिद्ध मन्दिर है, बसा है। नीचेकी तिरुपदीमें बालाजीके यात्रियोंकी भीड़ रहती है। यहा धर्मशालायें बनी हैं और बाजारमें खाने पीनेकी सभी वस्तुयें मिलती हैं। तिरुपदीमें कई देवताओंके मन्दिर बने हुए हैं, जिनमें गोविन्दराजका मन्दिर प्रधान है।

रामानुज स्वामीके सम्प्रदायकी पुस्तक प्रपन्नामृतके ५१वें अध्यायमें लिखा है कि श्री रामानुज स्वामीने वेंकटाचलके पास गोविन्दराजको स्थापित किया। गोविन्दराज भुजगपर शयन किये हुए विष्णुकी मूर्ति हैं। गोविन्दराजके पास श्रीभट्टनाथ दिव्यसूरकी कन्या गोदादेवीका मन्दिर है, जिसको रामानुज स्वामीने स्थापित करवाया था। नदीके किनारेके पुराने मन्दिरके गोपुरोंकी दीवारोंमें सुन्दर सगतराशीका काम है।

बालाजी—तिरुमलाकी पहाड़ीकी सात चोटियाँ प्रधान हैं। सातवीं चोटी शेषाचल पर जिसको वेंकटाचल और वेंकटरमनाचलम् भी कहते हैं दक्षिण भारतके उत्तम मन्दिरोंमेंसे एक प्रख्यात बालाजीका पुराना मन्दिर है। वेंकटाचलकी चोटी समुद्रके जलसे लगभग २५०० फीट ऊँची है। उस पर जगल नहीं है।

तिरुपदीसे ७ मील बालाजीका मन्दिर है किन्तु कस्बेसे लगभग १ मील दूर पर चढाईके बाहरका फाटक मिल जाता है। रास्ता पहाड़ी है। छ मीलकी कड़ी चढ़ाई है। तिरुपदीमें डेढ़ दो रुपयेमें सवारीके लिए डोली और चार आनेमें मजदूरा मिलता है। सरकारकी तरफसे सड़कके किनारे बिजली मदिर तक लगी है जिससे यात्रियोंको बड़ी सुविधा होती है। दूरसे बिजलीका दृश्य बड़ा मनोहर मालूम पड़ता है।

जूता पहनकर पहाड़ पर कोई नहीं जाता है। यात्रीगण पहाड़ीके नीचे तिरुपदीके धर्मशालेमें अपना कुछ असबाब और जूता छोड़ जाते हैं। पहिले मन्दिरवाली पहाड़ी पर कोई युरोपियन नहीं चढ़ा था। सन् १८७० ई० में महन्तके रुपायटकी दरख्वास्त करने पर भी एक मुजरिमके तलाश करनेके लिए पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ऊपर चला गया था। बड़े गोपुरके पास युरोपियन आदि अन्य धर्मी मनुष्य जा सकते हैं उससे आगे

नहीं जाने पाते। चढ़ाईके रास्तेमें पहाड़ीके ऊपर कई जगह टिकने या विश्राम करनेकी जगह बनी है जहाँ केला, नीबू, चना इत्यादि खानेकी वस्तुएँ और पानी मिलता है और स्थान स्थान पर पानीके कुण्ड हैं।

गोपुरके पाससे सीढ़ियाँ आरम्भ होती हैं। बालाजीका मंदिर पत्थरके तीन दीवारोंसे घिरा हुआ है जिनके बँगलों पर सुन्दर गोपुर बने हुए हैं। मध्यमें गुम्बजदार मंदिर है। मंदिरका हाता ४१० फीट लम्बा और २६० फीट चौड़ा है। कई डेवढीके भीतर लगभग ७ फीट ऊँची शख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए हुए बालाजीकी पाषाणमय चतुर्भुज मूर्ति पूरब मुखसे खड़ी है। बालाजीको दक्षिणके लोग वेंकटेश, वेंकटरचलपट्टी, आदि नामोंसे पुकारते हैं। किन्तु उत्तरी भारतके अधिकतर लोग इनको बालाजी कहते हैं। इनकी झाँकी अति मनोहर है। मन्दिरके चारों तरफ मकान बने हैं और आस पास वाराहजी इत्यादिके अनेक मन्दिर हैं।

यहा राजसी कारखाना है। भोगरागका खर्च बे हिसाब है। चौखट किवाड़ों पर चादी सोने जड़े गए हैं। प्रति वर्ष दशहरेके दिन बड़े धूम धामसे रथयात्रा होती है। बड़े त्योहारोंके समय हजारों यात्री बालाजीके मन्दिरके पास एकत्रित होते हैं। नित्य ही वेंकटेश गिरि पर यात्री चढ़ते हैं। प्रति वर्ष लगभग १२ ००० यात्री वेंकटेश भगवान्‌का दर्शन करते हैं।

मंदिरके पास सौ गज लम्बा और ५० गज चौड़ा स्वामी पुष्करणी नामक एक पुष्कर (सरोवर) है जिसके चारों तरफ पत्थर काटकर सीढियाँ बनाई हुई हैं। यात्री लोग उसीमें स्नान करके बालाजीका दर्शन करते हैं। सरोवरके पास 'सहस्र स्तम्भ' मण्डपम् है और वाराह स्वामी पूर्व मुखसे विराजमान है।

बद्रीनारायणके समान यहाँ भी प्रसादमें छूत नहीं है। यहाँ यात्रियोंकी तरफसे अटका भी चढाया जाता है। कितनी स्त्रियाँ पुत्रादि होनेके लिए बालाजीकी मानता करती हैं। जगमोहनके पास बहुतसे नाई रहते हैं। बहुतसे लोग अपने लड़केका यहाँ मुण्डन कराते हैं।

मन्दिरके पास हुण्डी नामसे प्रसिद्ध एक तरहके होजके समान एक पात्र बना है जिसका मुख ऊपरसे बन्द है। रुपया, पैसा, सोना, चांदी, गहना, धान्य, मसाला केसर फल इत्यादि वस्तुएँ जो जिसके मनमें आता है वह उस हुण्डीमें डाल देता है जिनको नियत समय पर मन्दिरके अधिकारी निकाल लेते हैं। बहुतेरे व्यापारी या दूसरे लोग घरमें बालाजीके निमित्त रुपए पैसे निकालते हैं जिसको कानगी कहते हैं। मन्दिरकी वार्षिक आमदनी लगभग दो लाख रुपया है। खर्च भी भारी है।

पापनाशनी गंगा—बालाजीसे ३ मील दूर पहाड़ीकी ऊंची नीची चढ़ाई उतराईके बाद पापनाशिनी गंगा मिलती है। दो पहाड़ियोंके बीचमें बहती हुई धारा, दूरसे आई है और वहाँ पहाड़ीके ऊपरसे नीचे गिरती है। यात्रीलोग वहाँ स्नान करते हैं। बालाजीकी तरफ लौटते हुए रास्तेमें आकाश गंगाकी धारा मिलती है।

कपिलधारा—नगरसे दो मीलकी दूरीपर कपिलधारा है जहाँपर यात्री स्नान करते हैं।

लक्ष्मीजीका मन्दिर—नगरसे तीन मीलकी दूरी पर श्री लक्ष्मीजीका मन्दिर है।

कांजीवरम्

रेलवे लाइनसे पश्चिम काजीवरम् कसवा है। रेलवे स्टेशनसे १३ मील दूर बड़ा कॉचीवरम् अर्थात् शिवकॉची और शिव कॉचीसे लगभग २ मील दक्षिण पूर्व तथा रेलवे स्टेशनसे लगभग २ मील दूर छोटा कॉचीवरम् अर्थात् विष्णुकाची है। दोनों काचीके बीचमें सड़कके बगलोंमें प्राय लगा तार मकान हैं। काचीमें मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल इत्यादि सरकारी इमारतें बनी हुई हैं। वहाँ तामिल और कुछ तैलगी भाषा प्रचलित है। शिवकाचीमें शैवलोग और विष्णुकाचीमें रामानुज सम्प्रदायके वैष्णव रहते हैं। स्टेशनसे सर्वतीर्थ तालाव, शिवकॉची और विष्णु काची आदि सब स्थानोंको देखनेके लिये बैलगाड़ीका ॥) और घोड़ा गाड़ीका एक १) लगता है एक सवारीमें चार यात्री बठते है।

शिवकांची

शिवकाचीमें एकाम्रेश्वर शिवका बड़ा मन्दिर है। मन्दिरके बड़े बड़े घेरे हैं, जिनमेंसे पश्चिमके घेरेके मध्य भागमें शिवका निज मन्दिर है। उस गुम्बजदार छोटे मन्दिरके तीन देवढ़ीके भीतर एकाम्रेश्वर शिवलिंग है। द्राविड़के पाच लिंगोंमेंसे यह पृथ्वी लिंग हैं। एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ाया जाता। वहाँके पण्डे यात्रियोंसे दक्षिणा पानेपर उनकी तरफसे शिवके ऊपर फूल और बेलपत्र चढ़ाते हैं। यात्रीलोग दरवाजेके बाहरसे शिवका दर्शन करते हैं। नियमित समय पर मन्दिरके आगे लड़कियां नृत्य करती हैं। मन्दिरके पीछे आम्रका एक पुराना वृक्ष है, जिसके नीचेके चबूतरे पर एक छोटे पत्थरमें

"तपस्या कामाक्षी" की प्रतिमा खोदी हुई है, उसके पास एक मन्दिरमें कामाक्षीकी ताम्रमयी उत्सव मूर्ति है। जिन मन्दिरके पास सहस्र स्तम्भ मण्डपम् नामक विशाल मण्डप है, जिसमें २७ स्तम्भोंके २० पंक्तियोंमें ५४० स्तम्भ लगे हुए हैं।

निज मन्दिरसे पश्चिम-दक्षिण ओर घेरेके पश्चिम दीवारोंके समीप एक छोटे मन्दिरमें शिवकी उत्सव मूर्ति धातुविग्रह है, जिसका सिंहासन, छत्र, मुकुट आदि सामान सुनहरे बने हुए हैं। उत्सवोंके समय इस प्रतिमाकी यात्रा होती है। जगमोहनम ६४ योगिनिया खड़ी हैं। उस मन्दिरसे थोड़ी दूर एक मन्दिरमें बहुमूल्य वस्त्रा भूषणोंसे सुसज्जित पार्वतीजीकी मूर्ति है। पश्चिम वाले गोपुरके पास पंक्तिमें १०८ शिवलिंग हैं। पश्चिमवाले घेरेके पूर्व वाले गोपुरके निकट चिदम्बरम् शिव और नन्दीकी सुनहरी विशाल मूर्ति है। इनके अतिरिक्त उस घेरेमें नवग्रह आदिके बहुतेरे मन्दिर और दीवारके नीचे बहुतेरे शिवलिंग तथा उसके ऊपर पंक्तिमें बहुतसे नन्दी बैल हैं। दक्षिणकी दीवारमें एक बड़ा गोपुर है।

उस घेरेके पूर्व उससे लगा हुआ दूसरा घेरा है, जिसके पश्चिमोत्तरके भागमें तेप्पकुलम् नामक सरोवर है, जिसमें एक सुन्दर नाव रहती है। जेठ मासके प्रधान उत्सवमें शिव और पार्वतीकी उत्सव मूर्तियाँ इसी पर चढ़के जलक्रीड़ा करती हैं। उस समय वहाँ बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग ५० हज़ार यात्री आते हैं। घेरेके दक्षिणके बगल पर १० मंज़िलवा १८८ फीट ऊँचा एक विशाल गोपुर है। वह बाहरकी नेवके पास करीब १०० फीट लम्बा और ८० फीट चौड़ा है। उसके शिखर पंक्तिसे ११ कलस बने हुए हैं उसके फाटककी चोकठ करीब ३५ फीट ऊँचा है जिसके ऊपर चारों तरफ पत्थर खोदकर नीचेसे

ऊपर तक मूर्तियाँ बनी हुई हैं इसके सिरेपर चढ़कर चारों तरफ का देश देख पड़ता है। द्राविड़ मन्दिरोंके घेरेके फाटकोंके ऊपर बड़े बड़े मन्दिरोंकी सूडाकार इमारत बनाई जाती है, उनको गोपुर कहते हैं। उनमें ११, ९, ७, या इनसे कम मज़िलें होती हैं। ऐसा ही गोपुर काजीवरम्में है।

घेरेके बाहर बड़े गोपुरके सामने दक्षिण लगभग ७५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक उत्तम मंडप है। उसके चारों बगलोंमें १२ और मध्यमें ४ नकाशीदार बड़े बड़े स्तम्भ लगे हैं। उनकी नकाशीमें निकाल कर मूर्तियाँ बनाई हुई हैं। मण्डपम्के पास काष्ठका ऊँचा रथ रखा है जिसके नीचेका भाग सुन्दर चित्रोंसे भूषित और ऊपरका शिखर नारियलके पत्तोंसे छाया हुआ है। रथयात्राके समय अचल देवताओंकी प्रतिनिधि चल मूर्तियां उन रथपर बैठ कर घुमाई जाती हैं।

सर्वतीर्थ:—शिवकाचीमें सर्वतीर्थ नामक एक बड़ा सरोवर है। उसके चारों बगलोंमें पानी तक सीढ़ियां हैं। मध्यमें एक छोटा मंदिर और चारो तरफ जगह जगह शिवलिंग और छोटे २ मंदिर हैं। यात्री लोग सर्वतीर्थमें स्नान करके शिवका दर्शन करते हैं। अनेक यात्री सरोवरके किनारे पर पितरोंका तर्पण और पिंडदान करते हैं। इसके अतिरिक्त शिवकाचीमें कई एक धर्मशालाएँ और कई सदाव्रत हैं। बस्तीमें पूर्व देवीका मंदिर और बस्तीसे २½ मील दक्षिण पलार नदी है।

विष्णुकांची

शिवकाचीसे २ मील दक्षिण-पूर्व और रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर विष्णुकाची है। विष्णुकाचीमें चतुर्भुज वरदराज विष्णुका

विशाल मदिर पत्थरका बना हुआ है। यहा रामानुजीय सम्प्रदायके प्रतिवादमयकरकी गद्दी है और पुजारी पडे सब लोग आचारी हैं। श्री रामानुज स्वामी कुछ समय तक काची-पुरीमें रहे थे।

विष्णुकाचीके मदिरके खजानेमें वहाँके देवताओंके बहु मूल्य आभूषण रखे हुए हैं। उनमें सोनेके ५ कुण्डल और किरीटोंमें बहुतेरे पन्ना, हीरा और लाल जडे हुए हैं, जिनमेंसे प्रत्येकका दाम ५००० से १०००० रु० तक लगा है। लक्ष्मीके बाल बाधने के लिए डेढ इन्च चौडा रत्न जड़ा हुआ नागसेन नामक एक सिरबन्द अर्थात् पट्टी है। लाल मोती और पन्नेसे बने हुए अनेक प्रकारके हार ओर बहुत सी गलेमें पहननेकी सोनेकी सिकरियाँ है। प्रत्येकका दाम ८०० से १००० रु० तक कहा जाता है। एक आचारीका दिया हुआ ७००० रु० काम कर कटा है। रत्न जडे हुए सोनेके पायताबे और एक मकर कटा अर्थात् गलेका भूषण ८६०० रु० का है। लोग कहते हैं कि, इसको लार्ड क्लाइवने दिया था। इनके अतिरिक्त ओर भी कई बहु मूल्य आभूषण हैं। नृसिंह भगवान ओर महालक्ष्मीकी भी मूर्तियाँ हैं।

वरदराजके मन्दिरका घेरा लगभग ११०० फीट लम्बा ओर ७००. फीट चौड़ा है, जिसके भीतर की भूमि २८ बीघेसे कुछ अधिक होती है। घेरेके बाहरकी दीवार लगभग २० फीट ऊची है। घेरेके पूर्व बगलमें ११ मनका और पश्चिम बगलमें ९ मनका गोपुर देख पड़ता है, किन्तु गोपुरोंके भीतर इनसे बहुत कम तह हैं। पूर्ववाला गोपुर जो विष्णुकाचीके सब गोपुरोंसे बड़ा है, नेवके पास लगभग १०० फीट लम्बा और ६० फीट चाड़ा है। फाटकोंके ऊपर गोपुरोंके चारों बगलों पर नीचेसे ऊपर तक पत्थर खोदकर असख्य मूर्तियाँ तथा कारीगरोंकी

वस्तुए बनाई हुई हैं। हातेकी दीवारों पर तामिल अक्षरोंमें शिला लेख हैं, जिनको लोग इमारत बनानेवालोंके निशान कहते हैं। पश्चिमवाले गोपुरसे बाहर एक सुन्दर रथ रक्खा है, जिसपर वैशाखके उत्सवके समय भगवान्‌की प्रतिनिधि चल मूर्ति बैठा कर घुमाई जाती है।

चिदम्बरम्

रेल्वे स्टेशनसे १ मील दूर चिदम्बरम् कस्बा है। कस्बेमें सरकारी कचहरियाँ, पोस्टआफिस, मोदियोंकी दूकानें और धर्मशालायें हैं। रेलवेकी ओर एक छोटी नदी बहती है। निवा सियोंमेंसे चौथाई लोगसे अधिक कपड़े और रेशमी वस्त्र बुनने का काम करते हैं। चिदम्बरम्‌में एक बड़ा मेला होता है जिसमें ५०,००० से ६०,००० तक यात्री तथा सौदागर आते हैं।

नटेश शिवमन्दिर—चिदम्बरम कसबेके उत्तर ९९ बीघे भूमिपर नटेश शिवका मन्दिर है। ३० फीट ऊँची दो दीवारोंके घेरेके भीतर, नटेशके निजमन्दिरका घेरा, पार्वतीका मन्दिर, शिव-गङ्गा नामक सरोवर, और अनेक मन्दिर तथा मण्डप हैं। बाहरके दीवारके भीतरकी भूमिकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक करीब १८०० फीट और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक १५०० फीट है। बाहरकी दीवारमें चारों दिशाओंमें एक एक छोटे गोपुर हैं।

भीतरवाली दीवार अन्तरकी भूमि लगभग १२०० फीट लम्बी और ७२५ फीट चौड़ी उस घेरेके चारों बगलोंपर करीब ११० फीट ऊँचे लम्बे ७५ फीट चौड़े और १२२ फीट ऊँचे एक एक नव मंजिले गोपुर हैं। चारों गोपुर प्रतिमाओंसे पूर्ण और चित्रोंसे चित्रित हैं। उनके नीचे ४० फीट ऊँचे ५ फीट मोटे

तावेके पत्ती जडे पत्थरके चौकठ लगे हैं। दीवारके भीतर चारों तरफ दो मजिले मकान और दालान और मध्यमें नटेशके निज मन्दिरका घेरा और शिव गङ्गा सरोवर तथा बहुतसे मन्दिर मण्डप हैं। मन्दिरके कलश सोनेके हैं और वृन्दावनके रंगजीके मन्दिरके समान दो स्वर्ण स्तम्भ हैं। भगवान् शिवका मणिका बना हुआ ज्योतिर्लिङ्ग है। ऐसा मन्दिर दक्षिणमें कोई नहीं है। सोने और चाँदीके रथ तथा वाहन बने हुये हैं।

चिंगलपट

मद्रास हातेमें समुद्रके किनारेके समीप यह नगर है जिसको द्राविड लोग सेंगलपट कहते हैं।

चेंगलपट्टके किलेसे एक भागमें होकर रेल्वे निकली है और उसके भीतर ही मुन्सफी आदि सरकारी कचहरियां तथा मुजरिम लड़कोंके चरित्र सुधारनेके लिये एक एक सरकारी क़ैदखाना है। इनसे अलावा धर्मशाला, बँगला, अस्पताल इत्यादि इमारतें हैं। किलेके एक बगलमें दोहरी क़िला बन्दी और तीन बगलोंमें एक झील और दलदल हैं।

त्रिकुली कुन्ड्रम पक्षीतीर्थ

चेंगलपट्टके रेल्वे स्टेशनसे ९ मील दूर एक पहाड़ीके ऊपर पक्षीतीर्थ है। स्टेशनसे उस पहाड़ीके पदमूल तककी ७ मीलकी सड़क है। स्टेशनके पास सवारीके लिये बहुत सी गाड़ियाँ व लारियाँ तैयार रहती हैं। चेंगलपट्ट होकर दक्षिण जानेवाले यात्रियोंमेंसे बहुतसे लोग पक्षी तीर्थ जाते हैं। पहाड़ीके नीचे

धर्मशाला वनी हुई है। सवेरेसे यात्री लोग उस पहाड़ीपर एकत्र होते हैं। पण्डे लोग पक्षियोंके खानेके लिये भोजन तैयार करते हैं। नियमित समय मध्याह्न कालमें (पाली हुई) वो सफेद चील (कभी कभी एक ही) यहाँ आकर भोजन करके चली जाती हैं। यात्रीगण उनका दर्शन करते हैं। सफेद चीलको क्षेमकरी और कोई कोई दोनोंको लक्ष्मीनारायण भी कहते हैं, उनका दर्शन मंगल सूचक है। पहाड़पर शिवजीका मन्दिर है और जटायु कुण्ड है।

शंखतीर्थ—यह एक बड़ा तालाब है जिसमें यात्री स्नान करके पक्षी तीर्थ पर चढ़ते हैं।

महाबलीपुरम्

यहा पर शिवजी तथा महाबली राजाका मन्दिर है और पाण्डव स्तूप हैं। यह स्थान भी तीर्थ स्थान है। बहुतसे यात्री यहा पर दर्शन करनेके लिये जाते हैं। यह स्थान पक्षीतीर्थसे ९ मील समुद्रके किनारे है। यह बली राजाकी राजधानी थी और यहीं पर वामन भगवान्ने पृथ्वी दान ली थी।

कुम्भकोणम्

यहाँपर बहुतसे मंदिर हैं और एक शंकराचार्य्य यहाँ भी रहते हैं। यहाँसे कावेरी नदी बहुत ही समीप है। यहाँपर एक महामाघम तालाब है जहाँपर प्रति १२ वें वर्ष बड़ा भारी मेला लगता है। श्री रंगपानीजीका मंदिर विशेष दर्शनीय है।

तजौर

मद्रास हातेमें कावेरी नदीसे दक्षिण जिलेका सदर स्थान तजौर एक छोटा शहर है। तजौर हुनर दस्तकारियोंके लिये मशहूर है जिनमें रेशमी कपडे, कालीन, भूषन और तांबेके बर्तन शामिल है।

तजौरमें दो किले है, उनकी दीवारोंके बाहर खाई है। बडा क़िला उत्तर, और छोटा क़िला, जिसमें बडा मंदिर है, पश्चिम है पश्चिमोत्तरके कोनेके पास दोनों मिल गये है। बडा किला बहुत जगह उजड गया है। तजौरमें जज, कलक्टर और अन्य हाकिमोंकी कचहरियाँ और बहुतेरी इमारतें है बडे किलेके भीतर शहरका प्रधान भाग और तजौरके राजाका महल है।

छोटे किलेमें बडे मन्दिरसे उत्तर शिवगङ्गा नामक सरोवर है, जिसके पास एक गिरजा बना है, जिसके फाटकके ऊपर सन् १७७७ लिखा है। शिवमन्दिरसे पूर्वके मैदानमें दीवानी कचहरियाँ है।

राजाका महल—रेलवे स्टेशनसे करीब पौन मील उत्तर बडे किलेके भीतर सडकके पश्चिम किनारे पर राजाका उत्तम महल है जिसका पहला हिस्सा करीब सन् १५५० में बना था। कई मकान बनारसके इमारतोंके ढांचेके बने हुए है महलके आगे उत्तर तरफ बडा चौगान (आंगन) है, जिसके चारों बगलमें मकान बने है। चौगानके पूर्व और उत्तर एक एक दरवाजा है। उत्तरके दरवाजेके बाहर नित्य बाजार लगता है। महलमें अब एक पुस्तकालय है जिसमें २५००० हस्तलिखित तामिल पुस्तकें है।

शिवमन्दिर—राजाके महलसे आधा मील पश्चिम-दक्षिण

छोटे क़िलेमें दक्षिण तरफ तजौरका बड़ा शिवमन्दिर है मन्दिरके तीन बगलोंपर किलेकी दीवार और खाई और उत्त मैदान है। मन्दिरके बाहरकी दीवारके भीतर लगभग १३ बीघ भूमि है। यहाँ पर एक ही पत्थरका बना हुआ हाथीके समा नदी है। इसके बराबरीका नदी भारतवर्षमें कहीं भी है।

त्रिचनापल्ली

यह नगर कावेरी नदीके तटपर मद्रासले २५० मील दूरी पर बसा है। यह साउथ इण्डियन रेलवेका हेडक्वार्टर है। त्रिचनापल्लीका किला १ मील लम्बा और ½ मील चौड़ा समकोण शकलका है। यह पहिले दीवार और खाईसे घेरा हुआ था किन्तु अब उसकी खाई भर दी गई है उसमें घनी आबादी हो गई है। उसके भीतर ही त्रिचनापल्लीक चट्टान है जिस पर शिव और गणेशजीका मंदिर बना हुआ है। उस चट्टानसे कुछ दक्षिण नवाबका महल है। जिसको सत्रहवीं सदीमें चोका नायकने बनवाया था। चट्टान और किलेमे प्रधान फाटकके बीचमें एक सुन्दर तेप्पकुलम् अथात् नावका सरोवर है, जिसमें देवताओंकी चल मूर्तियाँ नावमें बेठाकर जलमें घुमाई जाती हैं। यहाँ एक आबजरवेटरी, कई एक स्कूल और कालेज व हस्पताल हैं। कावेरी नदी ट्रिची फोर्टसे ½ मील पर है और गणपति मंदिर भी रास्तेमें ही २ फर्लाङ्ग पर है।

श्रीरंगम्

यह त्रिचनापल्लीसे ८ मीलकी दूरीपर है। यह विष्णुका निवास स्थान समझा जाता है। हर ऋतुमें यहाँ, बड़ी भीड़

। गणेश मंदिर, त्रिचनापल्ली
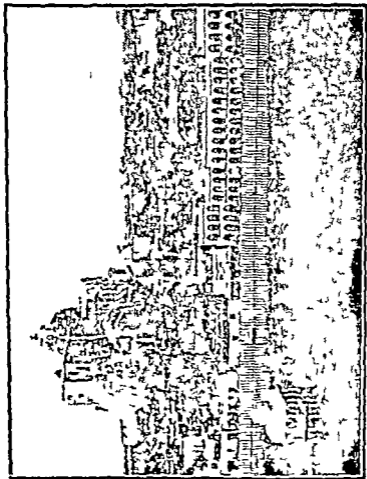
नाव द्वारा धनुषतीर्थ जाते हैं। खुश्की रास्तेसे पुरामेश्वरसे ७ मील दक्षिण जानेपर छोटा धर्मशाला मिलता है। जिसमें दो मील आगे एक सेठकी बड़ी धर्मशाला है। जहाँ सदावर्त लगता है और बनियोंकी दूकानें हैं। उससे तीन मील आगे धनुषतीर्थ है। वहाँ जमीनकी नोक पानीके भीतर चली गई है। उसके एक बगलके समुद्रको महादधि और दूसरे बगलके समुद्र को रत्नाकर लोग कहते हैं। बीचमें बालूका मैदान है। यात्रीगण समुद्रमें स्नान करके अपने पण्डेके सुनहरे छोटे धनुषको, जो वह अपने पास ले जाते हैं, पूजन करके सेतुकी प्रार्थना करते हैं। ग्रहण आदि पर्वोमें वहाँ स्नानका मेल होता है।

रामेश्वर

मदरास हातेके मनारकी खाडीमें रामेश्वर नामक टापू है, जिसका नाम सेतुबन्ध खण्डमें गंधमादन पर्वत लिखा हुआ है। टापू उत्तरसे दक्षिणको लगभग ११ मील लम्बा और पूर्वसे पश्चिमको ७ मील चौड़ा है। उस बालूदार टापूमें बबूल, ताड़ और नारियलके अनेक बाग तथा बहुतसे वृक्ष लगे हुए हैं। टापूके निवासी, जिनमें खास करके ब्राह्मण तथा उनके नौकर हैं, रामेश्वरके मन्दिरकी आमदनीसे अपना निर्वाह करते हैं।

रामेश्वरका मन्दिर—रामेश्वर बस्तीके पूर्व समुद्रके किनारेपर लगभग १००० फीट लम्बा और ६०० फीट चौड़ा अर्थात् २० बीघे भूमिपर रामेश्वरका पत्थरका मन्दिर है। मन्दिरके चारों ओर और २२ फीट ऊँची दीवार है, जिसमें तीन ओर एक एक और पूर्व ओर २ गोपुर हैं। जिसमेंसे केवल पश्चिम वाला ७ मंजिला गोपुर, जो लगभग १०० फीट ऊँचा है

तैयार हुआ है। उत्तर और दक्षिण वाले गोपुर, जो तैयार नहीं हैं, दीवारसे थोड़े ही ऊँचे हैं। गोपुरों और भीतरके दीवारोंमें नक्काशीका विचित्र काम और बहुत सी मूर्तियाँ बनी हुई हैं। पश्चिम वाले गोपुरके फाटकके भीतर रामेश्वरजीके चित्रपट और रुद्राक्षकी माला कौड़ी शंख बिकते हैं। मन्दिरकी पीटी हुई सड़कें, जो लगभग ४००० फीट लम्बी और २० फीटसे ३० फीट तक चौड़ी हैं, दर्शकोंके मनको चकित करती हैं और मन्दिरके वैभवको जताती हैं। जमीनसे ३० फीट ऊपर सड़कों की छत है। दरवाजेके रास्ते और उतोंमें ४० फीट लम्बे पत्थर लगे हैं। इन सड़कों पर बिजली कि रोशनी है। बिजलीका कारखाना भी मन्दिर हीमें उत्तरके फाटकके पास है।

रामेश्वरजीका निज मन्दिर १२० फीट ऊँचा है। तीन डेउढ़ीके भीतर शिवके प्रख्यात बारह ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक रामेश्वर शिवलिङ्ग है। उनके ऊपर शेषजी अपनी फणोंसे छाया करते हैं। मन्दिरमें सर्वसाधारण यात्री नहीं जा सकते, तथापि जगमोहनसे अरघा समेत रामेश्वरजीका अत्युत्तम रीतिसे दर्शन होता है। रात्रिमें पचासों दीप जलते हैं और आरती होती रहती है, जिसके प्रकाशसे रामेश्वरजी दिखलाई पड़ते हैं। फूल माला और बिल्वपत्रकी माला मन्दिरके अर्चक लोग यात्रीके तरफसे रामेश्वरजी पर चढ़ा देते हैं। गङ्गाजल मंदिरके अर्चक द्वारा चढ़ाया जाता है। जिसके पास गङ्गाजल नहीं रहता वह मन्दिरके दफ्तरसे खरीद लेता है। वहाकी रीतिके अनुसार किसी यात्रीको मन्दिरमें जाकर निज हाथसे रामेश्वर जी पर जल चढ़ानेका अधिकार नहीं है। परन्तु कोई कोई धनी लोग वहाँके अर्चक और पण्डोंको प्रसन्न करके रामेश्वरजी पर निज हाथसे गङ्गाजल चढ़ाते हैं।

रामेश्वरजीके मन्दिरमें दो स्फटिकके शिवलिङ्ग हैं जिनका मूल्य बताना कठिन है। यह ज्योतिर्लिङ्ग केवल प्रात ४ बजे निकाले जाते हैं और दो मिनट तक पूजनके पश्चात् बहुमूल्य होनेके कारण चाँदीके बक्समें बन्द करके लोहेकी आलमारीमें बन्द कर दिए जाते हैं। यात्रियोंको चाहिए कि प्रात काल कोई चार बजेके करीब मन्दिरमें चले जावें। भीतरके यद्यपि फाटक बन्द मिलेंगे, वह वहाँपर बैठ जावें। थोड़ी देरमें कपिला गऊ आवेगी और पुजारी लोग भी आवेंगे। कपिला गऊका दूध प्रात काल दुहा जाता है और उसी दूधसे ज्योतिर्लिङ्गोंको स्नान कराया जाता है। फाटक खुलनेपर यात्रीगण भगवान्के कैलाश मन्दिर आते हैं और वहाँपर पुजारी प्रथम इस मन्दिरको खोलकर भगवान्की आरती करता है और उनकी चल मूर्तिको उठाकर (जो कि प्रतिदिन रातके दस बजे आरतीके पश्चात् कैलाशमें पार्वतीजीके पास लाई जाती है) बड़े मन्दिरमें ले जाता है। वहाँपर उनको स्थापित करनेके पश्चात् चाँदीके बक्ससे दोनों ज्योतिर्लिङ्ग निकाले जाते हैं और उनको प्रथम गंगाजलसे स्नान कराकर फिर कपिला गऊके दूधसे स्नान कराकर फिर गंगाजलसे स्नान कराकर चन्दन, फूल इत्यादिसे पूजन करनेके पश्चात् तुरन्त ही बन्द कर दिए जाते हैं। इस कुल पूजामें दो तीन मिनट लगते हैं और इसी समयमें यात्रियोंको दर्शन मिलता है। यात्रियोंको चाहिए कि कैलाशमें भगवान्की थोड़ी सी आरती देखनेके पश्चात् बड़े मन्दिरके आगे डट जावे तो बड़े आनन्दसे दर्शन होगा। आरतीके पश्चात् चरणामृत बँटता है। उसके समान आजतक चरणामृत हमने कहीं नहीं पाया। उसके आनन्दको वही सज्जन जानेंगे जिन्होंने उसको पान किया है।

प्रत्येक शुक्रवारको रात्रिके समय पार्वती जीकी सवारी निकलती है। रामेश्वरजीमें २४ कुण्डोंके जलसे जिनको कि यहाँके पण्डे तीर्थ कहते हैं, स्नान किया जाता है। इन तीर्थोंमें २२ तीर्थ तो मन्दिरके अन्दर हैं परन्तु दो तीर्थ अग्नि-कुण्ड और अगस्त-कुण्ड बाहर हैं।

रामेश्वरजीमें प्रायः तीन लाखके आभूषण और साढ़े चार लाखके रथ तथा वाहन हैं।

कर—यहाँपर जल चढ़ानेका कर २), अभिषेकका ५), फूल-पत्रका ।), नारियलका ‑) लगता है। इसके अतिरिक्त कई प्रकारके कर हैं जो कि यहाँपर कार्य्यालयमें पता करनेपर मालूम होते हैं। यहाँ गंगोत्रीका जल १) छटाँक बिकता है।

लक्ष्मण तीर्थ—रामेश्वरके मन्दिरसे पौन मील पश्चिम पामबनकी सड़कके दक्षिण बगल लक्ष्मणतीर्थमें लक्ष्मणकुण्ड नामक एक उत्तम सरोवर है जिसके चारों बगलोंपर पानी तक पत्थरकी सीढ़ियाँ और सीढ़ियोंके सिरेपर दीवार है। सरोवर के उत्तर बगलपर एक मण्डप और ईशानकोणके पास एक मन्दिरमें लक्ष्मणेश्वर शिव हैं। रामेश्वरके यात्री प्रथम लक्ष्मण कुण्डमें स्नान करके लक्ष्मणेश्वर तीर्थमें भेंट देते हैं। जिसका पिता मर गया है, वह यहाँ मुण्डन कराकर पिण्डदान करता है। पितरजीवी पुरुष मुण्डन करवाकर स्नान दर्शन करते हैं।

सीता कुण्ड—रामतीर्थ और लक्ष्मणतीर्थके बीचमें एक छोटा कुण्ड है।

राम तीर्थ—लक्ष्मणकुण्डसे पूर्व उसी सड़कके दक्षिण रामतीर्थमें रामकुण्ड नामक पक्का सरोवर है, उसमें यात्री लोग स्नान या मार्जन कर लेते हैं।

रामझरोखा—रामेश्वरके मन्दिरसे १ मील उत्तर राम

झरोखा एक स्थान है। यात्रीगण बालूके मार्गसे पैदल ही वहाँ जाते हैं। वहाँ एक टीलेपर दो मंजिला छोटा दालान है जिसमें रामचन्द्रजीके चरण चिन्हकी पूजा होती है। वहाँसे धनुष तीर्थ और तीन तरफ समुद्र देख पड़ते हैं। टीलेके उत्तर एक छोटे कुण्डमें थोड़ा जल रहता है।

सुग्रीव तीर्थ—रामेश्वरके मन्दिर और रामझरोखाके बीचमें सुग्रीव कुण्ड नामक सरोवर है। जिसके किनारेपर एक छोटे मन्दिरमें सुग्रीवकी छोटी मूर्ति है। सरोवरमें थोड़ा पानी है। मन्दिरमें कोई रहता नहीं।

ब्रह्मकुण्ड—रामेश्वरपुरीकी परिक्रमा ७ मीलकी है। उस परिक्रमामें हनुमान कुण्ड और उसके पश्चात् समुद्रकी रेतीमें ब्रह्मकुण्ड मिलता है। वहाँ स्वाभाविक विभूति (भस्म) होती है, जिसको यात्री लोग अपने घर ले जाते हैं। ब्रह्मकुण्डके पास महिषमर्दिनी देवीका मन्दिर है। विजयादशमीके दिन गणेश, रामेश्वर और स्कन्दकी धातुमयी उत्सव मूर्तियां रामेश्वरके मन्दिरसे विमानोंमें बैठाकर ब्रह्मकुण्डपर जाती हैं वहां शमी वृक्षकी पूजा होती है।

मंगला तीर्थ—पामवनकी सड़कपर रामेश्वरजीसे ४ मील की दूरीपर मंगला तीर्थ नामी एक कुण्ड है। यहाँपर कहा जाता है कि इन्द्रने गौतम ऋषिकी स्त्री अहल्यासे छल करके भोग करनेपर शापसे छुटकारा पानेके लिये तपस्या की थी और वह इसी कुण्डमें स्नान करते थे।

एकान्त राम मन्दिर—मंगला-तीर्थके समीप ही एकान्त रामका मन्दिर है। कहा जाता है कि इन्द्र मंगला-तीर्थमें स्नान करनेके पश्चात् यहींपर भगवान्के दर्शन करते थे। मन्दिरकी दशा खराब है।

विलुनी-तीर्थ—मगला-तीर्थ और इकान्त रामके मन्दिरके आधा मील उत्तर समुद्रके किनारे एक कूप है जिसको सीता कुण्ड कहते हैं। समुद्रमें ज्वार आनेपर यह कूप जलसे घिर जाता है तथापि इस कूपका जल मीठा है। कहा जाता है कि सीताजीको प्यास लगी थी तो भगवान्ने धनुषकी नोक दबाकर जल निकाला था।

रणविमोचन-तीर्थ—इकान्त रामके मन्दिरके समीप ही यह कुण्ड है।

जटा-तीर्थ—स्टेशनसे प्राय दो मीलकी दूरीपर दक्षिणकी ओर एक जटा-तीर्थ नामी कुण्ड है। कहा जाता है कि युद्धके पश्चात् भगवान्ने यहाँपर अपने जटा धोये थे। यहाँपर जटा शंकरका एक मन्दिर है।

दक्षिण काली—जटातीर्थसे एक मील दक्षिण जंगलमें दक्षिण कालीका मन्दिर है।

उटाकामण्ड

यह मद्रास प्रान्तकी ग्रीष्म ऋतुकी राजधानी है। यह नगर नीलगिरि पर्वतपर ७३०० फुटकी ऊँचाईपर बसा हुआ है। यहाँके पर्वतमें एक यह विशेषता है कि यहाँकी आब-हवामें जाड़े और गर्मीके ऋतुओंमें बहुत कम फर्क पड़ता है। गर्मीमें औसत तापमान ६१° डिग्री और जाड़ेमें ५४° डिग्री होता है। जाड़ेमें केवल इतना फर्क पड़ता है कि रातें बहुत सर्द होती हैं। यह स्थान बड़ा रमणीक है और पहाड़ी स्थानोंकी रानी कहा जाता है। यहाँपर सैर इत्यादि करनेके अतिरिक्त शिकार आदिकी भी सुविधा है। शिमलाके रास्तेमें निम

झगेखा एक स्थान है। यात्रीगण बालूके मार्गसे पैदल ही वहाँ जाते हैं। वहाँ एक टीलेपर दो मंज़िला छोटा दालान है जिसमें रामचन्द्रजीके चरण चिन्हकी पूजा होती है। वहाँसे धनुष तीर्थ और तीन तरफ समुद्र देख पड़ते हैं। टीलेके उत्तर एक छोटे कुण्डमें थोड़ा जल रहता है।

सुग्रीव तीर्थ—रामेश्वरके मन्दिर और रामझगेखाके बीचमें सुग्रीव कुण्ड नामक सरोवर है। जिसके किनारेपर एक छोटे मन्दिरमें सुग्रीवकी छोटी मूर्ति है। सरोवरमें थोड़ा पानी है। मन्दिरमें कोई रहता नहीं।

ब्रह्मकुण्ड—रामेश्वरपुरीकी परिक्रमा ५ मीलकी है। उस परिक्रमामें हनुमान कुण्ड और उसके पश्चात् समुद्रकी रेतीमें ब्रह्मकुण्ड मिलता है। वहाँ स्वाभाविक विभूति (भस्म) होती है, जिसको यात्री लोग अपने घर ले जाते हैं। ब्रह्मकुण्डके पास महिषमर्दिनी देवीका मन्दिर है। विजयादशमीके दिन गणेश, रामेश्वर और स्कन्दकी धातुमयी उत्सव मूर्तियां रामेश्वरके मन्दिरसे विमानोंमें बैठाकर ब्रह्मकुण्डपर जाती हैं यहां शमी वृक्षकी पूजा होती है।

मगला तीर्थ—पामबनकी सड़कपर रामेश्वरजीसे ४ मील की दूरीपर मगला-तीर्थ नामी एक कुण्ड है। यहाँपर कहा जाता है कि इन्द्रने गौतम ऋषिकी स्त्री अहल्यासे छल करके भोग करनेपर शापसे छुटकारा पानेके लिये तपस्या की थी और वह इसी कुण्डमें स्नान करते थे।

एकान्त राम मन्दिर—मंगला-तीर्थके समीप ही एकान्त रामका मन्दिर है। कहा जाता है कि इन्द्र मगला-तीर्थमें स्नान करनेके पश्चात् यहाँपर भगवान्‌के दर्शन करते थे। मन्दिरकी दशा खराब है।

बिलुनी-तीर्थ—मगला-तीर्थ और एकान्त रामके मन्दिरके आधा मील उत्तर समुद्रके किनारे एक कूप है जिसको सीता कुण्ड कहते हैं। समुद्रमें ज्वार आनेपर यह कूप जलसे घिर जाता है तथापि इस कूपका जल मीठा है। कहा जाता है कि सीताजीको प्यास लगी थी तो भगवान्‌ने धनुषकी नोक दबाकर जल निकाला था।

रणविमोचन-तीर्थ—एकान्त रामके मन्दिरके समीप ही यह कुण्ड है।

जटा-तीर्थ—स्टेशनसे प्राय दो मीलकी दूरीपर दक्षिणकी ओर एक जटा-तीर्थ नामी कुण्ड है। कहा जाता है कि युद्धके पश्चात् भगवान्‌ने यहींपर अपने जटा धोये थे। यहाँपर जटा शंकरका एक मन्दिर है।

दक्षिण काली—जटातीर्थसे एक मील दक्षिण जगलमें दक्षिण कालीका मन्दिर है।

उटाकामण्ड

यह मद्रास प्रान्तकी ग्रीष्म ऋतुकी राजधानी है। यह नगर नीलगिरि पर्वतपर ७५०० फुटकी ऊँचाईपर बसा हुआ है। यहाँके पर्वतमें एक यह विशेषता है कि यहाँकी आब-हवामें जाड़े और गर्मीके ऋतुओंमें बहुत कम फर्क पड़ता है। गर्मीमें औसत तापमान ६१° डिग्री और जाड़ेमें ५५° डिग्री होता है। जाड़ेमें केवल इतना फर्क पड़ता है कि रातें बहुत सर्द होती हैं। यह स्थान बड़ा रमणीक है और पहाड़ी स्थानोंकी रानी कहा जाता है। यहाँपर सैर इत्यादि करनेके अतिरिक्त शिकार आदिकी भी सुविधा है। शिमलाके रास्तेमें जिस

प्रकार सोलन पड़ता है उसी प्रकार यहाँके रास्तेमें कुनूर पड़ता है जहाँपर बहुतसे सज्जन गर्मीके दिनोंमें निवास करते हैं।

यहाँपर वेलिङ्गडन जिमखाना, रेस-फोर्स, लाट साहबकी काठी, सरकारी बाग, ऊटी झील आदि देखने योग्य हैं।

त्रिवेन्ड्रम्

यह नगर ट्रावनकोर-राज्यकी राजधानी है। ट्रावनकोरके सम्बन्धमें कहा जाता है कि भगवान् परशुरामने अपने मतका एक स्थान बसाना चाहा अतएव अपना फरसा (कुल्हाड़ी) समुद्रमें फेंका। जहाँपर कुल्हाड़ी पड़ी वहाँ पृथ्वी कर दिया और बाहरसे मनुष्य लाकर बसाये। ट्रावनकोरमें एक बात देखी जाती है कि यहाँके लोग विचित्र प्रकारके हैं और उनके रस्म व रिवाज आसपासके रहनेवालोंके समान नहीं। यहाँपर औसत दर्जेके मनुष्य अधिक हैं। अमीरों और गरीबोंमें अधिक फर्क है ही नहीं। यहाँके निवासी बहुत ही सरल होते हैं। यहाँका उत्तराधिकार अद्भुत है और उसको माक्मकत्तम् रीति कहते हैं। मालिकके पश्चात् उसका छोटा भाई तदुपरान्त उसकी बहनका लड़का उत्तराधिकारी होता है। यहाँके राजा का लड़का गद्दीपर नहीं बैठता बल्कि उसकी बहनका लड़का गद्दीपर बैठता है। राजाका लड़का एक साधारण नागरिक होता है।

यहाँके राजा अत्यन्त धार्मिक हैं और आरतीके समय प्रायः मन्दिरमें जो कि पद्मनाभिजीका है जाते हैं। यहाँके राजा का महल, चिड़ियाघर, जादूघर, कॉलेज और बाग देखने योग्य हैं।

कुमारी अन्तरीप

भारतका सबसे दक्षिणी स्थान कुमारी अन्तरीप ट्रावनकोर राज्यमें है। यहाँपर रेल नहीं गई है, अतएव यात्रीगण या तो पैदल या मोटर आदिके द्वारा जाते हैं। यहाँपर कुमारी नामक एक ग्राम है जहाँपर कुमारी देवीका मन्दिर है। लोग कावेरी नदीमें स्नान करनेके पश्चात् समुद्रमें स्नान करके कुमारी देवी का दर्शन करते हैं। कहा जाता है कि यहाँपर तीन दिन स्नान करनेसे स्वर्ग लोक प्राप्त होता है।

लङ्का

लङ्का जहाँपर कि कहा जाता है कि रावण रहता था एक टापू है, जो कि धनुषकोटिसे २२ मीलकी दूरीपर है। लङ्का जानेके दो रास्ते हैं। एक तो धनुषकोटिसे तलाईमनार और दूसरा तूतीकोरिनसे कोलम्बू।

धनुषकोटिसे तलाइमनार जो कि २२ मील है नित्य जहाज़ जाता है और २ घण्टेमें तलाईमनार पहुँचा देता है और वहाँसे रेलपर सवार होकर यात्री कोलम्बू चले जाते हैं। कोलम्बूका टिकट साउथ इण्डियन रेलवेके किसी भी स्टेशनसे मिल सकते हैं। धनुषकोटि और तलाइमनारमें यात्रियोंका सामान मुफ्तमें रेलपरसे जहाजपर चढ़ाया जाता है। कोई कुली भाड़ा नहीं लगता।

लङ्का जानेवाले यात्रियोंको पहले मण्डपममें अपने स्वास्थ्य का सर्टिफिकेट लेना पड़ता है क्योंकि इसके बिना वह लङ्कामें उतरने नहीं पावेंगे। यह सर्टीफिकेट उन्हीं लोगोंको मिलता है

जिनको सक्रामक रोग न हो नहीं तो उनको पाँच दिन मडपम में रोक लिया जाता है।

दूसरा रास्ता तृतीकोरिनसे है परन्तु यहाँसे सप्ताहमें केवल दो बार जहाज़ जाता है और १५० मीलके फासलेको १२ घंटे तय करता है। इस रास्तेसे भी यात्रियोंके स्वास्थ्यकी परीक्षा के बिना लकामें नहीं रहने दिया जाता।

कोलम्बू—लकाकी राजधानी और मुख्य बन्दर है। यहाँकी सड़कें, मकान, जहाज़ घाट इत्यादि देखने योग्य हैं।

कैण्डी—कोलम्बूसे ७६ मीलकी दूरीपर लकाके भीतर बसा हुआ है। यहाँपर यात्रीगण इसकी सुन्दरताके कारण जाया करते हैं क्योंकि यह नगर चारोंओरसे पहाड़ोंसे घिरा हुआ एक बनावटी झीलके किनारे बसा हुआ है। लाट साहब की कोठी और पुस्तकालय जो कि झीलके मध्यमें बने हुए हैं, दाँतमन्दिर जिसमें गौतम बुद्धका दाँत रखा हुआ है, और पेराडेनियामें बोटानिकल गार्डेन देखने योग्य है।

नुवारा एलिया—यह स्थान कैण्डीसे ४० मीलकी दूरी पर है और पहाड़ोंपर ६,००० फीटकी ऊँचाईपर बसा हुआ स्वास्थ्यके लिये जल-वायु परिवर्तनका स्थान है।

अनुरुद्धपुर—ईसासे २०० वर्ष पूर्वका बसा हुआ लकाकी पुरानी राजधानी अब उजाड़ पड़ा हुआ है। प्राचीन समयके मठ, मन्दिर और स्नानागार अबतक भी देखने योग्य हैं। यहाँ पर ईसासे २४० वर्षका एक पुराना पीपलका वृक्ष अभीतक उपस्थित है।

मुद्रक—माधव विष्णु पराड़कर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी।